

खूब शोच-विचारकर तिप्रशक्तियोंके बलके सामने अबगत होन ही स्थिर किया । सन् १८६५ ई० की १० वीं मईको जापान सम्राट् मिकाडोका दस्तखती एक फरमान निकला,—“शान्तिके नाग सुविधाओंका विचारकर और अपनी प्रजापर अतिरिक्त दिक्कतोंका भार रख या नई शिकायतें खड़ोकर जातीय भाग्योन्नतिमें बाधा पहुँचा अवस्थाको और भी शोचनीय बनामैक खराबीसे बचनेके लिये ” जापान-सम्राट्ने “मित्र प्रशक्तियोंको बात मान ली है । फरमानमें और भी लिखा था,—“इसीलिये मैं अपनी प्रजाको आज्ञा देता हूँ, कि वह मेरे विचारके मर्यादा करे, वर्तमान साधारण अवस्थापर ध्यानपूर्वक विचार करे, सब बातोंमें सावधान रहे; भ्रमभूलक प्रवृत्तियोंके मनमें स्थान न दे और मेरे साम्राज्यकी उच्चाकांक्षाका विरोध कर उसे समुचित न बनाये ।”

उस समय जापान गिवा इस फौजके और कर ही क्या सकता था? सन् १८६५ ई०में जापानी फौजमें सिर्फ सड़-सठ हजार सिपाही थे; कुछ रक्षित सिपाही भी थे, पर वैसे शहजोर नहीं; जाड़े की सड़ाईकी क्षति और कष्ट भोगनेके उपरान्त जापानी फौज इस दूसरे महासमरमें प्रवृत्त होनेके लिये बिलक्षण ही तय्यार नहीं थी। नौ-सैन्य शीघ्र शीघ्र बढ़ा था; किन्तु उस समय वह युरोपकी छोटीसे भी नहीं थी। नौ-सैन्यसे सामना करने लायक नहीं थी; उनमें एक भी जड़ी जहान नहीं था। यही सब देख जापानने चीनकी ही सहायता ली। अतिरिक्त एकम खोकारकर उमका देखाली कर दिया और चटपट घोर युद्धमें प्रवृत्त होनेके

भयङ्कर ममाले जमा करने लगा। जापानी राजनीति-
ज्ञोको विश्वास हो गया कि यह अविचार्य है। सन् १८६६ ई० में
जापानी युद्ध-विभागने लम्बे-पीढ़ी संस्कारका नरुणा तय्यार
हुआ और फिर हुआ, कि इंग्लैंडके मन्त्रिमर संस्कारकार्य
थला अवसे सात वर्ष बाद यागी सन् १८०३ ई० में जस और
मजसको नैतिकी संस्कृत करमा चारिये। इस तय्यारीका सुख
रहेस्य यह पा, कि जापानने सत्तपी मन्त्रिमरमें
परास्तपर जिम मन्त्रिमर अपना विजन-निशाग उद्याया है,
उसपर जापान हीका अधिकार रहे; गेरका नहीं। एक और
जापान युद्धका सामाग करके जगा दूसरी और खुसकी चलती हुई
कपटबाल हुई। जापानने जैसे ही चीनका जियावटुङ्ग उपद्वीप
खाली किया, वैसे ही खुसने उसपर अधिकार कर लिया
और धीरे धीरे अपना अधिकार घाग बढ़ाने लगा; उसकी
इस हालपर उस समय युरोपकी किसी शक्तिने किसी तरहकी
व्यावहारिक प्रापत्ति प्रकाश नहीं की।

इस अवसरमें जापान तत्स्य ही अपनी साधगामें लगा रहा।
जैसे जैसे वर्ष बीत, वैसे वैसे उसका साम घागे बढ़ा। सुखदला
और सुखवस्याके मुखसे ठीक सातवें वर्ष सन् १८०३ ई० में
जापानका यह विराट् आयोजन पूरा हुआ। सन् १८०३ ई० में
जापानकी संस्कृत नौ-नौके विलङ्गल ही नये उङ्ग और अबल
हरजेके छः जङ्गी जहाज, एक पुराने उङ्गका जङ्गी जहाज, छः
अबल दरजेके, पाँच दूसरे दरजेके और नौ तीसरे दरजेके छोटे
जङ्गी जहाज, चौदह जङ्गी नावे, उन्नीस डिग्रायिरे और पचासी
तारपणो नावे हो गईं। उनके आशामरोंके जहाजोंकी संख्या

खूब शोष-विचारकर तिशक्तियोंकी बलके सामने अबनन होग
ही स्थिर किया । सन् १८६५ ई. की १० वीं मईकी जापान
सम्राट् मिकाडोका दस्तखती एक फरमान निकला,—“शान्तिके
नागा सुविधाओंका विचारकर और अपने प्रजापर अतिरिक्त
दिकतोंका भार रख या नई शिकायतें खड़ीकर जातीय भाग्यो
अतिमें बाधा पहुंचा अवस्थाको और भी शोचनीय बनानेकी
खराबीसे बचनेके लिये ” जापान-सम्राट्ने “मित्र शक्तियोंकी
वात मान ली है । फरमानमें और भी लिखा था,—“इसीलिये
मैं अपनी प्रजाकी आज्ञा देता हूँ, कि वह मेरे विचारकी
मर्यादा करे, वर्तमान साधारण अवस्थापर ध्यानपूर्वक विचार
करे, सब बातोंमें सावधान रहे; भ्रममूलक प्रवृत्तियोंकी
मनमें स्थान न दे और मेरे साम्राज्यकी उच्चाकांक्षाका विरोध
कर उसे समुचित न बनाये ।”

उस समय जापान सिवा इस फौजके और कर ही क्या
सकता था? सन् १८६५ ई०में जापानी फौजमें सिर्फ सड़
सठ हजार सिपाही थे; कुछ रक्षित सिपाही भी थे, प
वैसे गृहजोर नहीं; जाड़े की लड़ाईकी क्षति और लय भोगने
उपरान्त जापानी फौज इस दूसरे महासमरमें प्रवृत्त होने
लिये बिलकुल ही तय्यार नहीं थी। नौ-सैन्य शीघ्र शीघ्र ब
रही थी सही; किन्तु उस समय वह युरोपकी छोटीसे
छोटी नौ-सैन्यसे सामना करने लायक नहीं थी; उस
एक भी जङ्गी जहाज नहीं था। यही सब देख जापानने चीनव
दी छःजानेकी । अतिरिक्त रक्तम स्वीकारकर उमका दे
खाली दर दिया और चटपट घोर युद्धमें प्रवृत्त होने

भयङ्कर मनाले जमा करने लगा। जापानी राजनीति-
ज्ञोंको विश्वास हो गया कि युद्ध अनिवार्य है। सन् १८६६ ई०में
जापानी युद्ध-विभागके लम्बे-चौड़े संस्कारणा नकशा तय्यार
हुआ और गिरा हुआ, कि इसीके अनुसार संस्कारणार्थ
सका सबसे मात धर्म वाद यानी सन् १६०३ ई०में जप और
सुलकी नैतिकी संस्कृत करमा चारिये। इस तय्यारीका मुख्य
उद्देश्य यह था, कि जापानके सत्तरी समुद्रपरममें
परास्तार जिस भूमिपर अपना विजय-निशान उड़ाया है,
उसपर जापान हीका अधिकार रहे; गैरका नहीं। एक ओर
जापान युद्धका सामान लक्ष्मी लगा दूसरी ओर रूसकी चलनी हुई
कपटकाक हुई। जापानने जैसे ही चीनका क्रियावटुङ्ग उद्यहीय
खाली किया, वैसे ही रूसने उसपर अधिकार कर लिया
और धीरे धीरे अपना अधिकार आगे बढ़ाने लगा; उसकी
इस चालपर उस समय युरोपकी किसी शक्तिने किसी तरहकी
बावहारिक ध्यापक्ति प्रकाश नहीं की।

इस अवसरमें जापान तत्त्व ही अपनी साधनमें लगा रहा।
जैसे जैसे वर्ष बीत, वैसे वैसे उसका काम आगे बढ़ा। सुदृष्टता
और बुद्धवस्थाके गुणसे ठीक सातवें वर्ष सन् १६०३ ई०में
जापानका यह विराट् आयोजन पूरा हुआ। सन् १६०३ ई०में
जापानकी संस्कृत नौ-सेनामें विलकुल ही नये छद्म और अन्वय
दरजेके छः जङ्गी जहाज, एक गुप्तके छद्मका छद्म जहाज, छः
अन्वय दरजेके, पाँच दूसरे दरजेके और नौ तीसरे दरजेके छोटे
जङ्गी जहाज, चौदह जङ्गी नावें, उन्नीस डिब्बाघेर और पचासी
तारपेखी नावें हो गईं। उसके आसामरीके जहाजोंकी संख्या

वट्टकर एक हजार तीन सौ तक पहुँच गईं। इन सहाजी सिपाही और अफसर अलग दरजेकी नौ-युद्ध-शिक्षासे शिक्षित हुए। मतलब यह, कि उस समय जापानके नौ-सैन्यका कुछ मामान-सहाज, तोप, माइग या जलमग्न बमबैज अस्त्र, तारपेडो, स्को-टकी लेजर क्लोटेसे छोटा युतीपकरण—नवा, नये उड़का और बहुत ही बीसती था। खल-सैन्य-संस्कारमें जापानके "भरती" या Conscriptio प्रणाली काम लिया और सात वर्ष अविराम अमकर अपने प्रजाकी युद्धकुशल बना दिया। इन वर्ष जापानके खल-सैन्यमें युरोपकी सर्वोत्कृष्ट युद्धशिक्षासे शिक्षित सात हजार ६ सौ अफसर, तीन लाख इकतीस हजार सिपाही और सत्तर हजार खवार थे। इसमें प्रादेशिय सैन्य भी मिला देगे। जापानके खल-सैन्यकी संख्या इसप्रकार होती थी,— पाँच लाख बीस हजार सिपाही, एक लाख एक हजार खवार और एक हजार तीन सौ अड़सठ तोपें। सिवा इसके जापान-सैन्यको पीठपर कोटि कोटि रुदेशभक्त जापान-एजानोंकी सम्मिलित शक्ति तो थी ही।

युरोपकी शक्तियोंके जितना खयाल रूस १९०५ ई०में जापानके अपमानका किया था; उतना ही खयाल अब उनकी वट्टती हुई शक्तिका किया। विशेषतः रूस, जापानकी वन-वृष्टिको कुछ भी छातिरमें न लाया। जापान-राजधानी टोकियोमें रूसका जो दूत रहता था, वह या तो अन्धा था, या रूस-राज-दरबारमें अपनी बातका कुछ भी प्रभाव उत्पन्न कर नहीं सकता था, या रूसके राजनीतिज्ञोंकी आंखें सुंदी थीं या वह सभी बातें मूकान्तर-परिभाषसे मीजूह थीं। तथाशा देसथे, कि वह

आरम्भ होनेके यह सहीमें बाद कम-मात्रापर्यन्त बृहत्त्वपिब
 स्वयं एतद्वत् प्रकृतिगत प्रकृतिक प्रसारात् या,—“जापानकी स्वयं-
 चर्चनें निम्नै रसंसारक दृष्ट्यत्त्वत्त्वात् सिद्धाहो है; चीनसे रचित
 निपाहो भी है, पर वह जिसे जाने जायत नहीं।” स्व
 आदिः अन्ततया जापानकी एतद्वत् नहीं बका। च्याही
 यह खबर नहीं थी, कि जापान एक प्रवृत्तपराक्रान्त शक्ति है
 और उसे छद्मका परिणाम हुआ। प्रथम पीढ़े के पर्वत रचना
 आगत है, पर प्रकृतिक शक्ति पीढ़े के शक्त ग होना अत्यन्त
 पठित। स्व प्रकृतिक-रूपके गणेशी सतवाजा था। “अल्पप्रति
 बुद्धर.” “पोला सर्जिपूजा” और एहीलएकी बहुतको गजियां
 दे जापानकी एही क्रिया करता था। एनें वह छास्यवञ्जक तस-
 वीरे भूली नहीं है, जो बुद्धारम्भसे पहले युरोपके अथपारोनें
 निकला करती थीं। किसी तस्वीरमें बन्दर जापान अपनी पतली
 कमरसे तलवार बांध एक पर्वतपर चढ़नेकी चेष्टा कर रहा है;
 किसीमें शिशु जापान बाटका घोंटा कुदा रहा है; किसीमें
 पर्वत-शृङ्खलपर लड़े गन्धेसे जापानकी विशालदंष्ट्र स्व पैरकी
 एक ही ठोकरसे नीचेके अथाह आगमें रिरा रहा है; किसीमें
 स्व-निपाहो जापानका कान रक्त कर रहा है और जापान एक
 पीड़ासे काकुल हो तिरामिदाकर बच्चोंकी तरह रो रहा है।
 जापान एक तो पदद्वित एशियाकी शक्ति था,—दूसरे एशियाकी
 शक्तियोंमें भी बहुत ही छोटा; युरोपकी सर्वश्रेष्ठ शक्ति
 स्व ऐसे जापानके सखन्वमें, और क्या खयाल कर सकता था ?
 स्व जापानकी मध्य-एशियाकी खोपी, बुखारी वा तुर्कमान
 जैसी कोई अथवा शक्ति समझा; उसके मगमें स्वमें भी

यह विचार उत्पन्न नहीं हुआ, कि जापान युद्धके लिये रूस जैसी अमितवैजाः शक्तिको भी लक्ष्यकार सकता है।

रूस बहुत दिनोंसे चीनका मञ्चूरिया हड़प कर जानिकी फिक्रमें था। सन् १८६० ई०में इङ्ग्लैण्ड और फ्रान्सने मिलकर जम चीन-राजधानी पेकिनपर अधिकार कर लिया था, तब चीनसे रूसने मञ्चूरियाको छः सौ सौ भूमि और क्लडीवयक-बन्दर ले पूर्वोक्त शक्तिद्वयसे पेकिन खाली कराया था। सन् १८६६ ई०में रूसने चीनमें "रशो चाइनीज वॉर" खोल चीनसे ट्रान्सबाइवेरियन-रेलकी आखा क्लडीवयक-बन्दरतक ले जानेकी मञ्जूरी ली; पर रखनेकी जाहज पाते ही अपनी अङ्गुलि आरम्भ की। देखते देखते रेल-विस्तारका नकशा बहुत बढ़ गया और मञ्चूरिया रूसी इन्जीनियरों और उनके रक्षक सिपाहियोंसे भर उठा। ऐसे समय युरोपकी अन्यान्य शक्तियाँ स्थिर कैसे रह सकती थीं? सन् १८६७ ई०में जर्मनी कियानोवकावपर कब्जा कर बैठा और इसी सन्में रूसने चीनसे अरधर-बन्दर ले लिया। इसके उपरान्त ही रूसके जङ्गी जहाजोंका वेड़ा अरधर-बन्दर पहुँचा और रूसने चीनसे तालीवान प्रभृति स्थानोंका ठेका और मञ्चूरियासे अरधर-बन्दर-तक रेल बनानेकी मञ्जूरी ली। इस समय अङ्गरेज भी निकम्ब नहीं थे। इधररह रूसने जिन स्थानोंसे जापानको निकाला था, उन्हीं स्थानोंमें वह खयें युग बैठा। जापान रूसकी इन चाशोंको समझता था, पर अपनी निर्वलताकी वजह सिवा मामूली जुवानो जमाखर्चके रूसके विरुद्ध और कोई कार-न सकता था।

एक कोरिय वासी ।



फेरीव, खा जताफरोश ।

सन् १८६८ ई०के अन्ततक अरधर-बन्दरमें रूसकी एक जबर-दस्त फौज जमा हो गई और रेल-पथपर रूसी सिपाहियोंका पहरा बैठ गया। इसी समय उत्तर-चीनमें फलवा हुआ; जिसे रूसने मन्चूरियामें जमकर बँटने और ईर्दगिर्द हाथ कप-कानेका सुँदमागा मौका बनाया। इसके उपरान्त ही रूसकी ललपीली दृष्टि जापानके जीवनाधार कोरियापर पड़ी; चटपट दोनोंमें एक खन्धि हुई, जिसके फलसे कोरियाकी यालू और तूमान नाम्नी नदियोंके किनारे रूस-प्रजाको खानि खोदने और वृक्ष काट शहतीर बनानेका ठेका मिला। रूसके जिन लोगोंने यह ठेका लिया, वह "रूस-प्रजा" होनेके साथ साथ घणाग्र उच्चपदस्थ रूस-राजकर्मचारी भी थे। ठेकादारीको रक्षाके लिये यङ्गन्योपर रूसने कवजा कर लिया; वर्धातक तार लगा दिया और रेल के पाने तथा किलाबन्दीका खिलखिला फैलानेकी तयारी करने लगा। रूस! उस समय यदि कोरियाभूमि बोल सकती, तो तुमने कहती, कि तुम्हारे इस कामका अशुभफलक फल सुदूर थायो होगा; इनलिये तुम इसके करनेका विचार छोड़ दो; संसारमें तुम्हारे करनेको कामोंकी कमी नहीं।

सन् १९०० ई०से ही रूसको इस गोघरवमोट और सीना-जोरीके विरुद्ध जापानकी शिक्षायुक्तकी आवाज उत्थित हुई। जापान चीन और कोरिया दोनोंके राजदरवारोंमें पहुँच उन्हें रूसकी कपटचालका हाल समझाकर कहने लगा। जापानके राजनीतिज्ञोंकी गतिविधि बढ़ी,—उनकी बातें बहुत झुठ साफ होने लगीं। इनके फलसे चीनकी आंखें खुलीं और उसने देखा, कि उसकी और जापानकी चति-वृद्धिके बीच बहुत झुठ

खमता है। रूसके कोशिकाएँ रक्त करनेके उपरान्त ही सन्
 १९०१ ई०में जापानके सुप्रसिद्ध राजनीतिविशारद मारकुइस
 आइटो कोई गुप्तयन्त्रणा करनेके लिये रूस-राजधानी सेण्ट-
 पिटर्सबर्ग पहुँचे। आइटोकेसे नामी पुस्तकके सेण्टपिटर्सबर्ग
 जानेसे साफ दसकमें जाता है, कि रूसन समय जापानके
 रूसको समभावुष्काकर होशमें लानेकी बहुत बड़ी चेष्टा की;
 किन्तु उसका कोई फल नहीं हुआ। इसके उपरान्त सन्
 १९०२ ई०में जापान-अङ्गरेज-सन्धि हुई और इसी सन्में मञ्चू-
 रियाकी एक सभाने मञ्चूरिया खाली करनेके लिये रूसको
 दबाया; रूसने भी धीरे धीरे मञ्चूरिया खाली करनेका वादा
 किया; किन्तु कौन करता है? रूसके मञ्चूरिया खाली करनेकी
 तारीख अपरेलकी ६ वीं आई और चली गई; मञ्चूरिया
 खाली करना तो दूर रहा; रूस उससे एक इंच भी न टका।
 सभ्य जगत्में झूठ धर्मसमझा जाता है और झूठा समाज
 द्वारा न्यूनाधिक विरक्त होता है; किन्तु मञ्चूरिया खाली
 करनेके समयमें रूसने इसी निन्दनीय धर्मविरुद्ध झूठ हीको
 अपना समझ बगाथा और इसके लिये किसीने उसे उतगा
 कुछ न कहा; शायद अपसर्गजन्त विकार हीटोके लिये है,
 वहीके लिये नहीं। जगत्में प्रायः ऐसा ही देखा; जो काम बड़ोंके
 लिये सम्मान रखता है—गौरवका उद्गम; वही काम छोटीके
 लिये अपमानरूपक। इसीतरह कितने ही झूठे वादोंके बाद
 रूस जब अपनी अपनी मूर्ति प्रकटकर साफ साफ
 ने लगा, कि वह मञ्चूरिया छोड़ना नहीं चाहता। उसके
 लिये जो रूस बढ़े। रूसके अङ्गरेजोंके व्यवहार “विदी-

सोस्ती" ने साफ लिख दिया,— "हम राजनीतिक भूल कर सकते हैं; किन्तु उन भूलपर साफल्य तक नहीं सकते।" इसीके साथ साथ सन् १९०२ ई० को ३०वीं जुलाईको रूस-कारने एक शाही परमान निकाल सुदूर पूर्वकी नाटगरीका पद रूढ़ किया। उसनिरत व्यक्तिको इस नये पदपर प्रतिष्ठित किये गये; आप सुदूर पूर्वकी पहले बड़ी नाट हुर; सुदूर-पूर्वकी जल और मजकी फौजोंका और उस देशका शासन-कार आपकी छात्र अर्पण किया गया।

जापान अब देख रहा था, सब समझ रहा था; उसने सन् १९०३ ई० को जुलाईके अन्तमें रूसको लिखा, कि हमें परस्पर परामर्शकर ऐसे एक मित्रान्तमें उपनोत होना चाहिये, जिससे मञ्चूरिया और कोरियाके हम दोनोंके प्रभावको एक दूसरेके प्रकट प्रभावसे दानि न पहुँचे। रूस-सरकारके इस प्रस्तावसे सम्मति करनेपर जापानने अपना एक राजदूत सेण्टपिटर्सबर्ग भेज निम्नलिखित मर्मका एक प्रस्ताव-पत्र रूस-सरकारके सामने पेश किया,—

(१) चीन और कोरिया दोनों स्वतन्त्र रहें और उनके देशमें उन्हींका सच्चा अधिकार रहे।

(२) जगतकी कुल जातिधोंको इन दोनों देशोंमें जापान-राजिका समान अधिकार मिले।

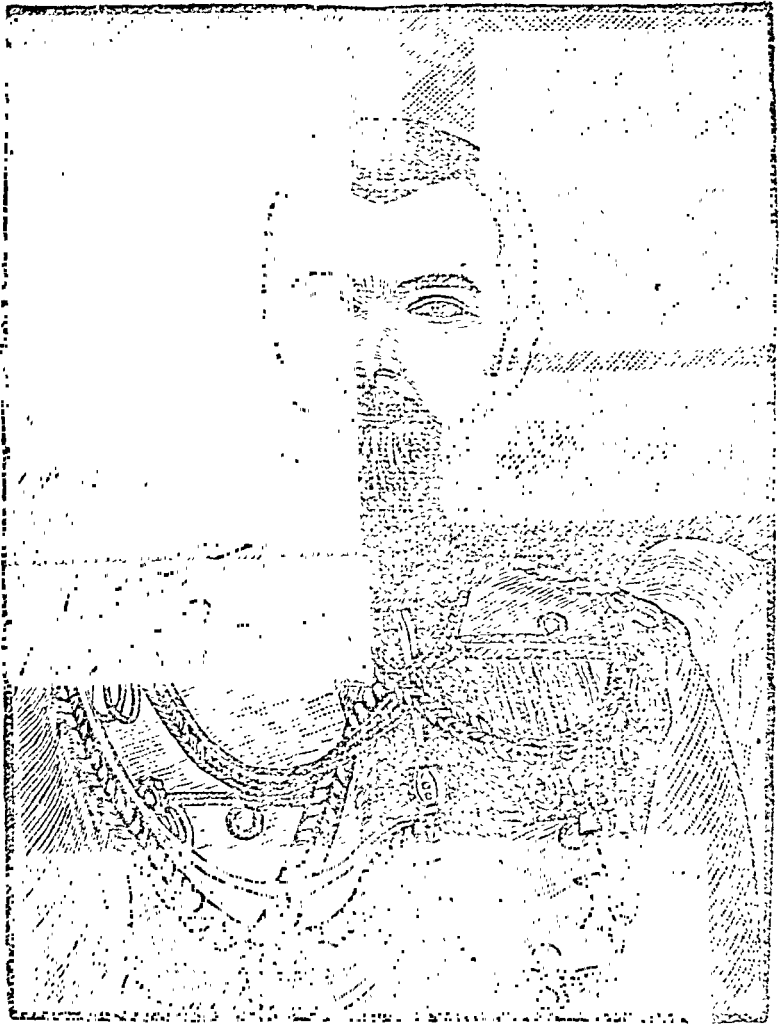
(३) आपसमें यह तय हो जाये, कि कोरियाकी हानिनाशकी बातमें जापानका गुरुत्व रहे और मञ्चूरियाकी रेलके व्यवहारमें रूसका।

(४) रूस यह जान ले, कि कोरियाको तुशाङ्गके सम्बन्धमें परामर्शादि देना जापानका एक स्वतन्त्र अधिकार है।

(५) रूस भविष्यतमें दक्षिण-मञ्चूरिया और कोरियाको रेल द्वारा न जोड़नेका वादा करे ।

यह प्रस्ताव रूस-सरकारको पसन्द न आये । कोई चार महीने बाद ११ वीं सितम्बरको रूस-सरकारने उत्तर दिया । उत्तरमें मञ्चूरियावाले प्रस्तावका कोई विक्र ही नहीं किया और कोरियावाला प्रस्ताव खाफ अस्वीकार कर दिया । जापानने रूस-सरकारको लिखा, कि एकवार फिर वह अपनी स्थितिपर विचार करे । सन् १९०४ई०को ६ठी जनवरीको रूस-सरकारका जवाब आया ; जिसमें रूसने नियम-पत्रमें एक नया नियम जोड़नेके लिये लिखा था । नया नियम था,—“जापान मञ्चूरियाको अपनी प्रभाव-सीमासे बाहर समझे ; इसके बद्दले रूस-सरकार जापान और अन्यन्य शक्तियोंको वह सुविधायें भोग करने देगी, जो उन्हें सान्व द्वारा चीन-सरकारसे प्राप्त हुई है ; इनमें सिर्फ इस्तिमरारी बन्दोबस्तकी सुविधाओंको भोग करने न देगी ।” रूस-सरकारने और भी कहा था,—“जापान मञ्चूरियामें वह सुविधायें उसी समय भोग सकेगा ; जिस समय वह कोरिया और मञ्चूरियाके बीच एक स्वतन्त्र भूखण्ड छोड़ देगा और कोरियाके किसी अंशमें किलाबन्दी न करनेका वादा करेगा ।” जापानके सामने एक नया प्रस्ताव और नई बातें उपस्थित करनेपर भी रूसने मञ्चूरियापर चीनका प्रभुत्व अक्षुण्ण रखनेकी बातका कोई जवाब न दिया । और यही एक प्रधान बात थी ; क्योंकि बिना इसके कुल प्रस्ताव अन्तःसारभूत ही जाते थे । इसीलिये जापानने १३ वीं जनवरीको रूससे फिर कहा,—

२ प्रस्तावोंपर फिरसे विचार होगा चाहिये



द्वितीय निकोलस ।

और यद्यत्नम्ब शीघ्र जवाब मिना चाहिये । जापा
नकी इस बातक खानने कोइ जवाब नहीं दिगा । खुसने लिख-
कर जवाब न देनेपर तो अपना कारवाइसे ताफ जवाब दे दिया ।
वह शीघ्र शीघ्र मुहूर पूंचके अपन जन वीर स्याकी मैन्च
सुइए करने लगा । तबरी मानमें अरधर-बन्दरमें छोड़ेवरे
सब भिक्कारर का के कोइ । अरधर जङ्गल जहाज जमा हो गये ।
जिनमें एक हजार तीन सौ पच म और अठारह हजार
सिप हो थे । मञ्चरियारे रसके कोइ पालाए हजार सिप हो
जमा हो गये और कोइ एक लाख पाठ हजार खुससे मञ्च-
रियाकी और क्रम क्रमसे मजे जानेकी थी । एक जवाइस्त
खुसो फोज अरधर-बन्दरसे बलू नदीके किनारे भेज दी गई
और अरधर-बन्दरका जङ्गी जहाजोंका बड़ा खुले सत्तमें
निकल आवाइकर अपनी शान दिखाने लगा ।

सन् १६०४ ई०को ३ वी प्रवरीसे बुद्धको घटा अधिक मघन
हुई । जापानने सबसे पहले अपने सौदागरीके जहाजोंकी
विदेशसे अपस मंगा जापानमें एकत्र किया । इससे उपरान्त
ही युरोपके जेगोया स्थानमें बने दो अजबल दारके छोटे
जङ्गी जहाज निशीं और कानूगाको शीघ्र जापान मंगा लेनेकी
व्यवस्था की । खुसके कितने ही जङ्गल जहाज अरधर-बन्दरकी
ओर आ रहे थे । निशीं और कानूगाने इन जङ्गी जहाजोंको
राहमें देखा और फरवरीके आरम्भमें सिङ्गापोर वा श्चङ्गीपुर
पहुंचे इन जङ्गी जहाजोंके आ का समाचार जापान सरकारकी
दिया । इस समाचारने और अरधर-बन्दर तथा मञ्चूरियाकी
खुसकी जल-साल-मैन्चकी गतिविधिके समाचारने जापानकी

श्रीव्र ही रूससे सन्धि-परामर्शका चकता हुआ मिलमिला तोड़ लेनेकी लिये बाध्य किया । ३ री फरवरीको जापान-राजधानी टोकियोके राजप्रासाद जापान-सन्नाट् मिकाडोके नभःपतित्वमें एक प्रयोजनीय मन्त्रणा-सभा बैठी । मारकुइम आइटो, राज्यके वयोवृद्ध राजनीतिज्ञगण और प्रत्येक विभागके प्रधान मन्त्री इस सभामें उपस्थित थे । कोई सात घण्टे तक तर्क-वितर्क और वाद्विवाद चला ; अन्तमें सभाने सर्वसम्मतक्रमसे मियर किया, कि सेण्टपिटर्सबर्गके जापान दूत मिष्टर कुरिमोको सन्धि-सम्बन्धी परामर्श छोड़ श्रीव्र ही जापान वापस आनेकी आज्ञा भेजना चाहिये । ६ टी फरवरीको जापान-दूतने रूसके विदेश सचिवसे अन्तिम भेंटकर अपनी सरकारको औरसे कहा,—“जापान सरकार अब सन्धि-सम्बन्धीय बातें करना नहीं चाहती ; वह अब अपने न्याय्य हार्थ धर उपयोगी खत्तोंको रक्षा आप करेगी ।” सिधा रूसो अन्धे राजनीतिज्ञोंके जगतके वाको सब समझदार समझ गये, कि इस बातका अर्थ है,—युद्ध ।

द्वितीय परिच्छेद ।

युद्धारम्भ ।

कोरिया-राजधानी सिउलसे कुछ फासिवेपर उसका छोटासा चेमलफो-बन्दर अवस्थित है। इसी गुमनाम बन्दरके बाहर सागर-बच्चपर महाभयङ्कर वृद्धत् रूस-जापान-युद्धका श्रीगणेश हुआ। मन् १९०४ ई०की पूर्वो फरवरी सोमवारको तीसरेपहर इस बन्दरसे कोई तीन मील दूर गहरे जलमें कितनी ही विदेशी शक्तियोंके जङ्गी जहाज लङ्गर डाले पड़े थे। अङ्गरेजोंका छोटा जङ्गी जहाज टेलवट, अमेरिकाका जङ्गी जहाज विक्सवर्ग, इटलीका एलडा, फ्रान्सका पसकल और रूसका अज्वल दरजेका छोटा जङ्गी जहाज वरियाग तथा तीसरे दरजेका छोटा जङ्गी जहाज कोरीज अपने अङ्गरसे बंधा अपनी जातीय पताका उड़ा रहा था। बन्दरमें अपेक्षाकृत सन्नाटा छाया हुआ था और वैदेशिक जहाजोंके अर्हानी उत्सुकता और चिन्तापूर्वक शीघ्र ही कोई भयङ्कर समाचार सुननेको प्रतीक्षा कर रहे थे। रूस-जापानके बीचका राजनीतिक सखन्व एकाएक टूट जानेका समाचार सुनकरके इस सुनधान चेमलफो-बन्दरमें भी पहुँच चुका था और उसीके फलसे इस समय जल और स्थलमें अमङ्गल-रूपक निस्तब्धता प्रत्यक्ष विराज रही थी।

सन्ध्या कोई पाँच बजे रूसके जङ्गी जहाज कोरीजने लङ्गर

श्रीब्र ह्री रूससे सन्धि-परामर्शका चलता हुआ निलसिला लोड़ लेनेके लिये बाध्य किया । ३ री फरवरीको जापान-राजधानी टोकियोके राजप्रासाद जापान-सन्नाट् मिकाडोके सभःपतित्वमें एक प्रयोजनीय मन्त्रणा-सभा बैठी । मारकुइस आइटो, राज्यके वयोवृद्ध राजनीतिज्ञगण और प्रत्येक विभागके प्रधान मन्त्री इस सभामें उपस्थित थे । कोई सात घण्टे तक तर्क-वितर्क और वाद्विवाद-क्षत्ता ; अन्तमें सभाने सर्वसम्मतिक्रमसे स्थिर किया, कि सेण्टपिटर्सबर्गके जापान दूत मिष्टर कुरिमोको सन्धि-सम्बन्धी परामर्श छोड़ श्रीब्र ह्री जापान वापस आनेकी आज्ञा भेजना चाहिये । ६ ठी फरवरीको जापान-दूतने रूसके विदेश सचिवसे अन्तिम भेंटकर अपनी सरकारको औरसे कहा,—“जापान सरकार अब सन्धि-सम्बन्धीय बातें करना नहीं चाहती ; वह अब अपने न्याय्य स्वार्थ और उपयोगी स्वत्वोंको रक्षा आप करेगा ।” सिवा रूसी अन्वै राजनीतिज्ञोंके जगतके बाकी सब रूसभक्तार समझ गये, कि इस बातका अर्थ है,—युद्ध ।

द्वितीय परिच्छेद ।

युद्धारम्भ ।

कोरिया-राजधानी सिउलसे कुछ फासिलेपर उसका छोटासा चेमलफो-बन्दर अवस्थित है। इसी गुमनाम बन्दरके बाहर सागर-वक्षपर महाभयङ्कर वृष्टत् रूस-जापान-युद्धका श्रीगणेश हुआ। सन् १९०४ ई०की पूर्वो फरवरी सोमवारकी तीसरेपहर इस बन्दरसे कोई तीन मील दूर गहरे जलमें कितनी ही विदेशी शक्तियोंके जङ्गी जहाज लङ्गर चले पड़े थे। अङ्गरेजोंका छोटा जङ्गी जहाज टेलवट, अमेरिकाका जङ्गी जहाज विक्सवर्ग, इटलीका एलशा, फ्रान्सका पसकल और रूसका ध्वज दरजेका छोटा जङ्गी जहाज वरियाग तथा तीसरे दरजेका छोटा जङ्गी जहाज कोरीज अपने कङ्गरसे बंधा अपनी जातीय पताका उड़ा रहा था। बन्दरमें अपेक्षाकृत सन्नाटा छाया हुआ था और वैदेशिक जहाजोंके जहाजी उत्सुकता और चिन्तापूर्वक शीघ्र ही कोई भयङ्कर समाचार सुननेकी प्रतीक्षा कर रहे थे। रूस-जापानके बीचका राजनीतिक सख्त एकएक टूट जानेका समाचार सुनकरके इस सुनसान चेमलफो-बन्दरमें भी पहुँच चुका था और उसीके फलसे इस समय जल और स्थलमें अमङ्गल-रूपक निस्तब्धता प्रत्यक्ष विराण रही थी।

सन्ध्या कोई पाँच बजे रूसके जङ्गी जहाज कोरीजने लङ्गर

उठाया और शायद गिरदावरीके किये धीरे धीरे खुले समुद्रकी ओर चला। अभागे कोरीज ! तुम्हें खबर नहीं थी, कि रूसके जल-सैन्य के वेड़ेमें बहुत ही लज्जु होकर भी तुम कैसा महान् गुरुभार अपने ऊपर लेने चले थे ; यह बात तुम यदि जानते, तो भयसे कांप अपने लङ्गरसे बंधे रहते, जल-पथ द्वारा समुद्रकी ओर अग्रसर होनेका साहस न करते। जिस युद्धके पहले रूसकी असीम अपमान सहना पड़ा, उस युद्धका स्तवपात्र तुम्हींने किया। चेमलफो-बन्दरके सामने ही एक टापू है। कोरीज जैसे ही इस टापूकी बगलसे निकल खुले समुद्रमें आया, वैसे ही कोरीज-कप्तान बोलेव और जहाजी सिपाहियोंको एक आश्चर्यचक्रेक दृश्य दिखाई दिया। उन लोगोंने देखा, कि कितने ही बारबरदारीके जहाजोंकी रक्षा करता हुआ जापानके नौ-सैन्यका एक स्कूडरग चेमलफो-बन्दरकी ओर चला आ रहा था। स्कूडरगमें सिवा तारपेडो नावोंके पांच छोटे जङ्गी-जहाज और असासा नामक एक बड़ा जङ्गी जहाज था। पांचो छोटे जङ्गी जहाजोंमें हरेक जहाज कोरीज का आधा था सही ; किन्तु असासा कोरीजका तिगुना या चौगुना था। रूस-कप्तान बोलेवी असासाको देखा ही समझ गये, कि यह स्कूडरग जापानके कुल नौ-सैन्यापतियोंसे कम उन्न रिबर एडमिरल उरिउके अधीन है। कम उन्न होनेपर भी अमेरिकामें युद्धविद्या सीख इन उरिउने चीन-जापान-युद्धमें बड़ी सुख्याति प्राप्त की थी और रूस-कप्तान बोलेवी इस सुख्यातिसे अनभिज्ञ नहीं थे।

किन्तु भावीको प्रवृत्तता कौन रोक सकता है ? जापानके

सुप्रसिद्ध गौ-सेनापते उरिउकी अधीन इनका बड़ा वेड़ा देख-
कर भी महान्द कपलाग बोलिवकी छांखें नहीं खुलीं ।
उन्होंने जापानके साहसका परिचय सामने पाकर
भी जापानको तुच्छ हो गिना । जापानी जङ्गी जहाजोंके
आगे आगे पड़ेको तारपेडो नावें थीं । उनमें एक कोरीजके पास
थाई । जैसे ही वह नाव कोरीजके पास थाई, जैसे ही कोरी-
जने इन महान्दरकी नीव रखी—उसकी एक तोपका एक
गोला नावकी ओर गया । यह गोला नावको नहीं लगा ;
इसके बड़े कोरीजकी ओर नावने ही तारपेडो छोड़े । तार-
पेडो निशानपर नहीं पड़े ; पड़ते तो कोरीजकी समाप्ति हो
जाती । तारपेडो देख कोरीजको छांखें खुलीं ; वह भय-
विह्वल हो जापानी तारपेडो-नावके सामनेसे भाग बन्दरमें
जापान आया और वरियान जहाजकी बगलमें खड़ा हुआ । जा-
पानी जङ्गी जहाजोंका वेड़ा बन्दरके बाहर खड़ा हुआ और ता-
रपेडो-नावोंकी रक्षामें बारबरदारीके जहाज बन्दरमें पहुँचे । इन
जहाजोंके चार बटालियन फौज या कोई तीस चार सिपाही उ-
तरे ; इनमें कुछ सिपाहियोंने चेमलफो-बन्दरपर अधिकारकर जा-
पानकी राज-पताका उड़ाई और कुछ सिपाही कोरिया-राजधानी
मिडलपर अधिकार करनेके लिये रवाना हुए । बन्दरमें खड़े
रूसके दोनों जहाज यह सब देख और भी घबराये ।
जापानी सिपाहियोंके जहाजसे उतरने और चेमलफोपर कब्जा
करनेके समय दोनोंने किसी तरहको आपत्ति प्रकाश नहीं की ।
अब चेमलफो-बन्दरमें जापानी फौज थी और बन्दरके बाहर
जापानी जङ्गी जहाज ; इन दोनोंके बीच रूसके दोनों जहाज थे ।

ऐसे समय रात्रि हुई; मानो सूर्यदेवने उस दिगको कारर-
वाईपर रात्रिका काला परदा ढाढा ।

पूर्वी फरवरीको मन्था समय चेमनफोमें स्विफ्ट इतना ही
हुआ; किन्तु इसी दिन इस घटनाके कोरुदः घण्टे बाद
अर्द्धरात्रिमें चेमनफो-बन्दरसे बहुत दूर अरथर-बन्दरमें रूस-
जापानके बीच अच्छा-खासा एक जल-युद्ध हो गया। चेमन-
फोकी छेड़छाड़का परिणाम लिखनेसे पहले अरथर-बन्दरका
यह जल-युद्ध लिख देना उचित जान पड़ा है। शायद
अरथर-बन्दरके जङ्गी अहाजोंका वेड़ा दिखा जापानको
भयभीत करनेके लिये रूसने अपने बड़े साट अलकमि-
फको लिखा था, कि अरथर-बन्दरके वेड़ेकी खुले समुद्रमें
घुमाया चाहिये। यह आज्ञा पा रूसी वेड़ा अरथर-बन्दरसे
निकला और दूर दूरका चक्कर लगा गया फरवरीको साँट
अरथर-बन्दरके मुहानेपर दुर्भेदा पार्वत्य दुगकी रक्षामें उसने
लड़र डाला। इसके बाद ही यानी ६ टो फरवरीको
रूस-जापानके बीचका राषनेतिक सम्बन्ध टूटा। उसी दिन
सन्धा समय रूस-सरकारने अपने "याफिशियल मेसेज्जर" द्वारा
यह सम्बन्ध टूटनेका समाचार अपने सुदूर पूर्वक बड़े साट अल-
कमिफके पास भेजा। अलकमिफ जान गये, कि इस समा-
चारका अर्थ युद्ध है; किन्तु यह जानकर भी उन्होंने अरथर-
बन्दरसे बाहर पड़े वेड़ेको रक्षाका वैसे कोई उपाय नहीं
किया।

पूर्वी फरवरीकी अर्द्धनिशा समयगनप्राय थी। बहुत ही
सुदृढ़ किलाबन्दीसे सुरक्षित अरथर-बन्दरके मुहानेके बाहर

सात रूसी जङ्गी जहाज लङ्गर डाले पड़े थे। वह सब सवधानकर बुद्धके लिये तय्यार थे, उनको छोर्ट, वड़ी क्लृप्त तोर्ण कल-गुरजोंसे लेस यथास्थान रखी हुई थीं। सातो जङ्गी जहाज अञ्चल दरजेके थे; उनके नाम यह हैं,—पेट्रोपा-वालस्क, पोलटावा, सिवस्तपोल, पेरेंसवोट, रेटविजा, पवेदा और चारविष। इनकी वगल होमें अञ्चल दरजेके पांच छोटे जङ्गी जहाज थे,—नाविक, वयान, डायना, अस्कोल्ड और वोपरिन। जिस जगह इन जङ्गी जहाजोंका बेड़ा लङ्गर डाले पड़ा था, उसके ऊपर ही अरधर-वन्दरके बहुतरे किलोमें एक घ.व.दस्त किला था, जिसकी पर्वत सुर.। बनानेवाली वड़ी वड़ा तोर्ण समुद्रको और सुह खोले नाक रही थीं। सुदूर पूर्वके बड़े लाटने विचार किया था, कि इस सुदृढ़ दुर्गके समीप या इस सुदृढ़ बंदे पर कौन पू. व. आक्रमण कर सकता है ?

तीन तारपेटी नावें इस बंदे के समने समुद्रमें गिरदावरी कर रही थीं। बंदेकी बाकी सब छोटी छोटी जङ्गी नावें वन्दरके भीतर थीं। वन्दरके किनारे लगी जलतो हुई कालटेने जगमगा रही थीं। वन्दरको वाली या पोर्ट-अरधर नगरमें एक सरकस अचना तमाशा दिखा रहा था। किले और जहाजके बहुतरे सिपाही और अफसर सरकसमें बैठे तमाशा देख रहे थे। समुद्र-जल स्थिर था, वायु मन्द मन्द बह रही थी,—सुनिर्मल आकाशमें प्र. प्र. सुस्करा रहे थे। जैसे जैसे रात भीग रही थी, जैसे जैसे सन्नाटा बढ़ रहा था। जवरदस्त रूस दूसरेके देशपर अतिकारकर—दूसरेके खार्थपर खास डाल—अपने मुजबजपर निर्भर हो सुख-निद्राणा आनन्द उपभोग करनेकी चेथा कर

सकता था ; किन्तु जो जापान रूस द्वारा बारंबार अपमानित
तिरस्कृत लज्जित हो चुका था—जो जापान दिनरात अपनी
खतन्नता अपना यथासंभव नाम होनेकी विभीषिका
प्रत्यक्ष कर रहा था, वह जापान सुख-शान्तिके साथ भीठी
नोंदका आनन्द कैसे उपभोग कर सकता था ? अर्द्धनिशामें
कोई पाव घण्टा वाकी होगी ; ऐसे समय अरधर बन्दरके बाहर
हलकासा एक शब्द हुआ । इस शब्दके उपरान्त ही एका-
एक मानो मन्त्रबलसे रूसके जङ्गी जहाजोंमें हलचल मच गई ;
“मर्चलाइट” नामक महा तेजःविशिष्ट प्रदीपकी व्योम्नि इधर-
उधर फैलाने और कलशर तोपोंके अविराम शीलः-वृष्टि होने
लगी । जापानने रूसी जङ्गी जहाजों पर आक्रमणकर इहारम्भ
किया ।

युद्धका । यद्धर कोल हल प्रारम्भ हुआ । जापानी तारपेडो-
नवें समुद्र-गर्भ विदीर्ण करती और गाले तथा तारपेडो भारी
रूसी जङ्गी जहाजोंकी पंक्तिके सामने पहले किनारेसे दूसरे किना-
रेतक और दूसरे किनारेसे पहले किनारेतक दौड़ने लगीं । इनसे
कुछ घण्टीपर खुले समुद्रमें जापानके नौ-सेनापति एडमिरल
टोगोके देडेके अगुआ चार अथवा दसके छोटे जङ्गी जहाज
खड़े धुंधले धुंधले दिखाई देते थे । इन जङ्गी जहाजोंपर
रूसकी किले और जहाजोंकी बड़ी बड़ी तोपें गोलें वरसाने
लगीं और छोटी छोटी तोपें तारपेडो नावोंकी दक्षिण ओर अग
उमलने लगीं । इस अग्नि-वृष्टि की कोई परवा न कर तारपेडो-नवें
बराबर दौड़ती और तारपेडो दौड़ती रहतीं । अनुभवहीन रूसके
जापानी अफसरोंमें मर्चलाइट नामका अपने जहाजोंकी स्थिति और

अच्छी तरह प्रकट कर दी और जगती तारपेड़ो-नावोंको उन जहाजोंको तक ताककर तारपेड़ो चलानेका अच्छा मौका मिला । जापानके चारों छोटे जङ्गी जहाज भी निकम्मे खड़े नहीं थे ; उन सबके अपनी बड़ी बड़ी तोपोंसे रूसके जङ्गी जहाजों और किलेपर गोले बरसाना आरम्भ किया । कोई बाध घण्टे तक इसीतरह रह गया । इसके उपरान्त तारपेड़ो-नावें अपनी काम समाप्तकर दूर खड़े अपने छोटे जङ्गी जहाजोंके पास लौट गईं और छोटे जङ्गी जहाज उन्हें ले खुले समुद्रमें चले गये ; रूसके इतने जङ्गी जहाज मौजूद थे ; किन्तु एकने भी जापानो नावों या जहाजोंका पीछा करनेका साहस नहीं किया । नौ-सेनापति एडमिरल टोगोने इस युद्धके उपरान्त अपने सम्राट् सिंहाडोको तार दिया,—“८ वीं और ९ वीं फरवरीके मध्यभाग अर्धनिशाने जापानी तारपेड़ो-नावोंके अरधर-बन्दरके बाहर रूसके जङ्गी जहाजोंपर आक्रमण किया । जङ्गी जहाज रेटविजां और जारविच और छोटे जङ्गी जहाज पोशटावेलें सगाव बना दिया । घराहोंका आकार अभीतक अज्ञात है । विस्तारित विवरण श्रीमान्को सेवानें यथासमय भेजा जायेगा ।” टोगोने अपने सम्राट्को जो आश्चर्यग्रन्थ नाए शब्दोंमें जो समाचार भेजा, वह अक्षर अक्षर खल्य था । प्रातःकालके प्रकाशमें रूस-बिधादियोंने देखा, कि उनका जङ्गी जहाज जारविच और पोलटावा और छोटा जङ्गी जहाज पलाडा टूटफूटकर बहुरत ही निकम्मा हो गया है ; शीघ्र ही उसकी मरम्मत होनेकी कोई आशा नहीं । इस युद्धमें एक और रूसकी इतनी क्षति हुई ; दूसरे ओर जापानके सिर्फ चार आइसी

मरे और चञ्चल जलमी हुए। एक भी तारपेड़ो नाव या जड़ो जहाज तो वैसी कोई चोट नहीं आई। जिस दिन युद्धारम्भ हुआ, उस दिन चेमलको और अरथर-बन्दरमें रूस-जापानने ऐसी ही कार्रवाई की।

धर्मो परवरीकी बड़े सवेरेसे ही चेमलकोमें मारकाटकी तयारी आरम्भ हुई। अथरे कोई चर बजे रियर एडमिरल उरिउने वरियागके प्रधान अफसर कपतान रोडनेफके कहला भेजा,— “दोपहर बारह बजेके उपरान्त भी यदि तुम्हारा जहाज और कोरीज जहाज बन्दरमें रहेगा, तो हम बन्दरमें घुस तुम दोनोंपर आक्रमण करेंगे।” यह समाचार पा वेधारे रोडनाफ बड़ी मुश्किलमें पड़े। साहाय्य पानेकी क्षीण आशासे भी वह अपनी क्षात्री मजबूत बग नहीं सके। जापानी वारवरदारोके जहाजोंका आगमन देखकर ही वह समझ गये थे, कि जापानने रूसके प्रधान वेड़ेको रोकनेका पूरा सामान कर लिया है; नहीं तो वह यही वारवरदारीके जहाजोंके लानेका साहस हो न करता। बड़े लाट अलकसिफके मित्र युवक कपतान रोडनेफ बड़े ही दृढ़प्रतिज्ञ और धीर-गम्भीर प्रसिद्ध थे। कुल सामानोंको देख आपको विश्वास हो गया, कि वयना कठिन है; किन्तु नष्ट होनेसे पहले आपने एकवार रूसका नाम और पौरुष प्रकट करना स्थिर किया। जबतक समय मिला, तबतक दोगे जहाज बन्दरमें पड़े रहे। अन्तमें दिन कीड़े खाड़े ग्यारह बजे दोनों लङ्गर उठाये और वज्रसे “God Save the Emperor” गीत गाते बन्दरसे बाहर निकले। खुले समुद्रमें पहुँचते ही दोनों जहाज एक और वेतहाभा भागे। उरिउके जहाज

उनके पीछे पीछे दौड़े । इस दौड़में दोनों ओरसे लगाता गोलों
चल रहे थे । जापानी गोलोंकी चोटसे रूसों जहाजी निपाही
ध्वस्त गये । उनका प्रायः हर एक निगाना खाली जाता था । कोई
साफ़ बारह बजे तक दोनों ओरसे खू । गोलाबाजी हुई । इसके
उपरान्त रूसके दोनों जहाज एक टापूका सहाय ले विपदस्तचक
चिह्न दिखाने लगे । कहत हैं, कि जापानी जहाज यदि चाहते,
तो गोलोंकी चोटसे रूसके दोनों जहाजोंको तोड़फोड़ समुद्रमें
डुबा देते ; किन्तु जैसे ही रूसके जहाजोंने वि.दस्तचक चिह्न
दिखाये, जैसे ही जापानी जहाजोंने गोला बरसाना बन्द कर
दिशा । यह मुख्यतः पा दोनों रूसी जहाज भागकर बन्दरमें
वापन आये । जापानी जहाज बन्दरसे बाहर ठहर रूसी
जहाजोंकी गतिविधि देखते रहे ।

बन्दरमें लौट दोनों जहाजोंने उस जगह लङ्गर डाला
जिस जगह विदेशी शक्तियोंके कितने ही जहाज खड़े थे ।
इस अव्यकाशके युद्धमें दोनों जहाज बहुत कुछ टूटफूट चुके
थे । विशेषतः बरियाम जहाजका ऊपरी भाग गोलोंकी
चोटसे चकनाचूर हो चुका था । देखनेवाले समझ गये,
कि इन दोनोंका अन्तकाल अव्यक्त नन्निकट है । दर्शकोंका यह
अनुमान ठोक निकला ; रूसके जहाजी निपाहियोंने बरि-
याम और बारबरदागीके एक रूसों जहाज सङ्गारीको डुबा
दिशा और कोरीजकी बेग लता दी ; जल-बलकर कुछ देर
बाद वह भी समुद्र-गर्भमें गया गया । इन जहाजोंके निपा-
हियों और अफसरोंको विदेशी जहाजोंने अपने जहाजोंपर
कड़ा लिया । जिस समय रूसी जहाज डूब या जल रहे थे,

उस समय उसने सिपाही और अफसर विदेशी जहाजों पर बटे बटे जातीय गोन गा रहे थे। दिनको समाप्तिके साथ साथ चेमलफोके रूबी जहाजोंकी ममाप्ति हो गई। चेमलफोके में जल और स्पेक दोनोपर जापानकी विजय-वैजयन्ती फहराई।

चेमलफोका दि. भरका उद्य वर्णन किया गया; किन्तु अरधर-बन्दरका अभी याकी है; इसलिये घाटोंकी व्यवहार फिर अरधर-बन्दरकी ओर ध्यान देना चाहिये। वहाँ है, कि ६ वीं फरवरीकी अरधर-बन्दरके सामने जब स्टैंडिंग उदित हुआ; तब उनका रङ्ग अत्यधिक लाज था। उनका प्रकाश फेलमेपर दूर खुले समुद्रमें तीग जात्राकी जहाज दिखाई दिये; सम्भवतः तीनों यह देख रहे थे, कि उस अर्धनिद्राके आक्रमणसे जापानी तारपेटो-नाई रूबी बड़ेको कितना क्षति-ग्रस्त कर सकीं। घाटोंतक तीनों जहाज अपनी जगह खड़े अरधर-बन्दरकी ओर देखते रहे; रूबी बड़ेने उनकी ओर अग्रसर हो उन्हें घटानेका कोई यत्न नहीं किया। दिन कोई ग्यारह बजे जापानी जङ्गी जहाजोंका समूह बड़ा क्षितिजमें प्रकट हुआ। बड़ा ही मनोहर और आनन्दार दृश्य था। छोटे बड़े कुल सोलह सुन्दर और विपुल जङ्गी जहाज कदायदके साथ आगे बढ़ रहे थे। इस बड़ेमें दूः बड़े जहाज थे—सिक्काशा, हेटिउब, आसाई, शिकिशिमा आशिमा और फुजी। इनमें प्रथमोक्त चारो व्यवस्था दरजेके साथ-साथाने सुसज्जित थे और आगके बड़ेसे बड़े जङ्गी-के साथ उद्धार ले सकते थे। बाकी जहाज भी नये हल

के छ और उत्तमोत्तम अस्त्र-शस्त्र सजे हुए । यह कुल जहाज "जापानसे नैलखन" या प्रधान नौ-सेनापति टोगोके अधीन थे । अन्वश द जेके छोटे जङ्गी जहाजोंमें दृष्टुमा सबसे अच्छा था, छोटा जङ्गी जहाज ब्रयो,--खासा बड़ा जङ्गी जहाज था । इस समय यह सहकारी नौ-सेनापति कमीसुराके अधीन था । कमीसुरा इसपर बड़े बड़े के हमरे विभागकी परिपालना कर रहे थे । इसी जगह जापानी नौ-सैन्यके प्रधान सेनापति टोगोका थोड़ासा हाल सुन लीजिये । चीन-जापान-युद्धमें जिसने युद्धका श्रीगणेश किया था, वह यही टोगो थे ; गोलकी एक ही चोटसे इन्होंने चीनके जहज नौशिङ्गकी सागरके अतल-तलमें पहुँचाया था । इसके उपरान्त सिका-शुनें स्वार हो सागर-वक्षपर जापानका अधिकार-विस्तारकर जापान-सरकारकी गौरव-वृद्धि की थी । टोगो छोटे, मोटे, धीरे, गम्भीर, साहसी और दृढ़प्रतिष्ठ है । कुछ दिनों आग्ने अङ्गरेजोंके जहाज बरसेधरमें रह नौ-युद्ध-विद्या सीखा थी । उनके सहकारी एडमिरल कमीसुरा भी बड़े ही बहुद-शी और बहुमान्य हैं । ऐसे ही टोगो और ऐसे ही उनके सहकारी कमीसुराकी अधीनतामें जापानी जङ्गी जहाजोंका बड़ा अरधर-इन्दरके खामने स्थितिजमें प्रकट हुआ ।

रूसी दांतपर दांत रख उत्सुकतापूर्वक इस नवागन्तुकका काम देखनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे । वह आग्ने जहाज घुमा-फिरा रहे थे ; आगे बढ़ जापानपर आक्रमण करनेके लिये नहीं ; बल्कि जापानी गोलोंका निशाना न बननेके लिये । दिकेके तोपखानोंकी हरेक तोपके पास गोलन्दाज खड़े थे ;

दीवार भीतर सिपाही छुड़ें थे। रूसकी ओरसे दूर था पाम दोनों तरहके युद्धकी पूरी तयारी को गई थी। किन्तु जापानी आँख मूँद आगमें फाँद पड़नेको बुद्धिमत्ता नहीं समझते; वह अपने बख और अपने सामने किसे बलको अच्छी तरह जानते थे। वह दूरसे गोले बरसा रूसी गोलन्दार्जोंको अयोग्यता और अपनी गोलन्दार्जोंके गुणसे लाभ उठाना चाहते थे। कोई छोटे ग्यारह बजे एकाएक जापानी जहाजोंमें आगकी चमक उत्पन्न हुई और कोई सवा चार सौ सेर छोटेबड़े गोले अरधर-बन्दरके मुहानेपर फिरते रूसी तारपट्टी-नावोंके बीच बरस गये, भयङ्कर शब्दसे जलस्थल परिपूर्ण हुआ। रूसी तोपें भी आग बरसाने लगीं। रूसी बड़ेने यह किया, कि वह अपने छोटे जङ्गी जहाजोंको आगे और अपने जङ्गी जहाजोंको पीछे रख किलेसे सिर्फ एक मोलके फासिलेपर उहर जापानी जङ्गी जहाजोंपर गोले बरसाने लगा। रूसी तोपोंके गोले एक तो निशानेपर पड़ते नहीं थे; दूसरे बहुतेरे गोले बीच हीमें रह जाते थे। उधर जापानी तोपोंके गोले ठीक निशानेपर पड़ते थे और बहुत दूरतक जाते थे। रूसी जङ्गी जहाजों और किलोंपर जापानी तोपोंके गोले ओलिकी तरह बरसते थे। इसके जवाबमें किलेके तोपखाने अपनी बड़ी बड़ी तोपोंसे जापानी जहाजोंको लक्ष्यकर फेरपर फेर कर रहे थे। किलेकी तोपोंके गोले बड़े ही वजमी और मुकीले थे; निशानेपर लाते ही जङ्गी जहाजका फौलादी चादर कागजकी तरह फाड़ सकते थे। यह भयङ्कर गोले नेपर फटकर टुकड़े टुकड़े होनेके साथ साथ ऐसा विधात

धुँआं उत्पन्न करते थे, जिनके गन्धसे मनुष्य मक्खियोंकी तरह मरते थे। मनुष्यके प्राणनाशके लिये मनुष्य ऐसे ही गोले चला रहा था। अरधर-बन्दरका सुहाना जिस पर्वत-मालासे बना है; इस युद्धमें उस पर्वतमालामें सर्व्वतसे तोपें दग रह्यो थीं; बड़े ही सुदृढ़ और आश्चर्य्यरूपसे वह सुहाना रूसने सुरक्षित किया था। इतने रूसी गोले जापानी जहाजोंकी तोड़फोड़ निरुत्था बनाने या डुबा देनेके लिये यथेष्ट थे; किन्तु रूसके दुर्भाग्य और जापानके सौभाग्यवश बहुत कम रूसी गोले जापानी जहाजोंतक पहुँच सकते थे।

जापानी जहाज बड़ी ही सुव्यवस्थाके साथ काम करते थे; उनके गोले ठीक निशानेपर पड़ते थे। जहाजी अफसर और सिपाही लड़नेके लिये निरान्त उत्सुक रहतेपर भी बड़ी ही शान्ति और धैर्य्यके साथ अपना हरेक काम करते थे। जान पड़ता था; म'तो वह सब युद्धमयलमें नहीं; बल्कि नकली लड़ाईमें अपना काम कर रहे थे। टी.पोकी दृष्ट्या उनके अधीन प्रत्येक अफसरमें न्यूनधिक परिमाणसे दिवाई देनी थी। चलचल और अनुचित जल्दवाजी नामकी भी नहीं थी। क्रम क्रमसे तोपें कूटती थीं और क्रम क्रमसे गोले जाकर रूसी जहाजों और किलोंपर गिरते थे। रूसी जहाजों हीपर अधिक गोले गिरते थे। जापानी जानते थे, कि सुदृढ़ दुर्गपर गोले चला थोड़ासा नुकसान पहुँचानेकी अपेक्षा छोटी जहाजों हीकी निकम्मा बनाना अधिक उपयोगी है। किन्तु नमय नमयपर दो चार बड़ बड़ गोले सुहानेकी किलावन्दीपर भी जा पड़ते थे। दो जापा गोलोंने किलावन्दीके भीतर फट रूसियोंकी बड़ा नुकसान

पहुँचाया । कोई तीस गोले सुजानेकी पञ्चतमाला पारकर अरधर-बन्दर नगरमें गिरे । इस गोलेन्द्रावीस जापानने अरधर-बन्दर के प्रत्येक रूसीके मनमें घोर आघात उभर कर दी । जिस समय दोनों वेड़ोंके बीच गोले चल रहे थे, उस समय रूसी वेड़ोंके कुल जहाज अपनी किलाबन्दीकी तीपोंका आश्रयकर किनारेमें कोई एक मील दूर खड़े थे ; अपनी जाहज आगे बढ़नेका साहस नहीं करते थे । सिर्फ रूसका दूसरे दर्जेका एक छोटा जह्जी जहाज अतिद्रुतगामी डायना अपने साथी जहाजोंके साथ खड़ा रह न सका ; हिम्मतकर गोले बरसाता आगे बढ़ा । जापानने जह्जोंमें उसे अपनी ओर आने दिया ; इसके उपरान्त विशालाकार भिकाशा और आकाशीने डायनापर अविराम गोला-वृष्टि आरम्भ की । डायना गोला-वृष्टिके आरम्भ हीमें यदि फुरतीसे न भागता, तो शायद कभी भाग न सकता । फुरतीसे भागने पर भी उसके पेटमें गोलोंके बनावे बड़े बड़े छुराख हो गये । इन छुराखोंसे उसमें पाणी भरने लगा । रूसके छसकोल्ड और नाविक नामक और दो छोटे जह्जी जहाज और पेटावा नामक बड़े जह्जी जह्ज जकी भी रोमी ही दशा हुई । टूटे फूटे यह चारो जहाज बहुत दिनोंतक निकम्मे रहेंगे । दिन बारह और एकके बीच गोलन्द्रावी घटकर बन्द हुई और टोगोने उस दिनका कार्य समाप्तकर अपने वेड़ोंको लौटनेकी आज्ञा दी । इस युद्धमें टोगोके वेड़ोंका कोई जहाज निकम्मा नहीं हुआ । कुछ जहाजोंको जो-दलकी चोटें आई थीं, वह शीघ्र ही मिट जाने लायक नहीं । जिस समय टोगोका बड़ा लौट रह था, ठीक उसी

समय पूर्वो ज जाज इ रा जापान-दूत रुसराजधान से जापान लौट रहे थे। जापान-दूतको यद्धारम्भ हो की खबर नहीं थी। उन्हो वहां जापानो वेड़ा देख बड़ा ही आश्चर्य हुआ; अन्तमें कुछ बातें समझ उन्होंने और उनके साधियोंने जापानकी जय-कामना करते हुए गगन भेरी हर्षध्वनि की। यह हर्षध्वनि नाचती हुई उर्मिघाणाको चमट्टीगोके वेड़ेमें घुम सुशीतल मन्द सुदीय वायुमें मिल फूल-प्राप्तिके लिये प्रादुर्द सं-लोक पहुंची।

इस्तरह ६ वीं फरवरी समाप्त हुई। इस दिन चेमलफो और चरघर बन्दर इन दोनों स्थानोंके जल बुझन रुसके छोटे-वड़े कुल नौ जहाज निकलने तथा जलमग्न हुए। जापानके लिये आरम्भ हीमें यह बहुत बड़ी विजय थी और रुसके लिये बहुत बड़ी पराजय। फौजके कट जानेसे शीघ्र ही दूसरी फौज तय्यार की जा सकती है, पर जङ्गी जहाजोंके नष्ट हो जानेसे शीघ्र ही दूसरा जङ्गी जहाज तय्यार किया जा नहीं सकता। एक जहाजको तय्यारीके लिये कई वर्ष चाहिये। कितने ही लोग कहते हैं, कि रुस असावधान था; इसीलिये जापान उनपर-आक्रमणकर विजय लाभ का सका; रुस यदि सावधान रहता, तो उलटा जापान हीको नुकसान पहुंचता। पर यह लोग रुसको असावधानीका दोषा कोई प्रमाण दे नह सकते। असलमें रुस सावधान था और सिर्फ आक्रमण रोकने होके लिये नहीं, बल्कि आक्रमण कारिके लिये भी तय्यार था। उसका वेड़ा सजधजकर चरघर-बन्दरकी सुदृढ़ किलाव खड़ा था; शीपको कोई भी नौ प्रतिक उस रुसी

आक्रमणकर विजयप्री लाभ करनेकी आशा कर नहीं सकते थे; क्योंकि उस समयतक जितने युद्ध हुए थे, उनमें ऐसे सुरक्षित वेड़े पर आक्रमण करनेका फल अत्रान्त शोषनीय हो चुका था। इससे पहल जापान भी रूसी वेड़े पर आक्रमण करनेका साहस न करता; किन्तु इस समय उसने एक ऐसे कौशलके साथ युद्ध करना प्यार किया था; जैसे कौशलके साथ अबतक युरोपकी किसी शक्तिने किया नहीं था। युरोपमें पलभरमें बड़े बड़े जड़ों जहाजोंको समुद्रमें डुबा देनेवाले सिगारकी सुरतके तारपेडो अस्त्रका आविष्कार हो चुका था सही, फ्रांसके एडमिरल आर्वी और चार्मसके खोले नौ-युद्ध-शिक्षाके "जिउन एकोल" स्कूलमें तारपेडो चलानेकी शिक्षा दी जाने लगी थी सही; किन्तु अबतक तारपेडोपर भरोसाकर किसी जल-युद्धमें इससे काम लिया नहीं गया था। युरोपमें इसपर उतना भरोसा किया जाता नहीं था। और तो क्या,—जां ब्रिटानिया समुद्रकी मालिक, कहलानी है, उसके भी नौ-विभागमें तारपेडोका उतना आदर नहीं था। जापानने परीक्षाकर—अपने यहाँ निर्माणकर इसी तारपेडोकी अपना अमोघास्त्र बनाया था। उसके नौ-विभागको इसपर इतना विश्वास हो गया, कि उसने अपनी जातिथी खिलकी हुई बलियो जापानी नवयुवकोंको छोटी छोटी तारपेडो-गाँवों के अत्यन्त भयङ्कर वेड़े और सुरक्षित दुर्ग दोनोंकी सम्मिलित शक्तिसे टकराये अपना मतलब पूरा करनेके लिये भेज दिया। गिनीकी तारपेडो-गाँव इतने बड़े वेड़ेमें खलवली डाल-पैरते हुए लौह-दुर्ग जैसे कितने ही जड़ों जहाजोंको तोड़फोड़

सहीमलामत वापस लौट आ । यह देख यूरोपकी आंखें खुल गईं ; उसे जापानने त हीका मर्म समझा दिया । अब यूरोपके ना-युद्ध-विद्याविशारदोंका यह माननेमें तनिक भी सङ्कोच न होगा, कि जरासी एक तारपेडो-नाव वेड़ेके सबसे बड़े जङ्गो जहाजको चटपट मसुद्र-वचमें रुवा सकती है । सुतरां जापान इस प्रथम युद्धमें रूसकी असावधानीसे नहीं ; वरं अपने अपूर्व बुद्धिवल और साहसिकतासे जीता ।

तृतीय परिच्छद ।

जल युद्ध ; स्थल-युद्धकी तयारी ।

दो वीं फरवरीको युद्धारम्भ हुआ और इसमें दो दिनों बाद १० वीं फरवरीको दोनों शक्तियोंने यथानियम युद्ध-घोषणा की। रूस-सम्राट् ज.रने घोषणा की,—“हम इस विज्ञापन द्वारा अपने राजात्त प्रजाको सूचित करते हैं, कि शान्तिप्रियता को बजह हमने सुदूर पूर्वमें शान्ति स्थापन करनेका बड़ा यत्न किया। इसी उद्देश्यसाधनके लिये हमने उस सन्धिके परिवर्तन स्वीकार कर लिया, जो सबसे पहले कोरियाके सम्बन्धमें रूस और जापानके बीच हुई थी। इस सम्बन्धमें अभी कोई अन्तिम फैसला होने नहीं पाया था; दोनों शक्तियोंके बीच सन्धि-परामर्श चल रहा था। ऐसे समय एकाएक जापानने सन्धि-परामर्श स्थगित करने और रूस-जापानके बीच भा राजनीतिक सम्बन्ध टूटनेकी सूचना दी। बिना वजह सूचना दिये, कि इस सम्बन्ध टूटनेके उपरान्त ही युद्धारम्भ होगा; जापान-सरकारने अपना तारपेड़ो-तारोंको अरथर बन्दरके सुदानेपर खड़े हमारे बेड़ेपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। सुदूर पूर्वमें अपने बड़े खाट द्वारा इस युद्धारम्भकी सूचना पर हमने उसी समय जापानका लड़ाईका आवाहन स्वीकारकर उससे युद्धारम्भ करनेकी आज्ञा दी। इस-घोषणाका प्रचार करते हुए दोनों साहाय्य पानेकी आशा करते हैं, अपनी राज-

भक्त प्रजाके सम्मिलित बलपर बड़ा भरोसा करते हैं और अपनी जल-स्यल-रैन्चकी यशोप्राप्तिके लिये जगदीशसे प्रार्थना करते हैं।”

इसीके साथ साथ जापान-सम्राट् मिकाडोके भी युद्ध घोषणा की,—“रत्ननागोन काल और पुष्यागुक्रमसे जापानदिहासनके अधिकारी हम जापान-सम्राट् अपनी समस्त राजभक्त और वीर प्रजाके प्रति निम्नलिखित घोषणा प्रचार करते हैं,—

“हमने रूसके विरुद्ध युद्धारम्भ किया है और हम अपने जल-स्यल-रैन्चकी आज्ञा देते हैं, कि वह स्वकर्तव्य समझ अपनी पूरी शक्तके साथ रूससे युद्ध करे और हम अपने सुयोग्य उच्चपदस्थ कर्मचारियोंकी आज्ञा देते हैं, कि वह जातीय मनोरथ सफल करनेके लिये अपनी पूरी शक्ति व्यवहार जातीय कानूनकी सीमाके भीतर रह अविश्राम यत्न करें।

“हमारे इसी इच्छा है, कि हमारा भिन्नजाति-सम्बन्धीय मेलमिलाप स्थिर रहे, हमारा राज्य शान्तिकी प्रतिच्छायामें सभ्यतापथमें उन्नति करे, अन्यथा शक्तियोंसे सख्य-सम्बन्ध ही और ऐसी शत्रुता ही, जिससे सुदूर पूर्वमें शान्ति विराजे और बिना किसी विदेशी शक्तिकी सहायके हमारे साम्राज्यकी भावी स्थितिकी रक्षा हो। हमारे राजकर्मचारों हमारी आज्ञाके अनुसार काम कर रहे हैं, जिससे हमारे और अन्ध शक्तियोंके बीचका प्रेम-सम्बन्ध सुट्टा होता जाता है।

“हमने रूसके विरुद्ध युद्धारम्भ करनेकी प्रत्याशा की नहीं थी। हमारे साम्राज्यके लिये कोरियाके स्वतन्त्र रहनेका बड़ा प्रयोजन है। इससे निर्फल हमारे अक्सर-वाञ्छित्य होंको काम नहीं पहुँचेगा; परं कोरियाकी स्वतन्त्रतासे हमारे

साम्राज्यकी रक्षा भी होगी। उधर रूस अपनी चीनवाली सन्धि तोड़ मञ्चूरियामें जमकर बँट गया है और दिन दिन अपने अधिकार-प्रसारकी चेष्टा कर रहा है। मञ्चूरिया चीनके हाथसे निकल जानेपर सुदूर पूर्वकी शान्ति भङ्ग हो जानेकी आशङ्कासे वह झगड़ा मिटानेके लिये हमने रूससे बातचीत आरम्भ की। हमारी इसी आशङ्काके अनुसार हमारे सुदक्ष कर्मचारियोंने रूस-सरकारसे बातचीत का और इस सम्बन्धमें गत क्वः महीनेतक खूब तर्क और वार्त्तवाद् चलता रहा।

“किन्तु रूसने हमारी बातको कोई परवा न की। ऐसे प्रयोजनीय प्रश्नके उत्तरमें वह अकारण हो विलम्ब करने और लक्ष्य और शान्तिकी दुहाई देकर भी दूसरी ओर अपना कुटिल अभिप्राय पूर्ण करनेके लिये सुदूर पूर्वमें अपनी जल-स्थल-सैन्य बढ़ाता गया।

“हमें बड़ा विश्वास है कि रूस आरम्भ होस शान्तिस्थापन करनेके लिये उत्सुक नहीं था। उसने हमारी सरकारके प्रस्तावोंकी अस्वीकार कर दिया। कोरिया खतरमें है; हमारे साम्राज्यकी रक्षामें आशङ्का उपस्थित है। जो सुविधायें हम सन्धि द्वारा प्राप्त करना चाहते थे, वही सुविधायें अब दृष्टिभार द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं। हमें सुबड़ा विश्वास है, कि अपनी राजभक्त प्रजाकी भक्ति और वीरत्वके बलसे हम शीघ्र ही अपने साम्राज्यकी वशःप्रभा बढ़ा सदाके लिये शान्ति स्थापन कर सकेंगे।”

इन द्वा म्नाटोंने युद्धका घोषणापत्र निकाला, उस

दिन अरधर-बन्दर या अन्यत्र किसी तरहका युद्ध या कोई दुर्घटना नहीं हुई। दूसरे दिन ११वीं फरवरीको बड़े लाट कलकसिफने एक नई युक्तिको अवतारणा की। आपने विचार किया कि ११वीं फरवरीको रातको अरधर-बन्दरका सुहाना यदि जलमें डूबे हुए माइन या आग्नेय अस्त्रोंसे सुरक्षित रहता, तो जापानी तारपेटी-गावें बन्दरकी भीषण पहुं प रूसी वेड़ेको क्षति पहुँचानेका सहम कैसे कर सकें ? इसीके साथ साथ आपने यह भी विचार किया, कि अरधर-बन्दरकी बगल हीमें रूसका डालनी बन्दर है; रूसका जहाजी वेड़ा यदि ग्रह-जोर होता, तो वह जापानियोंके आक्रमणसे डालनी-बन्दरकी रक्षा कर सकता; किन्तु रूसी वेड़ेकी इस दुरवस्थाके समय जापानी वेड़ा सहज ही डालनी-बन्दरमें जा उसकी रक्षा कर सकता है। आपने फिर किया, कि ऐसी अवस्थामें डालनी-बन्दरके सामने समुद्रमें माइन लगा बन्दरकी रक्षा करना चाहिये। ११वीं फरवरीको मौसम साफ देख बड़े लाट बहादुरने डालनीमें माइन लगानेकी आज्ञा दी। कोई छुई हजर टनका येनीसी नामक एक नया जहाज माइन लगाने चला। जहाजके कप्तानका नाम एपनाफ था। उनके अधीन एक सौसे अधिक सिपाही थे; छोटी छोटी कितनी ही तोपोंसे यह जहाज सुसज्जित था। येनीसी माइन लगानेके लिये बनाया ही गया था। उसका पिछला-भाग साश्वानकी तरह जलपर निकला हुआ था और उसके नीचे एक स्ट्राक था, जिससे माइन जहाजसे पानीमें उतारा जा सकता था। जलके माइन कई तरहके होते हैं। कलकसिफकी आज्ञासे येनीसी जहाज जो माइन लगाने चला

था, वह "कण्टाक" उड़के थे। इन कण्टाक माइनोंमें यह गुण है, कि जहाजको तेज लगते ही फटते हैं और पलक भपका जहाजकी टुकड़े कर पानामें डुबा देते हैं। जलके माइन जलमें डूबे रहते हैं; जहाजसे दिखाई नहीं देते; ज्वारके साथ ऊंचे हाने और भाटेके साथ नोचे होते हैं। यह कहनेका प्रयोजन नहीं है, कि यह जलमग्न आग्नेय अस्त्र जैसे भयङ्कर शस्त्रके लिये हैं, निगाह चूकनेपर वैसे ही भयङ्कर अपने लिये भी। माइन लगाते लगाते कप्तान छेपनाफकी निगाह एक माइनपर पड़ी, जो कारणवश जलमें डूबा नहीं था। इस माइनको जलसे निकाल दुरुस्त करना दुष्कर कार्य समझ कप्तानने उसे तोड़ देनेकी आज्ञा दी। कप्तानकी आज्ञा पा येनोसो जहाज माइन तोड़ने चला; अभी वह उस माइनसे कुछ फासिले हीपर था, ऐसे समय एक दूसरा जलमग्न माइन उसके पीछेसे टकराया। भयङ्कर शब्द हुआ; साथ साथ येनीसोका अर्द्धांग टूटकर वायुमें उड़ल समुद्रमें गिर डूब गया; जेध अर्द्धांगने भी उसका साथ दिया। इतना बड़ा येनोसो जहाज क्षणभरमें जलमग्न हुआ। कप्तान छेपनाफ, बड़े इञ्जीनियर, दो छोटे अफसर और वानव सिपाही डूब मरे। थोड़ेसे सिपाही बड़ी ही कठिनताके साथ बचाये गये। बेचारे अलकसिफको अपने विचारका फल देना पड़ताना पड़ा।

जिम दिन अरधर-बन्दरके पास डालनी-बन्दरके सामने यह दुर्घटना हुई, उसी दिन अरधर-बन्दरसे बहुत दूर रूसके वुखो-वश्क-बन्दरसे कुछ फासिलेपर और एक दुर्घटना हुई। इस गाने फलसे प्रत्यक्षमें जापानकी हानि होनेपर भी प्रकारान्तरसे

रूस छोकी छानि हुई। जिन समय युद्ध आरम्भ हुआ, उस समय ब्लडीवटकमें रूसके चार छोटे जङ्गी जहाज थे,— रोजिया, गोमोवाय, रुरिफ और वोगाटिर। इनमें प्रथमोक्त दोनों बारह बारह हजार टनके थे; शेषोक्त दोनों यथानुक्रम बारह और सात हजार टनके। पारोकी घाल बहुत तेज थी। वारन टाकषर्ग रोजिया जहाजमें बैठ इस छोटेसे वेड़ेकी सरदारी करते थे। श्रीलंकामें ब्लडीवटक-बन्दरका जल जमकर बरफ बन जाता है। ऐसी अवस्थामें विशेष बनावटका एक छद्म बरफ तोड़ जङ्गी जहाजोंके निकलनेके लिये राह साफ करता है। ११वीं फरवरीको ब्लडीवटकल बन्दरसे यह छोटाका रूसो वेड़ा निकल जापानो जहाजोंका शिकार खेलनेके लिये जापान-द्वीपपुञ्जके समीप पहुँचा। उस समय जापानके दो नौदामरीके जहाज—एक हजार टनका नका-नौरा माकू और तीन सौ टनका जेनशो माकू—उजैनके प्रकृत प्रदेशसे वेजोके ओतारू स्थानको ओर जा रहे थे। दोनोंपर किसी तरहका युद्धोपकरण नहीं था; यह माल लाइए स्थानसे दूसरे स्थानको जा रहे थे। रूसी वेड़ा यदि चाहता तो सरलतापूर्वक दोनोंको पकड़ सकता था और यही उसे उचित भी था; किन्तु इसके बड़े रूसी जङ्गी जहाजोंके बड़े बड़े जे दोनोंपर पड़ने लगे और दोनों अल्प-कालमें इन गोलियोंको चोटस टुकड़े टुकड़े हो डूब गये; जहाजोंके बाघ बाघ रुनके मल्लाह आदि भी डूब गये। युद्धारम्भके समय जापानने रूसी नौदामरीके जहाजोंके प्रति बड़े बरफा दिवाई थी। उसने कहा था,—“रूसी नौदा-

गरीबों को अहाज जापानमें या युद्धस्थलोंमें, वहाँ आगामी १६ वीं फरवरीतक इन स्थानोंको परित्याग कर चले जायें। इस अवसरमें जापान उनसे किसी तरहकी क्रेड़क्रीड़ा न करेगा।" जापानकी इस अभ्युत्थानचिह्न आज्ञाकी बदले रूसने जापानके दो निरस्त असहाय जहाजोंको डूबा दिया। इस वेड़ेने सिद्ध इतना ही वीरत्व प्रकाश किया; इनके उपरान्त वह जापान द्वीपके पास ठहर न सका; जापानी गड्डी जहाजोंके आगमनका समाचार पा रूसहीवटक वापस आया।

रूसहीवटकवाले वेड़ेके इस दुष्कर्मकी बड़ी गिन्दा हुई। यूरोपकी भी कितनी ही जातियोंने घृणासे नाकें सिकोड़ीं; फ्रान्स रूसका पक्ष मित्र होकर भी गितान्त चलनरुच हुआ। जापानमें उत्तेजनाकी हद न रही। जापानने रूसकी सीमागरीबोंके पाँच जहाजोंको अपने मसिबो स्थानोंमें ठहरा दिया था। उनसे कहा था, कि तुम अपनेको कैसी न समझो; तुमने हमारा युद्धका बहुतसा साजसजामान देख लिया है और इसका समाचार तुम रूसको दे हमें क्षति पहुँचा सकते हो; इसीलिये हमने तुम्हें कुछ दिनोंके लिये ठहरा लिया है; जैसे ही यथाक्रम युद्ध चल पड़ेगा, वैसे ही तुम छोड़ दिये जाओगे।" किन्तु शिथिल समय रूसहीवटकवाले वेड़ेके दुष्कर्मका हाल जापान-सरकारको मिला; उमी समय उनने इन पाँचों जहाजोंको नीलाम करा दिया। इस दुर्घटनाके उपरान्त १२वीं फरवरीको चीन-सरकारने इस युद्धसे अपने जुदा रहनेका विज्ञापन किया और इन्ही दिन कोरिया-राजधानी सियोलको रूस-रूस काया और इन्ही दिन कोरिया-राजधानी सियोलको रूस-रूस काया

१। अपना पद परित्यागकर रूस छोड़ गये।

जापानी बेड़ा निकलना रहना नहीं चाहता था। १२ वीं फरवरीको मन्था छोड़े का एक भाग चढ़ाईके लिये तय्यार होने लगा। जैसे जैसे रात सोगी, वैसे वैसे तय्यारी बढ़ी। देखते देखते बेड़ेकी किलनी छो डिब्बेके नावें अपने अग्निगर्भा चलफिर समुद्रमें दोड़नेके लिये तय्यार हो गये। डिब्बेके नाव तारपेडो-नावसे अधिक सुदृढ़ होती है : उसे भगा पाए पहुँच देना देगेली शक्ति रखनेकी वजह ही डिब्बेके नावोंका नाम "डिब्बे" या "ध्वंसी" हुआ। डिब्बेके प्रायः अर्द्धांश जलमें डूबा रहता है ; अग्निकी चिमनी और उस चिमनीतलेकी छत जलसे बाहर रहती है। छतमें तारपेडो छोड़नेका एक बड़ा नल रहता है ; लड़ाईके समय इस नलसे तारपेडो छोड़ा जाता है। डिब्बे भी एक तरहकी तारपेडो-नाव ही है ; फर्क यह है, कि डिब्बेके तारपेडो-नावकी अपेक्षा अधिक सुदृढ़, शीघ्रगामी और तूफानी समुद्रमें भी जाने लायक होता है।

८ वीं फरवरीकी अर्द्धरात्रिको अरधर-बन्दरमें रूसी बेड़ेपर जापानका जो आक्रमण हुआ था ; वह उसके तारपेडो-नावों द्वारा हुआ था ; जापानी जड़ों जहाजों और छोटे जड़ों जहाजोंने इस आक्रमणमें आंशिक साथ दिया था ; उस समय खिष्ट डिब्बेके नावें निकली थीं और निकली खड़ी हाथ मल पहुँचाती थीं। इन कई दिनोंके उपरान्त आज डिब्बेके नावोंको भी शत्रुके भिड़नेका अवसर मिला। प्रधान नौ-सेना-पति टोगोको आज्ञा हुई थी,—“रिक्टर एडमिरल नागाईके अधीन डिब्बेके नावोंका एक बेड़ा अरधर-बन्दरके भीतर बस

जाये और वहाँ खड़े रूसी जङ्गी जहाजोंपर आक्रमण करे।" इस आज्ञाका प्रचार होते ही डिब्रायेर-नावोंके सिपाहियों और अफसरोंके मन उत्साहसे भर उठे। पहले आक्रमणकी अपेक्षा इस आक्रमणमें जानका बड़ा खतरा था। पहले आक्रमणसे पहले रूसियोंको इस बातका विश्वास नहीं था, कि नन्ही नन्ही जापानी तारपेड़ों-नावें इसतरह अपना कामकर अड़ूती लौट जायेंगी; इसलिये रूस सब तरह तय्यार रहनेपर भी उनकी ओरसे असावधान था। फिर तारपेड़ों-नावोंकी अपेक्षा डिब्रायेर-नावें बड़ी थीं; इसलिये रूसी गोलोंका ज्यादा साफ निशाना बन सकती थीं। खतरे बहुत थे; पर जापानी सिपाहियोंके लिये रक भी नहीं। वह रात्रिके अन्धकारमें आगे बढ़ और प्रातःकाल धरधर-बन्दरके भीतर घुस किमी रूसी जहाजको डुबा लौट जाने या इसी चैष्टामें प्रायः त्याग करनेकी अपने आनन्दका बड़ा ही प्यारा सामान समझते थे। कितना भयङ्कर काम था! जापानी सिपाही जानते थे, कि जलमग्न डिब्रायेर नावमें द्योतना भी एक सूराख होते ही वह डूब सकती है और उनके डूबनेके साथ उनकी मृत्यु सुनिश्चित है; फिर भी उनके मनमें तनिक भी भयका सञ्चार नहीं हुआ; वह बिना अपने जङ्गी जहाजोंका सहारा लिये अपने ही बलपर निर्भर हो रूसी जङ्गी जहाजोंको कुचल डालनेके लिये तय्यार हुए।

रात बड़ी ही वाहियात थी। अति शीतल वायु समनन बह रही थी। कावे कावे वाइलोंसे नमीमच्छल धाच्छादित था।

रात्रिकी अधिक भयङ्कर बनानेके लिये ही अर्द्धनिशाके उप-

हुए । अरथर-बन्दरकी किलाबन्दीमें लगी कोई तीन सौ बड़ी बड़ी तोपोंको तुच्छ समझ कपताम अपनी नाव बन्दरके भीतर ले गये । पहले आक्रमणके बादसे रूसी बहूत ही भावधान थे । बन्दरके मुहानेपर रूसी सिपाहियोंका जत्ररदस्त पहरा था । जैसे ही आशागिरि बन्दरके भीतर पहुँची, वंसे ही एक रूसी किलेकी सच रौशनी आशागिरिपर पड़ी । छोटीसी जापानी नाव जलमें डूबी रहनेपर भी सच रौशनीके उज्वल प्रकाशमें स्पष्ट दिखाई दी । जैसे ही आशागिरि नाव दिखाई दी, वैसे ही किलाबन्दीकी तोपोंसे उसपर गोलोंकी बाढ़ पड़ने लगी । रूसी तोपोंसे बरसते हुए गोलोंसे एक भी गोला यदि जापानी नावको लगता, तो उसकी समाप्ति हो जाती ; किन्तु न जाने कैसे अगदीश्वरने उसे बाल बाल बचा लिया । किसीका कहना है, कि अपनी तेज चालकी वजह इस नावने अपनी रक्षा की ; फिर किसी किसीका यह भी कहना है, कि रूसी गोलन्दार्जोंको नालायकी या उनके अपने जहाजोंकी रक्षाके विचारसे खूब सन्हाल सन्हालकर गोले बरसानेकी वजह जापानी नावकी रक्षा हुई । जैसे और जिस वजह हो ; इसमें सन्देह नहीं, कि जापानी नावकी आश्चर्यरूपसे रक्षा हुई और उसकी रक्षाकी यह कहानी सिर्फ जापान हीके इतिहासमें नहीं ; बल्कि जगत्के इतिहासमें लिखी जायेगी । कड़े कमानसे कूटे तोरकी तरह आशागिरि रूसी पहरदारोंकी घाखोंमें धूल भोंक—मुहानेकी खेनी ओरकी किलाबन्दीको अपने पीछे छोड़—मुहानेको मजबूत राहसे बन्दरके भीतर घुस गई । बन्दरके भीतर अपने सामने ही उसे बहुत बड़ा जह्जी अज्ञान खड़ा दिखाई दिया ; जिनकी

अपने धुनकी पकती थी; रूसो तीपोंके गोलोंको कोई परवा न कर तीरकी तेजीसे दौड़गी अरधर-बन्दरके सुहानेके समीप पहुँची। सुहानेके ठीक सामने—बन्दरके भीतर—उसे दो रूसी जङ्गी जहाज खड़े दिखाई दिये। एक जगहमें उनके सिपाही नावकी छतपर व्याधे और उन्होंने पूर्वोक्त दोनों रूसी जहाजोंको ताककर एक एक तारपेडो चलाया। तारपेडो चलनेके कुछ ही दूर बाद बन्दरके भीतर एक एक बड़ा ही भयङ्कर शब्द हुआ; हयातरीको विश्वास हो गया, कि उसने अपना काम पूरा किया; उसका चलाया तारपेडो निशानेपर बैठा। यह जान हयातरी खनुष्ट ही सुरतीके साथ अरधर-बन्दरका सुहाना परित्यागकर अपने वेड़ेकी ओर लौटी। इसके उपरान्त खबरा हो गया। स्वर्गदेवका प्रकाश चारों ओर फैल गया। अन्वान्य डिप्टायेर-नावे अरधर-बन्दरके समीप पहुँचनेका साहस कर न सकीं,—अपने वेड़ेकी ओर लौट गईं। बाकी नावोंके बिना काम किये लौटनेपर भी, आशागिरि और हयातरीने जो काम किया था, वह बहुत था। आशागिरिने रूसकी एक तारपेडो-नावे दुवाई और हयातरीने रूसके छोटे जङ्गी जहाज बयारिनके पेंदनें एक बहुत बड़ा सुराख बना दिया।

नर-नारियोसे भरे गुलघार अरधर-बन्दर नगरपर बन्दरके इन कई जह-युद्धोंका बड़ा असर हुआ। रूसके सुदूर पूर्वके बड़े लाट और खमग्न रूसी सुदूर पूर्वके सर्वोच्च शाकिमोंदा आवास-स्थान यही अरधर-बन्दर नगर था। ज्ञाननकी सारी कबो इसी बन्दरकी कमानेमें आती थीं। पूर्वोक्त अन्तिम जह-युद्धके

है। रूसने जब देखा, कि उसका जाःघर-बन्दरवाला बेड़ा प्रायः निरक्षमा हो गया है; वह बन्दरमे निकल लियावटुङ्ग



बड़े काट चलानेवाला ।

प्रायद्वीपको रक्षा कर नहीं सकता, जब उसने सबसे बड़ा भय हुआ। उसने विचार किया, कि ऐसी आवश्यकतामें जापानो

जहाँ विना विज्ञ-बाधाके अपने स्थल लेन्य लियावटुङ्गमें उतार
 अरधर-बन्दरको स्थलकी ओरसे भी वेर लेंगे । उसके बड़े लाट
 और मञ्जूरिया प्राप्त करनेकी एकरदस्त काज उच्चश्रेणीके
 राजलक्ष्मीचारी—कभी—अरधर-बन्दरमें बन्द हो जावेंगे ।
 यही सब विचार रखने अपने बड़े लाटको अरधर-बन्दरसे
 निकाल सुदूरके द्वारविन नगरमें देठा दिया । असलमें अलक-
 दिफ सुचारुरूपसे मञ्जूरिया-प्राप्तन करनेके लिये नहीं ;
 बल्कि अपनेकी विशावकी लैदसे दक्षिणके लिये अरधर-बन्दरसे
 द्वारविन भागे थे ।

रखने अपने बड़े लाटको सुरचितकर दूरदर्शिता हीका काम
 किया ; कारण, जापान उचमुच ही धीरे धीरे स्थल-युद्धके लिये
 तय्यार हो रहा था । जापानी बड़े का एक टुकड़ा अरधर-बन्दरके
 सामने पड़ा था । चूहेके बिलके पास बैठ बिली घिसतरह चूहेके
 निकलनेकी राह देखती है ; जापानी बड़ा ठीक उचीतरह
 अरधर-बन्दरके सामने रह खुली बंदेके निकलनेकी राह देख
 रहा था ; कभी कभी बन्दरके पास कुछ छेड़छाड़ भी करता
 था ; पर वह गिनातीसी नहीं ; १४वीं फरवरीसे २४वीं फरवरी-
 तक एक भी उसकेका काम नहीं हुआ । बड़ेका एक दूसरा
 टुकड़ा उसके बूडीबलक-बन्दर पहुँच गया था और उसके
 सुहानेपर ठहर बन्दरका कभी बड़ेके निकलनेकी प्रतीक्षा कर
 रहा था । इस अरधरमें बड़ेका तीसरा था प्रथम भाग स्थल-
 लेन्यसे भरे वाटरकारोंके जहाजोंकी अपने पहरेमें जापानसे
 मञ्जूरिया भरकरकी ओर ला रहा था । जापान अपने क्वीटेमें
 बड़ेको तीन टुकड़ोंमें बाँट लवसे यह तीन प्रयोजन

रहा था ; साथ साथ युद्धारम्भ होने के रूसी वेड़े को परास्त करनेका काम उठा रखा था । मन् १९०३ ई०के अन्तमें जापानने युरोपकी अरजेस्टाइन-सरकारसे अव्वल दर्जेके दो छोटे जड़ो जहाज निर्मा और काइगा खरीदे थे । कहते हैं, कि जिस समय यह दोनों जहाज युरोपसे जापान चले, उस समय कितने ही रूसी जड़ो जहाज उनके पीछे पीछे चले ; शायद अपनी तेज चाल होके फलसे जापानी जहाज रूसी जहाजोंसे दूर गिरल भागे । यह दोनों १५वीं फरवरीको जापान पहुँच कुछ दिनों बाद तोपों और सिपाहियोंसे लैस हो अपने वेड़ेसे मिल गये । इस समय वह जापानी वेड़े के दो मुट्ठा सम्भ थे ।

दोई दस दिनोंतक अरथर-बन्दरमें शान्ति विराजी । रूसी सिपाही उत्सुकतापूर्वक जापानियोंकी प्रतीक्षा करते रहे । अब प्रदेशका काम ठोक फौजो कायदेके अनुसार चल रहा था । मन्त्रोपरान्त मसुद्रकिनारे किमीतरहको रोकनी करना मना था ; दिनभरके अन्तके उपरान्त अमनिवारणके लिये सिपाहियोंका मान्य आमोद-प्रमोद विलकुल बन्द कर दिया गया था । रूसी सिपाही जापानियोंकी राह ताकते ताकते शायद उकता गये थे ; रूसी व्यवस्थामें २४वीं फरवरी बड़ मंवेरे गहरा अनाटा तोड़ एकाएक मोक्षण शब्द उत्पन्न हुआ । रूसी किलोंके तोपखाने बाड़े मारने लगे ; शत शत विशाल तोपोंके गर्जनसे चल-स्यल हिलने लगा । रूसी सिपाहियोंने धूमध्वनि की ; जगतुभरमें तार द्वारा घोषित हुआ,—“रूसने बहुत बड़ी विजय पाई । जापानी वेड़े ने अरथर-बन्दरपर भीमवंगम आक्रमण

किया। वेड़ा अरधर-बन्दरमें घुमा हो चाहता था ; पर राह हीमें लुबी गोलोंकी चोटसे चकनाचूर हो गया। वेड़ेके चार बड़े जङ्गो जहाज डूब गये—छोटी छोटी नावें जान बधा भाग गईं।” लुबके लिये यह बड़ा ही सुखोज्ज्वलकारी यशोप्रभापूर्ण समाचार था। समाचारका सर्वोत्कृष्ट अंश था,—“लुबका जङ्गो जहाज रेटविर्जा जापानी तारपेडोकी चोटसे अरधर-बन्दरके भीतर सुहानेके टोक सामने छिछले जलमें पहुँच बैठ गया है। उसकी पेंदेमें पानी भरा हुआ है; इधर उधर चल फिर नहीं सकता। इस जहाजने कमास किया, कि एक जगह गिरिवनु प्यचल-अटल रहकर भी अपने गोलोंकी चोटसे जापानी जहाजोंको तोड़ यह चिरस्मरणीय विजय प्राप्त की।” यह समाचार सुन कोटि कोटि मनुष्य चकित-स्तम्भित हुए; असंख्य मनुष्योंके चेहरे सुसकुराये—असंख्य मनुष्योंके सुरभाये।

किन्तु क्रमशः जब इस समाचारके प्रथम प्रभावका आवेग कुछ घटा; इसने अपना प्रकृत रूप धारण किया, तब जान पड़ा, कि हे राम ! कहांकी विजय—कैसा जापानी जङ्गो जहाजोंका डूबना,—वहाँ तो और ही घटना हुई। स्पेन-अमेरिका-युद्धमें लफ्टनरेंट हावसमने बन्दरके सुहानेपर अपने कुछ फालतू जहाज डूबा बन्दरस्थ विपक्षीय वेड़ेको बन्दर हीमें बन्द कर देनेकी चेष्टा की थी; इतने दिनोंके उपरान्त जापानके प्रधान नौ-सेनापति एडमिरल टोगोने भी वही चेष्टा की। हावसमने बड़े ही भद्दे जङ्गसे चेष्टा की थी; टोगोने बड़ी ही खूबसूरतीके साथ की। इसका विवरण इसतरह है,—२४वीं फरवरीकी बड़े सबरे जापानी तारपेडो-नाव और डिप्टीयेर-नाव इन दोनो नावोंका वेड़ा पाँच

बड़े जहाजोंके साथ अरधर-बन्दरके सामने पहुँचा । जङ्गी जहाजोंकी चाल बहुत तेज होती है ; इस वेड़ेकी बहुत धीमी थी । वायुगतिसे दौड़नेवाली जङ्गी नावें बहुत ही धीरे धीरे आगे बढ़ रही थीं । इनका कारण यह था, कि जङ्गी नावोंके साथ जो बड़े बड़े जहाज थे, वह जङ्गी जहाज नहीं, सौदागरीके जहाज थे । पाँचोंके नाम थे,—होकाजू मारु, बुयू मारु, तेन-शिन मारु, वायो मारु और जिनसेन मारु । “मारु” जापानी भाषामें सौदागरीके जहाजको कहते हैं । यह पाँचो जहाज जङ्गी जहाजोंके सुदानिख कागजते बने कहे जा सकते थे ; छोटे छोटे कम ताकतके एंजिनोंके जोरसे धीरे धीरे आगे बढ़ रहे थे । हरेक जहाजपर थोड़ेसे सिपाही थे, जो जहाजको ठीक राहपर ले जानेके लिये बहुत थे । असंख्य जहाजी सिपाही अपने प्राण हथेलीपर रख यह भयङ्कर कार्यगार ग्रहण करनेके लिये तय्यार हुए थे ; उनमें कुछ सिपाही और अफसर चुने तथा इन जहाजोंपर सवार कराये गये । इन पाँचों जहाजोंमें ठमाठस पत्थर भरे थे और भरी थी,—बारूद । बारूदमें विजलीका तार लगा था । इच्छा करते ही तारकी विजलीसे बारूदमें आग लगा जहाज फाड़ डुवा दिया जा सकता था । टोगो चाहते थे, कि इन पाँचो जहाजोंकी अरधर-बन्दरके सुदानेमें दुधा बन्दरके भीतरके रूसी जङ्गी जहाजोंके बाहर निकलनेकी राह रोक दी जाये । जङ्गी नावें शूद्र तो राहमें इन जङ्गी जहाजोंकी रक्षा करनेके लिये भेजी गई थीं और कुछ इसलिये भेजी गई थीं, कि यदि अवसर मिले, तो बन्दरमें घुस बनेवनाये रूसी जहाजोंका तोड़ें-धोड़ें । बन्दरका सुदाना सङ्कोर्ण है ।

इस मङ्गीरु सुहानेके पास ही भीतर जापानी तारपेडोकी चोटसे फटकर रूसका जङ्गी जहाज क्लिकले पानीमें बैठ गया था। उसका पैदा पानीमें डूबा था और ऊपरी भाग पानीसे बाहर। रेटविजां अस्थायी जहाजसे स्थायी लौह-दुर्ग बनकर मानो अरधर-बन्दरके सुहानेका पहरा दे रहा था। २४वीं फरवरीको सवेरे जब पूर्वोक्त जापानी बड़ा अरधर-बन्दरके सुहानेके समीप पहुँचा तब इसपर सबसे पहले रेटविजांके सिपाहियोंकी दृष्टि पड़ी। निर्भीक जापानी जहाजोंका बन्दरमें घुसना देख उसपर रेटविजांकी बड़ी बड़ी तोपोंके गोले एकाएक बरसने लगे। इनके दूसरे ही क्षण किलेकी तोपें भी जापानी जहाजोंको ताक ताककर गोले उतारने लगीं। कोई आध घण्टे तक गोलन्दाजी हुई। रूसी गोलोंकी चोटसे क्षत-विक्षत हो जापानी जहाज सुहानेमें इधर उधर दौड़ अन्तमें फटकर डूबने लगे। क्रम क्रमसे पाँचो जहाज डूब गये। रेटविजांके सिपाहियोंने विचार किया, कि इतने दिनोंके उपरान्त आज विजयलक्ष्मी उनके प्रति सुप्रसन्ना हुई हैं। आनन्दसे अधीर हो अरधर-बन्दर के रूसी सिपाहियोंने दृष्ट-ध्वनि की और उसी समय वह विजय-समाचार समग्र जगत्में घोषित किया गया। अन्ते रूसियोंने यह न देखा, कि जो पाँचों जहाज डूब गये, वह यदि जङ्गी जहाज होते, तो गोलोंकी चोटसे क्या इसी आसानीके साथ नष्ट होते ? और नष्ट होनेसे पहले क्या एक भी तोप न चलाते ? किन्तु नष्ट हो जाते और इन बातोंका कौन खयाल करना है ? जिस समय रूसी दृष्ट प्रकाश कर रहे थे, उस समय जापानी क्षत्रियरूपमें अपना काम समाप्त कर डूबे हुए जहाजोंके प्रायः

सब सिपाहियोंको जङ्गी नावोंमें सवार करा जलपथसे अपने वेड़ेको और लौट रहे थे । सूर्योदय होनेके उपरान्त रूसियोंको असली बात जान पड़ी ; उन समय उनके मनकी जो समस्या हुई होगी उसका वर्णन कौन कर सकता है ?

दूसरे दिन २५वीं फरवरीको रात कोई १ बजे जापानी विद्यार्थे नावोंका वेड़ा पाणसे अपना प्रकृत रूप द्विपा अरधर-बन्दर, डाकने-बन्दर और पीजन खाड़ीपर दृष्ट दृष्ट बीस बीस गोले मार अपने वेड़ेकी ओर लौट गया । इसी तारीखको प्रातःकाल रूसी जापानी वेड़ा अरधर-बन्दरके सामने प्रकट हुआ और बहुत देरतक अरधर-बन्दरपर गोला वृष्टिकर एक और चला गया । इस गोला-वृष्टिसे अरधर-बन्दरमें आग लग गई, जो बड़ा सुकमानकर दमकी ।

एक ओर अरधर-बन्दरमें धम धमकर जल-युद्ध चल रहा था ; दूसरी ओर दोनो ओरसे वर्तमान व्यवहार स्थल-युद्धकी बहुत बड़ी तयरी हो रही थी । पाठकोंको स्मरण होगा, कि कोरिया-राजघाती सिडलके चेमलफो-बन्दरमें जिह दिन रूसी जङ्गी जहाजने पहल गोला चला युद्धारम्भ किया था, उसी दिन बहुतेरे जापानी सिपाहों वारनरदारीके जहाजोंसे चेमलफो-बन्दरमें उतरे थे । चेमलफो-बन्दरकी वनावट अच्छी नहीं है ; उसमें जहाजने फौज और उसका राज-सामान उतारना बहुत ही कठिन काम है । किन्तु यही कठिन काम जापानियोंने अपनी सु-शिक्षिता और सुयवस्थाकी वजह वड़ी ही व्याप्तिके साथ सम्पन्न किया । कुछ था मात्र घण्टे के भीतर भीतर सहज सहज जापानी सिपाहों और उनका जल-सामान किनारे पहुँच गया । बन्द-

रमें खड़ वैदेशिक जङ्गी-जहाजोंके अफसर जापानियोंकी स्थल-सैन्यका यह पहचाना काम देख सुगम हुए। जापानकी स्थल-सैन्यका कुल सामान अञ्चल दरजेका और नया था। सिपाही अपनी नई खाकी वरदी—नई कासी पट्टी, पीतलके नये सितारेसे सजी नई टोपी आदिमें बहुत ही भले जान पड़ने थे। पहले ही लिखा जा चुका है, कि चेमलफो-बन्दरमें उतर कितने ही जापानी सिपाहियोंने बन्दरपर अधिकार कर लिया और कितने ही कोरिया-राजधानी सिउलपर कब्जा करनेके लिये रवाना हुए। सिउल भी बड़ी ही आसानीसे जापानियोंके हाथ लगा। इसके उपरान्त कोरियामें क्रम क्रमसे कितनी ही जापानी फौजें धाईं और वह सज्जककर धीरे धीरे कोरिया मङ्गूरियाकी सीमा यालू नदी की ओर बढ़ीं। इनका हाल यथास्थय लिखा जायेगा।

रूस भी स्थल-युद्धके लिये तय्यार हो रहा था। रूस-राजधानी सेण्टपिटर्सबर्गसे सत्स सत्स कोस दूर सुडूर पूर्वकी ओर सिपाहियोंसे भरी ट्रेनपर ट्रेन भेज रहा था। युद्धस्थलकी ओर फौज भेजनेमें रूसकी कितनी ही दिक्कतोंसे सामना करना पड़ता था। पहले तो रूस-राजधानीसे युद्धस्थल बहुत दूर था। रूसकी सत्मान दूसरी राजधानी या पहलेकी प्रधान राजधानी मास्को नगरमें पूर्व मास्कोरियाकी राजधानी इर-कस्क नगर कीर्द हो हजार कोसके फामिलेपर था। इस नगरके पास ही पृथिवीकी सबसे बड़ी भोलोमें छूटी भोलि बैकल लकड़नें मारती है। इस भोलिकी लम्बाई कीर्द हो सौ कोस है। प्रायःकालमें इस भोलिकी जल अपनी प्रकृत अवस्थामें रहता

है और शीतकालमें शीताधिक्यसे भीलपर ३४ फुट मोटी बरफकी तह जम जाती है। बरफकी तह जम जानेसे वैकल भील पार करना कठिन हो जाता है। वैकल भीलसे मञ्जूरिया कोई बोस कोस दूर रह जाता है। इस दो हजार मीलके फासिलेसे एक रेलपथसे रूसको युद्धस्थलमें फौज भेजना पड़ती थी।

जिस समय यह आरम्भ हुआ, उस समय शीतकाल उपस्थित था। वैकल भील जमकर बरफ बन गई थी। जमो हुई भील पार करनेकी तीन राहें थीं। एक खिसकनेवाली गाड़की राह थी, जिसके किनारे किनारे खम्भे गड़े थे; दूसरी पाण्डखी थी और तीसरी रेलकी राह। युद्धारम्भ होतेही यह तीसरी राह शीघ्र शीघ्र बनाई जाने लगी। राह तयार होनेपर एक सोमहर्षण दुर्घटना हुई। एक दिन एक विशाल एञ्जिन इस लाइनसे वैकल पार कर रहा था; ऐसे समय एक जगह एञ्जिनके बोम्बसे बरफ टूट गई और मन्त्रज्ञ एञ्जिन अपने ड्राइवर प्रभृतिके साथ भीलके अतल-तलमें खगा गया। इस दुर्घटनाके वाशसे वैकल पार करनेवाली ट्रेनोंमें सिर्फ माल अथवा वा रसद रहनी ही थी; आदमी नहीं। युद्धारम्भ होनेपर इसी राहसे रूस अपनी फौज और रसद शीघ्र शीघ्र मञ्जूरियाकी ओर भेजने लगा। राहकी कठिनाइयां देख पाठक समझ सकते हैं, कि इस काममें रूसकी कौसी शिकाने उठाना पड़ी होगी। युद्धस्थलसे स्वदेश लौटते हुए रूसी स्त्री-बालकों और मुलकी अप्सरोंकी भीड़से रूसकी यह कठिनता परम सीमाकी पहुँच गई थी।

सिखा शीत, बरफ और फाविलेके रूसको युद्धस्थलकी ओर फाज भेजनेमें आर एक बड़ी दिकतसे सामना करना पड़ा। जिस समयका हाल हम लिखते हैं, उस समयसे अगणित वर्ष पहले जब विजयो चीना दूरसे आ मङ्गूरियामें बसे थे, तब उनके एक सम्प्रदायने एक स्थानमें स्थिर हो रहनेकी अपेक्षा इधरउधर भटकने और लूटमार करने हीको अपने जीवनका श्रेष्ठ व्रत बनाया था। उनके महसस सहस्र वंशधर अबतक मौजूद थे और वह इसो ढङ्गसे अपनी जीवन-यात्रा निर्वाह करते थे। चीना भाषामें इस आवाजा जातिका नाम "चुचुज" है—रूसी 'चचुज' कहता था। चचुज बड़े ही स्वतन्त्र स्वभावके लोग हैं; किलोकी वश्यता स्वीकार करनेकी अपेक्षा मरना अच्छा समझते हैं। युद्धारम्भ होनेपर युद्ध-स्थलकी ओर रूस जब प्रचुर परिमाणसे रसद आदि भेजने लगा, चचुज रसदकी गाड़ियों और अड्डोंपर वारंवार डाके मार रसदकी समझी लूटने लगे; रसदसे भरी ट्रेनोंकी रोकनेके लिये रेलकी लाइन और तार काटने लगे। रूसने शिकायत की, कि चचुज जापानी अफसरोंके बहकानेसे इतने निर्भीक और उद्दण्ड हो गये हैं; किन्तु अपनी इस बातका रूस कोई प्रमाण दे नहीं सका। लुटेरे क्या जितेन्द्रिय होगी थे, कि मुद्दत तब इनको सामग्री समझे पा बैठे बैठे देखा करते? रूसने चचुजोंके अपकर्मका बरता लेनेके लिये कितने ही ग्रामोंको ध्वंस कर दिया; किन्तु इससे कोई सुफल उत्पन्न नहीं हुआ; चचुजोंके साथ ग्रामवासियोंका वैसा कोई सम्बन्ध नहीं था। अन्तमें रूसने अपने रेलपथकी रक्षाके

नामक सुदृढ़ स्थानको विजय क्रिया था और अफगानस्थानसे कुछ दूर समरकन्दपर रूसकी विजय-वैजयन्ती उड़ाई था। रूस-रूस-युद्धके समय जब सुविख्यात रूसी योद्धा गागी उसमान पाशा प्लवनामें बैट भीमवेगसे रूसका प्लवना-प्रवेश रोक रहे थे, उस समय इन्हीं कुरोपाटकिनने सहस्र सहस्र रूसी कटना प्लवना-प्रवेशकर अपनी यशःप्रभासे दिशाये' चमकाई थीं। इनके उपरान्त कई वर्षतक वह रूसके ट्रान्सकामपियन प्रदेशके गवर्नर रह चुके थे; इस समय कोई छः वर्षसे रूसके समर-सचिव थे। इन्हीं मोटे, दाढ़ीवाले और सुस्वर कुरोपाटकिनकी ओर अपनी इस ओर दुर्द्विन्दके समय व्याकुल रूसियोंने गितान्त आशापूर्ण लोचनसे देखा। २१वीं फरवरीको रूस-सम्राट्ने एक फामान निकाल कुरोपाटकिनको अपनी सुदूर पूर्वकी सैन्यका सर्वप्रधान सेनापति नियुक्त किया।

इमें याद है, कि इन वयोवृद्ध वीर कुरोपाटकिनने प्रधान-सेनापतिका पद पा एक बार घोर-गम्भीर गर्जन किया था। इस पुरुषसिंहकी गर्जनध्वनिसे जगत् प्रनिध्वनित हुआ था। कुरोपाटकिनने गर्जनकर कहा था,—“हे जगतके लोगो! तुम्हें मैं बड़ा ही बीभत्स तमाशा दिखाऊंगा; सभ्य जापान-राजधानी टोकियो पहुँच जापानसे सन्धि-पत्रपर हस्ताक्षर कराऊंगा।” इस गर्जनके उपरान्त कुरोपाटकिनने युद्ध-यात्राकी तयारी की। कितने ही नये सेनापतियोंकी अपने साथ लिया। कहते हैं, कि कुरोपाटकिनने अरधर-वन्दरके रूसी बंडे के प्रधान नौ-सेनापति पदपर तथा अफमर नियुक्त कराया। कुरोपा-

टकिनके नियोगके बाद ही क्रोन्वस्टेटके नौ-सेनापति वाइस एड-मिरल मेकराफ सुडूर पूर्वके रूसी वेड़ेके प्रधान नौ-सेनापति बनाये गये। मेकराफ अपने गुण-गरिमाके लिये रूसमें बड़े प्रतिष्ठित थे। इन दोनो सुप्रसिद्ध अफसरोंके नियोगसे लोगोंकी विश्वास हुआ, कि अब रूस संभलकर जापानके साथ प्रकृत प्रस्तावसे युद्ध चारम्भ करना चाहता है। रूसकी यह तय्यारियां देख, कितने ही समझदारोंतकने जापानके लिये दुःख प्रकाश किया था। इसमें सन्देह नहीं, कि जापानके लिये यह कठिन परीक्षाका समय था। रूसकी जन और स्थलसैन्य ही सुयोग्य सेनापतियोंके अधीन कर दी गई थी और युद्धारम्भके उपरान्तसे अत्रिक—कोई एक महीनेमें—मञ्चूरियामें रूसके कोई दो लाख बिपाही पहुँचा दिये गये। जापानके सामने अब युरोपका वही विशाल-विराट् रूस ताल ठोंककर युद्धके लिये खड़ा हुआ था।

जल और स्थलपर घोर समरानल प्रन्वलित होनेसे पहले एक दो छोटे मोटे जल-युद्ध हुए; पहले उन्हींका वर्णन कर देना चाहिये। पाठक इस पुस्तकमें सबसे पहले कई बार रूसके वूडीवुडक-बन्दरका नाम पढ़ चुके हैं। साइवेरियन रेलके छोरपर वूडीवुडक एक बड़ा बन्दर है। तीन ओरसे पर्वतमाला द्वारा घिरा है और भूखण्डते कुछ व्यागे निकल समुद्रमें फैला हुआ है। भारतके बम्बई या चीनके हाङ्गकाङ्ग-बन्दरसे बहुत कुछ मिलताजुलता है। पहले बन्दरमें बड़ी आबादी थी; बड़ा रोजगार था। किन्तु गत धर्ती फरवरीसे बन्दरकी स्वाभाविक रौनक फीकी पड़ गई; गुलजार बाजारोंमें समझाटा हुआ गया। कारण, उसी तारीखकी युद्धारम्भ होनेका

समाचार बन्दर पहुँचा और वहाँके हाकिमोंने विचार किया कि जापानने कल यदि अरथर-बन्दरपर आक्रमण किया है, तो आज ब्लडोवष्टकपर भी कर सकता है। शीघ्र शीघ्र जापानी आक्रमणसे सामना करनेकी तयारी आरम्भ हुई। सबसे पहले पर्वतमालाके सर्वप्रधान किलेसे एक बहुत बड़ी तोपके तीन फेर हुए। इसका मतलब था,—“बन्दरके इर्दगिर्द जितने सिपाही हैं, वह तुरन्त बन्दरमें आये”,—बन्दरको फौज शीघ्र तयार हो।” इसके उपरान्त नगरवासियोंके नाम इस मर्मका एक विज्ञापन निकला,—“जापान ब्लडोवष्टक घेरना चाहता है। कोई नगरवासी बिना सरकारो अनुमति लिये माल-असबाबके साथ नगरसे बाहर न जाये।” यह विज्ञापन निकलते ही नगरमें भगदर पड़ी। छे शन यात्रियोंसे भर उठा। ब्लडोवष्टक नगर और अचलमें बहुतेरे जापानियोंका निवास था। रूसी इनसे बहुत डरे। अफवाह उड़ी, कि जापानी रूसो यात्रियोंसे भरो ट्रेन किमी विस्फोरक परार्थ दादा उड़ा देना चाहते हैं।” इसलिये ब्लडोवष्टक रेल-छे शनसे बहुत दूरनक कच्चाक खारोंका रिमाला ट्रेनकी रक्षाके लिये उमके साथ साथ दौड़ा करना था। जापानी पड़ोमियोंको देखकर रूसी बहुत उत्तेजना दिखाते थे। उन्हें भय था, कि कहीं वह सब ब्लडोवष्टक नगर उड़ा न दें। जापानी भी शत्रुभूमि यथासम्भव शीघ्र त्यागना चाहते थे। कोई सबह सो जापानी अपनी सम्पत्ति बेच अपने कतमलके साथ एक षाकके जहाजर सवार ही ब्लडोवष्टकमें जापानकी ओर नत दिये। रूसी निश्चिन्त न थे। मध्यमें यह ही रखा था और जलमें यह हुआ, कि

रूस-जापान-युद्ध ।

जहाज बन्दरमें जमी कोई चार फुट मोटी बरफकी तह तोड़ अपने लिये राह बना निकले थे। जापानी जहाजोंपर जमी और लगी बरफ देख स्पष्ट जान पड़ता था, कि वह खुले और जमे हर-तरहके समुद्रमें दौड़ रही जहाजोंकी फूँट चुके थे। जैसे जैसे वह बन्दरके समीप पहुँचे, वैसे वैसे बन्दरके निकट जमी बरफसे उनकी गति मन्द हुई। कोई एक बजे चारों अञ्चल दृश्योंके छोटे जङ्गो जहाज याकी तीन जहाजोंको बन्दरसे कोई छह कोसके फासिलेपर अपने पीछे ठहरा बन्दरके समीप पहुँचे। बन्दरसे कोई छेड़ कोसके फासिलेपर रह चारो जहाज एक लम्बी पंक्तिमें पहली ओरसे दूसरी ओर और दूसरी ओरसे पहली ओर दौड़ने और फेर करने लगे। पहले कितनी ही फेरें बिना गोलेके बारतूसको, तोपे गर्म करनेके लिये कोँ; इसके उपरान्त बड़े बड़े गोले बल्डीवष्टक-बन्दरपर बरमने लगे। तीन बार जापानी जहाज पहली ओरसे दूसरी ओर गये और दूसरी ओरसे पहली ओर और इस आवागमनमें अश्विराम गोला-वृष्टि करते गये। सिर्फ लौटनेके समय गोलावृष्टि रुकती थी। कोई चालीस मिनटमें जापानियोंने दो सौ बड़े बड़े गोले मारे। रूसकी ओरसे जवाबमें एक भी गोला चलाया नहीं गया; कहा गया, कि जापानी जहाज यदि और समीप आते, तो गोला चलाया जाता। तीसरा शहर लगा जापानी जहाज समुद्रवत्ससे दक्षिण चले गये। मन्था कोई पाँच बजे क्षितिजमें पहुँच लोप हो गये। अनुमान किया गया, कि रूसी जहाजोंकी खोजमें आये थे; उन्हें न पा लौट गये। दूसरे दिन जापानी बेड़ा आया और बल्डीवष्टक-बन्दरके आसपास शहर लगा लौट

गया। मानो जापानी वेड़ा हैशान था, कि बन्दरके पूर्वोक्त जहाज कहीं छिप गये,—आसमानमें उड़ गये या जल-गर्भमें नमा गये।

इधर वृद्धीवृत्तमें यह हुआ और उधर अरधर-बन्दरमें जो हुआ, उसका हाल सुनिये। अरधर-बन्दरके रूसी जङ्गी जहाजोंके प्रधान सेनापति शर्क पदच्युत हुए; ५वीं मार्चको अरधर-बन्दर पहुँच उनका पदभार मेकराफने ग्रहण किया। पदभार ग्रहण करते ही चारों ओरकी कुचबवस्था मिटा कुचबवस्थाकी बुनियाद डाली। जिन फौजी कायदों या फरमा-गोंसे सिपाहियोंके मर्म्मेकी पोड़ा पहुँचती थी, उन कायदोंको तोड़ सन्तोषजनक कायदे बनाये। यह भी देखा, कि बन्दरके रूसी जङ्गी जहाज नितान्त हीनावस्थामें हैं; उनकी चतिका जो वृत्तान्त प्रकाशित हुआ था, उसकी अपेक्षा अधिक चति-ग्रस्त हुए हैं; शौर उनकी मरम्मतकी बवस्था की गई। मेकराफशो चाये अभी तीन दिन बीते थे; इसी अवसरमें अरधर-बन्दरके रूसी बेड़ेमें एक तरहकी सजीवता दिखाई देने लगी। ६वीं मार्चकी अर्धनिशाको जापानी डिस्ट्रायेर-नावोंके दो बेड़े अरधर-बन्दरके सुहानेके सामने पहुँचे और रात्रिके घोर अन्धकारमें सुहानेके सामने माइन पानीमें डुबाने लगे। इधरका मतलब यह था, कि रूसी जङ्गी जहाज जब बन्दरसे बाहर निकले, तब इन माइनोंसे टकरा डूब जायें। अर्धनिशासे प्रातःकालतक दोनों बेड़ोंने निर्विघ्न अपना काम दिया। प्रातःकालके प्रकाशमें बन्दरके किलेके रूसी सिपाहियोंने बेड़ोंकी देखा; बड़ा शोर हुआ। सबसे पहले रूसी यदि बेड़ेको

देखते, तो सिर्फ अपनी किलेकी तोपोंसे नावोंपर गोले मारते किन्तु मेकराफके नियोगसे रूसी वेडों में जान आ गई थी। मेकराफने उसी समय अपनी कः डिब्रायेर-नावोंको अरधर-बन्दरसे निकल जापानी डिब्रायेर-नावोंसे मुकाबला करनेकी आज्ञा दी। युद्धारम्भके उपरान्तसे अबतक अरधर-बन्दरमें रूसके नौ-सैन्यने ऐसी कार-रवाई की नहीं थी। सबेरे कोई साढ़े चार बजे कप्तान मेटू-सविचकी अधीनतामें इन रूसी डिब्रायेर-नावोंका बेड़ा अरधर-बन्दरसे निकल बन्दरके मुहानेसे पश्चिम पहुँच। यहाँ जापानी कप्तान शोजीरो आगाईकी अधीनतामें जापानकी तीन डिब्रा-येर नावें,—असाहिमी, कुसुमी और अकत्सुकी इधर-उधर घूम फिरकर समुद्रमें मारन डबा रही थीं। जापानकी तीन डिब्रा-येर नावें थीं और रूसकी कः—एककी दवा दो। ऐसी व्यवस्थामें जापानी डिब्रायेर-नावें यदि समर-विमुख हो हट जातीं, तो कोई उन्हें बदनाम कर नहीं सकता था। किन्तु जापानियोंने रणक्षेत्रमें पीठ दिखाना मानो सोखा ही नहीं है। जापानकी डिब्रायेर-नाव आगागिरि और हयातरीका अद्भुत कर्म पाठक भूले न होंगे; जिन मन्त्रसे पूर्वोक्त दोनो नावोंके कप्तान दीक्षित थे; उसी मन्त्रसे इन तीनों नावोंके कप्तान भी। कप्तान आगाईने जैसे ही रूसी डिब्रायेर-नावोंको अपने सामने देखा, वैसे ही उनपर अपनी नावोंको आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। नौ-युद्धके इतिहासमें अपने उल्लेखकी यह एक नई बात हुई। तीन जापानी डिब्रायेर-नावें सिद्ध अपने युद्धकौशल और साहसिकतापर निर्भर हो कः डिब्रायेर नावोंमें भिड़ गईं। दोनो पक्षकी नावोंके बीच

घोर युद्ध आरम्भ हुआ । युद्धकी आज्ञा पाते ही जापानी नावें
 क्षपटकर रूसी नावोंके बहुत पास पहुँच गईं, और बड़ी तेजीके
 साथ रूसी नावोंके सामने इधर-उधर दौड़ने और रूसी
 नावोंपर गोलोंकी वृष्टि करने लगीं । रूसियोंने समझा था, कि
 जापनी अपनी कमजोरी देख युद्धस्थलसे भागेगे ; किन्तु इसके
 बदले जब रूसियोंने जापानियोंको एकाएक सन्मुख प्रहार करते
 देखा, तब रूसी घबरा गये । वह भी अपनी तोपोंसे गोले
 चलाने लगे बहो ; किन्तु बबराहट और नालायकीकी वजह
 उनके गोले प्रायः निशाना खता करते थे । उधर जापानी
 गोले प्रायः ही अपने निशानेपर बैठते थे । अगस्तित तोपोंके
 गर्जनसे दिशायेँ परिपूर्ण हुईं । उस अन्वकारमयी रजनीमें
 सुगभीर सागरवक्षपर परस्पर आग्नेय-युद्धसे युद्ध करते यह दोनो
 वेड़े बड़े ही भयङ्कर जान पड़ते थे । कुछ ही देरके युद्धमें
 रूसकी एक डिब्बाघेर-नावका एङ्गिन गोलेकी चोटोंसे चकना
 चूर हो गया ; एङ्गिनकी आगने समूची नावमें आग लगा दो ;
 दृश्य और भी भयङ्कर हुआ । इसके उपरान्त ही रूसी नावें
 पीके छटने और जापानी नावें आगे बढ़ने लगीं । और एक
 रूसी नावका एङ्गिन टूटा । दो रूसी नावें अपने वेड़ेसे पृथक्
 हो बन्दरकी ओर भागीं । शेष चार नावें भी ज्यादा देरतक
 टहर न बलीं ; अन्तमें उनके भी आखन हिले और वह भी
 भागकर दरधर-बन्दरकी किजाबन्दीकी नीचे पहुँच गईं । इस-
 तरह तब जापानी डिब्बाघेर नावोंने छः रूसी डिब्बाघेर-नावोंको
 परास्त करनेका अपूर्व काम सम्पन्न किया । जिस समय रूसी
 नावें भागीं, उस समय जापानी नावोंने झूल सिपाहियोंने सम-

खरसे हर्षध्वनि की; सागर-सलिलपर क्रीड़ा करनेवाली वायु यह हर्षध्वनि दूर दूर तक ले गई ।

पहले ही लिखा जा चुका है, कि जापानी डिग्रायेर नावोंके दो बेड़े अरथर-बन्दरके मुहानेके सामने समुद्रमें भाइन लगाने आये थे । जिस समय जापानी नावोंका एक बेड़ा रूसी नावोंसे लड़ रहा था, उस समय दूसरा जापानी बेड़ा बड़ी ही वेपरवाईके साथ अपना भाइन लगानेका काम कर रहा था । दिन-कोई सात बजे यह दूसरा बेड़ा भाइन लगानेका काम समाप्तकर अरथर-बन्दरके पाससे खुले समुद्रकी ओर चला; ऐसे समय उसे दो रूसी डिग्रायेर-नावें खुले समुद्रसे अरथर-बन्दरकी ओर आती दिखाई दीं । अबके पास पलट गया था । इससे पहलेके युद्धमें रूसी नावें दूनी थीं; अब जापानी नावें दूनी थीं । रूसकी दो नावें थीं और जापानकी चार । दोनों रूसी नावें जापानी नावोंकी देखने ही अरथर-बन्दरकी ओर भागीं । किन्तु जापानी नावोंने यह सुअवसर हाथसे जाने नहीं दिया; वह बीच हीमें रूसी नावोंके पास पहुँच गईं । घोर युद्ध आरम्भ हुआ । जापानी डिग्रायेर-नाव साजानामी रूसी डिग्रायेर-नाव एरिगेचीसे मट गई । जैसे ही दोनों नावें आपसमें मिलीं, वैसे ही एक जापानी सिपाही तलवार नियामसे बाहरकर अपनी नावसे रूसी नावपर जूद पड़ा । उस समय रूसी नावका प्रधान अफसर अपनी कीठरीसे बाहर निकल रहा था । जापानी सिपाहीको देख रूसी अफसरने अपने तलवारके कवचेपर हाथ रखा; ऐसे समय जापानी सिपाहीकी तलवार चल गई । रूसी अफसरका शिर उड़ गया; उसकी बेगिरकी लाश जापानी

निपाहीकी एक ही ठोकरसे रागर-गर्भमें जा पड़ी। रूसी प्रधान
 अफसरके मरनेके बाद रूसों लफटगटने जहाजका अधिनायकत्व
 ग्रहण किया; किन्तु शीघ्र ही एक जापानी गोलेकी चोटसे उसके
 दोनों पैर उड़ गये। देखते देखते कितने ही जापानी सिपाही
 रूसी नावमें कूद पड़े। नावपर रूसियों और जापानियोंके
 बीच अल्पकालके लिये जमकर टलवार चली। नावका तखता
 रक्तसे रङ्गीन हुआ। रूसके तीस सिपाही मारे गये; बहुतेरे
 सिपाही कैदके अपमानसे बचनेके लिये समुद्रमें कूद गये। इन
 रूसियोंको जापानियोंमें बचा लेना चाहता; किन्तु बन्दरकी लीकेकी
 तोपोंके बरसते हुए गोलोंकी बजह, जापानी सफलमनोरथ न हुए।
 जिस फुरतीसे वह युद्ध आरम्भ हुआ; उन्हीं फुरतीसे समाप्त भी
 हुआ। रूसकी एक नाव बहुत कुछ टूटफूटकर क्षीण तरङ्ग
 निकल भागी; दूसरी नाव छेरेगेची जापानियोंके हाथ लगी।
 जापानी इसे अपना नावके पीछे बांध खुले समुद्रकी ओर चले।
 छेरेगेची गोलोंकी चोटसे बहुत टूट गई थी, उसमें शीघ्र शीघ्र
 पानी भर रहा था। कुछ देर बाद राहमें छेरेगेची डूब गई;
 दो रूसी सिपाहियोंने गिरफ्तारीके अपमानसे बचनेके लिये इस
 नावकी एक कोठरीमें घुस भीतरसे द्वार बन्द कर लिया था;
 नावके साथ साथ वह दोनों भी डूब गये। इस दिनके इन
 दोनों युद्धमें जापानकी वैसी कोई क्षति नहीं हुई; चार दिनोंमें
 उसकी नावोंकी मरम्मत हो गई; वह फिर लड़ने लायक
 हो गई। इसी जगह एक बात और सुन लेना चाहिये।
 रूसके ना-सेनापति मेकराफने जब देखा, कि दो रूसी डिप्टीयर
 नावें द्वार जापानी नावोंके बीच बिर गई हैं, तब मेकराफ

छोटे जङ्गी जहाज नाविकपर सवार हो और एक दूसरा छोटा जङ्गी जहाज बयान अपने नाथ से अपनी दोनों नावोंकी रक्षाके लिये अरधर-बन्दरसे बाहर निकले। किन्तु जापानी छोटे जङ्गी जहाज अपनी डिग्रायेर-नावोंको ताक रहे थे। जैसे ही उसी छोटे जङ्गी जहाज अपनी नावोंको और बढ़े, वैसे ही जापानी छोटे जङ्गी जहाज भी अपनी नावोंकी रक्षा करनेके लिये अग्रसर हुए। जापानी छोटे जङ्गी जहाजोंको देखते ही मेकरास अपने जहाजोंके साथ वापस गये; उनके जहाजोंने एक भी गोला न चलाया। इन दिन इतना ही हुआ।

दूसरे दिन १०वीं मार्चको प्रातःकाल कोई आठ बजे जापानी जङ्गी जहाजोंका समूचा बड़ा अरधर-बन्दरके सामने प्रकट हुआ। आगे आगे तारपडों और डिग्रायेर-नावें थीं, उनके पीछे छोटे जङ्गी जहाज थे और उनके भी पीछे बड़े जङ्गी जहाज,—जलमें पैरा हुआ विमान लौह-दुर्ग। अरधर-बन्दरके समीप पहुँचते ही बड़ा ही भागमें विभक्त हुआ। बड़े का एक भाग यानी छोटे जङ्गी जहाज अरधर-बन्दरके टीक सामने—बन्दरके किनेकी तोपोंकी मारसे बाहर खड़े हुए। बड़े का दूसरा भाग यानी बड़े जङ्गी जहाज अरधर-बन्दरकी बगलमें कियावटिगान प्रायद्वीपके पास पहुँचे। जापानी जहाजके दोनों भाग उसी गोलोंसे सुरक्षित थे। छोटे जङ्गी जहाजोंतक गोले पहुँचने ही नहीं थे; बड़े जङ्गी जहाज उपर खड़े थे, निपर उसका कोई क्षिणा या कोई बड़ी तोप नहीं थी। दूसरे ही भागोंके ही बगल प्रतिष्ठित ही चुकने-

पर दिन कोई दृश वजे लियावटिशानकी ओरका भाग यानी जापानी जङ्गी जहाजोंने अपनी बड़ी बड़ी तोपोंसे अरधर-बन्दरपर गोला-वृष्टि आरम्भ की। जिध छद्मसे इन जहाजोंने गोलावृष्टि आरम्भ की, अङ्गरेजीमें उसे high angle fire या उच्च-कोण फ़ैर कहते हैं। इसका क्रम इसतरह है,— तोपोंका मुँह किसी कदर आकाशकी ओर उठा गोला चलाया जाता है। यह गोला तोपके मुँहसे निकल बहुत ऊपर जा लक्ष्यस्थलमें गिरता है; गोलेकी गति घन्वाकार होती है। इसतरहकी गोलन्दानोंने पर्वतकी एक ओरकी तोपें पर्वतकी दूसरी ओर गोले दरनाती हैं; पर्वतके माथेसे तोपोंका गोला निकल जाना है; पर्वतकी उंचाई गोलोंको गति रोक नहीं सकती। जापानी जङ्गी जहाज जिब जाह खड़े थे, उसके सामने ही अरधर-बन्दरकी एक ओरकी पर्वतमाला थी; किन्तु जापानी गोले यह पर्वतमाला पारकर अगायाब ही अरधर-बन्दरमें गिरने लगे। जापानी तोपें जो गोले बरसाने लगीं, बह छोटे नहीं थे। हरेक गोला दृश मन पचीस फ़ैरका था; फटनेवालो धातुसे बना था; जहाँ गिरता था, वहाँ फटकर हजारों टुकड़ोंमें बंट जाता था। हरेक टुकड़ा अनेक मनुष्योंके प्राण ले सकता था। जापानी जङ्गी जहाज अपने चलाये गोलोंका फलाफल देख नहीं सकते थे; यह देखनेके लिये ही जापानी छोटे जङ्गी जहाज अरधर-बन्दरके सामने खड़े थे। छोटे जङ्गी जहाज जापानी गोलोंको मार देखते और उसके फला-फलकी सूचना बैतारके तार द्वारा अपने जङ्गी जहाजोंकी देने थे। यह भी वार्ता है कि अमुक छद्मसे

गोला चलानेसे अधिक सुफलकी सम्भावना है। जापानी जङ्गी जहाज औसत हिसाबसे एक मिनटमें एक गोला अरधर-बन्दरकी ओर चलाते थे; कोई तीन घण्टेमें छः सौ गोले चले। इनमें एक सौ दस गोले नगरमें गिरे और बाकी बन्दर और किलेमें।

इस भयङ्कर गोला-वृष्टिके फलसे अरधर-बन्दरमें बड़ी खलबली पड़ी और रूसका बहुत नुकसान हुआ। नुकसानका प्रकृत विवरण प्रकाशित करना कठिन है। कारण, रूसने उसे प्रकाशित नहीं किया और जापानी अच्छी तरह देख नहीं सके। उन्होंने सिर्फ यह देखा, कि अधिकांश गोले बन्दरमें गिरे और थोड़ेसे इधर उधर। फिर भी; एक तीसरे पक्षने इस गोला-वृष्टिका फलफल बहुत कुछ प्रकाशित कर दिया है। जिस दिन यह गोला-वृष्टि हुई; उस दिन अरधर-बन्दरमें नारवेके तीन जहाज मौजूद थे। १३वीं मार्चको यह तीनों जहाज अरधर-बन्दर परित्यागकर शङ्काई पहुँचे। शङ्काईमें विज्ञापितो अखबार 'डिलो एकस्प्रेस'के प्रतिनिधिने पूर्वोक्त तीनों जहाजोंके कप्तानोंसे भेंटकर गोला-वृष्टिका जो समाचार प्राप्त किया; उसका निचोड़ यह है,—“नारवेका एक जहाज रूसी जङ्गी जहाज रेटविजाकी बालमें लङ्गर डाले खड़ा था। इस नारवेवाले जहाजके कप्तानने अपनी आँखों देखा, कि जापानके एक गोलेने रेटविजा जहाजके डेकपर फट उन्तीम रूसी अफसरोंको टुकड़े टुकड़े कर दिये। इस जहाजसे कुछ दूर प्रायिकेपर रूसका एक छोटा जङ्गी जहाज खड़ा था। एक जापानी गोला आकर इस जहाजको बगलमें फटा। इसके

तीसरे पहर कोई दो बजे मन्त्रों जापानी बंदों ने लङ्कर उठाया और खुले समुद्रमें निकल गया ।

युद्ध आरम्भ हुए कोई दूः सप्ताह बीते । इस अवसरमें जलमें कई लड़ाइयां हुईं ; किन्तु स्थलमें एक भी नहीं । युद्धारम्भके समय सिर्फ इतना मालूम हुआ था, कि कोरिया-राजधानी सिउ-सुकं चेमलफो-बन्दरमें जापानी फौजों जहाजसे उतर नेम-सफो और सिउलपर अधिकार कर लिया । इसके उपरान्त

रूसके प्रधान सेनापति ।



रूसके प्रधान सेनापति ।

रूसके जापानी फौजकी गतिविधियां देखा कोई समाचार नहीं मिला । समाचार न मिलनेका प्रधान कारण यह था, कि जापान

अपनी रख-रखकी चाख छिपाना चाहता था। जापान-सरकारने आज्ञा दे दी थी, कि किसी समाचारपत्रका कोई भी संवाहता फौजांकी काररवाईका हान जानने न पाये। युरोपके कितने ही समाचारपत्रके संवाहनाओंने कितनी ही चेष्टाकेकर जापानी फौजांका हान जाननेकी चेष्टा की; किन्तु उखला छोड़ फल नहीं हुआ। जापान, दीपपुञ्ज है और वह जलपर अपना प्रभुत्व पूर्णरूपसे विस्तार कर चुका था; इसलिये संवाहनाओंको समाचार पानेमें और भी असुविधा हुई। युरोपके कितने ही समाचारपत्र जापानकी इस काररवाईसे नाराज हुए; कितने ही उधकी इस विवेधाच्छाकी सहससुखसे निन्दा करने लगे; किन्तु निन्दा या स्तुति—आश्चर्य वा तिरस्कार—किसीसे भी जापान सरकार लक्ष्यभ्रष्ट नहीं हुई; वह उली धीर-गम्भीर-भावसे अपने मूल काम करती रही।

कितने ही लोगोंने कहा,—“रुख जल-शक्ति नहीं है। उदके दिपाही जड़ी जहाजोंके लड़ना क्या जाने? ऐसी अवस्थामें जल-शक्ति जापानने जल-युद्धमें यदि रुखको परास्त कर दिया, तो क्या बड़ा काम किया? रुख स्थल-शक्ति है,—स्थल हीमें उदका रख-पाखित्य दिखाई देगा। स्थल-युद्धमें जापानको रुखके बीबा देखना ही पड़ेगा। जापानी पैदल फौज यदि रुखी पैदल फौजसे सामना करे तो कर लकती है; किन्तु जापानी रिगला रूपके कच्चा-रिगलेसे सिलीतरत सामना कर नहीं सकती। अपनी लकड़े खुल जानेकी भय हीसे जापान अदतल स्थल-युद्धमें प्रवृत्त हुआ नहीं है।” किसी दिखीने मानी इस लोगोंके प्रवृत्तमें यह भी कहा,—“जल-युद्धमें प्रवृत्त ही जाना

जितना आसान है; सयल-युद्धमें प्रवृत्त हो जाना उतना आसान नहीं। सयल युद्ध आरम्भ करनेसे पहले,—रसद-बारबरहारी, व्यसपताक, पड़ाव, रोक, तार इत्यादि इत्यादि कितने ही नामानोंका प्रयोजन होता है। लड़नेवाले सिपाहियोंके लिये तलवार-बन्दूक आदि अस्त्रशस्त्रसे लेकर सूई-दियाखण्ड आदि प्रयोजनीय छोटी छोटी चीजेंतक संग्रह कर देना पड़ता है। समझदार शक्ति यह सब सामान जब तय्यार कर चुकती है, तभी अपनी फौज युद्धस्थलकी ओर भेजती है। जापान अवसरक यही सब सामान संग्रह कर रहा है,—उन्हें यथाक्रम अपनी फौजोंमें बांट रहा है। जैसे ही यह काम समाप्त हो जायेगा, वैसे ही जापानी फौज युद्धस्थलमें पहुँच जायेगी।

ग्रन्थमें प्रेषित लोगोंकी बात ही सत्य प्रमाणित हुई। जापान घोर सयल-युद्धमें प्रवृत्त होनेके लिये बहुत बड़ा सामान कर रहा था। सामान करने हीमें रतनी देर हुई। जैसे ही सामान पूरा हुआ, वैसे ही बड़ी फुरतीके साथ जापानी फौजें रूसस्थलकी ओर भेजी जाने लगीं। जापान तीन स्थानोंमें अपनी फौज उतार सयल-युद्ध आरम्भकर सकता था,—एक लियावटुङ्ग प्रायद्वीपमें, दूसरे व्लाडीवटकके समीप और तीसरे कोरियामें। इनमें प्रेषित स्थान ही जापानके लिये अधिकतर उपयोगी था। कारण, इस जगह फौज उतार आगे बढ़नेसे अरध-बन्दरसे व्लाडीवटकतक फेले रूस-राज्यके मध्य भागपर आक्रमण किया जा सकता था। जापानने भी पहलेपहल फौज उतारकेके लिये कोरिया हीको पसन्द किया। कोरियाके मानचिह्नमें यानू नदीसे ऊँच होने कोरियाप्रायद्वीप बहुत बड़ोख्य दिशाई

देता है। इस सङ्कीर्ण स्यागकी एक ओर जापान-सागर है और दूसरी ओर पीत-सागर। इस सङ्कीर्ण स्यागमें जापान-सागरकी ओर जेनसाग या वेगनाग-बन्दर है और पीत-सागरकी ओर चिन्नान्यो-बन्दर। इस छोटी बन्दरोंके मध्यभागवाले भूखण्डतक रुकका आधिपत्य-विस्तार हुआ नहीं पा; इससे कोई चाखीख मौल उत्तर आगलू स्यागमें रुकी फौजकी सबसे आगेकी चौकी थी। जापानने पूर्वोक्त छोटी बन्दरों की ओर अपनी फौज उतारनेका उपयुक्त स्याग स्थिर किया। बारम्बारकी जहाज इन्हीं छोटी बन्दरोंमें पहुँच रहस रहस जापानी सिपाही उतारने लगे। रूस-अधिपत्य आगलू स्याग चिन्नान्यो-बन्दरके निकटवर्ती पिङ्गयाङ्गके समीप था; पिङ्गयाङ्ग या आगलू हीने प्रथम स्याग-युद्ध होनेकी सम्भावना थी। इस लिये जो जापानी सिपाही जेनसाग बन्दरमें उतरते थे, वह यथासम्भव शीघ्र पिङ्गयाङ्ग की ओर भेज दिये जाते थे। चिन्नान्यो-बन्दर पिङ्गयाङ्ग जापानी फौजका केन्द्रस्थल बना। शारी ओरसे फौज आकर वहां एकत्र होने लगीं। स्याग-युद्धकी घटा सघन हुई।

चतुर्थ परिच्छेद ।

प्रथम खण्ड-युद्ध ।

यालू नदी,—कोरियासे मङ्गूरियाकी जुदा करती है। इसका एक किनारा दक्षिण-पश्चिम दक्षिण-मङ्गूरियाकी सीमा है; दूसरा किनारा उसीतरफ उत्तर-पश्चिम कोरियाकी सीमा। इस नदीके कोरियावाले किनारेपर वीजू नामक एक नगर है। रूस-जापानयुद्ध आरम्भ होनेसे पहले रूसी फौजोंने यालू नदी पारकर इसी वीजू नगरपर अधिकार कर लिया था। रूसने जापानसे शिकायत की थी, कि जापानने बिना सूचना दिये युद्धारम्भ किया; किन्तु इससे भी पहले यालू पारकर रूस होने जापानकी मानो घोर-युद्धके लिये तैयार था। आरम्भमें रूसके थोड़े से सिपाहियोंने यालू नदी पार किया था; इसके उपरान्त क्रम क्रमसे रूसके और सिपाही वीजू पहुँचे; १५ वीं फरवरीतक उनको संख्या बढ़कर चार हजार पाँच सौ हो गई। इनमें तीन हजार सिपाही वीजूमें रहे और छेड़ हजार सिपाही आगे बढ़े। आगे बढ़नेवालोंमें एक हजार सिपाही वीजूसे कोई एक सौ आठ मीलके फासिलेपर सोग्रान नगरपर अधिकारकर बैठ गये; बाकी पाँच सौ सिपाही और भी आगे बढ़े और पिङ्गयाङ्गसे चालीस मील दूर पृथ्वीतक आनङ्गु स्थानपर रुकजा कर लिया। रूसी सिपाही आनङ्गुपर सिर्फ अधिकार करके ही निश्चिन्त नहीं रहे; उन्होंने उसमें जगह जगह मोरचे बना और तीर्थ चढ़ा

आनजूको हर तरहेसे सुरक्षित और सुदृढ़ बना देनेकी चेष्टा की।

जिस समय यह रूसी सिपाही आनजू पहुँचे, उस समय पिङ्गयाङ्ग नगरपर जापानियोंका अधिकार नहीं था। रूसी चाहते, तो पिङ्गयाङ्गपर बड़ी आसानीके साथ कब्जा कर लेते। किन्तु न जाने क्या सोचकर—शायद पिङ्गयाङ्ग-रक्षाकी कठिनाताका अनुमानकर—रूसियोंने उसे छोड़ा ही रहने दिया।

जिस जगह जापानी फौजे कोरियानें उतरें उस चिन्माम्पो-बन्दरसे पिङ्गयाङ्ग नगर कोई पचीस मील दूर है। जापानी फौजोंने एक ही दिनमें चिन्माम्पो-बन्दरसे चल पिङ्गयाङ्ग नगरपर अधिकार कर लिया। देखते देखते कोरियानें जापान-सेनापति कुरोकीके अधीन पहली जापानी फौज पहुँच गईं। विख्यातके टाइटमसके संवाददाताने इस फौजका विवरण इसतरह लिखा है,—२वीं और १२वीं गार्ड-पलटन, रक्षित सिपाहियोंके चार बटोरे और दो हिपो-बटोरे। कुरोकीके अधिनायकत्वमें इसे पहली फौजमें कोई अस्सी हजार सिपाही थे। और कोई चालीस हजार सिपाही मिटाये गये; किन्तु उस समय नहीं, कुछ दिनों बाद। उस समयके इन कोई अस्सी हजार सिपाहियोंमें तीन हजार सिपाही कोरिया-राजधानी सिउलकी रक्षानें दिशुक्त दिये गये थे, कई तरह सिपाही बहुतेरी जगहोंमें पहरपर बैठाये गये और कोई चालीस हजार सिपाही पिङ्गयाङ्गसे आगे बढ़कर रुक करके किये तय्यार किये गये। रूसियोंकी

जैसे ही जापानकी इस जबरदस्त तय्यारीका समाचार मिला, वैसे ही वह पिङ्गयाङ्गका पड़ोस छानजू छोड़ पीछे हट गये ; अपनी किलाबन्दीके सामान और बड़ी बड़ी तोपें अपने साथ वापस ले गये ।

पिङ्गयाङ्गमें जापानी फौज जैसे ही तय्यार हुई, वैसे ही वह आगे बढ़ी । रूसके जिस छानजू बलतीकी खाती किया था, जापानने सबसे पहले उसीपर अधिकार किया । इतना ही नहीं, —इससे आगे पेङ्गयिङ्ग, पाकचेन प्रभृति स्थानोंमें भी जापानी ध्वजा फहराने लगे । पिङ्गयाङ्गसे कोई पैंतालीस मील आगेतक जापानी फौजे' जमकर बैठ गईं और जिस जगह बैठीं, उसकी चारों ओर उन्होंने जबरदस्त किलाबन्दी कर ली । वो किलाबन्दी छोरपर थी, उसके गिरदावरीके सवार रूसीसहित पीछू मगरसे कोई चालीस मील दूरतक मग्नूत लगाने लगे । उधरसे रूसी सवार मग्नूत लगाने निकलते और दूरसे जापानी सवार ; मार्चके अन्तिम सप्ताहमें इन दोनों मग्नूती बिपाहि-योंके बीच दो दो टाप धी जाती । कभी कभी रूसी मग्नूती दशर जापानी चौकियोंपर और जापानी सवार रूसी चौकियोंपर जा पड़ते ; घबकीयो लड़ाई हो जाती ।

इसतरहकी पक्षी चलकी लड़ाई या छेड़छाड़ २३मीं मार्चको हुई । रूस-संघापति मिष्टचेकोने इस छेड़छाड़का हाल प्रकाश किया है ; इसलिये इसमें बहुत कुछ अव्यक्तिकी सम्भावना है । उन्होंने जो कुछ लिखा है, उसका सारमर्म यह है,—रूसियोंका एक रिमाता गिरदावरीके लिये निकला । रिमासेईं छः सौमें एक हजारतक सवार थे । रिमाता यह

देखने निकला था, कि जापानी फौजे' आगजूसे आगेकी गद्दी
 खोजेखोजे मारकर इस किनारे पहुँची है या नहीं। कच्चा
 इन स्थानोंको जानते थे; कारण, अरसे कुछ दिनों पहले
 इन स्थानोंके अधिकांश ही जापानी गिरदावरोंके खबारोंकी
 निगाह बचा बड़ी ही पेचीली राहसे आगजूसे कोई बारह
 मील उत्तर-पश्चिम प्राकचंग स्थानके समीप पहुँचे। यहाँ
 जापानी फौजकी बगलकी एक चौकी थी। चौकीमें कोई
 गेम नदार थे। अपने खानने शत शत कच्चाकोंकी देख
 जापानी खबारोंके अपनी दूरकी फौजकी खाद्यान्न भण्डारके लिये
 इकट्ठा किया। इसके उपरान्त जैसे ही कच्चाक चौकीकी
 ओर देखे, वैसे ही जापानी खबारोंकी मोखियां चलें। कच्चा-
 कोंके भी मोखियां खोजें। एक जापानी अफसर, एक
 खपाकी और एक घोड़ा मारा गया। कच्चाक चौकीसे कोई
 मील की दूरीमें, पासिलेपर टहर मोली बरखाते थे। ऐसे समय
 कच्चाकोंकी एक जापानी पलटन चाँकीकी ओर दौड़ी जाती
 खोजे ही। उसे देख कच्चाक वापस आये। उनमें किसीके एक
 हाथतक नहीं पाई। खुद-सेनापतिने प्रथम देड़हाड़ या
 एक-दुहरा रोखा ही समाचार दिया है। इससे जान पड़ता
 है, कि प्रथम साल-युद्धमें धरणी जापानियों कीकी रक्तसे
 छिन्न हुई थी।

जापानी आगे बढ़ रहे थे और खुली पीछे हट रहे थे।
 उन्हीं कहते थे, कि हम हार मानकर पीछे नहीं हटते; इस पीछे
 हटनेमें हमारी एक गूढ़ अभिलक्षि निहित है। किन्तु सुशिक्षित
 है, कि खुशियोंकी यह गूढ़ अभिलक्षि किन खुशियोंके

और कोई समझ नहीं सकता था। विशेषतः जिन कोरियावासियोंके देशमें रूस रूसियोंने बड़ा उत्पत्त मचाया था; कोरियावासियोंकी नसतियोंपर अधिकार कर लिया था; जिनकी चीजे खरीदनेके बदले रूसी प्रायः लूट लिया करते थे; वही काहिसा दूर्बुद्धि कोरियावासी इस गूढ़ अभिसन्धिको और भी समझ नहीं सकते थे। कोरियाके उस अक्षयमें घर घर यह बात प्रसिद्ध हो गई थी; कि जापानियोंको जबरदस्त फौज घेरे घेरे आ रही है और रूसी उसके सामनेसे भाग रहे हैं। इस समाचारसे सदाके अकर्मण्य कोरियावासी रूसियोंकी घृणादृष्टिसे देखने लगे और यथाशक्य रूसियोंको क्षतिग्रस्त करनेकी चेष्टा किया करते थे। रूसी फौजोंके पास उतनी रसद नहीं थी; कोरियावासियोंसे खाद्य-द्रव्य लेकर ही रूसी अपनी और अपने पशुओंकी उदरपूर्ति किया करते थे। पूर्वोक्त समाचार फेरनेके बादसे कोरियावासियोंसे खाद्य-द्रव्य संग्रह करना कठिन हो गया था। रूसी सिपाहियोंको खाद्य-द्रव्यके अभावसे अचरख कष्ट होने लगे।

यालू नदीके पार कोरियामें जो रूसी सिपाही थे, उनके प्रधान-सेनापतिको नाम था,—मिचचेनको। मिचचेनकोको आज्ञा हीसे रूसी आगधूसे पीछे खिसकते खिसकते यालू किनारे बीजू पहुँच गये थे। कोई कोई अनुमान करते हैं, कि इन्होंने मिचचेनकोका शोध नहीं था; रूस-सरकारको आज्ञा ही ऐसी थी। रूस-सरकारने आज्ञा दे ही थी, कि जनरल प्रधान सेनापति दुरोपाटकिन बुद्धस्थलमें पहुँच न जायें, तब-

सेनापति श्री अज्ञानुसार बुद्धमें प्रयत्न न छो। इस

अधवाहके सत्य होनेका कोई प्रमाण नहीं है। फिर भी ; यह बात खटकती है, कि १५वीं मार्च को यूरोपाटकिन मचूरिया पहुँचे और दो दिन बाद १७वीं मार्च को रूस-जापानके बीच प्रकृत प्रस्तावसे छोटासा प्रथम सजल-युद्ध हुआ।

दो दिन पहले हीसे रूसी रिमाका जापानियोंको अपने न्यायसे आगे बढ़ युद्धमें प्रवृत्त होनेके लिये उभार रहा था ; किन्तु जापानी शान्तभावसे सिर्फ अपने स्थानकी रक्षा करते और रूसियोंके प्रलोभनमें पड़ते नहीं थे। उस समय पिङ्गया-द्वीप काशाग नामक स्थानतक जापानियोंका कब्जा हो गया था। जापानके काशाग और रूसियोंके वीणू स्थानके बीच कछनेकी दूरी फासिटा था ; पर दोनोंके बीच यदि एक मीठी लकीर खींची जाये, तो इसका फासिटा कोई चालीस मीलका होता है। यह पेच खाकर गई है ; इसलिये यह फासिटा अधिक जान पड़ता है। यह फासिटा और इसके बीचके स्तरीय सुख्य सुख्य स्थानोंके नाम यह है,—यालू किनारेके रूसाघिदार सुक्त दीजूसे यह दक्षिण-पूर्व कोई १८ मील चौतसन पहुँची है, वहाँसे दक्षिण घन्दाकार हो २२ मील दोबशान ; वहाँसे कोई पन्द्रह मील चोंगजू। इस जोंगजू और रूसके पूर्वाधिकृत स्थान चानजूके बीच काशाग स्थान है। इसी वास्तवमें जापानकी अग्रगामिनी सेन्गुशी, जो रूसकी दिशाओंसे भी अपने स्थानसे दिवाल रूसके छोटे चाङ्गजू स्थानमें बढ़ना शुरूके लिये नहीं दली।

रूस-सेनापति मिखेलोवकी पहल हीसे खबर थी, कि जापानकी सेना चाङ्गजूकी ओर नहीं बढ़े है नहीं ; किन्तु यह झूठ

ही वज़ह उसपर कवजा करना चाहते हैं। २७वीं मार्चको सेनापतिकी मालूम हुआ, कि जापानी रिमावेका एक टुकड़ा चाङ्गजू पर अधिकार करनेके लिये बूच करना ही चाहता है। मिष्टचेङ्कोकी आज्ञा हुई, कि जापानियोंको चाङ्गजू पर अधिकार न करने दो। २८वीं मार्चको प्रातःकाल सेनापति मिष्टचेङ्को स्वयं पांच सौ कच्चाक सवारोंको साथ ले जापानियोंके चाङ्गजू-अधिकारमें बाधा उपस्थित करने चले। यह सब कच्चाक बड़ी ही कट्टर जातिके थे और अपनी समरनिपुणताके लिये प्रसिद्ध थे।

दिन कोई दश बजे रूस-सेनापतिके गिरदावरीके सवारोंने पण्ड समाचार दिया, कि शत्रु सामने है। कहा,—“जापानी अभी अभी चाङ्गजू पहुँचे हैं; कोई दो सौ सवार हैं।” चाङ्गजू नगरके किनारे जापानी सवार खड़े थे; उन्होंने जैसे ही अपनी ओर कच्चाकोंका रिमाला धाता देखा, वैसे ही बन्दूक दागना धारम्भ कर दिया। गोखियोंकी दृष्टिको वजह वायुवेगसे दौड़ते हुए सवारोंके घोड़ोंकी गति एकाएक मन्द हुई। नगरके बाहरकी इमारतोंसे कोई छः सौ गज फासिलेपर एक टोला था। सौ दो सौ कच्चाक टीलेपर चढ़ गये और बाकी आड़ पकड़कर-जोकी बरसाते धामे बढ़नेको चेष्टा करने लगे। रूस हीके कथनानुसार कोई पांच सौ कच्चाक थे और दो सौ जापानी; रूसी जापानियोंसे दूनेसे भी अधिक थे। इसपर भी जापानियोंने बहुत देरतक कच्चाकोंको रोका; अन्तमें उन्हें मैदान छोड़ नगरके मकानोंकी आड़ लेना पड़ी। दोगी ओरकी क्षति समान थी। दूरेक ओर कोई बीस आदमी घता-एक जापानी लफटान्त मारा गया और एक जखमी

हुआ; उधर रुस्के तीन अफसर जखमी हुए, जिनमें एकको इतना गहरा आज़म आया था, कि वह अल्पकाल पीकर मर गया ।

जापानी सवारोंके मकानोंकी आड़ पकड़नेके कुछ ही देर बाद बाग़ानकी ओर राहमें गईला बाइल उड़ा; इसके उपरान्त ही टापोकी आवाज़ें सुनाई दीं; जापानी सवार ध्या रहे थे। देखते देखते सवारोंके ही एक हुए। एक नगरमें कुछ मकानोंके पीछे अपने साथी सवारोंमें मिकु गया; दूसरा नगरका बगलसे बड़ कच्चाकोपर गोली दरसाने लगा। दोनों ओरसे बाटपर बाट पड़ने लगी और हरेक अपने प्रतिद्वंद्वीको परारु करनेकी चालें चलने लगा। दोनों ओरके वीर वीरत्व प्रकाश करने लगे। रुस्के कफ़टएट बाखिलने तलवार खींची और शत्रुकी ओर भापट पड़े। जापानी कोई एक सौ गजके फ़ासिलेपर थे; ऐसे समय एक गोलीने कफ़टएटको धराशायी बना दिया। एक शरजएट उन्हें उटाने चला; राह होमें जखमी हो गिरा; दूसरा शरजएट इकी चेष्टामें जानसे मारा गया। इसर भी चेष्टा चली; दो कच्चाक एक साथ भापटे और जखमी कफ़टएटकी उटा लायें। जिस समय गोलियोंकी घोर ह्राि ही रही थी, एक समय कितने ही कच्चाक सवार दूसरे हस्ति-फ़ाटके नगर प्रदंश करने चले। हस्ति-फ़ाटकेपर जापानका पैसा दरदर महरा नहीं था; सिर्फ़ एक हिमाही अर्धला खड़ा था जो कच्चाकोका आगा देख राहदिवारे एक जगह खिन गया। जैसे ही कच्चाक उटके खलीम बाएँ, जैसे ही उटके कच्चाकोके फ़ाटकेही होली मारी। कफ़ट मारा गया

त्रैव्यफसर कच्चाक भाग गये ; अर्केले सिपाहीने शत्रुके अनेक सवार भगाये । इतने सवारोंको भगानेमें जापानी सिपाहीको एक खराशतक न व्याई । इसके बाद ही लड़ाईमें एक जखम व्याया ; वह भी हलकाना ।

घोड़ेसे जापानी सवारोंने दूने कच्चाकोंको रोक रखा ; उनकी लाख चेष्टा होनेपर भी उन्हें आगे बढ़ने न दिया । ऐसे समय चार जापानी कम्पनियां कागानकी राहसे चौङ्गूकी ओर दौड़ी जाती दिखाई दीं । इन्हें देखते ही कच्चाकोंके घेर उखड़े । रुम-सेनापति मिचचेक्कोने टोलेकी आड़में घोड़े छोड़ पंक्ति बांध मैदानमें आगे बढ़ते हुए कच्चाकोंको लौट सवार होनेकी आज्ञा दी । मेशगसे पड़खे जखमी हटाये गये ; इससे उपरान्त सवार । टीलेपर गोली चलाकर जापानियोंको रोकनेके लिये कोई ८०।६० कच्चाक बैठा दिये गये । अपनी पलटनोंको अपने पीछे और कच्चाकोंको भागते देख जापानी रिनालेने टोलेपरके कच्चाकोंपर आक्रमण किया । कच्चाकोंके रिनालेका बड़ा भाग खाना ही चुका था ; टीलेके कच्चाक भी उनके पीछे पीछे भागे । जिस समय जापानी रिनाला टीलेपर पहुँचा, उस समय उसे दूर कच्चाकोंका रिनाला भाग जाता दिखाई दिया । कच्चाकोंको भगा जापानियोंने चाङ्गूपर अधि-कार किया । यह सब जापानी सिपाहियोंने समस्वर सम-कदम से अश्वनि की—वेनजयो—वेनजयो ; मजो टोली ; पर्व-होर्ने प्रतिध्वनि हुई ।

चाङ्गूपर अधिकार कर चुकनेपर भी जापानियोंका आगे बढ़ने का इच्छा नहीं थी । इन्हींके साथ ही और दूसरे तथा प्रांथव

लिङ्गिनके कोई पैतालीस हजार सिपाही घोर घोर आगे बढ़े हो गये। जापानी फौजकी चाण बहुत घीमी थी। हुआ ही था। कारण, एक तो जाड़े के दिन थे; नदी-नाले जमे हुए थे; पर्वतकी चोटियां बरफकी लफेद टोपियां पहने हुई थीं। इस शीतप्रधान देशकी शीतमें पड़ बहुसंख्यक सिपाही और फौज तथा बारबरदारीके पशु नाना रूढ़ भोग रहे थे; शीतजनित कष्टोंन उनको चाण घीमी कर रखी थी। दूसरे जिस अक्षयि जापानी फौज आगे बढ़ रही थी, उस अक्षयिने कोरियाके तज़ाक-जातिके लुटेरोने बगावत मचा रखी थी; रसद, चारा, ईंधन आदि दुष्प्राप्य हो गये थे और जगह जगह बागी तज़ाकियोंसे लुटने या मुकाबला होनेकी आशङ्का रहती थी। तज़ाक-जातिने भविष्यदाणी या घोषणा प्रचार कर दिया, कि आगामी मई मास तक कोरियाके वर्तमान मन्त्राटका शासनकाल समाप्त और तज़ाकके शासनकालका प्रादुर्भाव होगा। तज़ाक अपनी भविष्यदाणी आप पूरी करना चाहत थे; अपना शासनकाल उपस्थित करनेके लिये देशके उस अक्षयिने घोर अशान्ति फैला रहे थे और इस अशान्तिसे जापानी फौजकी गतिदिधिने बड़ी बाधा डाल रहे थे।

जापानी फौजकी चाण घीमी होनेपर भी खूब तृष्ट होनी थी। विषयकी अखबार 'रक्तप्रोह' के संवाददाताने जापानी फौजकी आगदी मजदूती अपनी आंखों देखकर लिखा था,—

रूसी ही चापसे चलकर जापानी फौजने पहले बीस मील पश्चिम सेङ्गचेङ्ग बसतीपर कबजा किया इसके बाद चोलग्रान बसतीपर। दोनो बसतियोंमें रूसी फौजके रहनेकी सम्भावना की गई थी; किन्तु दोनो ही बसतियाँ खालीकर रूसी सिपाही वीजू चले गये थे। श्री अपरेलको चोलग्रानपर अधिकारकर जापानियोंने अनुमान किया, कि अब वीजू हीमें घोर युद्ध होगा।

पहले ही लिखा जा चुका है, कि चोलग्रानसे बीजू कोई अठारह मील या सिर्फ नौ कोस है। जापानी गिरदावरीके सवार चोलग्रानसे धीरे धीरे वीजूकी ओर बढ़े। राहमें उन्हें कोई रूसी गिरदावरीका सवार दिखाइ दिया न कोई जङ्गी चौकी मिली। मानरा क्या है? क्या रूसी वीजूसे भी चले गये? ४ थो अपरेलको गिरदावरीके सवारोंने वीजूके पास पहुँचकर देखा, कि उनका अनुमान सच्चा था,—रूसी वीजू खालीकर यालू नदीके उसपार चले गये थे। गिरदावरीके सवारोंके पीछे ही जापानी रिसाला था; जो हर्षध्वनिसे दिशायें परिपूर्ण करता वीजू नगरमें घुस गया। वीजूपर जापानकी 'सूर्योदय' प्रताका फर फर उड़ने लगी।

सूक्ष्मतः देखिये, तो वीजू खालीकर रूसने अपना कोई बड़ा बुद्धमान नहीं किया। रूसी यालूके इसपार युद्धमें प्रवृत्त होना अनुचित समझ यालू नदी पारकर उसके दूसरे किनारेपर उटकर खड़े हो गये; सिर्फ एक नगर चार पानीकी चादर पालुके बहाले की। किन्तु सूक्ष्मतः देखनेमें रूसकी यह काररवाई फलकी जड़ हुई। जगतकी दृष्टिमें—इतिहासकी

इन्होंने रूसमें यालू क्या पार किया, मानो कोरियादेश खाली किया और ४घो अपरेलको जापानियोंने वीजू प्रवेश क्या किया, मानो रूसको कोरियासे निकाल दिया। अबसे कोई दो हो महीने पहले जिन्ह कोरियाकी सैकड़ों कोस भूमिपर अधिकारकर रूस वीरदपसे फिर ऊंचाकर जल रखा था; एक ही व्होटोसो लड़ाईके बाद उन्ही कोरिया देशसे रूस अपना रत्तो रत्ती अधिकार लोपकर लज्जावन्त हो गया। इतना होनेपर भी रूसकी ओरसे यही कहा जाता था, कि रूसको यह बुद्धि और मनसे अगोचर सच्चातिरुक्त फौजी चाल है; किन्तु जगतने यही देखा, कि आरम्भिक जल-युद्धमें रूसका बहू छाल हुआ और आरम्भिक सखल-युद्धमें यह।

युद्धारम्भ होनेके बाद यह पहिलेपहल सखलपर रूस और जापानकी फौजें एक दूसरेके सामने हुईं। यालू नदी बीचमें थी; उसके एक किनारे जापानकी फौज थी और दूसरे किनारे रूसकी। कितने ही लोग भारतकी पतितपावनी गङ्गा और कोरिया-मञ्चूरियाकी सीमा-रेखा यालू नदीकी समान बताते हैं। किन्तु हमें दोनोंके बीच कोई समता दिखाई नहीं देती। गङ्गाकी अपेक्षा यालू नदीकी चौड़ाई अधिक है और गहराई कम। यालू नदीकी चौड़ाई वहाँ दो कोसकी है कहीं तीस कोसकी। गङ्गामें बहुत दूरतक बड़े बड़े जहाज आते हैं; किन्तु यालू नदीमें सिर्फ पचीस कोसतक। इससे बाद ही यालूकी धार इतनी प्रखर हो जाती है, कि जहाज तो जहाज; व्होटो व्होटो नावोंका चलाना भी कठिन हो जाता है। चौड़ी यालू नदीके बीच कितने ही टापू हैं। रूसके कुछ तो रहीं बड़े जहाज

या शीतकालके अन्तमें पिघली हुई बरफके जलमें डूब जाते हैं; कुछ बाढ़ आनेपर भी नहीं डूबते। जिस जगह रूस और जापानकी फौजे थीं, उसकी बीचमें नदी-गर्भमें सञ्चरियाकी ओर कई बहुत बड़े बड़े टापू थे। इन टापूओंपर रूसियोंका कब्जा था।

४थी अपरेलको जापानी रिसालेने यालूकिनारेके बीजूपर अधिकार किया। लोगोंने अनुमान किया था, कि अब शीघ्र ही जापानी फौजे नदी पारकर रूसी फौजोंपर आक्रमण करेंगी; किन्तु लोगोंका यह अनुमान व्यर्थ हुआ। अन्तमें जापानकी इतनी शीघ्रताके साथ रूसपर चढ़ जानेकी वैसी कोई जरूरत नहीं थी; जिस कोरियाके लिये जापानने युद्ध आरम्भ किया था, वह कोरिया इस समय जापानके हाथमें था। शीघ्र चढ़ाई करनेकी किसीकी यदि जरूरत ही थी, तो रूसकी थी; क्योंकि रूस ही कोरियासे निकाला गया था। दूसरे उस समयतक जापान रूसी फौजोंकी बाधा छटा नदी पार करनेके लिये पूर्णतया तय्यार नहीं था। सेनापति कुरोकीके अधीन जापानकी ओ पहली फौज कोरियामें उतरी थी, वह उस समयतक चारों ओर विस्तरी हुई थी। बीजूपर अधिकार करनेके बाद हीसे जापान अपनी समूची पहली फौज यालू किनार जमा करने लगा था सही, किन्तु यह काम दो दिन आर दिग, या सप्ताह दो सप्ताहका नहीं था। मिया इसके जापान यालू-किनारे सिर्फ फौज ही जमा करना नहीं चाहता था; इसके साथ साथ रसद, बड़ी बड़ी तोपें और यावत् सुदोषकरण भी जमा करना था। यह सब काम करनेके साथ जापान

कैसे समझना कर सकता था ? इसीलिये यालू नदी पार करनेमें उसे बहुत देर लगी ।

इतने दिनोंसे जो रूस अपनी फौजोंको पीछे हटाने हीको अपनी गूढ़ फौजी चाल बनता था ; अब वही रूस यालू नदीकिनारे हटकर खड़ा हो जापानसे सम्मुख समरमें प्रवृत्त होनेके लिये तय्यार हुआ । रूस-राजधानी सेण्टपिटर्सबर्गमें शोर हुआ, कि अब रूस अपनी गई हुई मर्यादाको पुनः प्रतिष्ठित करना चाहता है ; जगतके लोग देखेंगे, कि रूसमें वैसी अपूर्व अलौकिक अचिन्तनीय बुद्ध-शक्ति है । समग्र जगतकी दृष्टि यालू नदीकी ओर आकर्षित हुई । रूसके सुप्रसिद्ध सेनापति कुरोपाटकिन बुद्धस्थलमें बैठे हुए थे । उनके परामर्शांशुमार रूसी फौजे चलफिर रही थीं । कुरोपाटकिनके अधीन थोड़े सिपाही नहीं थे । स्वयं रूसने खीकार किया था, कि उस समय कोई छह लाख सिपाही कुरोपाटकिनको आज्ञा पालन करके लिये मञ्चूरियामें मौजूद थे । कुरोपाटकिन बड़े ही आखानीकी साथ जापानियोंसे दूने रूसी सिपाहीयालू-किनारे भेज सकते थे । जापान अधिकसे अधिक लोहे साठ हजार सिपाही यालूकिनारे एकत्र कर सकता था ; कुरोपाटकिन एक सिपाहियोंके तुल्यबिटे एक लाख बीस हजार सिपाही बड़ी ही आखानीकी साथ भेज सकते थे । कुरोपाटकिन निश्चिन्त नहीं थे, वह देला ही करेगा बन्दीबल कर रहे थे । यालू-किनारे शायद फौज रूसके मोरचे ईश्वर रहे थे और कुरोपाटकिन वही यही हीरोके तोपखाने बरामद किये जाते थे ।

अब आगे कुछ होना कठिन है। कोरियामें हमें नाना असु-विधाओंसे सामना करना पड़ता था; कोरियाके अधिवासी ही हमसे शत्रुताचरण करते थे; हमें रसद नहीं देते थे; किन्तु मञ्चूरियामें हम घरमें हैं; देखें जापान यालू पारकर मञ्चूरियामें कैसे पैर रख सकता है?" उसी समय और एक विचित्र अफवाह उड़ी। रूसियोंने कहा, कि जापानो पुल द्वारा ही यालू नदी पार करेंगे; हमारे पास ऐना एक सामान है, जिससे जापानियोंका यह पुल कई मिनटके भीतर पूर्णरूपसे नष्ट किया जा सकता है। जिस कलसे यह महासंहार साधित हो सकता था, उसका हाल लोगोंसे प्रकट किया नहीं गया था। युद्धारम्भसे कोई दो वर्ष पहले रूस-राजधानी सेण्टपिटर्सबर्गके जारकोसोवो स्थानमें रूसी फौजोंको बहुत बड़ी कवाइद दिखाई गई थी। उस कवाइदके समय प्रकाश्य स्थानमें इस यन्त्रकी परीक्षा हुई थी। नदीकिनारे यह यन्त्र लगाया गया और नदीमें पुरानी नावोंका पुल बाँधा गया। इसके उपरान्त यन्त्र चलाया गया। यन्त्रकी प्रक्रिया आरम्भ होते ही पुलके पास आगकी छोटोसी एक चिनगारी प्रकट हुई। देखते देखते यह चिनगारी बढ़ी और पुलकी लम्बाईमें फैल गई। इसके बाद ही इस लम्बी चिनगारीने एकाएक कोई दो सौ गज लम्बी और कई गज ऊँची आगकी बनी दीवारका रूप धारण किया। जिस फुरतीसे यह दीवार एकाएक खड़ी हुई थी, उसी फुरतीसे एकाएक मिट गई। गई बात यह हुई, कि जिस समय दीवार मिटी, उसी समय वह नावका पुल भी मिट गया; बसकन खरब होकर बहते जलमें मिस्र गया। विशेष ध्यान

देंनेकी बात यह हुई, कि यह सब काख सिर्फ साढ़े सात मिन-
टके भीतर भीतर हो गये ।

रूस इसी यन्त्र द्वारा यालू नदीपर बंधनेवाले जापानियोंके
पूलकी नष्टकर जापानियोंका मञ्चूरिया-प्रवेश रोकना चाहता था ।
किन्तु समझदारोंने उसी समय कहा था,—“इस यन्त्र द्वारा
तमाशा दिखा दिया गया सही ; किन्तु इससे क्या प्रकृत कार्य भी
लिया जा सकता है ?” प्रकृत कार्य शायद कभी लिया नहीं
गया । अन्ततः जबतक रूस-जापान-युद्ध चला ; तबतक इस
यन्त्र द्वारा किसी कार्यके सम्पन्न होनेका समाचार नहीं मिला ।
यालूकिनारे रूस विविध युद्धोपकरणसे सजधजकर जापानियोंके
आगे बढ़नेकी राह देख रहा था । रूसी सिपाहियोंकी गनि-
विधिमें बड़ा परिवर्तन उपस्थित हुआ था ; जिससे स्पष्ट जान
पड़ता था, कि रूसी सिपाही किसी गई हुई शक्ति द्वारा अनुप्रा-
णित हुए हैं । रूसी सिपाही नावोंमें सवार हो यालू नदीमें
गिरदावरी किया करते थे । गिरदावरी करते करते सभी कभी बीजू
नगरके समीप पहुँच जापानी मोरचोंपर गोलो बरसाया करते
थे । जापानी सिपाही भी नावोंमें सवार हो नदीमें गिरदावरी किया
करते थे । कभी कभी दोनों ओरके सिपाहियोंके बीच टकराव हो
जाती थी ; खूनखराबी होती थी । ऐसी ही एक टकराव
दास रूसके प्रधान सेनापति कुरोपाटकिनके अपनी रिपोर्टमें
लिखा था । जापानकी ओरसे एक टकराव कोई हाल प्रकाशित
नहीं हुआ ; इसलिए कुरोपाटकिनकी एक पत्रकी रिपोर्टपर
पूर्णरूपसे विश्वास किया जा नहीं सकता । कुरोपाटकिनकी
रिपोर्ट थी,—“मैं वहीं अपनी रातको बिना शः रुके लि-

शानात्राज सिपाहियोंको नाव द्वारा नदी पारकर वीजू जानेकी आज्ञा मिली। चार दिन पहले यानी ४थी अपरैलको जापानी रिसालेने वीजूपर अधिकार किया था; इनलिये उस समय यानी ८ वीं अपरैलतक वीजूमें अधिक जापानी सिपाहियोंके रहनेको आशङ्का की नहीं गई थी। लफ्टगट डिमिडोविच और सबल-फ्टगट पोटेमकाइनकी अधीनतामें रूसी सिपाही नावों द्वारा वीजूकी ओर चले। नदीमें समालिख नामक एक टापू है। रूसी सिपाहियोंको नावें पहले इसी टापूसे लगीं। ऐसे समय रूसी सिपाहियोंने झलके अन्वकारमें वीजूकी ओरसे तीन नावें आतो देखीं। रूसी समझ गये कि यह नावें जापानी सिपाहियोंकी हैं और जिस उद्देश्यसे यह रूसी सिपाही निकले हैं; उसी उद्देश्यसे जापानी सिपाही भी। यह देख और समझ रूसी सिपाही अपनी नावें छिपा आर भी टापूपर कहीं छिप गये। जापानी नावें भी टापूसे लगीं; उनसे कोई पचास सिपाही टापूपर उतरे। इसके उपरान्त ही जापानी सिपाहियोंपर रूसी सिपाही बाढ़ दामने लगे। फल यह हुआ, कि प्रायः समग्र जापानी सिपाही मारि, डूबाये वा सङ्गीनसे कैद दिये गये। रूसी सिपाहियोंको एक खराबतक नहीं आई।" अपरैल मासमें नदी-वक्षपर होने औरके सिपाहियोंके बीच ऐसी कितनी ही टक्करें हुईं; अधिकांश टक्करोंमें जापानियों हीकी जय हुई।

अपरैलके आरम्भमें तीन सप्ताह युद्धकी तय्यारियोंमें बीते। सैन्य एडमिरल कर्नेने जितना दृष्ट रूसको उठाना नहीं पड़ा; उतना जापानको उठाया मड़ा। रूसी फौजे पत्तो राधोसे चलकर बाल किनारे पहुँचती थीं, जापानी फौजे वरफसे उनके

पर्वत, नदी, मैदान कृत्तिकामकर नदीकिनारे पहुँचती थीं । जापानी फौजोंकी बालू-याताके सम्बन्धमें विनायती अखबार दिल्ली टेलेग्राफ के संवाददाता सेजर मेकडिउने बालूकिनारेसे पूर्वोत्तर अफरेलको जो पत्र लिखा था, उसका मर्ममानुषाद इस-तरह है,—“इस समय जापानी फौजे अपने विद्विष्ट न्यायमें पहुँच गई हैं । इन फौजोंने राहकी असंख्य पिछ-बाधाओंके कामनाकर अपनी बह यात्रा समाप्त की है । कितने ही स्थान अत्यन्त दुर्गन्ध थे; इनमें जापानियोंने सिर्फ अपनी फौजों हीके लिये नहीं, बल्कि अपनी बड़ी बड़ी बहनी तोपोंके लिये भी राह तय्यार की । जापानियोंके सुनिश्चय और कामकी सुगच्छला देख मैं सुग्ध हुआ हूँ । पिछवाड़ा और चाङ्गजूके बीचकी टूटीफूटी राह जापानियोंने फिरसे बनाकर तय्यार की है । कितने ही प्रख-शयमल खेतोंमें खड़े बिहवा राह तय्यार की; नालीपर छोटे और नदियोंपर बड़े पुल बांधे । बह-हल्लीसे प्रखतीरे काटी गईं और उनसे ऐसे मजबूत पुल बनाये गये, कि उनपरसे बड़ी बड़ी तोपें भी व्याप्तकीक भाष चली गईं । बरबरदारीका काम कुलियो और छोड़ोसे लिवा गया । बरबरदारीके पशु और बूली दूर दूरतक सीटि-याँकी तरह झिटके दिखाई देते थे । हरक कुत्तोपर दीई पक्ष-तर तरखा दोभ रघता था । रकदले लही छोटी छोटी गाटि-याँ हैं ।

यर जो व्यस्यारी पुल तय्यार करते थे ; वह लोहेके पीपोंके होते थे । लोहेके पीपे पानोमें पैराकर उनपर तखते बांध पुष तय्यार कर दिया करते थे । इन पुलोंसे काम निकल जाता था सही ; किन्तु वजनी लोहेके पीपोंको स्थानान्तरित करनेमें बड़ा समय और श्रमयय होता था । किसी किसी स्थलमें राहकी कठिनताकी वजह यह वजनी पीपे यथासमय पहुँच ही नहीं सकते थे । इस युद्धमें जापानने एक नये ही ढङ्गके पीपे प्रकटकर युरोपके रणपण्डितोंको एक नई बात बताई । जगद्दियात विलायती अखबार टाइम्सके फौजी संवाददाताने इन पीपोंके सम्बन्धमें लिखा है,—“इन पीपोंको देख जपानियोंकी बुद्धिकी प्रशंसा करनेको जो चाहता है । प्रत्येक पीपा चौबीस फुट लम्बा और चार फुट चौड़ा है ; कोई दो हजार साढ़े सात सौ सेरका बोझ उठा सकता है । हर एक पीपा दो भागोंमें विभक्त है और इनमेंका हर एक भाग तीन टुकड़ोंमें बँटा हुआ है । पीपे टुकड़े टुकड़े किये जाकर घोड़े या खच्चरकी पीठपर आसानीके साथ लाद दिये जा सकते हैं । इन पीपोंमें विशेष नूतनत्व यह है, कि यह सब लोहेके नहीं ; बल्कि काठ और ‘कनवास’ नामक सूतो टाटके बने हैं ; इसीलिये बहुत ही हलके हैं । लोहेके पीपेका ऊपरी भाग खुजा रहता है ; किन्तु यह टाटके पीपे चारों ओरसे अच्छी तरह बन्द है ।”

पहले ही लिखा जा चुका है, कि कोरियाकी इस पहली जापानी फौजके प्रधान सेनापतिका नाम कुरोकी है । कुरोकी वारन है ; अपने देशके एक प्रधान सरदार । जिस समय कुरोकी-पदभार अर्पण क्रिया गया, उस समय उनकी व्यवस्था

साठ वर्षकी थी। शायद कुरोकीकी वयोवृद्धि होके खयालसे जापानकी रूस-दूत वारन वेन्तोसकीने कहा था,—“कुरोकीसे किसी बहुत बड़े कामकी प्रत्याशा की जा नहीं सकती।” किन्तु असलमें कुरोकीसे बहुत बड़े कामकी प्रत्याशा करके ही उन्हें जापान-सरकारने अपनी एक सुदृढ़ और अत्यन्त सुशिक्षित सैन्यकी अफसरी प्रदान की थी। कुरोकी सत्सुमावंश-सम्भूत हैं। उनका मत है,—“तुम्हें जो कुछ करना है, उसका रत्नोरत्नी सामान स्वयं एकत्र करो; यह व्याधान करो, कि देशान् जब असुक वान हो जायेगी, तब तुम्हारा काम पूरा हो जायेगा।” सन् १८६४ ई०के चीन-जापान युद्धमें जापानी पौजोंके लिये राज-सामान संग्रह करनेका भार इन्हीं कुरोकी-पर रखा गया था और इससे जो सुफल उत्पन्न हुआ, वह लोगोंके विषय नहीं है। उस युद्धमें अपने राज-सामानके अभावमें जापानी पौजोंका कहीं भी कुछ उटना नहीं पड़ा। कुरोकीके सन्तानमें जापानियोंका मत है,—“कुरोकी अब्बल सरलेके रत्न-प्रसिद्ध हैं। वह आक्रमण करनेकी फुरतीनें नहीं; बल्कि आक्रमण करनेकी तय्यारीनें ही अपनी सारी शक्ति-धामर्ष्य सब बरतते हैं। एक कदम भी आगे बढ़नेसे पहले वह अपनी पौजोंके लिये जरा जराही चीजतक संग्रह कर लेते हैं।

रूसी फौजमें सिर्फ़ गोली ही गोली थी; किन्तु जापानी फौजमें युद्धके लिये नितान्त उपयोगी स्वदेशभक्तिजन्य प्रवल उत्तेजना थी। अपने जल-सैन्यकी वारंवार विजयप्राप्तिके समाचारसे यह उत्तेजना और भी बढ़ गई थी। कहते हैं, कि प्रधान सेनापति वारन कुरोको यदि इस उत्तेजनाको दबानेकी चेष्टा न करते रहते, तो यह उत्तेजना असीम होकर गड़ हो जाती। कुरोको जिन जापानी सिपाहियोंको गिरदावरीके लिये भेजते थे; वह सिर्फ़ नदीमें गिरदावरी करके ही निश्चिन्त होते नहीं थे; बल्कि प्रायः ही नदी पारकर रूसी मोरचोंमें रूसी सिपाहियोंसे दो दो घायल लड़ आया करते थे।

अब एक भलक उस भूभागको भी देखिये, जिनपर युद्धको यह घन पटा बरसनेकी थी। कोई तीस हजार रूसी सिपाहो यालूकिनारे कोई बीस मीलकी लम्बाईमें दोरचावन्दी किये बैठे थे। दोनों फौजोंके बीच यालू नदीकी चौड़ाई कोई छेड़ कोसकी थी। इस चौड़ाईकी दो टापुआने विभक्तकर नदी-धारकी तीन शाखाओंमें विभक्त कर दिया था। इनमें अगल-बगलकी शाखाओंका जल उतना गहरा नहीं था; कहीं कम-रतक गहरा था; कहीं हातोतक। बीचकी शाखामें सुगभोर जल था और उसीपर पुल बांधनेका प्रयोजन था। जो टापू रूसी किनारेके समीप था, उसका नाम चिउनसोङ्गडी था और जो जापानी किनारेके समीप था, उसका नाम किनताताव। दोनों टापू जलसे कुछ ही ऊंचे थे और दोनोंका अधिकांश भाग बाढ़से बना था। दोनोंपर कुछ कोरियावासियोंका निवास था। दो शान्त-प्रिय कोरियावासियोंने जब अपने आवास-

न मानकी दो प्रवण प्रतिद्वन्द्वियोंके बीच पाया, तो अपने मकानोंकी
 बालमें बड़े बड़े गड्ढे खोद किये और भावी गोलार्द्धसे
 बचनेके लिये इन गड्ढोंमें छिप प्राण रक्षा करना स्थिर किया ।

जिस जगह दोनो शक्तियोंकी फौजें आमनेसामने पड़ी थीं,
 उसमें कोई डेढ़ कोस ऊपर आई-यालूका सङ्गमस्थल था । इस
 सङ्गमस्थलमें यालू और आई इन दोनो नदियोंने मिलकर अङ्ग-
 रेजी वर्य"वाई" की स्रस्त बना दी थी । इस वर्यकी बाईं शाखा
 आई नदी थी और दाहिनी यालू नदी । रूसो फौजका ओर इस
 अक्षरकी जड़के पास था और और इस अक्षरकी बाईं शाखाके
 ओरपर ; यानी आई नदीके किनारे किनारे बहुत दूरतक ।
 आई चुद्र नदी है ; इसका जल दो या ढाई हाथसे अधिक
 गहरा नहीं । अभी लिखा है, कि पूर्वोक्त अङ्गरेजी वर्यकी
 दाहिनी शाखा यालू नदी है ; सङ्गमस्थलसे ऊपर इसी यालूवाली
 शाखानें छोटेबड़े कितने ही टापू हैं ; इनमें झण्डीदो टापू
 अपेक्षाकृत बड़ा है और वही जापानाधिपत्य वीजू नगरके
 निकट है । वीजूसे कोई साढ़े दूः कोस ऊपर सुङ्गचिन नगरतक
 टापू दो टापू हैं ; इस नगरकी बाह यालू निर्दोष ही बहती है ।
 ये ही बाईं ओर जड़नें आरटुशान और निशाङ्गनिङ्गचिन
 नामकी पर्वतश्रेणी है, जिनपर रूसकी बड़ी बड़ी तोपें रखी थीं ।
 इन पर्वतश्रेणियोंसे कुछ ऊपर आरटु नामक नगर है ।
 इस नगरकी रूसी फौजने अत्यन्त सुदृढ़ और हम्बट बना दिया
 था । इस नगरसे कुछ ऊपर पाल्किन्डिने किल्लिकिचिङ्ग
 नामक नगरा गगा है, इसी नगरनें रूसमें रूसका नाम बड़ा कीटा
 था । किल्लिकिचिङ्ग नगर प्राङ्गनिङ्गचिनके अत्यन्त सुदृढ़

उसकी चारों ओर पसरती हुई ऊंची पर्वतमाला दूर दूरसे दिखाई देती और बड़ी ही डरावनी जान पड़ती है। इस पर्वतमालापर रूसकी बड़ी बड़ी तोपें चढ़ी थीं और इसके अङ्गमें जगह जगह सुदृढ़ मोरचे बंधे थे। इसी किउलिनचिङ्गसे सुकदन प्रभृति मङ्गूरियाके प्रधान प्रधान नगरोंकी ओर बहुत ही चौड़ी और सुदृढ़ शाहराह बनी गई है। किउलिनचिङ्ग और खाई नदीके बीचकी भूमि पार्ष्वभूमि है। इस भूमिके आर्द्रवाले किनारेपर यूशूकाऊ स्थान है और यालूवाले किनारेपर सङ्गमपर माकाऊ। इस भूमिपर रूसका अधिकार था और इस भूमिके इन दोनों स्थानोंमें रूसकी बड़ी बड़ी तोपें लगी थीं। इस भूमिके यूशूकाऊ स्थान हीमें रूसी फौजका क़ोर था। Y वर्गकी बाईं ओर रूस-अधिकारका रेखा ही दृश्य था। वर्गकी दोनों शाखाओंके मध्य-भागमें जो स्थान है, वह बहुत ही ऊंचा है। इस स्थानमें वर्गकी दाहिनी शाखाकी ओर हुसान नामक पर्वत है। यह पर्वत नीचा होता होता वर्गकी बाईं शाखाके समीप यूचाग्रान नामक स्थानमें समतलभूमिसे मिल गया है। यह यूचाग्रान स्थान रूस-अधिकृत यूशूकाऊ नामक स्थानके ठीक सामने है। अङ्गरेजी वर्ग Y की दाहिनी ओर और उसकी दोनों शाखाओंके मध्यका दृश्य लिख दिया। इस वर्गकी बाईं ओर आदिसे अन्ततक जापानियोंकी फौज फैली हुई थी।

जब दोनों पक्षकी लड़ाईकी तय्यारियां समाप्तिके समीप पहुँचीं, तब दोनों पक्ष एक दूसरेकी बड़ी बड़ी तोपोंवाले तोपखाने आगनेके लिये उत्सुक हुए थे। २१वीं अप्रैलकी

यही जाननेके लिये प्रधान रूस-सेनापति मास्कु लिष एक यात्रा
 निकले। उन्होंने इस दिन चार बड़ी बड़ी नावोंमें कितने ही रूसी
 सिपाही भरे और ऐसा ढङ्ग दिखाया मानो वह उन नावोंको
 बौकको घोर भेजना चाहते हैं। रूस-सेनापतिको विश्वास था,
 कि इन नावोंको देख इन्हें ध्वंस करनेके लिये जापानी तोपखाने
 गोले बरसायेंगे और यह गोलावृष्टि होनेसे जापानी तोपखानोंका
 स्थान प्रकट हो जायेगा। किन्तु जापान-सेनापति रूस-सेना-
 पतिकी यह चाल नमन्य गये। उन्होंने गोले चलानेकी आज्ञा
 नहीं दी। नदीकिनारे जापानी सिपाही बैठा दिये और वैसे
 ही रूसी नावें किनारेके समीप पहुँचीं; वैसे ही जापानी
 सिपाही उन नावोंपर गोलियोंकी बौझार करने लगे। मूलतः
 रूसी सिपाही मारे गये, कितने ही जखमी हुए। नावें
 जलद जलद अपने किनारेकी ओर जौटो। अपनी नावोंकी
 बचानेके लिये रूसी तोपखानोंकी जापानी सिपाहियोंपर गोले
 बरसाने लगे। इसतरह रूस-सेनापतिकी इस चालका फल
 लफटा हुआ। जापानियोंकी तोपखानेका स्थान जाननेके वरते
 रूस-सेनापति अपने ही तोपखानेका स्थान प्रकट करदेनेपर
 बाधा हुए।

देख सकते थे ; किन्तु जापान-सेनापतिने राहोंके किनारे कोने तक टट्टियां लगवा दी थीं और इन्हीं टट्टियोंकी आड़में रूसियोंकी दृष्टिसे अगोचर रह जापानी अपनी फौजे और तोपें आदि स्थानान्तरित किया करते थे । अखिरेरुसके अन्तिम सम्राटने रूसियोंको धोखा देनेके लिये जापान-सेनापतिकी भी एक चाल हुई । ऊपर लिखा जा चुका है, कि जापानाधिकृत किनारेके समीप वीजूके सामने किनताताव नामक एक टापू था । जापान-सेनापतिने रूसियोंको सिर्फ धोखा देनेके लिये इस टापूपर पुल बांधनेके बहुतसे साजसामान एकत्र किये ; ऐसा ढङ्ग दिखाया मानो जापान इसी टापूके सामने पुल बांध रूसके किउलिनचिङ्ग नगरपर आक्रमण करना चाहता है । यह देख रूसियोंने किउलिनचिङ्ग हीमें अपनी फौजका बड़ा भाग एकत्र किया और रूसी तोपें कई दिनोंतक किनताताव टापूपर गोले धरना अपने गोले नष्ट करती रहीं ।

२५वीं अखिरेरुसको यालू नदीका युद्ध बड़े ही लघुरूपमें आरंभ हुआ । इस दिन रियर एडमिरल थोमोयाके अधीन कितनी ही गनबोटों और तारपेडो-नावोंका एक बड़ा यालू नदीके मुहानेसे घुसकर रूस-अधिकृत आण्टु प्रान्त स्थानके समीप पहुँच उनपर गोले परबाने लगा । नदीमें बड़े बड़े जड़ों जहाज आ नहीं सकते थे ; आ सकते, तो बड़ी आते । रूसी तोपें भी गोले चलाती थीं ; किन्तु उनका गोला जापानी बड़ेतक पहुँचता नहीं था । यह देख रूस-सेनापतिने अपने मुखविद्ध कजाक-रिमाको नदीमें छोड़े पैरा जापानी नदीपर आक्रमण आजा ही । कजाक-रिमाका छोड़े लड़ाना—प्राथम्य

कंधा—दीकिनारे पहुँचा। ऐसे समय जापानी बेड़ेसे
 रिवाँपर भयङ्कर गोला-वृष्टि होने लगी। इस गोला-वृष्टिसे
 कंधीर ही कजाक-रिवाला जिस फुरतीसे किनारे पहुँचा
 था, उसी फुरतीसे किनारेसे भाग पहाड़ोंकी ओट ही
 गया। इस दिन दिनभर रुस-अधिकृत कितने ही स्यानों-
 पर गोले बरसा मन्व्या समय जापानी बेड़ा समुद्रकी ओर
 लौट गया। दूसरे दिन २३वीं अपरेकको फिर प्रकट
 हुआ और फिर कल हीकी तरह रुस अधिकृत स्यानों-
 पर गोले बरसाने लगा। आज भी कजाक-रिवालेने बेड़े पर
 आक्रमण करनेकी चेष्टा की और आज फिर कल हीकी तरह
 उसे परास्त ही भागना पड़ा। कलकी अपेक्षा आज कजाक-
 रिवाला अधिक क्षतिग्रस्त हुआ। इसके उपरान्त फिर उसने
 जापानी बेड़े पर आक्रमण करनेका साहस नहीं किया; दूर
 पर रह उसे निगाहपर चढ़ाये रहने लगा; कहते हैं कि
 तीसरे दश हजार कजाक-सवार बेड़ेके परदेनें नियुक्त हुए।
 कंधीर जापानके बंद तोपखाने, जिन्हें जाननेको रुस हट-
 टाया था; यथास्थान सम चुके थे। रुसकी सभनें भी
 मर नहीं पा, कि उस समय उसकी पौधकी मध्यभाग
 कश्मिरिङ्ग नगरको बगलनें बीजूकी दाहनें जापानका कितना
 करत तोपखाना लगा हुआ था। इस तोपखानेनें चौकीले
 खानकी तोपें, कितनी ही छोटी और चौड़ी हँदली तोपें
 और कुछ बहाली लकी लकी तोपें थीं। तोपखाना इन
 दुर्गें लगा था, कि किश्किमिङ्ग नगर और रुसकी पौधके मध्य
 भाग स्थानी कश्मिरिङ्ग पर रहे। यह तोपखाना किना

हुआ था और युद्ध के तूल पकड़ने के बाद तोपखानेका अस्तित्व रूसियोंको जान पड़ा ।

२६वीं फरवरीको बड़े सवेरे एक और हम बेटों ने आगे बढ़ एक घण्टे की गोलाबारीमें रूसकी दश कोस लम्बी मोरचाबन्दीके दाहने छोरवाले आगटुशन पर्वतके तोपखानेका सुं ह बन्द किया ; दूसरी ओर गार्ड और द्वितीय डिविजन फौजके टुकड़ोंको रूसियोंकी नदीके टापुओंसे मार भगा उनपर कब्जाकर लेनेकी आज्ञा हुई । भीमवेगसे आगे बढ़ द्वितीय गार्डने वीजूके पासवाले टापू कितना-तावपर अधिकार कर लिया ; रूसी भागे । गार्ड फौज वीजूसे कई कोस ऊपर कुलीदो द्वीपपर अधिकार करने चला । कुलीदोसे रूसी आमानोसे न भागे ; छोटोमी खड़ाई हुई ; जापानी फौजके कोर्डे पचीम सिपाही जखमी हुए और रूसी फौजके सिपाहियोंकी अपने कितने ही हताहतोंको ले किउलिनचिङ्ग नगर लौटना पड़ा । घाज दिनभर जापानके वीजू नगरपर रूसो तोपे अविराम गोला-वृष्टि करतो रहतीं ; किन्तु जापानकी ओरसे एक भी गोला चलाया नहीं गया ।

२७ वीं और २८ वीं अपरेलको एक ओर जापानी बेटा रूसी मोरचोंपर आक्रमण करता रहा दूसरी ओर जापानी गार्ड फौज अपने नवाधिकृत कुलीदो टापूसे यालू किनारेके हुमान पर्वत-माझपर अधिकार कर लेनेकी चेष्टामें लगी रहती । कुलीदो टापूसे जापानी गोलो-गोलोंकी भयङ्कर वृष्टिसे विध्वस्त हो रूसी फौज हुमान पर्वतमाझसे हट गई ; किन्तु २९ वींके सवेरे उनमें फिर आगे बढ़ हुमानपर अधिकार कर लिया । २८ वींकी मध्याह्नक जापानी फौजने जितनी काररवाइ की, उनमेंसे रूसको—या बाह-

के किसी आदमीको—यह जान न पड़ा, कि जापानका प्रकृत
आक्रमण किस ओरसे होगा ।

पहले ही लिख चुके हैं, कि सुकुचिन नगर वीजूसे साढ़े छः कोस
वीजू-आई नङ्गमसे ऊपर है । २६ वीं अपरैलको इसी सुकुचिनके
पाम जापानकी द्वादश डिविजन फौज चालू पार करनेके लिये
पुल बांधने लगी । इस जाह्न चालूमें कोई टापू नहीं है ; कोई
शे मी तीस गज चौड़ाईमें चालूकी धारा बहती है । जापानी सिपा-
दियोंने पहले आसपासके खूबियोंको मार भगाया, इसके बाद पुल
बांधना आरम्भ किया । उस जाह्नका शीतकालीन चालू-जल
यदि दरफ बन नहीं गया था, तो बरफसे कम शीतकाल नहीं
था । पुन बांधनेवालोंके ऊपर बरसते हुए खूबी गीले थे और नीचे
कानि भयङ्कर शीतकाल बस । पीपेका पुल बांधने लगा । पीपेका
लङ्गर ठीक करनेके लिये एक जापानी जैसे ही जलमें उतरा, जैसे
ही जलकी शीतकतासे मरकर अकड़ गया ; यह देख कितने ही
जापानी जलमें पाँद पड़े और मर मरकर पीपेका लङ्गर दुख
करने और पुल बांधने लगे । उधर सुकुचिनमें यह हो रहा था
और उधर कुलीदोने गार्ड फौज पुल बांध कुलीदो टापूसे ओची-
बदो टापू पहुँची और ओचीकहोसे अपने ठीक सामने अवस्थित
हुसान पर्वतमाकापर धावा बोलनेके लिये हुसान पुल तयार करने
लगी । इसी हुसान पर्वतमाकाकी जलमें नदी-गर्भके देतपर कोरे
लगा जापानियोंकी पुल-इस्तीनें बाधा उपस्थित करने लगे, जापान-

डिविजनका पुल तय्यार हो गया और इसी दिन प्रातःकाल सन्धी
 द्वादश डिविजन फौज यालू नदी पार हो गई। उधर यह हुआ ;
 उधर इसी दिन कोई दश बजे बीजूके समीप लगे बहुत बड़े जापानी
 तोपखानेके सामनेकी आड़ हटाई गई और तोपखानेसे रूसके
 किउस्किनचिङ्ग नगरपर गोलाकी भयङ्कर वृष्टि होने लगी। यह
 गोलावृष्टि सानो कोई दश कोसकी लम्बाईमें जगह जगह लगे
 जापानी तोपखानों द्वारा रूसियोंपर गोलावृष्टि आरम्भ
 होनेका सङ्केत हुआ ; हर ओरने अग्निसुखी तोपें गज्जन करने
 लगीं ; जापानी बेड़ा भी अपनी जगह पहुँच गोलि बरसाने
 लगा। इस घोर गोलावृष्टिमें एक ओर बीजूके सामने पुल बाँध
 द्वितीय डिविजन फौज रूसी किनारेके निकटस्थ चिउनसङ्गसे और
 उससे नीचे उसको बासके टापू लङ्गादीसे पुल बाँध आगे बढ़ रूसी
 मोरचावन्दीके मध्यभागपर आक्रमण करनेके लिये तय्यार हुईं
 और दूसरी ओर मध्यातक कुलीदी टापूके पड़ोसके ओचोकदी टापू
 और हुसान पर्वतमालाके बीच पाँच पुल बाँध गाँव फौज रूसि-
 योंको मार भगा हुसान पर्वतमालापर चढ़ गईं। यहाँसे और
 सुकुचिनसे आगे बढ़ती हुईं द दश डिविजन फौजके सामनेसे पीछे
 हटकर रूसी फौज आई नदी पारकर उसके दूसरे किनारे वापस
 गईं। ३० वीं अगस्तको मध्याह्नो पिन समय गोला-वृष्टि बन्द
 हुई, उस समय जापानी फौजके तीनो डिविजनका बड़ा भाग
 यालू नदीकी प्रधान धारा पारकर रूसी मोरचावन्दीके बहुत
 दलीय पहुँच गया। इसी रात जापान-सेनापति दुरोकोने जापान-
 सम्राट्की सार भेष दूसरे दिन प्रातःकाल १ वीं मई रविवारसे
 युद्धरत्न करनेकी सङ्करी मंगाई।

१ मी मई रविवारका प्रातःकाल उपस्थित हुआ। प्रकाश
 जैसे जैसे बढ़ा, वैसे वैसे नदी और उसके इर्दगिर्दके भूभागपर
 छाया घुचरा उड़ा; बुद्धस्यलका दृश्य क्रम क्रमसे नाफ होने
 लगा। प्रातःकाल कोई चार ही बजे जापानी फौजे' सजधजकर
 अपनी अपनी जगह खड़ी हो गईं। फिर हुआ,
 कि दिन ८ बजे जापानी द्वाद्दश डिविजन फौज आगे बढ़
 आई नदी पार करे; शत्रुकी नदी किनारेसे मार भगाये,
 माकाऊपर कब्जा करे और किडजिनचिङ्ग नगरसे जब प्रायः
 भागे, तब लग्गी राए रोके। जिस समय द्वाद्दश डिविजन फौज
 आगे बढ़े टीका उल्लेख समय हुआक प्रवर्तमानासी गाँव फौज
 में आगे बढ़े और द्वाद्दश डिविजनकी बगलमें वहींमें आगे
 नदी पारकर यूशूकाऊपर आक्रमण करे। गाँव पौज टाङ्ग
 कीसे आगे बढ़ किडजिनचिङ्ग नगरपर आक्रमण करे और
 इसकी बाद नौके लहर अपने बायें आनटुङ्ग नगरपर प्रायः कीले।

प्रातःकालका प्रकाश अभी लक्ष्मी तरह फैलने भी नहीं
 पाया था, कि जापानी कुछ तोपखानों और बंदूकों का एक सेना

अपेक्षाकृत मन्नाटा छा गया। यह देख द्वादश डिविजन फौज कोई दो कोस जमी पंक्तिमें हर्षनाद करती आई नदीकी ओर झपटी। रूसी पलटने हाथोंमें बन्दूक लिये आईके उसपार सुदृढ़ पार्वत्य मोरचोंमें चुपचाप बैठ जापानी फौजका बढ़ना देख रही थीं। युद्धस्थलका उम समयका दृश्य देखने लायक था। एशियाकी एक ज्वररस्त फौज युद्धके लिये आगे बढ़ रही थी और युरोपकी एक ज्वररस्त फौज मोरचोंके भीतर बैठ अपने शत्रुके आगमनकी प्रतीक्षा कर रही थी। एशिया और युरोपके तमाशाई दोनों फौजोंकी काररवाई टकटकी लगाये देख रहे थे। वह जानते थे, कि इस युद्धका प्रभाव वर्तमान रूस-जापान-युद्ध हीपर नहीं पड़ेगा; बल्कि समग्र एशिया और समग्र युरोपपर पड़ेगा और उस प्रभावसे वह उलटफेर ही मन्वते हैं, जिनके होनेकी कल्पनातक की जा नहीं सकती।

द्वादश डिविजन फौज आई नदीकी ओर चली। जिस जगहसे फौज चली थी, उन जगहसे आई नदी कोई दो कोस दूर थी। बीचकी भूमि यदि समतल होतो, तो जापानी फौज छितराकर आगे बढ़ती, और रूसी गोले-गोलियोंका निशाना न बनती; किन्तु बीचमें पार्वत्य भूमि रहनेकी वजह सेलकं दस जापानी सिपाहियोंकी निर्दिष्ट राहों हीसे आगे बढ़ना पड़ता था। बीचके समीपका लगा बड़ा जापानी तोपखाना आई नदीके किनारेवाले रूसी मोरचोंपर गोले बरसा रहा था; इस गोला बरिष्के फलमें रूसी अपने मोरचोंसे निकल जापानियोंपर आक्रमण करनेका साहस कर नहीं सकते थे; निरंक अपने मोरचोंमें आना फौजके गोलीकी मारके भीतर आनेकी प्रतीक्षा कर

रहे थे । देखते देखते जापानी फौज आईकिनारे पहुँची । आईका
 जल कहीं गहरा था और कहीं पायाव । जिन जगहोंमें पायाव
 जल था, जापानी फौज चारों ओरसे सिमटकर उभी जगह
 एकत्र हुई और नदी पार करने लगी । रूसी पहले हीसे जानते
 थे, कि जापानी फौज इन्हीं पायाव जगहोंसे नदी पार करेगी ;
 इसलिए उन जगहोंके नामने ही दलके दल रूसी सिपाही बैठे
 थे । जैसे ही जापानी फौज नदी पार करने लगी, वैसे ही उसपर
 रूसी सिपाही गोले-गोलियोंकी विषम वृष्टि करने लगे । जापानी
 सिपाहियोंकी दाशपर दाश गिरने लगे । एक गिरी, दो गिरी,
 तीस गिरी,—देखते देखते कोई एक सौ लाख गिरीं । विलायती
 साख्यार लेखी क्रान्तिकारके कंवाद्दाता डोनीचो साख्यने यह कुछ
 कपनी आखों देखकर लिखा है,—“किसी युद्धमें किसी फौजकी मैंने
 इसतरह गोला-गोली-वृष्टिमें पतित हो मरती नहीं देखा ; दक्षिण
 अफरिकाके दोर-युद्धमें भी तुम्हे यह दृश्य दिखाई नहीं दिया ।”
 किन्तु इससे जापानी सिपाहियोंकी हिम्मत नहीं हटी ; बल्कि
 कपनी भाइयोंकी मृत्यु, देख लगही उत्तेजना और भी बढ़ी ;
 रूसियोंके समुदासमने प्रवृत्त होनेकी साक्ष्य प्रकटके प्रकट
 ही लटी ; इस अग्निवृष्टिकी कोई परवा न कर जानते, ईश
 आइ नदी पारकर दूसरे किनारे पहुँची और वहाँ रूस फौज
 हाथकी दिशामें परिपूर्ण करती रूसी नोरथोने हुए सन्धार

इधर यह होने लगा उधर इस अश्वलसे कुछ नीचे हुमान पर्व-
तकी गाड़ फौज आई नदी पारकर माकाऊके रूसी मोरचोंपर टूट
पड़ी। पहले ही लिखा जा चुका है, कि बीजूके मामनेके टापुओं-
पर द्वितीय डिविजन फौजका कब्जा था। इन टापुओं और रूस-
अधिष्ठत यालू किनारेके बीच नदीकी जो धारा थी, वह पायात
थी। इसी दिन प्रातःकाल भयङ्कर गोलावृष्टिमें द्वितीय डिविजन
फौज नदीमें फाँद पड़ी। ऊपरसे गोलियाँ बरस रही थीं; नीचे
जलकी प्रखर धारा सिपाहियोंके पैर टिकने नहीं देती थी; फिर
भी सिपाही आगे बढ़ते ही जाते थे। बड़ी ही चतुः सङ्कर
अन्तमें जापानी सिपाही किनारे पहुँच गये और उन्होंने थोड़ीही
दूरके युद्धमें रूसियोंको नदीतटसे मार भगाया। जापानकी तीनों
फौज यानी द्वितीय डिविजन, गाड़ और द्वादश डिविजन फौज
रूसियोंके मोरचेके समीप पहुँच लम्बी पंक्तिमें फैल गई और
अब रूस-अधिष्ठत यूयूसाऊखानसे आगट्ट नगरके समीपतक
कोई दृश कोसकी लम्बाईमें रूसियों और जापानियोंके बीच घोर
युद्ध होने लगा। आज जापानी बेड़ा आगट्ट, खानसे भी कुछ आगे
बढ़ अविश्राम गोला-वृष्टिकर रूसियोंको ध्वस्त-विध्वस्त करने लगा।

देखते देखते युद्धने और भी भयङ्कर स्थिति धारण की।
गोलियोंके दलके दल सिपाही उड़ने लगे; गोलियोंकी बाढ़से एक
साथ कितने ही सिपाही समीपपर लोटने लगे। जगह जगह
तलवार चकने लगी; वसुधरा उत्तम नरभक्तसे लाल होने
लगी। रूसी सिपाही अपने अस्त्रबलसे, मुद्यबलसे और
बलसे अधिक अपनी सुदृढ़ मोरचावन्दोंके बलसे जापा-
नी दार भगानिकी चेष्टा करने लगे; किन्तु जापानी

दूरे शैल-गरीके जहाज फुफुई मारुने डूबे हुए पियो मारुकी
 बाहरमें पहुँच लङ्गर डाला । फुफुई मारु छिरोज नामक एक
 जापानी अफसरकी अधीनतामें था । छिरोज अपने अचिन्त-
 नीय पराक्रमके लिये प्रसिद्ध थे । इससे पहले जब सुदानेमें
 इवानके लिये जहाज भेजे गये थे, तब भी इन छिरोजकी एक
 जहाजकी अफसरों दी गई थी । उस समय अपना जहाज
 सुदानेके समय इन छिरोजने बड़ा पराक्रम प्रकाश किया था ।
 छिरोज जिसे जहाजके परिचायक थे, वह जहाज जब यथा-
 गाम पहुँच गोला-गोलीकी दृष्टिसे डूबने लगा और जब
 लम्बी कुल सिपाही नावोंमें बैठ भागनेके लिये तय्यार हुए
 तब छिरोजको याद आया, कि वह अपनी सरकारों तलवार
 डूबते हुए जहाजकी सबसे ऊपरकी कोठरीमें भूल आये हैं ।
 अपने हाथियोंकी तरह छिरोज भी नावमें सवार हो चुके थे ;
 किन्तु तलवारका खयालवर नावसे नीचे जहाजपर चढ़े
 और गोलीकी चोटसे चलनी देने जहाजके लिये दौड़ते ऊपरकी
 कोठरीमें पहुँच अपनी तलवार लाये । छिरोजके उस पराक्रमकी
 प्रशंसा उनके शत्रु, सुसिगने भी मरसुसुसते ही थी । वही
 छिरोज उसी कामके लिये हमें जगह आज फिर उपस्थित

हिरोजने इससे अपना कोई नुकसान नहीं देखा। तारपेडो यदि जहाजमें खराब न बनाता, तो दूसरे ही क्षण वह स्वयं अपना जहाज उड़ा देनेकी व्यवस्था करवे। जहाजकी डूबता देख हिरोजने अफसरों और सिपाहियों को जहाजसे उतर नावोंमें सवार होनेके लिये कहा। सबके सवार हो चुकनेपर हिरोज भी नावमें सवार हुए; ऐसे ही समय गतवारकी घटना इस बार फिर हुई; उसवार ठीक इसी समय हिरोजकी अपनी छटी हुई तखवार याद आई थी; इस बार अपना छूटा हुआ मातहत अफसर सुगिनो याद आया। जहाज डूब रहा था; उसपर जाना नष्टके मुंहमें जाना था; किन्तु हिरोज निःशङ्क मरसे नावसे जहाजपर चढ़ गये। एकवार नहीं—दो बार भी नहीं—तीन बार समुचे जहाजमें सुगिनोके लिये उन्होंने चक्रार लगाया; किन्तु सुगिनो वहाँ था न मिला। जन्ममें इताम हो हिरोज अपने साथियोंके पास नावमें आये। नाव जहाजसे जुदा हो बड़ी तेजीके साथ अपनी तारपेडो-नावोंकी ओर भागी। उस समय जलपर दिन जैसा प्रकाश फैल रहा था; हूबी गोखन्दाज ताक ताककर नावपर गोले उतार रहे थे। एकाएक एक गोला चा हिरोजके शिरपर पड़ा। हिरोजका शिर और छाती उड़ गई; छातीसे नीचका धड़ गोलेकी चोटसे मांसका पिछ बन गया। कोई बलव्या नहीं हुई—कोई कष्ट नहीं हुआ,—एक पलसे भी क्षममें वीरवरने अपनी इच्छलीला संवरण की। हिरोज जापानके इतिहासमें अमर होनेके लिये मर गये; किन्तु नावमें हिरोज थे, वह निर्विज्र अपनी तारपेडो-नावके पास गई। यथासमय हिरोजकी शत्रु-दृष्ट पापान गई और

बड़े ममारोहके साथ नसाधिस्य की गई ; समग्र जापानने अपने इस हीर अफसरकी स्तुत्यपर अमृजनसे बचस्यज मित्त किया ।

द्विज जगज पुकूई मारु हुना था, उमके दावे वाहीको मरुने पहुँच अपनेको उड़ा दिया । अबतक लुकी निलोंकी तोषों और ही लुकी गनघोटों और एक हिश्राये-नावने बाधा देनपर भी जापानके तांगी सौदागरीने जहाज बन्दरके सुखानेमें एक पंक्तिमें लूवे-पछलेसे मिरर लिये हुए मनसूवेडे अदुसार काम हुआ । किन्तु इसके बाद जैसे ही जापानका घाँपा घघाज योगीसा मारु अपनी जगज पहुँच लूकने पका डैमे ही एक विषम बाधा उपस्थित हुई । लुकी तारपेरीने दही प्रतीम का एक आपानी जहाजदो टकर ही और लम्प मीरे रानने का । दोनों जहाज मटे हुए थे ; इकलिये हिश्राये मरुने ही तोषोंकी निवगारिअनक जापानी जहाजने मिषादिअंश । देनने समती ही । एक जबरदस्त धरैले भी जापानो जहाज अपने लकासे विचलित नहीं हुआ । वह फिर अपनी जगज पहुँच

कपतान हीरोजके अलौकिक पराक्रमका हाल सुन चुके अब प्रेषीक्त योनेमा मारु जहाजके कपतान मामाकीकी अचिन्तान्तर निर्भीकताका वर्णन भी सुन लीजिये । जिस समय मासाकी अपना जहाज ले बन्दरकी ओर चले, उस समय एक गोलेका टुकड़ा आ उनकी कनपटीपर लगा । कनपटीपर बहुत बड़ा जखम हो गया ; जखमसे रक्तधारा बहने लगी ; फिर भी वीरवर अपनी जागृ अटल-अचल बन खड़े रहे और जहाज निर्दिष्ट स्थानकी ओर ले चले । पूर्वोक्त डिब्रायेरके घक्केसे संभल जिस समय जहाज फिर अपनी राह लगा, उस समय एक गोलेका टुकड़ा आ कपतानके कन्धेपर लगा । कन्धेपर भी बहुत बड़ा जखम हुआ और इस जखमसे भी रक्तधारा बहने लगी । ऐसी अवस्थामें कोई दूसरा मनुष्य गिर पड़ता या जखमोंके दर्दसे अपनी जागृसे हट जाता ; किन्तु मासाकी गिरे भी नहीं ; अपनी जागृसे हटे भी नहीं । तारपेडोके घक्केसे अपनी जागृसे हटकर किनारे पहुँच जब जहाज डूबने लगा, तब मामाकीने पहचने अपने जहाजके आहतों और सिपाहियोंको नावमें सवार कराया इसके उपरान्त आप सवार हुए । नावें जहाजसे जुदा हो, अपनी तारपेडो-नावोंकी ओर चलीं ; ऐसे समय मामाकीने अपने साथियोंको गणनाकर मालूम किया कि उनके लफटनण्ट शिमादा आहत हुए थे और वह डूबते हुए जहाज हीमें छोड़ दिये गये हैं । यह जान मामाकी एक नावमें अकेले सवार हो डूबते हुए जहाजके समीप पहुँच चढ़ गये । लफटनण्ट शिमादा जखमोंसे दूर एक जागृ कपतान मामाकी आहत शिमादाकी अपनी पीठपर

हाद जहाजसे नावमें जाये और अपने इन कपटनगटका फिर
 अपने जाँघपर रख जखमसे बचे अपने एक हाथसे नावका हाँका
 उलाते अपने तारपेटी-नावोंको ओर चले । अभी उनकी नाव इधर
 ही दूर गई थी ; ऐसे समय इसका जहाज योनीमा मारु
 पटकर दूब गया । योनीमा मारुके डूबते ही इन जहाजके जो
 सिपाही नावोंमें नदार हो आगे चल पड़े थे, उन्होंने जलसे
 बहती आरम्भ किया । इस गीतकी ध्वनि सुनियोंने
 गीतवादीका निगाना दनी । सुनी गीतवाक्य सिधने
 ध्वनि सुनाई देती थी, उनी और नाक नाककर नीचे
 बराने लगे । किन्तु जीवन-मृत्यु, सृजनके साधनी चीज नहीं,
 किन्तु साहस मरणा दाहता है ; मरुअ नाक मरु हाँके जो
 उलका जीवन-मंदार दर नहीं मरुना । जापानी नाव सिधने
 अपने तारपेटी-नावके पास पहुँच गईं ; उनी थोड़े देर ही
 आहत सासावी भी आहत कपटनगट सिमादाई नाक पहुँच
 गये । सब बात हाल बह गये ।

अरथर-बन्दरसे दृष्ट मोक्ष दूर खड़े अपने वेड़े की ओर चला। चखचिचलाते वेड़े ने रूसियोंकी डियूयेरनाव 'सिलिनी'को फौड़ दिया। सिलिनीमें पानी भर गया; वह पासकी एक जलमग्न चट्टानपर जा बैठ गई।

२७वीं मार्चको कोई साढ़े पांच बजे सवेरे टोगोका वेड़ा आगे बढ़ अरथर-बन्दरके सामने पहुंचा। असलमें यह वेड़ा युद्ध करनेके लिये नहीं; बल्कि इस बातकी जास करनेके लिये बढ़ा था, कि अरथर-बन्दरका सुहाना कहांसक बन्द हुआ है। दिन कोई नौ बजे रूसी किलोंसे तोपें छूटने लगीं और रूसी जङ्गी जहाज एकके बाद दूसरा बन्दरसे निकल बाहर आया और अपने किलेकी छायामें रह दूर खड़े जापानी वेड़ेपर गोले बरमाने लगा। जापानी वेड़ेने प्रत्यक्षमें एक भी गोला नहीं चलाया। वह गोला चलाने आश ही नहीं था; सुहानेका हाल जानना चाहता था और जब उसने देख लिया, कि सुहाना अभीतक खुला है; सुहानेके एक किनारेसे रूसी जहाज आना सकते हैं, तब वह खुले समुद्रकी ओर लाटा और दिन कोई दस बजे वितिज-रेखा पारकर अरथर-बन्दरकी सोमामर्यादासे बाहर हो गया।

इस घटनाके दूसरे दिन २६वीं मार्चको अरथर-बन्दरमें अरथर-बन्दरके रूसीअधिकारभुक्त होनेका पञ्च वार्षिकीत्सव मनाया गया। गिरजेमें उपासना; मंदिरमें कवाहर को गई। दरबारमें आनन्द प्रकाश करनेकी चेष्टा की गई; किन्तु आनन्द मनकी चीज है; बस; साम्राज्य में आनन्दित नहीं होता। सभीको अर्थ बुद्धमें प्रवृत्त थीं था गीनाट्टिमें पड़ इच्छलीला

करके करनका भय था। रूसी सुहसे गाते थे, किन्तु
 मनें हुकी पिन्तासे किन्तित थे। उत्सवके दिन यह दिग्ता
 और भी बढ़ गई थी; कारण, उम दिन जापानियोंका एक विशेष
 आक्रमण होनेको अपवाद था। अगले अफदाह अम्बरु निद-
 ली। तीसरे दिन रूसके बड़े जहाज अलकमिक भी एक दिक्के लिये
 अरघर-बन्दरमें आये। आपके सामने जल और मालकी मौजने
 बड़ाइ दिखार्ई। इतनी धूमधाम होनेपर भी अरघर-बन्दरमें
 पलान आनरकी आकक दिखार्ई न दी; अरघर जामेसे सूर्य का
 चन्द्रपर अरघरकी धुंधली धुंधली द्वाया पड़ जाती है।

बड़े दिनोंतव किष्ठी तरहकी मारकाट नहीं हुई; अरघर-
 बन्दर और लक्ष्मी चारी एतेर शान्ति विराजती रही। दिग्ता
 हुके समय एहखलकी शान्ति टहरती नहीं। इन्हीं अरघर-
 लकी अर्हनिशाकी सुगभीर देश-अन्त्यवार भङ्गकर अरघर-बन्दरकी

अधिक जोरदार थीं। जापानके कप्तान ओडोने इन माइनोंका आविष्कार किया था और बौस बर्गके अविराम अमके उपरान्त शिमोस नामक महाभयङ्कर वाहुर आविष्कार करनेवाले डाक्टर शिमोसने इन माइनोंमें भरे जानेवाले मसालोंका दुबला लिखा था।

तारपेडो-नावोंके वेड़े और कोरियो मारूपर घोर अग्नि-वृष्टि हो रही थी; किन्तु यह नावें और जहाज म'नों मन्त्रबलसे उन अग्निवृष्टिसे रक्षित रह अपने अपना काम कर रहे थे। कोरियो मारूने बड़ी ही निर्भीकताके साथ अरधर-बन्दरके सुझानेके पास जा कई माइने डुबाईं। प्रातःकाल अपना काम समाप्तकर यह वेड़ा और जहाज अपने प्रधान वेड़ेकी ओर लौट रहा था; ऐसे समय रूसी डिप्रायेर-नाव द्वासी खुले समुद्रसे अरधर-बन्दरके सुझानेकी ओर भागती दिखाई दी। दो तीन जापानी तार-पेडो-नावें द्वासीकी ओर झपटतीं और उन सबने गोला-वृष्टिकर द्वासीकी समुद्रके अतलतलमें पहुँचा दिया। द्वासीके सिपाही प्राणरक्षाके लिये समुद्र-जलमें पैरने लगे। जापानी तारपेडो-नावें टहरकर डूबते हुए रूसी सिपाहियोंको बचाने लगीं; ऐसे समय रूसका विशालाकार छोटा अग्नी जहाज 'वयान' बन्दरसे निकल गाने सारता जापानी तारपेडो-नावोंकी ओर झपटा। अब तारपेडो-नावें फिर कैसे रह सकती थीं; रूसियोंको छोड़ अपने प्रधान वेड़े की ओर भागीं। बहुसंख्यक रूसी डूब मरे।

अर्द्धरात्रिकी अरधर-बन्दरके समीप पहुँच कोरियो मारूका साइड दुबाना जापानी नौ-सेनापति टोगोकी एक कल्पनाका एक

।। टोगोने यह देखा, कि अरधर बन्दरका सुझाना

बन्ध नहीं हुआ, तब उन्होंने स्वामी वेदों की क्षतिग्रस्त करनेकी
 एक नई कल्पना की। स्थिर किया, कि पहले कौरवों
 मारु धरधर-बन्दरके समीप जा स्वामी जहाजोंके आनेजानेकी
 राहमें साइल लगाये; इनके उपरान्त एक छोटामा जापानी वेडा
 स्वामी जहाजोंको उभार और मुलावेमें डाल अपने पीछे लगा
 धरधर-बन्दरके सुदानेसे दूर गिकाण लाये; अन्तमें धरधर-बन्दरकी
 दालमें द्विपा जापानियोंका प्रधान वेडा एकारक अपनी जगहसे
 गिकाण स्वामी वेदों पर आक्रमणकर उसे ध्वस्त-विध्वस्त कर दे।
 तीसरे थर भी सोचा था, कि इस अन्तिम आक्रमणके समय जो
 बन्देबचाये स्वामी जहाज भयभीत हो भागेगे, वह कौरवों मारुके
 जगहें साइलसे टकर खा लड़ जायेंगे; इसतरह स्वामी वेडा नष्ट
 हो जायेंगा। इसी कल्पनाके अनुसार १९वीं अपरेलकी रात्रि-
 शांति वार्ता आरम्भ हुआ था और कौरवों मारुके साइल उभार
 एक कल्पनावा प्रपस अष्ट पूरा किया था।

समाचार बचाने अरधर-बन्दर भेजा । समाचार पाते ही अरधर-बन्दरसे रूसी बेड़ा निकला । आगे आगे रूसी जड़ो जहाज पेट्रोपावलस्क था । इसी जहाजपर रूस के प्रधान नौ-सेनापति मेकराफ थे और इनको आजासे पताशाखों द्वारा पेट्रोपावलस्क जहाज को सूचित करता था, उसीके अनुसार बेड़े के सब जहाज काम करते थे । इस जहाजमें सिवा बड़ी छोटी बहुत संख्यक तोपों और बफसरोके सात सौ जहाजों बिपाही थे । रूसके उच्चश्रेणीके सरदार ग्राह डिउक साइरिल युद्धका तमाशा देखनेके लिये रूससे अरधर-बन्दर आये थे । सिवा इनने जगद्विख्यात रूसी युद्ध-चित्रकार वयोवृद्ध वेरेयचेन भी जल-युद्धका चित्र तयार करनेके लिये रूससे अरधर-बन्दर आये थे । ग्राह डिउक और यह वृद्ध चित्रकार दोनों ही आज मेकराफके जहाज पेट्रोपावलस्कमें मवार थे । पेट्रोपावलस्कके पीछे पीछे पवोदा, पीलटावा आदि जड़ो जहाज और नाविक, डायना, आसकोल्ड प्रभृति अजबल धरजेके छोटे जड़ो जहाज बन्दरसे बाहर निकले । यह सब जहाज कवाइके साथ पंक्ति बांध—पूर्वोक्त बचान जहाजको अपनी पंक्तिमें मिला—गोलो चलाते जापानी छोटे बेड़ेकी ओर आपटे ।

यह छोटा जापानी बेड़ा सेनापति देवके अधीन था । पहले ही लिख चुके हैं, कि रूसी बेड़ेको मुलावेमें डाल अपने पीछे लगा खुले समुद्रमें निकाल लाना इस बेड़ेका प्रधान काम था । रूसी बेड़ेको अपनी ओर आता देख यद्यथमकर गोले मारता देवका देड़ा पीछे छटने लगा । समुद्रपर कोई साढ़े सात कोय जापानी बेड़े छिपे और रूसी बेड़ा आगे बढ़ा । इस अवसरमें

बिना तारके तार द्वारा देवने टोगोकी रूसी बेड़े के बन्दर छोड़
 भागे बढ़नेकी स्वर दी। रूसी बेड़ेके प्रधान नौ-सेनापति
 मेकराफके मनमें उस समय बड़ी बड़ी आशयि' उत्पन्न हो रही
 थीं। मेकराफने अरधर-बन्दर पहुँचनेके बाद वारंवार अपने
 मन्त्राट्को तार दिया था,—“अब देर नहीं है; शीघ्र ही मैं
 जापानी बेड़ेको परास्त करनेका सुसमाचार आपकी सेवानें
 भेजूंगा।” मेकराफने देखा, कि आप यह सुअवसर आप ही
 आप उपस्थित हुआ है। उन्हें विश्वास हुआ, कि आधीनें
 भटकर या और किसी तरह यह छोटा जापानी बेड़ा अपने
 प्रधान बेड़ेसे प्रथम ही घेर आ निरला है। घोड़ी ही टरने
 का यह देखा रूसी बेड़े से दरमंत हुए गोणों द्वारा दरनाघर ही
 जायेगा। इस बेड़ेका जय हंत ही जापानका प्रधान बेड़ा
 आप ही आप निरंक हो जायेगा और एकर निरनेपर
 एक निरंक जापानी बेड़ेको तोड़पोड़ कालदेने काहा हैर न

गह ; किसीका दोष नहीं,—विधिकी चिरन्तनी लीला ही ऐसी है ।

दिन कोई ६ बजे वीतारके तार द्वारा देवका मेवा पूर्वोक्त समाचार टोगोको मिला । कहते हैं, कि अत्यन्त धीरगम्भीर होनेपर भी टोगो यह समाचार पा कुछ पचल ही उठे थे । आपने तुरन्त अपने प्रधान वेड़ेको लङ्गर उठा घटनास्थलकी ओर द्रुत गतिसे चलनेकी आज्ञा दी । मह.वलसम्पन्न जापानी वेड़ा सागर-वत्त विदीर्ण करता रूसी वेड़ेकी ओर दौड़ा । उस समय दिनकरका प्र.।श. बढ़ रहा था और सूर्यरश्मि समुद्र-जलपर छाया कुहरा क्रम क्रमसे मिटा रही थी । जिस समय जापानी वेड़ा रूसी वेड़ेके समीप पहुँचा, उस समय कुहरा बहुत कुछ साफ हो गया था और दूर दूरका दृश्य धुंधला धुंधला दिखाई देने लगा था । सुबतुर मेकराफने पहले हीसे सन्तरी बैठा दिखे थे । उन्हे दूर, समुद्रजलसे कुछ ऊपर काले बादलका एक टुकड़ा दिखाई दिया । यह क्या है ? कुहरके भीतर यह काले बादलका टुकड़ा कहांसे आया ? सन्तरी उत्सुकतापूर्वक निगाह जमा दूरबीनसे उस बादलके टुकड़ेको देखने लगे । ज्यादा देरतक देखना नहीं पड़ा,—दूसरे ही क्षण दिखाई दिया, कि जापानका जवरदस्त वेड़ा धुँआ पेंकता वायुगतिसे रूसी वेड़ेकी ओर दौड़ा आता है । मेकराफकी खबर मिली ; मेकराफके पेरतलेसे मट्टी निकल गई । जवरदस्तो उन्हे विश्वास करना पड़ा, कि टोगोने कौशलजाल रच रूसी वेड़ेकी नष्ट करना चाहा है । एक क्षणमें रम-
नन्दनकानन, नेत्रोंके मञ्ज,रसे निहित हुआ ;

इसके लिये दुःख प्रकाश करनेका भी अवसर नहीं है। सूर्य-
 उदये द्वारा दृष्टा लोगोके सफलताम होनेमें बाधा और
 समी वे ही को आगराजा करनेका सुअवसर दिया है। पञ्चतावनें
 पर उद्य सञ्चयकर परिव्याग करनेसे फिर कभी न मिलेगा।
 इसलिये मेघराफने चटपट अपने जहाजोंको बन्दरकी ओर वि-
 तराजा भागनेकी आज्ञा दी। जिस द्रुत गतिसे खुम्बो वेड़ा
 आपापी जराजोंका पीछाकर रहा था ; उसी द्रुत गतिसे भागकर
 आगराजा करनेमें प्रवृत्त हुआ ।

दिन कोई साढ़े दश बजे सागर वचनी यह लड़ी जहाजोंकी कबड्डी समाप्तिके समीप पहुँची। रूसी जहाज क्रम क्रमसे रूस-नौ-सेनापति ।



मेकराफ !

अपने हिलोके समीप पहुँच रहे थे और जापानी जहाज रूसी जहाजोंका पीछा छोड़ छपनी द्रुत गति मन्द कर रहे थे। मौ-सेनापति मेकराफका जहाज पेट्रोपावलोवस्क जापानी छोटे बड़े का पीछा करनेके समय जिनतरङ्ग मधसे आगे था; बन्दरकी भागनेके भी वह जहीतरङ्ग सब जहाजोंके आगे था।

बन्दरके सुधानिम कोइ एक सीलके फामिलेपर पहुँच मन्दमति
 पो पेट्रीपावलम्कने मापको तारपेडो-नावीकी सबसे पहले
 बन्दरमें प्रवेश करेका मस्तीत किया। कवारिदके साथ तारपेडो-
 नावें बन्दरमें घुमने लगीं। मेकराफ चाहते थे, कि तारपेडो-नावें
 जब बन्दरमें पहुँच चुके, तब पहले पेट्रीपावलम्क और उसकी
 पीछे कान्याच घोटिवड़े जङ्गी जहाज यथाक्रम और यथानियम
 बन्दरमें घुसें।

बन्दर मसीप देख कितने ही खूमी जहाजोंके खिलने ही
 प्रथम अपनी अपनी जगहसे छटकर जहाजी भीड़-
 मागारों का नाशता करने लगे थे। प्रधान नौ-सेनापति मेकराफ
 पेट्रीपावलम्क जहाजकी मदमें अपरवाली मज्जिदकी कीटरीके
 मासरीमें लड़े थे। जहाजके यथागत यात्रीकोइ, यथा
 सिद्धक कारिद, आल दिहबके सुपादिद और लफउरदद

विशालाकार पेट्रोपावलस्क एक जगह टहर डगमगाने लगा। दो मिनटके भीतर भीतर यह सब हुआ; इसके उपरान्त पेट्रोपावलस्क एक जगहमें जलगर्भमें समा गया; जितने आदमी उस पर सवार थे, जहाजके साथ वह सब भी जलमग्न हुए। डूबते हुए मनुष्योंकी एक अन्तिम चीखसे दिशाये परिपूर्ण हुई; जल और स्थलके रूसियोंमें हाहाकार मच गया।

एकी चपसदीद गवाहने इस दुर्घटनाका जो विवरण प्रकाशित किया है, उसका मर्म इसतरह है,—“एकाएक पेट्रोपावलस्कके अगले भागमें दाहने सफेद धुआं झा गया; ही शब्द हुए और समस्त जहाज भूरे नारङ्गी रङ्गके धुवेसे आच्छादित हो गया। जहाजके किमी आदमीने चिल्लाकर कहा,—“ब्रोड साइड” यानी जहाजका प्रशस्त पार्श्व। दूरबीनसे देखनेसे पेट्रोपावलस्ककी ऊपरी मञ्जिलकी कितनी ही छोटी छोटी चीजें नीचे गिरती दिखाई दीं। अगला मस्तूल टुकड़े टुकड़े हो गया और आगकी लपटें जगह जगहसे निकलती दिखाई दीं। मेरी चारों ओर जितने जङ्गी जहाज थे, उनके अधिरोही सम-स्तरसे चिल्ला उठे,—“जहाज डूब रहा है।” पेट्रोपावलस्क डूबने लगा; पहले उसका अगला भाग डूबा; इसके डूबते ही जहाज किमी कदर दाहने करवट झुक गया। अगला भाग डूबनेके बाद अगला मस्तूल डूबने लगा; इस मस्तूलके ऊपरका चक्र अभी-तक दिखाई देता है; धुआं निकलनेकी बड़ी बड़ी चिमनियोंसे पानी निकल रहा है; क्रमशः यह सब भी डूब गये। अब पिछला मस्तूल भी डूबने लगा; मस्तूलके नीचेकी लोहेके चत-चढ़ी बड़ी बड़ी तोंगें डूबने लगीं; इनके साथ साथ

जहाजका पिङ्गला भाग भी डूबने लगा । जहाज अगले भागसे डूबने लगा था, इसलिए उसका पिङ्गला भाग पानसे झटके खाई गया । पिङ्गले भागके पंदिने जहाज चलानेकी चरखी दिखाई दी, जो अबतक धीरे धीरे घूम रही है । पिङ्गले भागके कितने ही मनुष्य जलमें कूदते वा जहाजसे लटककर मरनेकी और शिक्कते दिखाई दिये । अब आग ज्यादा पैदा हुई है और डूबते हुए पिङ्गले भागमें आग ही आग दिखाई देने लगी है । एकदर जोरसे आग धधकी और इसके उपरान्त सब समाप्त हो गया । पेट्रीपायलम्क डूब गया ; आगदा भुंज्या घाटने मिल गया ।”

वचनेका समय कहाँ था? दो मिनट--२ नौ ३० पक्ष--का वहुत बड़ा समय है? बड़ी चेष्टा करनेपर भी लक्ष्मी तारपेडो नावें जहाजके शत शत मनुष्योंसे सिर्फ तीस आदमियोंकी प्राणरक्षा कर सकीं। जिन आदमियोंकी रक्षा हुई; उनमें प्रायः सब लिपाही थे; सिर्फ आठ डिउक साइरिल उल्लेख-योग्य थे। पहले ही लिखा जा चुका है, कि साइरिल मेकराफके पास उपरकी मञ्जिलमें बरामदेमें खड़े थे। मेगजीन फटनेसे ऊपरकी मञ्जिलको जो धक्का लगा, उससे साइरिल अचेत हो बरामदेसे उड़कर समुद्रमें जा पड़े। जलकी शीतलतासे उन्होंने चेतन्यलाभ किया और अच्छे पैरोंके हीनेकी वजह पैरना आरम्भ किया। इस अवसरमें एक तारपेडो नावने उनके पास पहुँच उन्हें जलसे निकाल लिया। जहाजके गण्य मान्य लोगोंने सिवा साइरिलके और कोई न बचा; मेकराफ, कपतान, सफ्टगट, चित्रकार वेरेथेचिगिग इत्यदि इत्यादि सभी दूब गये।

इस भयङ्कर दुर्घटनाको वजह चरचर-बन्दरके सामनेके खुसी बंदे में घंर विशङ्कला उपस्थित हुई। हरेक जहाजको अपनी चारो ओर माइनका भूत दिखाई देने लगा और हरेक जहाज अपनी चारो ओरकी भयकल्पित माइन तोड़नेके लिये गोले बरसाने लगा। जिन जहाजको जिधरसे राह मिली, वह उधर होसे बन्दरमें घुसा। जो जिन चीजसे जितना डरता है, वह चीज उतना ही उसके सामने आती है। भयङ्कर माइनोसे बचनेकी बड़ी चेष्टायेँ की गईं; किन्तु बड़ी भयङ्कर माइन बन्दरमें घुसते हुए समझे जहाँ जहाजोंमें सबसे बड़े जहाज प्रवेदाके टकरा गईं। भयङ्कर शब्द हुआ; प्रवेदाके पैदिका कुछ अंग

रह गथा । लोगोंने आशङ्का की, कि जो दुर्घटना अभी हो चुकी है, वही फिर घाना चाहती है : पर्वदा भी डूबना चाहता है । किन्तु ऐसा नहीं हुआ ; पर्वदाको मेगचीदनें आग नहीं लगी ; समस्त रज्जिन भी खराब नहीं हुआ । सिर्फ लखरी वेदनें किद हुआ, जिससे जहाजमें पानी भरने लगा । देखते देखते जहाजके पिछभागका तीस खण्ड बलसे भर गया । पर्वदा अपने रज्जिनके बलसे शीघ्र शीघ्र बन्दरमें घुना और झिक्कीने जलमें पहुँच बैठ गया । जो जहाज या नावें बन्दरके बाहर रह गई थीं, वह पक्षीसदृश पीछे बन्दरमें आईं । इनके उपरान्त टीगी टहरना चर्च मारत अपने डेहूँपी बसेट करणर-बन्दरके सामनेमें चले गये ।

१३वीं अपरेलको यह दुर्वटना हुई; १४वीं और १५वीं अपरेलको टोगोके बंदे ने फिर अरधर-बन्दरके सामने पहुंच बन्दरपर गोला-वृष्टि की। १५वींको अरधर-बन्दरसे कुछ दूर पीन-नको खाड़ी और डालनी-बन्दरपर भी गोला-वृष्टि की। डालनी-बन्दरके किलेकी तोपें अन्तमें जापानी गोलोंका जवाब देनेमें अक्षम होकर निस्तब्ध हो गईं। टोगोके लाख लाख उत्तेजित बन्दरपर भी रूसी बंदे बन्दरसे नहीं निकला। १५वींकी रातकी लौटनेके बाद टोगोका बंदे कई दिनोंतक बन्दरके सामने नहीं गया। इस अवसरमें ये अफसर रूसी बंदेकी अफ-सरीका प्रबन्ध किया गया। नौ-सेनापति स्कडलाफ अरधर-बन्दर-वाले बंदे के प्रधान नौ सेनापति निर्वाचित हुए। उनके रूससे अरधर-बन्दर-पहुंचनेतक रूसके बंदे साटुस्वयं अलकफिने अरधर-बन्दर पहुंच रूसी बंदेका तत्त्वावधान किया।



था। हम नहीं जानते, कि दोनोंमें कौन बात सत्य है; किन्तु दोनोंका फल एक है; रूसी बड़े का पना जापानी बड़े को न लगा। जिस समय युद्ध आरम्भ हुआ था, उस समय बल्डोवष्टक-बन्दर-का समुद्र शीताधिष्ठसे जमकर बरफ बना हुआ था; बड़े कष्टसे बरफ तोड़-राह बना बन्दरमें जहाज आ जाते थे। किन्तु जिस समयका हाल हम लिखने चले हैं, यानी अपरेलके चौथे सप्ताह बन्दरकी जमो हुई बरफ पिघल चुकी थी और बन्दरमें जहाज गिर्बिप्त आना सकते थे। इस समय बल्डोवष्टक-बड़े के चारों जहाज रोजिया, ग्योमीशेय, रूरिक और बोगाटिर बन्दरमें मौजूद थे। बड़े के प्रधान नौ-सेनापति बदल दिये गये थे। वारग एक्लवर्गके बदले जेसेनको यह पदभार समर्पण किया गया था।

२३ वीं अपरेलको नौ-सेनापति जेसेन सुअवसर देख कई तारपेडो-नावोंके साथ अपना बड़ा ले बल्डोवष्टकसे बाहर निकले। दूसरे दिन बड़े का रूरिक जहाज बल्डोवष्टक लौट गया और समूचा बड़ा कोरियाकी जेनसान-बन्दरकी ओर चला। जेनसान-बन्दरका हाल अबसे पहले लिखा जा चुका है। यह बन्दर कोरिया प्रायद्वीपके पार्श्वमें है। जा मानने, अपनी पहली फौजका एक अंग जिम समय-पिङ्गयाङ्गके निरुद्ध चिन्ताम्यो-बन्दरमें उतारा था, उसी समय दूसरा अंग इसी जेनसान-बन्दरमें किनारे पहुँचाया था। जेनसानसे कलकर जापानी फौजे पिङ्गयाङ्ग पहुँची थीं। नौ-सेनापति जेसेनके अधीन बल्डोवष्टकवाला बड़ा तारपेडो-नावोंके साथ २३ वीं अपरेल को प्रा... जेनसान-बन्दरके सामने पहुँचा।

इस वेदों की देख जापान-अधिकृत जैनसाध-बन्दरमें किसी
 बन्दर हल बल पड़ गई। मुलकी अफसर तुरन्त नगरसे और
 दिये गये। गेरिफनमें कोई आठ सौ जापानी सिपाही नितान्त
 बड़े तोपें थीं; सिपाही जल्द जल्द कमरका तोपें जफटगुट
 लिये तय्यार हुए। किन्तु जैसिका वेड़ा वीरोचित सम्मुख
 प्रहार होने नहीं; बल्कि निरीह-निरस्त्र सौदागरी या वारवर-
 दारीके जापानी फदाजोंका शिकार खेजने गया था। जैनसाधके
 भाषने कोई हाई कोसके फाटिलेपर खुली वेड़ीने लङ्गर डाला
 और जापानी दो तारंग ही-सावें बन्दरका और भेजों। उस समय

किमलिन' नामक नये कारतूमके बलकी परीचा की थी। इन दोनों बन्दों उठानेके बाद रूसी बंदोंका झौंसला और भी बढ़ा। जिस समय भी उत्साहके साथ शिकार-दूँटनेमें प्रवृत्त हुआ।

का समुद्रमार्ग-बन्दरके एक बारबरदारीके जहाजका नाम किउ-वरफु मारु था। आज सुबेरे जिस समय जेसेनका बेटा जेन-सान-बन्दर पहुँचा, उससे कुछ प्रश्नये यही किउशिउ जहाज ७ नम्बर पकटनका एक टुकड़ा साद उत्तर-कोरियाके सिवोनके सिधे खाना हुआ था। आज दिनभर सिवोन और उसके निकटस्थ समथलहीमें सिपाहियोंके गश्त लगा चुबनेपर सन्ध्या समय उन्हें फिर सवार करा किउशिउ जेनसान-बन्दरकी ओर लौट रहा था। रात कोइ ग्यारह बजे किउशिउको कई जहाज दिखाई दिये। किउशिउने अनुमान किया, कि जापानी सेनापति कमीसुराका बेटा है; गश्त लगा रहा है। किन्तु किउशिउका वह अनुमान भ्रमबलक था; उक्त समय कमीसुराका बेटा वहाँसे बहुत दूर था; जिस बेटेकी किउशिउने देखा, वह वही रूस-गौ-सेनापति जेसेनका बेटा था।

किउशिउ मारुको देख जेसेनने अपने खीभाग्यकी प्रशंसा की। जेसेनने आज्ञा दी; मङ्केत द्वारा किउशिउ जहाज तुरन्त टहरा दिया गया। एक डिप्टिविह-नाव किउशिउके पास गई और जहाजके कप्तान तथा कुछ व्यक्तियोंको किउशिउसे उतर रूपके चर्ची जहाज रोजियापर लाई; जहाँ वह सब कैद कर दिये गये। किउशिउ जहाजमें खबर भेजी गई,—“तुमलोग एक घण्टे के भीतर या तो आत्मसमर्पण करो या मरनेके लिये तैयार हो जाओ।” शीघ्रसे प्रधान व्यक्तिय भेजकरने अपने

कई सिपाहियों ने कहा कि कौनसी बात स्वीकार करना चाहिये। प्रायः सब सिपाहियों और अफसरों ने एक स्वर और एकमत से मरणा दी श्रेष्ठ बताया। कितने ही लोग तिनान्त चल पित ही खुनिपीपर दान पीसने लगे। एक युवक लफटगट के दयात्मक उत्तेजित हुए, कि एक क्वोटोसी मादमें अपने भातहत मान सिपाही ले सामने खड़ी प्रकल-पराक्रान्त हूसी नेह पर आक्रमण करने चली।

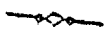
एक घाटा समाम हुआ; आपानी सिपाहियों ने दक्षता प्रदर्शित करकेका दौड़ पिट्ट नहीं दिखाया। रात तेज़ होने लगी इन्होंने किलशिलपर एक लागंटी दौड़ा गया। दो

तारपेड़ो कूटा। खूब ताककर निशाना लगाया गया था; इसलिये वह जहाजके मध्यभागपर बैठा। इस बार तारपेड़ो पटा और उसने जहाजको बीचसे फाड़ दिया। पानीकी धारा जहाजमें घुसने लगी और जहाज शीघ्र शीघ्र डूबने लगा। जापानी अफसरोंने अपनी कोठरीमें जा गिरफ्तारीकी लोख्खनासे बचनेके लिये आत्महत्या कर ली; इसी भयसे सिपाहियोंने एक दूसरेको गोलीसे मार डाला। जो सिपाही बचे, वह अन्ततक रूसियोंपर गोली बरसाते रहे। जहाज जल डूब गया और उन सिपाहियोंके छुटनेतक जल पहुँच गया, तब उन्होंने बन्दूक चलाना बन्द किया और समुद्रमें कूद आत्महत्या की। जहाज डूबता देख फ्रितने ही सिपाही नावोंमें सवार हो जातीय गीत गाते किनारेकी ओर चले। रूसियोंने इनका भागना देख इनपर गोले चलाये। कई नावें गोलीकी चोटसे डूब गईं और कई बचकर निकल गईं। ऐसी ही एक नाव एक सरजगट और सैंतीस सिपाहियोंके साथ थोटी पहुँची और एक नाव आठ सिपाही, छः कुली और तीन सौदागरोंको ले रयीकी। जहाज डूबनेपर रूसी बेड़ोंने जिन डूबते हुए आहमियोंको जलसे बिकाला, उनमें कुली थे—मज्जाह थे; किन्तु सिपाही एक भी नहीं था। फौजके दो कप्तान, दो प्रथम लफ्टनगट, एक द्वितीय लफ्टनगट, एक निशानबरदार, तिहत्तर सिपाही और दो दुमाधिये मारे गये या डूब गये; ओ बने, वह निकल भागे; रूसियोंकी कैदमें नहीं आये।

लिया बुके है, हि जापानी नौ-सेनापति कमीसुरा

१०. अण्णा वेदा ले कोरियाके रानी अञ्चलमें दौरा किया करते थे ।
 ११. तभी अञ्चलमें जिस समय रूमी वेड़ा यह शिकार खेल रहा
 १२. था उस समय उनका वेड़ा कहाँ था ? जिस रूमी वेड़ेके
 १३. पालके किये वह बहुत दिनोंसे उत्सुक थे, वही रूमी वेड़ा उनके
 १४. घरमें ठुम उल्लास कर रहा था, उन समय कमीसुरा रूमी
 १५. वेड़ेका उल्लास रोकते क्यों नहीं थे ? अञ्चलमें कमीसुराको रूमी
 १६. वेड़ेके कोरियाके किनारे आनेकी खबर ही नहीं थी । जिस समय
 १७. रानी वेड़ा दक्षीणदिशि शिकार खेलनेको निकला, ठीक उसी
 १८. समय कमीसुरा अण्णा वेड़ा ले रूमी वेड़ेको छूटने बल्कीवट-
 १९. कर्षी प्योर शवागा हुए । बीचमें दोनों वेड़े आमने सामने आकर
 २०. दृष्टिहीन आँसुसि विषण्ण गये ; किन्तु अतृप्तपर हाथे हुए, पने हुए-
 २१. रानी वेड़ा एक वेड़ा दूसरेकी दृष्टि न लगा । कमीसुरा यदि रानी
 २२. वेड़ेकी दृष्टि में, तो उसे शिकार खेलनेका मौका न मिले ।

वचतां बलडीवष्टक लौट गगा। इधर कमीसुराका वेड़ा
 जब जेनसान-बन्दर पहुँचा, तब उसे रूसी वेड़े के आनेका
 समाचार मिला और यह समाचार भी मिला, कि बारबरदारीका
 पहजा किउशिउ मारु अभीतक लौटा नहीं है। इस समाचारसे
 कमीसुराके हृदयको जो आघात लगा, उसका वर्णन दिया जा
 नहीं सकता। दुःख, क्रोध, रोष, आत्मग्लानि आदिसे उसकी छाती
 फटने लगी। वह अश्रीर हो जापानी वेड़े और किउशिउ
 मारुकी खोजमें निकले। राहमें उन्हें किउशिउ मारुके
 निपाहियोंकी कई गावेँ मिलीं; कमीसुराने निपाही अपने
 जहाजमें चढ़ा उनसे किउशिउ मारुके शोधनोद्य परिणामका
 हाल सुना। कमीसुरा और सुस्तेदीके साथ रूसी वेड़ेकी
 ताकमें लगे। रूसी वेड़ेकी पूर्वोक्त काररवाईसे कमीसुरा
 कलङ्कित हुए; जापानमें उनको बड़ी कुकीर्ति मिली। जापानके
 साधारण लोगोंने कहा,—“कमीसुरा अपने पदके योग्य नहीं;
 अवनक उन्होंने मारुकेका एक काम न किया; इसके बदले
 उस बधानी की; जिसके फलसे जापानियोंकी बड़ी क्षति
 हुई।” यह सब जानकर कमीसुराके मनस्तापकी अवधि न
 रही। वह तनमनसे बलडीवष्टकवाले रूसी वेड़ेकी ताकमें
 लगे। उन्होंने स्थिर किया, कि जिस दिन रूसी वेड़ा मिल
 जावेगा, उसी दिन मैं अपना कुल कलङ्क मिटा दूंगा।



रूस-जापान-युद्ध ।

बचता बलडीवटक लौट गया। इधर कमीसुराका वेड़ा जब जेनसान-बन्दर पहुँचा, तब उसे रूसी वेड़ेके आनेका समाचार मिला और यह समाचार भी मिला, कि बारबरदारीका पहचान किउशिउ मारु अभीतक लौटा नहीं है। इस सम चारसे कमीसुराके हृदयको जो आघात लगा, उसका वर्णन किया जा नहीं सकता। दुःख, क्रोध, रोष, आत्मग्लानि आदिसे उनकी छाती फटने लगी। वह अश्रीर हो जापानी वेड़े और किउशिउ मारुकी खोजमें निकले। राहमें उन्हें किउशिउ मारुके सिपाहियोंकी कई नावें मिलीं; कमीसुराने सिपाही अपने पहचानमें चढ़ा उनसे किउशिउ मारुके शोधनोय परिणामका हाल सुना। कमीसुरा और सुत्सेरीके साथ रूसी वेड़ेकी ताकमें लगे। रूसी वेड़ेकी पूर्वोक्त काररवाईसे कमीसुरा कलङ्कित हुए; जापानमें उनको बड़ी कुकीर्ति मिली। जापानके साधारण लोगोंने कहा,—“कमीसुरा अपने पदके योग्य नहीं; अबतक उन्होंने मारकेका एक काम न किया; इसके बदले उस वधानी की; जिसके फलसे जापानियोंकी बड़ी क्षति हुई।” यह सब जानकर कमीसुराके मनस्तापकी अवधि न रही। वह तनमनसे बलडीवटकवाले रूसी वेड़ेकी ताकमें लगे। उन्होंने स्थिर किया, कि जिस दिन रूसी वेड़ा मिल जावेगा, उसी दिन मैं अपना कुल कष्ट मिटा दूंगा।



जाता है, उस जगह भी ऐसा ही एक नुकीला ऊँचा लड़ा खड़ा रहता है। एक लट्टे से निकली हुई विजलीकी लहर दूसरे लट्टे में जैसे ही लगती है, वैसे ही उस दूसरे लट्टेकी जड़में लगे यन्त्रोंमें विशेष प्रकारके सङ्कत होने लगते हैं। यही सङ्केत अक्षर है, जिनसे एक जगहका समाचार दूसरी जगह पहुँचता है। इस विवरणसे पाठक यह बात समझ सकेंगे, कि एक लट्टे से जब लहर निकलती है, तब वह सीधी दूसरे लट्टेकी ओर नहीं जाती, बल्कि वायुमण्डलमें लट्टेकी चारों ओर चन्द्राकारमें फैलती है। ऐसी अवस्थामें इस लहरकी पहुँचके भीतर जितने वेतारके तारवाणी लट्टे आर्येंगे, उन सबसे यह लहर टकरायेगी और उन सबके नीचे लगे यन्त्रमें यह एक ही तरहका सङ्केत करेगी। वेतारके तारमें यही एक बड़ा दूषण है; इसके यन्त्र द्वारा भेजा हुआ समाचार काँचित-अकाँचित सभी स्थानोंमें घनायास ही पहुँच सकता है। इस युद्धके समय विज्जायती व्यवहार टाइम्सके संवाददाताने अपने जहाज हैन्ड्समें ऐसा ही एक यन्त्र लगवा मौ-रुनापति टोगोके जापान भेजे कितने ही समाचार राह हीमें पा दिलायत भेज दिये थे; इसपर जापान-सरकार किसी कदर अमनगुष्ट हुई थी। १९वीं अपरेलके आक्रमणके बाद टोगोकी विच्युत सूत्रसे खबर मिली, कि अरथर-बन्दरमें रुन्वियोनी भी वेतारके तारका यन्त्र लगा हमारे भेजे समाचारोंकी राह हीमें माखूय कर लेनेकी अवस्था की है। यह समाचार पा रुन्वियोंकी अहकानिके लिये टोगो तकली समाचार भेजने लगे। कभी समाचार भेजते,—“राज में अरथर-बन्दरके असुक अंगपर आक्रमण करेगा।” कभी भेजते,—“कल में शत्रुकी असुक

उन्होंने क्षितिमस्त कहंगा।" रूसी इन समाचारोंको पा टोगोका आक्रमण वर्ध करनेके लिये कष्टसाध्य नाना प्रकारकी तयारियाँ करते और अन्तमें देखते, कि टोगोका आक्रमण न होनेसे उनकी सब तयारियाँ मट्टी हुईं।

२७वीं अपरेलको रूसियोंको वेतारके तार द्वारा टोगोका जापान भेजा समाचार मिला,—“आज रात मैं अरपर-बन्दरपर आक्रमण करूंगा।” रूसी इस आक्रमणके लिये तयार हुए। आज टोगोने इस नकली समाचारको बहुत कुछ असली बना देनेका सामान किया। टोगोकी आज्ञासे दो तारपेडो-नावोंने अरपर-बन्दरके सामने पहुँच ककड़ीके कतने ही तखते जलपर पैरा दिये। इन तखनोंपर लट्टे गड़े थे, जिनपर तेलमें डूबी बड़ी बड़ी मशालें खुंसी थीं। तारपेडों-नावोंने इन मशालोंको आग लगा दी। जलनी हुई मशालोंवाले तखते समुद्रकी लहरोंके साथ साथ अरपर-बन्दरकी ओर बह चले। रूसियोंने इन्हे, जड़ी जहाजोंका वेड़ा समझ इनपर गोला-वृष्टि आरम्भ की। जिस समय रूसी, मशालोंपर गोले बरसा रहे थे, उस समय दोनो तारपेडो-नावें मशालोंकी धाड़में आगे बढ़ जिस जगह मेकरा-पका जहाज पेट्रोपावल्स्क डूबा था, उस जगह माइन डुबाने लगीं। अन्तमें रूसियोंने जब इन नावोंको देख इगपर गोले बरसाये, तब यह अपने वेड़े की ओर दापस गईं। इस दिनकी टोगोकी कारवाही देख रूसी समझ गये; कि टोगो हमें अमनमें लाजनेके लिये अमृतक तबरे दिया करते हैं। रूसियोंने विशार किया, ऐसी अवस्थामें कौशली टोगोका वे तारके तार द्वारा भेजा कौन समाचार सब समझा जाये और कौन अस्त।

१ ली मईका यालू किनारेका स्पलयुड लिखा जा चुका है । पाठक जानत है, कि इस युद्धमें जापानियोंकी विजय हुई और रूसी पूर्णरूपसे पराजित हुए । टोगो मानो इस युद्धके फलाफलकी प्रतीक्षा ही कर रहे थे । १ ली मईको यालूकिनारेका युद्ध समाप्त हुआ ; २ री मईको टोगोने अरधर-बन्दरका मुहाना पूर्णरूपसे बन्द करनेका विराट् आयोजन किया । ऐसा आयोजन पहले दो बारमें एकवार भी हुआ नहीं था । जबके आठ जहाज मुहानेमें डुबनेके लिये चुने गये । आठों कोई १० हजार ३ सौ १३ टनके थे ; बहुत पुराने नहीं थे ; कोई जहाज अठारह वर्षका पुरान था और कोई पचोस वर्षका । हरेक सौदागरीके जहाजपर एक शीघ्र शीघ्र गोला मारनेवाली तोप चढ़ा दी गई थी । आठों जहाजमें व्यफसर और सिपाही सब मिलाकर १ सौ ५६ जापानी सवार हुए । किसी किमीने हिमाव लगाकर दिखाया है, कि इस वारके इस कामके लिये जापान-सरकारने कोई तीस लाख रुपये नकद व्यय किया ।

२ री मईको रातको आठों सौदागरीके जहाज आकागी और चोगाई नामक गनबोट और तारपेडो-नावोंके जवरादस्त बेटोंके साथ अरधर-बन्दरको और रवाना हुए । रवानगीके समय दक्षिण-पूर्वीय वायु बह रही थी ; जो रात भीगनेके साथ बढ़ती गई और अन्तमें जिनने प्रचण्ड तूफानका रूप धारण किया । समुद्रमें पर्वत जैसी लहरें उठने लगीं ; लहरोंके आपसमें टकरानेसे भयङ्कर शब्द उत्पन्न होने लगा । समुद्रकी ऐसी अवस्थामें बेटोंका कब्रिस्ताने साथ चक्षना असम्भव था । जिन जहाज या नावको जिधरसे राह मिली, पछ अहाज या नाव

उधर हीसे चल । कप्तान हयाशी इस वेड़े के प्रधान अफसर
 थे; उन्होंने तूफानकी वजह वेड़ेमें यह विश्दल्ला उपस्थित
 देख वेड़ेकी लौटनेकी आज्ञा दी। किन्तु तूफानके जोर और
 लहरोंके शोरसे कप्तानकी बात कप्तान हीतक रच गई;
 वेड़ेतक पहुंचने न पाई। वेड़ेका हर एक जहाज अपनी धुनमें
 आगे ही बढ़ता गया। किसी किसीला यह भी कहना है, कि
 वेड़ेके हर एक जहाजने कप्तानकी बात सुन ली नहीं, किन्तु
 उसके अनुसार काम करनेकी जरूरत नहीं देखी। जैसे जैसे
 वेड़ा आगे बढ़ा, वैसे वैसे वेड़ेका हर एक जहाज एक दूसरेमें
 दूर-दूरतर होता गया; किन्तु दूर होनेपर भी अपनी
 उद्देश्यमें सब जहाज एक दूसरेके बहुत ही समीप थे।

सबसे पहले दोनो तारपेडो-बावें चरपर-बन्दरके सुहानेके
 समीप पहुंचीं। उन्हें देखते ही रूसियोंने उनपर गोला वृष्टि
 आरम्भ की। तारपेडो-बावें गोलोंसे बचनेके लिये चरपर-बन्द-
 रसे कुछ दूरतर खड़ी हुईं। ऐसे ही समय पहला जहाज
 मिबावा मारु चरपर-बन्दरके समीप पहुंचा। तीर्थोकी
 गार्जिन, ध्वनि सुन जहाजके कप्तानने खयाल किया, कि अन्धान्य
 जहाज उस समयसे पहले ही चरपर-बन्दरके सुहानेमें पहुंच
 अपना काम कर रहे हैं और रूसी तोपें उन्हें जहाजोंपर मोटे
 बरसा रही हैं। यह खयालकर मिबावा मारुकी उसके पिछरी
 आत्मन प्रीतिपूर्वक बन्दरके सुहानेमें ले गई। सर्व-प्रकार चले-
 बोर उल्लस प्रतीति पंला रहा था, किन्तु जापानों और
 रूसी तोपोंकी बड़ा सहारा मिल रहा था। रूसी आग्निदोका
 जहाज देख उसपर मोटे बरसा रहे थे और जापाने चरपर-

बन्दरका सुहाना देख इधर उधर न भटक ठीक उभी और आ
रहे थे। रूमियोंने मिकावा मारुको देखते ही उसपर गोला-
वृष्टि आरम्भ की। किन्तु मिकावा मारु इस गोला-वृष्टिसे तनिक
भी विचलित न हो सीधा सुहानेमें घुस गया और सुहानेके बीचमें
पहुँच फटकर डूब गया। मिकावा मारुके फटते ही उसपरके कुल
सिपाहियों और अफसरोंने समस्तरसे हर्ष ध्वनि की और जहा-
जके साथ साथ डूब गये। इसके बाद ही अन्यान्य जहाजोंका
ताता लग गया। मिकाका मारुके बाद द्रुत गतिसे दूसरा
जहाज मकुरा मारु आया और सुहानेके भीतर एक किनारे
खड़खड़ा डाल डूब गया। इसके भी सिपाही और अफसर
इसके साथ साथ डूब गये। इसका एक सिपाही इस
डूबे हुए जहाजके जलसे बाहर निकले मस्तूलपर चढ़ गया।
सिपाहीके हाथमें एक लालटेन थी। सिपाही मस्तूलपर चढ़
लालटेन दिखा अन्यान्य जापानी जहाजोंको सुहानेकी राह
दिखाने और सुहानेमें बुलाने लगा। इस सिपाहीकी प्राणरक्षाके
लिये जापानी तारपेडो-नावोंने नाव भेजी, जो सिपाही
तक पहुँच न सकी; राह हीमें रूमि गोलोंकी बाढ़से उड़ गई;
एक गोलेसे वह जापानी सिपाही भी उड़ गया। मिकावा मारुके
बाद ही मकुरा मारु, तोतोमी मारु, वेदी मारु, ओतारु मारु,
सगामी मारु, ऐकीकू मारु और अमागावी मारु या तो बन्दरके
सुहानेमें पहुँचकर या सुहानेके समीप पहुँचकर डूब गये। छः
जहाज बन्दरके सुहानेमें डूबे; ऐकीकू मारु एक माइमसे टकर
खा सुहानेसे कई हाथ दूर डूबा, अमागावी मारु गोलोंको चोटसे
बन्दर ही सुहानेमें कुछ फामिलपर डूबा।

इस युद्धके सम्बन्धमें नौ-सेनापति टोगोने अपनी सरकारको जो रिपोर्ट भेजी थी, उसका मर्मार्थ इसतरह है,—“ऐसे ही पिछले दोनो कामोंकी अपेक्षा इस काममें हमारी क्षति अधिक हुई; कारण, अबके मौसम बहुत खराब था और शत्रुने हमारी रकावटके बड़े सामान किये थे। खौदागरीके चार जहाज अतोराकू माकू, सगामी माकू, सकूरा माकू और असागावी माकूका, एक भी अफसर या सिपाही न बचा। इन चारो जहाजोंके सिपाहियों और अफसरोंने अपना कर्तव्य पालन करनेमें जिसतरह जान दी, उसका हाल वही जानत होंगे, किन्तु उनके जान देनेकी कछानो सरकारी जल-सेन्यक इतिहासमें फिरस्मरणीय रहेगा। खौदागरीके जहाजोंके साथ तारपटो और डिस्टादेर-नावोंका जो बेड़ा था, उसने शत्रुकी अग्नि-वृष्टिसँ तो सामना किया ही; साथ साथ तूफान और ऊंची ऊंची लहरोंसे भी खूब टकरें लीं। तारपटो-नावोंने खौदागरीके जहाजोंके साथ साथ सहानेमें बुरा आघात अधिक अफसरों और सिपाहियोंकी प्राणरक्षा की। ६७ नम्बर तारपटो-नावका भाषका नक फट जानेसे तारपटो-नाव निकलनी ही गई थी; ७० नम्बर तारपटो-नाव ६७ नम्बरकी अपने पीछे बांध खींच लाई। तीस जहाजी सिपाही मारे गये। डिस्टादेर-नाव अत्रो-वहावा रज्जिन गोलेसे खराब हो गया और एक जहाजी सिपाही मारा गया। तारपटो-नाव हयाकुमाला एक सिपाही गोलेसे लड़ा दिया गया।”

जिन लोगोंके इस दिनका यह हाल अपनी आँखों देखा है, उसका कहना है, कि बहुतसे इतरी लोको, इनके देखाये

संसारमें क्या दिखाई नहीं देती। सौभाग्यीके जहाज तेजीके साथ
 सुहानेके भीतर पहुँचते थे, लङ्गर डाले थे और फटकर डूब
 जाते थे। जहाजका प्रत्येक सिपाही, प्रत्येक अफसर जहाज
 डूबनेके समय तक भी विवशित न होता था; जहाजपर
 जिस जगह खड़ा रहता था, उसी जगह खड़ा खड़ा डूबता और
 मर जाता था। जो सिपाही या अफसर किसी तरह बचकर
 तूफानी समुद्रकी लहरोंमें पड़ किनारे पहुँचा था, वह गिरफता-
 रीके अपमानसे बचनेके लिये आत्महत्या कर लिया करता था।
 किसी डूबे हुए सौभाग्यीके जहाजका एक सिपाही लहरोंमें पड़
 किनारेकी एक चट्टानपर जा लगा। उसे वहाँ देख रूखी
 सिपाहियोंने घेर लिया और उससे—आत्मसमर्पण करनेके लिये
 कहा। किन्तु आत्मसमर्पण करनेके बन्धु जापानी सिपाही तपसा
 लेकर झपटा और रूमियोंकी गोदी खा मरकर गिर गया।
 और एक डूबते जापानी सिपाहीको रूमियोंने पानीसे निकाला;
 जैसे ही जापानीने चैतन्यप्राप्त किया, वैसे ही अपना गला घोट
 आत्महत्या कर ली। जलसे किनारे लगे एक जापानी अफसरको
 घेरकर रूमियोंने कैद करना चाहा; जापानी अफसरने अपने
 अपने बचावका कोई उपाय न देखा, तब आत्महत्या कर ली;
 कहा,—“कैद होनेपर मैं अपना कसकलित सुँघ अपने देशको
 कैसे दिखाऊंगा ?”

जापानियोंका यह काम किसी कदर अमानुषिक हुआ;
 धरनेसे हुआ नहीं करता। व्यङ्गनिशा है; प्रचण्ड तूफान बह रहा
 है; जिसके फलसे सुगभीर शक्तिजलसे पर्वत-प्रमाण तरङ्गें उठ
 पाएँ हैं; तूफान भयंकर शब्द उठता कर रही है; नीचे साग-

रका यह हाल ; ऊपर का काश बहस सहस पट्टकोंकी बाढ़से
 बूटो गोलियों और शत शत कलदार बड़ी बड़ी तोपोंसे बूटे
 पटक घुमारो टुकड़े होनेवाले गोलोंसे लाल लाल ; क्या ही
 वास्तविक अगणित असुरिधाजनक बाहिंयात समय और
 स्थान था ! किन्तु ऐसे समय और ऐसे ही स्थानमें उपस्थित हो
 जापानियोंने कितनी निर्भीकताके साथ क्या ही अप्रतिम काम कर
 राला ! कितने ही जहाजोंके जापानी विप्राहियोंने प्राणरक्षाके
 लिये एक लंगली हिलानात्मक चच्छा न खयात किया ; वह
 अपने जहाजोंके साथ इष्टतरह दूरे मानो मनुष्य नहीं, जहाजक
 अङ्ग थे । फिर, कुछ जहाजोंके विप्राही और अफसरोंने निकल
 भागनेकी चेष्टा भी की । कहते हैं, कि इष्टतरह भागते हुए
 जापानी अफसरोंकी किन्ती ही नावें गंगा-गोलियोंके तूफानमें पड़
 न जाने वहां लड़ गईं । जापानियोंके लिये यह बड़ा ही कठोर
 समय उपस्थित था ; किन्तु इस कठिन परीक्षाके फलमें पड़कर
 भी दोरबूझामणि जापानियोंने अपनेको घैर्यच्युत होने न दिया ।
 बहुसंख्यक जापानियोंने एकदम भी आत्मरक्षाने लिये वस्तुतास्त्री
 बार-खदक किसी तरहका शिष्ट न दिखाया । कितने ही अङ्क-
 र और विप्राही सुशक्तिके मूलत इव सुनिश्चित गठसे भी
 पक्षमें समर्थ हुए । कितनी ही नावोंपर लड़वाट पड़ने
 लगी, तब उनके बवार अफसर और निगारी नावमें
 इष्टतरह लड़कर गिरे । किन्तु तब भी लानेपर

उठ बैठे और वायुगतिसे अपनी नाव अपनी डिग्रापर-नावोंकी ओर ले चले; और आश्चर्य-चकित रूसियोंके सावधान हो तोपोंका रुख नावोंकी ओर फेरनेसे पहले अपनी डिग्रापर-नावोंके आश्रयमें पहुँच गये।

सब मिलाकर एक सौ, उनतट अफसर और सिपाही पूर्वोक्त छाठो चौदागरीके जहाजमें थे। इनमें कृतीस सकुग्रज वापस पहुँचे, अठारह आहतावस्थामें पहुँचे, पन्द्रह अपने साथियोंके सामने मारे गये और नब्बे गुम हो गये। जितने गुम हुए, उनमें तीसको रूसियोंने बचाया, जिनमें पन्द्रह कैद होनेसे पहले मर गये। इस हिंसावसे कोई अस्सी मनुष्योंने आत्मवलि दी; पन्द्रह अफसर हताहत हुए; इस अपूर्व अछौकिक आत्मवलिका फल यह हुआ, कि उस दिन प्रातःकाल कोई चार वज्रतक अरधर-बन्दरका सुहाना पूर्णरूपसे बन्द हो गया; रूसका विपुल-वक्षशाली वेड़ा एक सुदतके लिये बन्दरमें कैद हो गया।

जिस समय यह अपूर्व काम हो रहा था, उस समय रूसके ओटवागनी मिलियाक और ग्रीमियाची नामक जङ्गी जहाज भीतर बन्दरके सुहानेके समीप आ आगानी वेड़ेपर गोले बरसा रहे थे। ओटवागनी जहाजमें अस्थाधी प्रधान नौ-सेनापति अलकसिफ स्वयं मौजूद थे। जनरल मिलिन्को और कप्तान एवेरहार्ट प्रधान स्थल-सेनापति कुरोपाटकिनके अफसर-दलमें शरीक थे; उन दिनों बड़े साठ नौ-सेनापति अलकसिफसे कोई परामर्श करनेके लिये अरधर-बन्दर आये थे। जोतूदकाक्रान्त हो आगानियोंका युद्ध देखनेके लिये अपने नरदारों और इरमित्सेके साथ सिफके जहाजमें नवार हो गये थे। कहते हैं, कि यह

नवागस्तुक और नौ-सेनापति अलकस्त्रिफ स्वयं जापानियोंकी गहकितता और निर्भोक्ता देख अवाक् हुए ; उनके मनमें खर-वीर जापानियोंकी प्रशंसा करनेकी प्रवृत्ति उत्पन्न हुई । इसी युद्धके सम्बन्धमें रूसकी टाइम्स 'नवत्रय'ने इसी जुवानसे कहा था,—“चीनाओंकी कापृच्छताकी वजह हम जापानियोंका वीरत्व काम न सके ।” सुशक्ति इतनी हो हीतो, तो हर्ज नहीं था ; किन्तु रूसके लिये इससे भी अधिक असुविधाजनक बात यह हुई थी, कि जिह समय रूसी जापानियोंकी पहचाननेमें धोखा खा रहे थे, उस समय जापानी रूसियोंकी बहुत अच्छी तरह पहचान रहे थे ।

१ श्री मईकी बालू नदीका युद्ध हुआ ; २री मईकी टोगोने अरधर-बन्दरका सुहाना बन्द किया ; पूर्वी मईकी अरधर-बन्दरकी गलको औरसे भी घेर लेनेकी तय्यारी हुई । इस दिन अरधर-बन्दरसे उत्तर-पूर्व कीर्ति तीर के फामिलेपर पोण्डो स्थानमें जापानियोंकी बितने ही बर-बरदारीके अहाज किनारे लगे, जिनसे यौके उतरने लगीं । रूसियोंने जापानों फौवोंके उतरनेमें कुछ बाधा उपस्थित की ; किन्तु वह टिकी नहीं ; रूसी चटपट मार भगाये गये । माघ माघ पोण्डोके रूसी अधिवानी और सरकारी यार्मदारी रूसी डाकखाने आदिकी साध नगर खाली कर दल दिये । इस दिन सम्बन्धक दोई इस द्धार जापानी सिमाही पोण्डोमें उतरे । पोण्डोसे दो साहराहे' दो प्रधान जगह गई ई । एक साहराह सक्ता प्रायद्वीप पारवर पुलादटीन नगर और एतां निडुवाङ्ग नगर गई ई और दूसरी राह किनसौ नगर गई ई, जिससे अरधर-बन्दर निजं प्रकह होत ई । ३

मईकी सन्ध्या समय जापानी फौजके दो बड़े टुकड़े तय्यार हुए। एक टुकड़ा पुलानटीन या निउच्चाङ्गकी ओर भेजा गया और दूसरा टुकड़ा किनचौकी ओर ।

दूसरे दिन इठीं मई ही सवेरे कोई आठ बजे पीगुवोमें जापानी फौज उतरनेका समाचर अरधर-बन्दर पहुँचा। न जाने कैसे इस समाचारके साथ ही साथ नौ-सेनापति अलकमि-फके पास अरधर-बन्दर परित्याग करनेका सरकारी फरमान भी पहुँच गया। अलकमिफ विटगर्टकी अपना पदभार दे एक स्पेशल ट्रेन द्वारा अरधर-बन्दरसे चले गये। उनकी साथ साथ ग्राण्ड डिउक वोरिस तथा बहुमंख्यक रूसी अफसर भी अरधर-बन्दरसे चले गये। अरधर-बन्दर नगर पहले हीसे प्रायः खाल हो गया था; जो गिम्तीके लोग रह गये थे, वहाँ सन्ध्या समय वह भी एक पमिङ्गल-ट्रेनमें बैठ अरधर-बन्दरसे चले।

कहते हैं, कि यह ट्रेन यात्रियोंसे उपचारखच भरी थी; जिनमें कोई दो सौ बीमार थे। रातिके अरन्धिक भागमें जिस समय ट्रेन पूर्वोक्त पुलानटीन नगरके पुलानटीन स्टेशनके समीप पहुँच रही थी, उस समय एक कब्जाक नवार घोड़ा उड़ता ट्रेनके समीप पहुँचा और बारंबार ट्रेन ठहरानेके इशारे करने लगा। ट्रेनकी धान धोमी होनेपर कब्जाक मवारने धिक्काकर कहा,— "जौटो,—धीरे जौटो! जापानी आते हैं।" विचारकर स्थिर किया गया, कि ट्रेन लौटानेके करने कागें धड़ाना ही अच्छा है; शायद बचकर निदान जाये। पुलानटीन स्टेशनमें कोई पौन कोस ट्रेनकी ओर देर नगर गन्ध पून एक पहाड़ीपर जापानी दिगाई

दिये। जापानी सिपाहियोंकी बाढ़ दगी; ट्रैनपर गोलियोंकी बौझार हुई। यात्री गाड़ीके फर्शपर लेट गये; दो रूसी सिपाही जखमी हुए। सिर्फ इन्हीं दोनोंके माथे गई; जापानी सिपाहियोंकी बन्दूकोंकी दूसरी बाढ़ दगनेसे पहले ट्रैन द्रुत गतिसे निकल गई। इसके बाद ही जापानियोंने लाइनके पास पहुँच उसे कई जगहोंसे काटकूट दिया; अरघर-बन्दरका रेल-पथ खण्डित हुआ। इसी दिन अरघर-बन्दरके प्रधान सेनापति योसे-कने बन्दरमें निम्नलिखित घोषणा प्रचार की,—

“गत १०वीं और १ली मईको अत्र, यालू नदी पार हुआ; हमारी फौजें यालू किनारेसे पीछे हटकर पहलेसे चुने मोरचोंमें बैठ गईं।

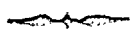
“कल अत्रुने लियावटुङ्ग प्रायद्वीपके पीशुवो स्थानमें अपनी पौण उतारी है; इसीके साथ साथ हमारा कार्य आरम्भ हुआ है। इसमें सन्देह नहीं, कि अत्र जापानी फौजें हमारी रेल-लाइन तोड़ देंगी और हमारे सिपाहियोंकी पीछे हटा सुदूर पूर्वके रूसके इस सुदृढ़ स्थान अरघर-बन्दरकी खलकी धोरसे भी घेर लेंगी।

“मेरा आदेश है, कि वीर योद्धा सहायक फौज आनेतक इस स्थानकी रक्षा करें। आज्ञा है, कि इस परीक्षाके समय मेरे अधीन सिपाही अपनी दक्षिण मानसरोर रूसका सुखीञ्चक करेंगे। वृत्तमें किसी बातपर निर्भर किया जा नहीं सकता; यद्यपि अनहोरो हो जाया वरनी है; इहलिये बन्दरका प्रत्येक सिपाही अपने सुवक्त और भावार्थके सहारे ही पर भरोसा करें।”

इसी दिन अरधर-वन्दरमें बहुत बड़ी फौजकी कवाइद हुई। सेनापति एोसेल स्वयं परेडमें मौजूद थे। आपने अन्यान्य उत्साहवर्द्धक बातोंके साथ साथ कृषी विपाहियोंसे यह भी कहा,— “युद्धने नया रूप प्रकट किया है; भूमिकी ओरसे भी शत्रु अरधर-वन्दरको घमको देने लगा है।”

अरधर-वन्दरमें और भी सत्राटा छाया; और भी उदासी पैली।

अष्टम परिच्छेद ।



इस अवसरमें जापानकी पहली फौज क्या कर रही थी ? प्रथि-
तयशा विचक्षण रणप्रखिन्न कुशीकी अपने सहस्र सहस्र भीम-
दिक्रम सिपाहियोंके साथ इन दिनों क्या कर रहे थे ? गत १ लो-
: ईकी यालूदिनारे रूसियोंके दुर्भेद्ययूहको वज्रसृष्टिसे मल
चुरसुरकर दूर फेंक देनेवाली जापानकी पहली पहली फौज इस
कसम क्या कर रही थी ?

सितने दौ लोंगोंने अनुमान किया था कि अपना साध-सामान
छोड़ पापनी तोपें और आहत सिपाही छोड़ जिन बेतरतीबीके
साथ यालू दिनारेके रूसी फौज पीछे हटी है, उससे जापानी
उभके पीछे ही पीछे रहेंगे और जहां जहां रूसी फौज कदम
जमायेगी, वहां वहांसे लते लार पीछे हटायेगे। किन्तु जिन
लोंगोंने यह आश्वासन किया था, उन्होंने अपनी इस दल्पना-पृष्टिसे
अधिक शत नये-मुराने कितने ही बृहत् रत्नार्थी पीछों या शमश हीली
नर्जार दाहम किया था। उन्होंने यह खयाल नहीं किया, कि

सेनापति कुरोकीके सामनेकी स्यान-वृत्तान्त-विशिश्ट स्थिति इसप्रकार थी,—यालू किनारेके जिन किउलिनचिङ्ग नगरपर उन्होंने अधिकार कर लिया था, उससे एक घाहराह मध्य मञ्चूरियाकी ओर जाती थी। किउलिनचिङ्गसे मञ्चूरियाका लियावयाङ्ग नगर सीधी लकीरमें कोई आठ कोस दूर था। इसी लियावयाङ्ग नगरमें रूसके प्रधान सेनानायक कुरोपाटकिन कोई अस्सी हजार योद्धानोंके साथ अवस्थान करते थे। अरथर-वन्दरसे चली लियावटङ्ग खाड़ीसे होनी हुई रूसी रेलकी लाइन लियावयाङ्गको छूती सुकदन, हारविन प्रभृति रूसी नगरोंकी ओर चली गई थी। लियावयाङ्गसे कुछ ऊपर सुकदन नगरमें सुदूर पूर्वके रूसी बड़े लाट अलकनिफके लाटगरीके दफ्तर थे। इससे भी ऊपर उत्तर हारविन नगर है। हारविनसे आगे रूस-अधिकृतन चीनका मञ्चूरिया समाप्त होता और रूस-राज्य साइबेरिया आरम्भ होता है; अरथर वन्दरसे चली रेल-लाइन इसी साइबेरियासे होती हुई रूस राजधानी सेण्टपिटर्सबर्ग पहुँचती है।

हमारे पाठकोंको उन् चिरसंख्य १ को मईके यालू-युद्धकी सन्ध्या याद होगी। पाठकोंका यह भी याद होगा, कि इस दिन यालू किनारेने हारकर जब रूसी फौज किउलिनचिङ्गके पीछेकी राहसे भागी थी, तब उस भागती हुई फौजको होटसुतङ्ग स्थानमें टोककर जापानी फौजने एक रणरुद्ध युद्ध किया था और इस युद्धमें बहुतेरे रूसियोंको कैद कर लिया था। इस युद्धके उपरान्त उस दिन जापानी फौज आगे न बढ़ी। होटसुतङ्गमें जापानी फौजका अग्रता भाग प्रतिष्ठित हुआ।

—ती मईकी सन्ध्या जैसे जैसे प्रगाढ़ हुई, जैसे जैसे मेघशय्य

सुनिर्मल व्याकाशमें चन्द्रदेव उज्वलसे उज्वलतर हुए । चन्द्रके प्रकाशमें धरित्रीदेवीने सपहली पौशाक धारण की । ऐसे समय थालूत्रिवारे दिनभरके अमानुषिक अमसे क्लान्त वीर जापानी सिपाहियोंने क्लान्तिदिवांगके लिये विग्राम करना आरम्भ किया । जो मौजे' जहां पहुँचो धों, वहीँ उन्हीने कमरें खोजीं । फर्श नहीं था—शय्या नहीं थी—तकिया-तोशक झूठ भी नहीं था ; शम्शावत हरिद्वर्ण ज'चीनीची जमीन थी ; जापानी सिपाही कमरें खोज रही जमीनपद लेटे । यह ज'चीनीची जमीन ही जापानी सिपाहियोंके लिये कदम रुकन सुखद सामानोंसे लगी शय्याही अपेक्षाभी अधिक सुखद थी । उन दिन कौटि कौटि शय्याशायी अस्त्रियोंको बह आनन्द प्राप्त हुआ न होता, जो सुभानी हुई अथवा भूमिमें जापानी बेरोशो प्राप्त हुआ । बह बह लोच आनन्द-पुनक्ति थी, कि जिस भूमिपर आज यह बैठे हैं, उसे उन्हीने अपनी देहका रक्त बहा अपने बहुत सक्त सिपाहियोंकी बलि दे प्रथमपराक्रान्त शत्रुके हाथसे जीता है ; निवा इतने जापानी शीरोका कृतव नावा सुखदन्वाकाचोंसे परिपूर्ण था, निवा

सेनापति कुरोकीके सामनेकी स्थान-वृत्तान्त-विशिष्ट स्थिति इसप्रकार थी,—यालू किनारेके जित किउलिनचिङ्ग नगरपर उन्होंने अधिकार कर लिया था, उससे एक प्राहराह मध्य मञ्चूरियाकी ओर जाती थी। किउलिनचिङ्गसे मञ्चूरियाका लियावयाङ्ग नगर सीधी लकीरमें कोई साठ कोस दूर था। इसो लियावयाङ्ग नगरमें रूसके प्रधान सेनानायक कुरोपाटकिन कोई अस्सी हजार योद्धानोंके साथ अवस्थान करते थे। अरथर-वन्दरसे चली लियावटङ्ग खाड़ीसे होनी हुई रूसी रेलकी लाइन लियावयाङ्गकी छूती सुकदन, हारविन प्रभृति रूसी नगरोंकी ओर चली गई थी। लियावयाङ्गसे कुछ ऊपर सुकदन नगरमें सुदूर पूर्वके रूसी बड़े लाट अलकनिफके लाटगरीके दफतर थे। इससे भी ऊपर उत्तर हारविन नगर है। हारविनसे आगे रूस-अधिकृत धोका मञ्चूरिया समाप्त होता और रूस-राज्य साइबेरिया आरम्भ होता है; अरथर वन्दरसे चली रेल-लाइन इसी साइबेरियासे होती हुई रूस राजधानी सेण्टपिटर्सबर्ग पहुँचती है।

हमारे पाठकोंको उक्त चिरस्मरणीय १ ली मईके यालू-युद्धकी सन्ध्या याद होगी। पाठकोंको यह भी याद होगा, कि इस दिन यालू किनारेसे हारकर जब रूसी फौज किउलिनचिङ्गके पीछेकी राहसे भागी थी, तब उम भागती हुई फौजको छोटसुतङ्ग स्थानमें टोककर जापानी फौजने एक रात युद्ध किया था और इन युद्धमें बहुतेरे रूसियोंको कैद कर लिया था। इस युद्धके उपरान्त उस दिन जापानी फौज और आगे न बढ़ी। छोटसुतङ्गमें जापानी फौजका अगला भाग प्रतिष्ठित हुआ।

मईकी सन्ध्या सेमे प्रगाढ़ हुई, जैसे जैसे मेघशून्य

सुनिर्मल आकाशमें चन्द्रदेव उज्ज्वलसे उज्ज्वलतर हुए ।
 चन्द्रके प्रकाशमें घटित्वीदेवीने सपहली पौशाक धारण की । ऐसे
 समय चालूखिनारे दिनभरके अमावसिक्त अमसे क्लान्त वीर
 जापानी सिपाहियोंने क्लान्तिदिवाग्यकी लिये विश्राम करना
 आरम्भ किया । जो फौजे' जा' पहुँची थीं, वहीं उन्होंने कमर' खोलीं ।
 फर्श नहीं था—शय्या नहीं थी—तकिया-तोशक झूठ भी नहीं था ;
 शय्याहत हरिद्वर्ण ज'चीनीची जमीन थी ; जापानी सिपाही कमरे' खोल
 इसी जमीनपर लेटे । यह ज'चीनीची जमीन ही जापानी सिपाहियोंके लिये
 नरक सहक सुखद सामानसे मधी शय्याकी अपेक्षाभी अधिक सुखद थी । उस दिन कौटि कौटि
 शय्यायायी अतिथीकी यह आनन्द प्राप्त हुआ न होता, जो सुभना
 हुए अरुण भूमिमें जापानी वीरोंको प्राप्त हुआ । यह वह बीच
 आनन्द-पुलकित थी, कि जिस भूमिपर आज यह लेटे हैं, उसे
 लम्बीने अपनी देहका रक्त बहा अपने बहुत खूब नादियोंकी बलि
 दे प्रकटपराक्रान्त प्रवृत्ति हाथसे हीना है : जिन्हा कलने जापानी
 वीरोंका हृदय नामा सुखरज्यावायोके परिपूर्ण था, जिन्हा

थीं, जखमी तड़पकर हाय हाय कर रहे थे। कहते हैं, कि कितने ही दुर्लभ चीनाओं ने जङ्गल में जहाँ जहाँ पहरा नहीं देखा, वहाँ वहाँके मृत वीरोंका ययासर्वस्व अपहरण किया। जपानी अफसर यह समाचार पा अत्यन्त क्रुद्ध हुए और उन्होंने आज्ञा दे दी, कि भविष्यत्में जो चीना इस घृणित कार्यमें प्रवृत्त पाया जाये, वह उसी समय गोलीका निशाना बनाया जाये। इस आज्ञाके फलसे कितने ही चीना मारे गये; किन्तु जिसका जो स्वभाव है, वह उसको जीके साथ है। खैर; जापानी अफसरोंने जब गिरदावरी और पहरेका बन्दोबस्त किया, तब आहतोंको अस्पताल भेजने और मृतकोंकी अत्तप्रष्टिक्रियाकी व्यवस्था भी की। मध्योपरान्त प्रायः सब लार्ण दफन कर दो गईं। जिस यत्न और सम्मानके साथ जापानियोंकी मृतदेह रूसमें उतारी गईं, उसी यत्न और सम्मानके साथ रूसियोंकी भी। इन्हीतरह जिस परिश्रम और महानुभूतिके साथ जापानी आहतोंको सेवा-शुश्रुषाकी गईं; उसी परिश्रम और महानुभूतिके साथ रूसी आहतोंकी भी। रूसी आहतोंने जापानियोंकी इस कृपाका ह्रास अपनी सरकारको लिखा था और रूस-सरकारने जापानियोंके इस कामके लिये उसकी बड़ी प्रशंसा की थी। १ ली मईकी रात्रिके अगले भागमें जङ्गलकी कुछ विभीषिकायें मिटा दी गईं। रातभर एक ओर जापानी मियादी विद्यास करते रहे और दूसरी ओर बड़े अफसरोंके खोबाने छोटे अफसरोंके नाम आज्ञापत्र निकाले जाते रहे।

देहकी ओर बढ़ने लगीं । जापानी फौजकी चाल बहुत ही धीमी थी । इसका एक प्रधान कारण था । १ ली मईकी यालूके युद्धमें जापानने रूसको परास्त किया ; किन्तु इस युद्धसे कोई ग्यारह दिन पहले ही जापानकी पहली फौजके प्रधान सेनापति कुरोकीने स्थिर कर लिया था, कि अतृप्त दिन जापानी फौजे रूसियोंको परास्तकर अतृप्त दिनसे आगे बढ़ेगी । इसी सिद्धा-
रुके अनुसार युद्धसे कई दिन पहले २०वीं अपरेलको कुरोकीने सेनापति ससाकीके अधीन एक जापानी फौज फेङ्गझाङ्गचेङ्गकी ओर भेज दी थी । बीजुंसे पैंतीस मील उत्तर-पश्चिम यालू नदी पारकर बड़े ही पेचीले पार्वत्य पथसे ससाकीकी फौज फेङ्गझाङ्ग-
चेङ्गकी ओर जा रही थी । यालू नदीके युद्धकी समाप्तिके उपरान्त सेनापति कुरोकीको खबर मिली, कि ससाकीकी फौज अभीतक फेङ्गझाङ्गचेङ्ग पहुंची नहीं है ; दो चार दिनोंके बाद पहुंचेगी । कुरोकी चारुतं घं, कि हमारी ओर ससाकीकी फौज एक ही समय फेङ्गझाङ्गचेङ्ग पहुंचे, इसी विचारके अनुसार उन्होंने अपनी फौजही चाल बहुत धीमी कर दी थी ।

इसी मईकी कुरोकीकी फौजका अगला भाग फाङ्गहेङ्गचेङ्ग पहुंचा । फाङ्गहेङ्गचेङ्ग शीटाथा एक गाँव यालू तटके किल्लिन-
विङ्गसे कोई दस बीसके पारिलेजर अवस्थित है । जापानी फौजके आगे आगे गिरहादरीके सवारिके एक दस्ता था । फाङ्गहेङ्गचेङ्गके

गई। फाङ्गचेङ्गचेङ्ग और फेङ्गङ्गाङ्गचेङ्गके बीचकी राह पहाड़ी है। इस राहकी दोनों ओर दो ऊंची पर्वतश्रेणियाँ हैं; एककी उंचाई दो हजार फुट है और दूसरेकी तीन हजार फुट। फाङ्गचेङ्गचेङ्गसे आगे दोनोंके बीच काई दो हजार फुटका अलग-गान है। इसी अलगगानके बीचसे फेङ्गङ्गाङ्गचेङ्गकी ओर राह गई है। जैसे जैसे यह राह आगे बढ़ी है, वैसे वैसे दोनो पर्वत-माकाये परस्पर समीपसे समीपतर होती गई हैं। यहाँतक, कि कौलोमोग स्थानमें दोनों पर्वतश्रेणियाँ प्रायः मिल गई हैं; बीचमें बहुत घोड़ाया फासिला है, जिससे राह निकल गई है। इस स्थानकी प्राकृतिक स्थितिके अनुसार ही इसका नाम कौलो-मोग यानी 'कोरियाका द्वार' रखा गया है। कहते हैं, कि प्राचीन कालमें इस 'द्वार' की एक ओर कोरिया-राज्य था और दूसरी ओर चोमका मञ्चरिया राज्य। यह द्वार ही मानो दोनों खान्जाज्यका सीमास्थल था। जापान-सेनापति कुरोकीकी आग्रहा था, कि इस द्वारकी प्रकृतिसे सुदृढ़ बनाया है; कबो यहाँ टहर जापानियोंको द्वारमें घुसनेसे रोकेंगे। पार वा कौलो-मोगके इर्दगिर्द बने मोरचों और पुगलोंको देखा स्पष्ट जान पड़ता था, कि यहाँ कबिर्वाजे जापानियोंका रोकनेकी तय्यारी की थी; किन्तु जापान-सेनापति साम्राज्यकी अपने पीछे पहुँच जानेका समाचार पानेकी वजह हो, वा कुरोकाटकिनका विचार दृष्ट्य जानकी वजह हो या कुरोकीकी प्रौढकी वजह प्रतिकी वजह हो—संभव है, कि कियो वजह—यान्तमें कबो प्रौढोंने इस वजह जापानियोंकी राह नहीं रोकती, वरु अपने पनेपनाये और इसमें ही; पीछे लट गये; जापानो प्रौढोंने

अपनी हथौड़ेमिसं पर्वतमाला गुंजा इस द्वारमें प्रवेश किया।

इस द्वारके बाद राह प्रशस्त हो गई थी; पर्वतमालाने राहका साथ छोड़ दिया था। जापानी फौजे धीरे धीरे इस राहसे फेङ्गझाङ्गचेङ्गकी ओर बढ़ने लगीं। फेङ्गझाङ्गचेङ्ग नामने दिखाई दिया। कुरोकीको जो दृढ़ निश्चय था, कि फेङ्गझाङ्गचेङ्ग नगरमें कोई मारकेही कड़ाई होगी। फेङ्गझाङ्गचेङ्ग नगरपर एक पताका उड़ रही थी। कुरोकीकी फौजके अफसरोंने दूरदौनसे देखा, तो उन्हें जान पड़ा, कि यह पताका खुशियोंकी नहीं,—खयं जापानियोंकी होका थी। जापानी समझ गये, कि उनसे पहले सेनापति सयाकी फेङ्गझाङ्गचेङ्ग पहुंच गये और उन्होंने अपनी पताका नगरके उच्चभागमें गाड़ दी थी। समझने यह समाचार कुरोकीकी समूची फौजमें फैल गया। कुरोकीकी पोज र्धनाद करती सीढ़ी और फेङ्गझाङ्गचेङ्गमें घुस अपने सयाकीकी फौजसे मिल गई। यह स्थान भी बेलड़े-भिड़े जापानियोंके हाथ लगा। कुरोकीकी फौजके अगुनेसे कुछ घण्टे पहले सयाकीकी फौजने फेङ्गझाङ्गचेङ्ग पहुंच देखा था, कि उसे रूसी खाली कर गये थे। जो माल-प्रसदान भाग ले जा सके थे, उसे साथ ले गये थे; जो साथ ले नहीं जा सके थे, उसे जला गये थे; बहुतसा माल-प्रसदान जटा भी नहीं

सिवा इसके टेलिग्राफके यन्त्र, कुशल-फावड़े और नाना प्रकारके यन्त्र भी जापानी फौजके हाथ आये।” इससे प्रमाणित होता है, कि रूसी सिपाहियोंने बड़ी ही ध्वराहटके साथ फेङ्गाङ्गा-फेङ्गाङ्गा खाली किया था।

फेङ्गाङ्गा-फेङ्गाङ्गा नगर जनसंख्याके हिसाबसे उतना बड़ा न होने-पर भी सामरिक विचारसे बहुत बड़ा और बड़ा ही प्रयोजनीय है। कारण, यह नगर मच्चरियाके बहुत ऊँचे भीतर है और इस जगह तीस शहराहें आकर एकत्र हुई हैं। इनमें एक राह तो बही है, जिससे होकर जापानी फौज फेङ्गाङ्गा-फेङ्गाङ्गा पहुँची, फेङ्गाङ्गा-फेङ्गाङ्गासे यानी किउलिनचिङ्गा-फेङ्गाङ्गा-फेङ्गाङ्गावाली राह। दूसरी राह लियावथाङ्गा, सुकदन प्रभृतिकी ओर गई है और इस नगरसे तीसरी राह पश्चिम ओर लियावटुङ्गा प्रायद्वीपकी ओर गई है।

उधर रूस-सेनापति कुरोपाटकिनका सहर स्थान सुकदनके समीपका नगर लियावथाङ्गा बना और इधर जापान-सेनापतिका सहर स्थान नवविजित फेङ्गाङ्गा-फेङ्गाङ्गा नगर। कौशलो कुरोपाटकिनने अपनी फौज फैला रखी थी। उनकी फौज प्रायः अर्द्धचन्द्राकारमें फैली हुई थी। इस अर्द्धचन्द्राकारका दाहिना सिरा लियावटुङ्गा प्रायद्वीपका और भक्ता हुआ सुकदन-अरथर-वन्दर रेलके हैचोङ्गा रेल-यंशन और उसके निकटस्थ उसी नामके नगरतक फैला हुआ था और बायाँ सिरा पहेंगे सिरेसे एक मोघो लकीरमें कोई पैंनालीस या पचास मील दूर मोतोनलिङ्गमें था। प्रधान रूस-सेनापतिका सहर या हेडक्वार्टर पूर्वोक्त अर्द्धचन्द्राकार वाली रेलवाले मोतोनलिङ्गसे पीछे सुकदनकी तरफ कोई

शलीम मील पूर्व-उत्तर लियावयाङ्ग नगर था। इठी अपरेखकी
 पेश फेङ्गाङ्गचेङ्ग नगरकी जापानिओंने स्वाकिधारसुक्त किया था,
 उससे चली शाहराह इही मोतीनलिङ्गके समीपस्थ मोतीन-
 लिङ्ग नामक गिरि-सङ्कटसे होती हुई कुरोपाटकिनके सहर
 लियावयाङ्ग नगरकी ओर गई थी। मोतीनलिङ्ग गिरि-सङ्कटकी
 राह बड़ी ही विकट है; गिरि सङ्कटकी एक ओर यदि कोई
 पौज कुछ कलदार तोपों के मोरचे बांध बैठ जाये, तो बड़ीसे
 इही पौजकी गिरि-सङ्कटमें प्रवेश करने न दे। इस गिरि-
 सङ्कटमें कण्जाकोंकी कब्रदस्त फौज बैठी थी और इस फौजसे
 फेङ्गाङ्गचेङ्ग नगर और उसकी जापानी फौज कोई पचास
 मील ही फासिलेपर थी। उस समय इन दो दुर्गों फौजोंके बीच
 यम रतना ही चलगाव था।

रणप्रसिद्ध जापान-सेनापति कुरोकीने फेङ्गाङ्गचेङ्ग नगरपर
 अधिकारकर जगद्विख्यात कुरोपाटकिनकी पूर्वोक्त उद्देशसे सैन्य-
 स्थापितकर दुर्गके लिये व्यवस्था न करते देख कुरोकीने
 अपनी फौजकी व्यवस्था और भी धोमी कर दी और कुरोपा-
 टकिनकी अर्द्धचन्द्राकारमें पड़ी फौजके सामने अपनी फौज भी
 अर्द्धचन्द्राकारमें छोटी अर्द्धचन्द्राकारमें फैला दी। कई दिनोंमें यह

बदल चुकी थी; शिशिर बीतो, वसन्त ऋतु उपस्थित थी।
 कड़कड़ाती शीतके बदले हलकी गर्मीं असर जमाने लगी थी।
 बरफ गल चुकी थी; राहें कीचड़-पानीसे साफ थीं; फौजोंके
 लम्बे लम्बे धावके लिये मैदान बहुत कुच्छ साफ हो गये थे।
 सिपाही जाड़ेको ऊनी वजनी बरदियोंके बदले हलकी सूती
 बरदियां हाट चुके थे। दोनों फौजोंको परस्पर युद्ध करनेके लिये
 ऋतुपरिवर्तनसे कितनी ही सुविधाये हो गई थीं; फिर भी,
 दोनों लड़ती नहीं थीं; सामना होनेपर भी दोनों अपने अपने
 मोरचे मजबूतकर आक्रमण करनेके दावघात छूट रही थीं।

मवा हो जिस ओरसे आई थी, उसी ओर वापस गई । जापानी फौजके आनेपर जो रूसी सिपाही ताशोचाव नगरसे भाग गये थे, वह फिर नगरमें लौट आये । मागो झुंझ हुआ ही नहीं । जिस समय जापानी फौज कैशौमें उतरी, उस समय निउत्वाङ्ग-की रूसी फौजमें भी बड़ी चक्काहट फैली । सिपाही और अफसर जल्द जल्द नगर परित्याग करनेके लिये तय्यार हुए । अफसर मारि कौत्सकाहटके अर्थकी आज्ञाये देते और दूसरे ही क्षण उनका हल्लाग करते । जापानी फौजके लौटनेका समाचार पते ही निउत्वाङ्गमें भी शान्ति फैली ; रूसियोंके उड़े हुए घोष-टिकाने आये । उस समय जापानी फौजका वह गमनागमन रूसियोंकी दृष्टिमें न आया । पीछे मालूम हुआ, कि अन्यत्र जो जापानी फौजके दिनारे उतरीं, उनसे ओरसे रूसियोंका भाग घटानेके लिये ही जापानी फौज को चौं पड़ चुकी थी ।

१८ वीं मईको जापानी फौजका चौथा टुकड़ा ओरियाकी खाड़ीके ताजूशान स्थानमें उतरा । जिन नगरनदारीके जहाजोंमें फौज थी, उनके साथ नौ-सेनापति होमोयाके जहाजोंका पहरा था । होमोया बड़ी नौ-सेनापति हैं, जो हालू नदीकी कटाईमें मककोट और तरपेहां-नारीका ब्रेहाएि बालू नदीमें पड़ूँके थे और जित्तीमें बड़ी ही योग्यताके साथ रूसियोंके हल्लाग करनेके लिये निकला गया दिवा था । ताजूशानमें

बाद ही बारबरदारीके जहाजोंसे जापानी फौज उतरने लगी। वही ही सुष्टरुहाके साथ जापानी फौज जहाजोंसे किनारे उतरी। जापानी फौजका प्रधान भाग किनारे ठहरा और उसके छोटे छोटे दस्तों दूर दूरतक फैल गये। ऐसा ही एक दस्ता ताकूशानसे कुछ फासिलेपर अवस्थित कर रहा था। सन्ध्या कोई सात बजे थी। ऐसे समय इस दस्तोंके सिपाहियोंको कच्चाकोंका एक रिमाला ताकूशानकी ओर धीरे धीरे बढ़ता दिखाई दिया; शायद जापानी फौजको गतिविधि देखने जाता था। इसता धीरे धीरे अपनी जगहसे चला और एक चकर काट कच्चाक-रिमालेके पीछे पहुँच गया और पंक्ति बांध रिमालेके पीछे छोटनेकी राह रोक दी। कच्चाक-रिमाला जापानी दस्तोंकी यह कार्रवाई देख बहुत ही भय-विह्वल हुआ। पहले उसने जमकर युद्ध करनेकी इच्छा की; किन्तु पलटनेमें खड़ेनेमें रिमाला सदा अतिग्रस्त होता है; इसलिये रिमालेने छोड़े भगा, पंक्ति भेद भाग जाना ही स्थिर किया। रिमाला भागने लगा; इसतेकी गोखियाँ रिमालेपर पड़ने लगीं। रिमालेका एक व्यफसर और नौ मवार मारे गये; दो व्यफसर और चार सवार जापानियोंके हाथ कंद हुए; बाकी व्यफसर और सवार निकल भागे। ताकूशानकी फौज इसतरह कच्चाक-रिमालेकी भगा फौजका क्रम क्रमसे अरधर-बन्दरकी ओर बढ़ने लगी।

जापानी फौजको सन्ध्याकी ओरसे अरधर-बन्दरपर चढ़ाई करनेकी प्रिकमें छोड़ इस इस जगह एक कच्चाक-रिमालेके एक घाँटे खिल देना उचित समझते हैं। जापान-सेनापति

करोलीकी पहली फौज, जब बालू नदीकी ओर बढ़ी थी, तब अपने पीछे कोरियामें जगह जगह छोटी छोटी फौजें छोड़ती गई थी। जिन जगहोंमें जापानी फौजें छोड़ी गई थी, उनमें आनङ्ग अन्य-तम था। आनङ्गका नाम पहले कड़वार लिखा जा चुका है। यह स्थान पिङ्गयाङ्गसे कोई १०१४५ मील उत्तर है। आनङ्ग नगर शहरपनाहकी भीतर है। शहरपनाह अगले बत्तीकी है; मोटे मोटे पत्थरोंसे तय्यार की गई है। अगले बत्तीमें यह नज़ीम शहरपनाह दुर्भेदा दुर्गदा काम दे सकती थी मर्दा; किन्तु आनङ्गकी पहली सुरमा बनानेवाली भयङ्कर तोपोंके नामने एक शहरपनाहकी टाफ़ा दिमी गिनतीमें नहीं थी। बड़ी बड़ी तोपोंकी बौन कचे, छोटी छोटी पहलाड़ी तोपखानोंकी टाफ़ार तोपें भी उसे सुरमा बना खदती थीं। ऐसी ही शहरपनाहके घिरे आनङ्ग नगरमें कोई दो सौ जापानी लिपाचियोंकी छोटीछोटी एक फौज थी। १०वीं मईकी प्रातःकाल एक जापानी सन्तरी आनङ्गकी शहरपनाहपर खड़ा पहरा दे रहा था। ऐसे समय उसे भासनेके सैरानमें दूरसे एक रिहाला आता दिखाई दिया। सन्तरीमें भयङ्करक ध्वनि की। पीछे लक्ष्मरीने दीवार पर चढ़ बख्शावोंका रिहाला आता देस लिपाचियोंकी जल्द जल्द रुकार

रोंको ऐसा मजा चखाना चाहिये, जिससे वह फिर इसतरह धावा करनेका साहस न करे ।

यासूकी लड़ाईसे कुछ दिनों पहले ही यह रिसाला यालू किनारेकी रूसी फौजसे जुदाकर कोरियाको ओर भेजा गया था । रिसाला एक दिनमें पचीस मीलके हिस्सेसे धावा मरता कोरियामें जहाँतहाँ घमता फिरता था । रिसालेको खबर नहीं थी, कि रूसी मईकी यासूकिनारे रूसी फौज किस दृष्टिसे साय परास्त हुई । उसे यह समाचार यदि मिल जाता, तो शायद यह आगजूको सामने पा उभकी ओर वायुवेगसे व्यग्रसर होनेका साहस न करता । उसे विश्वास था, कि हमारे साथी यालू किनारे अटल-अचल बने बैठे हैं और जापानी सिपाही कोटि कोटि यत्न करके भी यालू पार कर नहीं सकें हैं । कच्चाक-सवार जैसे ही, आनछूको शहरपनाहकी दीवारके पास पहुँचे, ऐसे ही उनपर जापानी सिपाहियोंको गोलियाँ बरसाने लगीं । गोलियोंकी चोटसे मरकर कितने ही सवार लोट गये ; एक अफसरका भी खाम तमाम हुआ । यह देख कच्चाकोंका वेग रुका । वह सब पीछे पन्न टकर एक आश्रयस्थल टूँट वहाँसे आनछूपर गोलियाँ बरसाने और समय समयपर अपकीदय आक्रमण भी करने लगे । दिनभर और रातभर लड़ाई चलती रही । सुट्टीभर जापानी सिपाहियोंने शत शत रूसी कच्चाकोंको रोक रखा । अन्तमें जापानी सिपाहियोंकी मदद मिली ; निकटकी चींटियोंसे जापानी पक्षटने आनछूपहुँचीं । ११वीं अपरेलको इन पक्षटनोंका आगमन देख कच्चाक-रिसाला आनछूके सामनेसे कच्चाकोंको अपने साथ ले गया ; तिरमट सवारोंकी

काँच मैदानमें छोड़ गया । जापानकी ओरके चार सिपाही मारे गये और छः जखमी हुए ।

आनजूके सामनेसे भागकर यह कज्जाक-रिमाका धावा मारता हुआ मईको जेनमान-बन्दरसे काँच वीस कोसके फालिलेपर हम-येङ्ग पहुँचा । हमयेङ्ग बस्तीके पास ही हमयेङ्ग-झिजा है । उस समय किलेमें कोई तीन सौ कोरियन सिपाही थे । कज्जा-कोंको देख उनपर कोरियन सिपाही गोलियां चलाने लगे । यहाँ बज्जाक ज्यादा दूर तक न टहरे । उधर ही दूरकी गोली-वृष्टि मच सक और चले गये । दो जगहकी अग्नि-वृष्टिसे परेशान हो अब कज्जाक-रिमाके कोरिया परित्याग करना ही स्थिर किया । इस अन्तिम घटनाके बाद ही यह कज्जाक-रिमाका कोरियासे निकल न जाने रुका गया । किसी किसीने कहा, कि थूलीबट्टा गया ; किसी किसीने कहा, कि थूलीबट्टा नहीं ; यूरोपाटकिनकी प्रधान फौदसे मिला गया ।

दशम परिच्छेद ।



डालनी—चक्रपरिवर्तन ।

१२वीं मईको सुदूरपूर्वके बड़े साट और अस्थायी प्रधान नौ-सेनापति अलकसिफका भेजा तार रूस-राजधानी से एटपिटर्बर्ग पहुँचा,—“डालनी-बन्दरको जहाजोंको गोदियां आदि तोड़ दी गईं ।” जो लोग डालनी-बन्दरको जानते थे, वह यह समाचार पा बिस्मित हुए ।

लियावटुङ्ग प्रायद्वीपके जिस छोटेसे शिरके एक छोरपर अरथर-बन्दर अवस्थित है, उससे कोई दश कोस दूर उसी शिरमें यह डालनी बन्दर बना है । रूसने अरथर-बन्दरको अधिकार-भक्त करते ही इस डालनी-बन्दरपर निगाह डाली । रूसने स्थिर किया, कि सुदूर-पूर्वमें हमारा सर्वप्रधान व्यवसाय केन्द्र यह डालनी-बन्दर बने और अरथर-बन्दर उस डालनी-बन्दरका रक्तक जल-स्यलसे दुर्भेद्य सुदृढ़ दुर्ग । इसके बादसे रूसने अपने इसी विचारके अनुसार कार्य आरम्भ किया और वर्तमान युद्धारम्भसे कुछ पहले ही उनने अपना पूर्वोक्त विचार कार्यमें परिणत कर डाला था ।

सचमुच ही अरथर-बन्दर हर तरफसे दुर्भेद्य दुर्ग और डालनी-बन्दर अच्छा खासा व्यवसायप्रधान नगर बन गया था । अरथर-बन्दरकी डढ़ताका परिचय पाठक पा चुके हैं, अब यह देखें कि इस डालनी-बन्दरको और कैसा उन्नत किया था ।

विनायकी अखबार 'डेली टेलिग्राफ'के एक संवाददाताने इस बन्दरके सन्ततमें लिखा है,—“कोई और जाति होती, तो इस जलसङ्घको अपनी पूर्वावस्थानें हो रहने देती और बन्दरकी वसती उन्नी उन्नी पुरानी-धुरानी घीमी चाकसे उन्नत होने देती। किन्तु इस जाति ऐसा कर नहीं सकती थी। उसने इञ्जीनियरों और कर्मकृशलोंको भेज भूमिकी पैसाइश कराई और डालनी बनानेका नक्शा तय्यार किया। टेकेदारोंको टेका दिया गया, कि वह साउथैरिश्च रेलके छोरपर नकशेके अनुसार सर्वोद्गुन्दर लाङ्की-बन्दर और नगर तय्यार कर दें। इस सम्राट् जारके खजानेका मुंह खुला; कहते हैं, कि मात करोड़ पचास लाख रुपये नकद इस कामके लिये मञ्जूर किया गया। डालनीमें सफ़ाई बहुत होती थी; फिर भी, काम बहुत ज्यादा था; इसीलिये बड़े मर्चका पा। डालनीके चासपास पर्वतमालाय और द्विद्वीप तथा गहरे जलमें सहस्र सहस्र मछूर काम करने लगे। द्विद्वीप जल गहरा और गहरा जल द्विद्वीपपर एक और उन्नीके चासपास मालगुदाम और दुकानें बनवाई जाने लगीं। असाह लगने लायक गहरा किनारा बनाया जाने लगा किनारे किनारे रेल बिछाई जाने लगी। उधर किनारेसे इइ

तय्यार कराने लगे, जिसमें रहना लोग अपनी सुकृति का सुफल समझें और जो नगर अपने मौजूदगी में सुदूर पूर्वके कुल नगरों में श्रेष्ठ हों। बड़ी ही फुरतीके साथ क्रम क्रमसे नगर बनकर तय्यार हो गया।”

ऐसे ही माथा-नगर डालनी-बन्दरके टूटनेका समाचार पा उसके आविर्भावका हाल जाननेवाले विस्मित हुए। किन्तु इसमें विस्मयाविष्ट होनेका वैसा कोई कारण नहीं था। उस समय रूसका यह स्थिर करना स्वाभाविक था, कि जिस डालनीकी हम रक्षा नहीं कर सकते, उसे शत्रुके हाथ समर्पण करनेके बदले नष्ट कर देना ही भला है। डालनी-बन्दरकी एक ओर जलमें मौ-युद्धविशारद टोंगोंके जङ्गी जहाज या जङ्गी नावें गड़त लगा रही थीं और स्थलमें डालनीके समीप ही जगह जगह जापानकी वीरवाहिनी व्यवस्थान कर रह थीं। टोंगोंके वेड़ेसे किसी तरह रक्षा हो भी सकती थी; किन्तु जापानी स्थल-सैन्यसे डालनी सुरक्षित रखना कठिन था। जापानी स्थल-सैन्य क्रमशः डालनीके समीप होती जाती थी; अमितबलसम्पन्न जापानी किसी दिन एकएक यदि डालनीपर अधिकार कर लेनेके लिये तय्यार हों, तो उनके अधिकारभुक्त होनेके डालनीको कौन बचावेगा? यही सब सोच रूसने यदि अपनी तैलाई माया आप ही बंदोर ली, तो इसमें लोगोंके विस्मित होनेका कौनसा काम किया ?

बर ही। हाजगी-बन्दरकी वाजमें भूभागके भीतर घोड़ावा
 समुद्र चला गया है; लोगोंने इस समुद्रका नाम कैर-खाड़ी रख
 दिया है। ठीक खाड़ी न होवेपर भी यह समुद्रांश खाड़ीका
 वाम दे सकता है और जापानके रियर एडमिरल कतावकाने
 अपने देहेके लङ्गर डायनेको लिये इसे खाड़ी ही बना लिया।
 इस बेड़ेमें इतशिकिगुमा, मिशीं और मियाको नामक तीन छोटे
 जह्जी जहाज और कितनी ही तारपेहो तथा डिब्बाघेर-नावें थीं।
 १२वीं मईकी प्रातःवाज इतशिकिगुमा अपने इस बेड़ेके साथ
 कैर-खाड़ीसे निकल डलनी या तालीनवान खाड़ीमें पहुँचा।
 वहाँ तीनों छोटे जह्जी जहाज किनारेके तोपखानोंपर गोशे बरमा
 इन्हे निराल्य करने लगे और तारपेहो तथा डिब्बाघेर, नावें
 तालीनवान-खाड़ीमें हलकी तरह बाकायदा चकर लगा रूसकी
 जलमें दुबाई मारने तोड़ने लगीं। रूसी तोपखानोंको चुप
 बरनेमें जगहा दे न लगीं। बल्कि जापानके छोटे जह्जी जहाज
 मियाकोने रूसी तोपखानोंको चुप करत करत और एक काम
 किया। तोपखानोंके पास ही एक जगह रूसी फौजकी दश
 बन्दनियाँ जमा थीं। मियाकोने इन्हे देख इपर ताक ताककर
 गोशे उतारे। बड़े गोले बन्दनियोंके बीच उतरकर फटे; बहु-
 संखक शिपारी उताहन हुए। मियाकोने उल्लेखयोग्य और
 एक बात किया। कैर-खाड़ी और तालीनवान खाड़ीके बीच
 बहुत जगहें समथ उसे बिन्दरपर लगा तार दिखाई दिया।
 तारिधोंके साथ देते रहनेपर भी अपने जहाजके गोलेके नीचे नीचे
 मियाकोने हफटएट मोताने अपने मातहत जहाजी शिपारियोंके
 तार जराहरे भूमिपर उतर बहुत दूरतक यह तार तोड़ दिया।

इस तरह तीसरे पहर कोई तीन वजे तक रूसी तोपखानोंके चुर करनेका काम समाप्त हुआ। माइन तोड़नेका काम बहुत ज़ूझ भयङ्कर और टेढ़ा था; इसलिये सन्ध्या छः वजे तक चलता रहा। सन्ध्या छः वजे जिस समय तारपेडो-नावें अपना काम समाप्त कर रही थीं, उस समय एक दुर्घटना हुई। दिनभरमें तीन माइन मिलीं और धोड़ो गईं; सन्ध्या समय एक चौथी माइन मिली, जिससे जापानकी ४८ नम्बर तारपेडो-नाव टकरा गई। एक भयङ्कर प्रस्त्र उत्पन्न हुआ; तारपेडो-नाव दो टुकड़े हो डूब गई। साथकी नावें सिर्फ सान जखमी सिपाही बचा सकीं; प्रायः इतन ही सिपाही नावके साथ साथ डूब गये। इस एक तारपेडो-नावके डूबनेसे जापानकी कोई बड़ी क्षति नहीं हुई; क्योंकि जापानी बेड़ेमें तारपेडो-नावोंकी कमी नहीं थी और जापानमें तारपेडो-नावोंके कारखाने थे। किन्तु जापानकी बड़ी क्षति यह हुई, कि वर्तमान युद्धमें इस पहिले जज़्बा जज़-यानने डूब जापानकी नौ-सैन्यके क्षतिग्रस्त होनेका पथ खोला। जापानकी ४८ नम्बर तारपेडो-नाव शुभ घड़ी डूबी नहीं थी।

दूसरे दिन १४वीं मईको प्रातःकाल गाँ-सेनापति कनावकोका बेड़ा फिर तालोनवान-खाड़ीमें पहुँचा और कल हीकी तरह फिर काररवाई करने लग। शत्रु रूसियोंके कैर-खाड़ी और

दूसरा एक आ मौजूद होता था । इन तीनोंके गोखे जङ्गी नावोंके काममें बड़ा ही अत्रात उपस्थित कर रहे थे । फिर भी ; जङ्गी नावोंका काम बन्द नहीं था ; वह गीणा-वृष्टि लगवत् तुच्छ मसक कावटके नाप मशत लगा माइनें तोड़ रही थीं । आज दिनभरमें नावोंने पाँच-साइनें तोड़ीं । इसके उपरान्त कलकी तरह और कल हीके समय आज जिस समय जङ्गी नावें लौट-नेके लिये तय्यार हुईं ; उस समय कल ही जैसी फिर एक दुर्घटना हुई । आजकी दुर्घटना कलकी अपेक्षा अधिक भयङ्कर और अतिजटिल थी । कल ४८ गन्वर तारपेड़ो-नाव माइसे टकराकर टूटी थी ; आज छोटा जङ्गी जहाज मियाको माइसे टकरा गया । बाईस मिनटमें मियाको डूब गया ; उसके दो सौ बीस मियाहियोंमें सिर्फ दो डूबे और छः जखमी हुए । बाघकी नावोंके मियादोंके मियाहियोंकी प्रायः रक्षा करनेके लिये बहुत समय मिला ।

खाड़ीकी प्रायः सब माइनें तोड़ नहीं लीं, तबतक हम नहीं लिया। जापानियों जैसा अद्भुत अर्धवभाय जगतकी कितनी जातियोंमें दिखोई देता है ?

१५वीं मईको एक ओर तालीनवान खाड़ीमें कतावकीका वेड़ा गोलावृष्टि और माइन नष्ट कर रहा था; दूसरी ओर अरधर-बन्दरके सामने जापानके तीन जङ्गी जहाज और कितने ही छोटे जङ्गी जहाज पहुँचे। यह सब अरधर-बन्दरपर शायद गोलावृष्टि करना चाहते थे। तीनों जङ्गी जहाज अरधर-बन्दरसे अभी कुछ फासिलेपर थे; ऐसे समय जङ्गी जहाज हेटिउसका पिछला भाग एक माइनसे टकरा गया। माइन फटो; हेटिउसका पतवार उड़ गया और उसका पिछला भाग बहुत कुछ खराब हो गया। हेटिउस सुखीवतमें पड़ा; उसने अपने साथी जङ्गी जहाजको समीप आ सहारा देनेका इशारा किया। माइनका फटना और हेटिउसका इशारा देख एक जङ्गी जहाज हेटिउसको सहारा देने चला था; ऐसे समय धीरे धीरे आगे बढ़ते हेटिउसने एक दूसरी माइनसे टकरा ली; सब समाप्त हुआ; हेटिउसके पेंदेमें बहुत बड़ा छेद हो गया और आघ घाटेमें विशालाकार हेटिउस जलमग्न हुआ। कोई आठ सौ मनुष्य जहाजपर थे, जिनमें तीन सौ सिपाही और अफसर बचा लिये गये; बाकी सब जहाजके साथ साथ जलधि-जलमें डूब गये। चार सौ फुट लम्बा, पन्द्रह हजार टन वीभक्त बरदाण्त करनेवाला, घाटे पीछे उन्तीन नावके हिमावसे पानी काटनेवाला, अरब्य बनी-छोटी तोपोंसे सुसज्जित हेटिउस जापानी वेड़ेके अचल जङ्गी जहाजोंमें अत्यन्तम था। पर्यन्त जैसे हेटिउसके

दुश्मन जापानी बेटों को जो क्षति हुई, वह सहज ही अनु-
देय है।

इसमें सन्देह नहीं, कि सुसोवत अकेली कभी नहीं खाती;
एक सुसोवत आनेके बाद ही सुसोवतोंका ताता लग जाता है।
जिम पृथ्वी में; रविवारको इटिडम हुआ, उसी १५वीं मईको
जापानी बेटोंको और एक जबरदस्त धक्का देटा। इसी दिन
जापानकी नौ-सेनापति इंसन अफने प्रधान सेनापति टोतोकी दिनारके
द्वारा द्वारा सवाचार दिया,—“आज प्रातःकाल कोइ पांच बजे जब
मैं अफने बेटों के साथ अरधर-बन्दरके सुधानिसे लौट रहा था, तब
आगत हुआ तब मसुद्रमें सुभे गहरा कुररा दया मिला। सुए-
शमें ही छोटे जहाज कासगा और ओशिनीके बीच टकर
हुए; ओशिनी लूट गया। कासगाही नाघेने ओशिनीके बचे
अधिगेहिगेही प्राररणा की। एतन्व चारों ओर गहरा
कुररा दया हुआ है।” एक दिनमें एक छोटी जहाज और

थी; किन्तु जापानके गिनतीके जङ्गो जहाजों और छोटे जङ्गी जहाजोंमें एकके भी नष्ट होनेसे जापानको माना प्रकारकी असु-विधाये भोगना पड़ सकती थीं। जापान अपने खोखे हुए जङ्गी जहाजकी जगह दूसरा जङ्गी जहाज संग्रह कर नहीं सकता था। प्रथम तो जङ्गी जहाजकी वनत कई वर्ष लग जाते हैं, दूसरे आन्तर्जातिके शक्तिके अनुसार वर्तमान युद्धके समय जापान किसी शक्तिसे जङ्गी जहाज खरीद नहीं सकता था।

विदेशियोंने भी जापानके इस दुःखमें सहानुभूति प्रकट की। अमेरिकाने तो यहाँतक कहा, कि जिस जाहू छेडिउम डूबा, वह जाहू रूस या जापान दोनोमें एककी भी नहीं थी; साधारणकी थी और साधारणकी वहाँ जहाज चलानेका अधिकार था। जिसने उस जाहू माइन दुषाई, उसने आन्तर्जातिक नियम भङ्ग किया और इसके लिये समग्र जातियोंको मिल उस माइन दुबानेवालेको दण्ड देना उचित है। रूसके सुकदन स्थानमें ऊपर ऊपर छेडिउमके डूबनेपर खूब दुःख प्रकाश किया गया सही; किन्तु भीतर भीतर रूसके मनमें जो भाव उत्पन्न हुआ होगा, उसे मभी समझ सकते हैं। छेडिउमके डूबनेपर जो लोग यह कहते थे, कि छेडिउम जापानी माइन छोसे टकराकर डूबा है, रूस उनपर नाराज होता था; अमेरिकाके कथनानुसार रूस जातियोंको ज़रमा देनेपर तयार था, किन्तु यह सुनना नहीं चाहता था, कि छेडिउम किसी दूसरेकी माइनमें टकराकर डूबा।

जापानी इनकी बड़ी क्षति हुई; समग्र जागतने उसकी क्ष-मदनुभूति दिखाई; दुःख प्रकाश किया; किन्तु स्वयं

जापानने जापानी इस क्षतिके सम्बन्धमें क्या कहें ? पारो थोरसे महाकृतित और दुःखदृक्क समाचार पा जापानने अत्यन्त धीर-शशीर भावसे सबको धन्यवाद दे कहा,—“किन्तु यह इतनी बड़ी क्षति नहीं है, जिसमें जापानी बेहा हिल जाये । जापानो बड़े की शक्ति इस समय भी वैसी ही है, जैसी पहले थी । एक जापान ही क्यों, --मंगारकी किमी शक्तिका भी बड़ा यदि इसतरह जल-युद्धमें प्रवृत्त होता, तो उम्की ऐसी ही क्षति हो सकती थी ।” जापानने यह बात सिर्फ जुबानी ही नहीं कही, बल्कि जापाने कार्य द्वारा उम्का परिचय देना भी आरम्भ दिया । पहला परिचय तो उम्के समय दिया, जिसे समय इटिलम हुआ

होना पड़ा, तबसे जापानी वेड़े ने, और भी उत्साह-पूञ्जक कार्य आरम्भ किया। जिस दिन हेटिउस डूवा, उसी दिन जापानी गनबोटों और तारपेडो-नावोंका एक वेड़ा किनचौकी खाड़ीमें पहुँचा। वहाँ पहुँच उसने खाड़ीके किनारेको रेल-लाइन और किनचौ नगरकी इमारतोंपर गोले बरसाये। टोंगोने अपने विश्रान्त भाव और अभिमानशून्य ढङ्गसे इस गोलन्दाचीकी जो रिपोर्ट अपनी सरकारको भेजी थी, उसका भावार्थ इसतरह है,—

“हमारा तारपेडो-नावों और गनबोटोंका वेड़ा किनचौकी खाड़ीमें पहुँचा। गनबोट खाड़ीमें बहुत ही भौतर घुस गये। खाड़ीके किनारे झारिली-पुलसे फौजसे लड़ो एक ट्रेन जा रही थी। गनबोटोंने इस ट्रेन और इमारतोंपर गोले बरसाये। निश्चय ही प्रचलितप्रस्त हुआ है।” हेटिउसके डूवनेसे पहले जापानी वेड़ा सिर्फ जल-युद्ध हीमें प्रवृत्त हुआ करता था; किन्तु इससे बादसे वह जल-युद्ध भी करने और अरधर-बन्दरके समीप अपनी फौजोंसे लड़े बारबरदारीके जहाज भी पहुँचाने लगा। किनचौ प्रभृति स्थानोंमें जो जापानी फौज उतरी, जिसका वर्णन यत्रसे पहले किया जा चुका है, उसकी सवारीके जहाजोंके साथ जापानी वेड़ेके जहरी जहाज भी थे। लोंगोने अनुमान किया था—रूसियोंको विश्वास हुआ था, कि हेटिउस प्रभृतिके डूवनेसे जापानी वेड़े का बलक्षय हुआ; किन्तु इसके बाद ही जापानी वेड़े ने अपने दावोंसे प्रमाणित कर दिया, कि तबनेसे सुवर्ण और भी उज्वल हुआ है; चतिप्रस्त हीनेसे जापानी वेड़े ने और भी बल प्राप्त किया है।

रूसियोंको अपने प्रताप करने या अरधर-बन्दरके उद्धारकी

जापानमें आशान्वित होनेका अवसर न मिला। हमी निम
 आन्वकारमें पद्यकी छे, उमी आन्वकारमें अब भी रहे। वल्कि
 आन्वकार और भी घनीभूत हुआ। जमीनकी ओरसे भी अर-
 पर-बन्दरके विर जानेसे कर्मियोंका सङ्घट और भी बढ़ा। क्ल-
 र्नाप्रति घोरानके अधीन कीडे तीव्र प्रकार क्लमी दृष्टीपर जात
 है अरपर-बन्दर-रक्षाके लिये तय्यार हुआ। अरपर-बन्दरमें
 दिनाबन्द छोकर हुए करनेकी कामगो प्रदर परिसरामें संघट
 कर लो गई। अरपर-बन्दरके कर्मियोंमें मारी प्रतिज्ञा कर ली, कि
 प्राण देंगे; बिल्कु वधयता स्वीकार न करेंगे; समीपार अरपर
 जापानियोंके भी मारी हुए प्रतिज्ञा कर ली, कि अरपर अरपर
 दौटाकीकी बलि देंगे; बिल्कु अरपर-बन्दरकी स्थापितारमुक्त
 करेंगे। अरपर जगत इन ही प्रवण प्रतिवन्धियोंका धानप्रति-
 धान देरनेके लिये लक्ष्मीव हुआ, अरपर-बन्दरका शिरार-
 मोक्ष पैरा चारस हुआ।

एकादश परिच्छेद ।

नानशान-युद्ध—'डालनीका पतन ।

पाठक जानते हैं, कि जापान-सेनापति कुर्गेकीके अधीन जापानकी पहली फौज मञ्चूरियाके फेङ्गचाङ्गचेङ्ग स्थानमें पड़ी है और जापान-सेनापति ओजूके अधीन जापानकी दूसरी फौज लिधावटुङ्ग प्रायद्वीपके झोरपर अरथर-वन्दरके कामने जगह जगह जाहाजसे उतरी है । यालू-खमरविजयी कुरोकीकी फौजका हाल यथास्थान लिखा जायेगा ; इस परिच्छेदमें ओजूके अधीन दूसरी फौज हीकी आर्यादलीका उल्लेख करेंगे । जापानकी पहली फौजकी साहसिकता आदिक। पारचय पाठकोंको मिल चुका है ; अब इस दूसरी फौजकी वीरत्व और रणचातुर्यकी पाठक देखें । पहली फौज दूर दूरतक फैलकर बुद्ध, खण्डयुद्ध आदिकी लिये तय्यार थी ; दूसरी फौजका एक ही लक्ष्य और एक ही उद्देश्य था,—अरथर-वन्दरको स्वाधिकारभूत करना ।

पहली फौजके कामकी अपेक्षा इस दूसरी फौजका काम अधिक दुष्कर था । सन् १८६४ ई०में चीन-जापान-युद्धके समय एकबार पहले भी जापानकी फौजोंने इस अरथर-वन्दरपर अधिकार किया था । उस समय जापानकी अरथर-वन्दरपर अधिकार करनेमें वेसा कोई अमुषिधा हुई नहीं थी । आधीनी सरार आगे बढ़ —
 १। फौजोंकी समस्त आधाओंको घेरनेकी बुजबुझ—जटपट जापा-
 २। फौजोंने इस अरथर-वन्दरपर अधिकार कर लिया था । किन्तु

और इस धुससे भी आगे छोड़के बड़ी बड़ी मेल गाड़ उनके बीच खारदार तार लगा लिये थे ; तारोंके बीच स्यबकी माइनों गाड़ दी थीं ; माइनोंमें बिजलीके तार लगा दिये थे, जिनके द्वारा दूर हीसे माइनोंमें आग लगाई और माइनोंके समीपकी शत्रुकी फौज उड़ाई जा सकती थी । अतएव यह, कि रूसियोंने अर-थर-बन्दरको इस पहली मजिलकी दुर्भेद्य बनानेमें कोई काम उठा नहीं रखी थी और इस स्थानके सम्बन्धमें विलायती टार-मसके संव दस्तावेज ठीक ही लिखा था, —“रूसियोंका यह मोरचा छोटा और बड़ी मजबूतीके साथ किलाबन्द किया गया था । इसके दोनो बाजू सुरक्षित थे और यथेष्ट बिगाही इसमें बैठ इसको रक्षा कर रहे थे । ऐसे सुडढ़ और दुर्भेद्य मोरचेमें बैठ आठसे नारह हजारतक रूसी सिपाही अपने सामनेके खुले हुए मैदानसे बढ़ते हुए शत्रु द्वारा यदि अपने मोरचेकी रक्षा कर नहीं सकते, तो मैं वहीं जानता, कि इन रूसियोंद्वारा जगतके किस सुडढ़ मोरचेके रक्षित होनेको प्रत्याशा की जा सकती है ।” इसमें मन्देह नहीं कि सौभाग्यवश ही ऐसे मोरचे फौजोंको मिलते हैं । जो मोरचा पछाड़ीपर है और जिनके सामने बहुत बड़ा खुला मैदान है, जिस मोरचेकी पीठ अपने फौज द्वारा और दाहना-बायाँ किनारा समुद्र द्वारा सुरक्षित है ; उस मोरचेको टढ़नाकी क्या कोई हद ही सकती है ? सुडढ़ मोरचा माने और सुडढ़ बनानेके लिये ही रूसी गनवीट वत्र अपने तोपखानेके पास सिगुटुन रानके समक्षवाती नालीनवाज-खानेमें जा खड़ा हुआ था ।

जिन पछाड़ीके रूसी मोरचेमें आसपास कुछ रक्षेपर भी

एक बड़ा दूधवा था । इस पहाड़ीसे कोई दो कौम दूर साम्भसन नामक पर्वत था । पर्वत पहाड़ीसे ऊंचा था ; पर्वतकी सर्वोच्च चोटी से छपार दो सौ फुट ऊंची थी । इस चोटीपर लगे तोपें अगाम्य ही रुमी पहाड़ी नामजानपर गोले बरसा सकती थीं । तत्पश्चात् ज्ञानसेनापति श्रीकृष्ण साम्भसन पर्वतकी उपयोगिता समझत हुए उसपर अधिकार कर लिया था और साम्भसनके उच्च शिखरपर बैठ रुमी मोरचिकी दृढ़ता देखने लगे थे । साम्भनी तथै शिखर देख कर समझ गये, कि इस जगह रुमी पूरे आक्रमणकी साथ ही खींचकर हट करना चाहते हैं । उन्होंने यह भी देखा था, कि रुमि मोरचिकी पर खूब मंदारसे आतमना करनेमें

रहना नहीं पड़ा । जापानी जल या स्थल-सैन्यके सेनापतियोंने जितने युद्ध-सम्बन्धीय समाचार अपनी सरकारको भेजे थे, प्रायः सबमें लिखा था,—“पहलेसे की हुई कल्पनाके अनुसार असुक्त युद्ध या असुक्त आक्रमण किया गया ।” पहलेसे आक्रमण या युद्धकी यह कल्पना करनेवाला कौन था ? कौन पहले मन्सूबे बांधता था, जिसके अनुसार पीछे जापानी फौजें काम करती थीं ? युद्धारम्भ होनेके कुछ ही दिनों बाद प्रकट हो गया था, कि पहलेसे युद्ध या आक्रमणका यह मन्सूबा बांधनेवाले ओयामा, कोदामा प्रभृति कुछ बहुदर्शी समरनीतिदिग्गज दयोचुड जापानी थे, जो अपनी शारीरिक दुर्बलताकी वजह युद्धक्षेत्रमें न आ जापानमें बैठे बैठे ही अपने अज्ञात मास्तिक्वलयमें मन्सूबे बांधने थे, जिनके अनुसार जापानी फौजें काम किया करती थीं । सुती इम स्थलमें इन लोगोंने जापानको दूसरी फौजके कार्मिक एक मन्सूबा तयार किया ; एक दिन जापान-सरकारकी ओरसे ओजूको आज्ञा मिली,—“विलम्ब करनेका प्रयोजन नहीं है ; यथाम्भव शीघ्र नानशानके रूमी मोरचोपर आक्रमण करो ।” यह आज्ञा पाते ही ओजू चिन्ता छोड़ उठ खड़े हुए ; उन्होंने फिर कर लिया, कि रूमी मोरचोपर आक्रमण करना ही होगा ।

ओजूने शीघ्र शीघ्र दृष्टिको हुई जापानी फौजको साम्बन्धन पत्रके पीछे एकत्र करना आरम्भ किया । पोशुबो तथा अन्यान्य स्थानोंमें जिनसे बड़ी बड़ी तोपें थीं, उन्हें युद्धस्थलमें मंगा ; यथाम्भव पत्रके चोटीपर तथा अन्यान्य उपयुक्त स्थानोंमें कायम कराना आरम्भ किया । ओजूने देखा, कि रूमी मोरचोके कार्मिकद्वारा मंगायेमें एक रूमी गनबोट है और उसके

पाद ही एक अक्षरद्वय रूपी तोपखाना ; इसलिये ताहीनवान
 खाड़ीकी ओरसे जापानी गनबोटोंका आना असम्भव है । किन्तु
 रूपी मोरचेके बाचे किनची खाड़ीमें रूसका वैसा कोई तोप-
 खाना भी नहीं है, कोई गनबोट या जङ्गी नाव भी नहीं है ;
 इसलिये किनची-खाड़ीमें जापानी गनबोट प्रभृति किनारेके छिक्के
 जलमें या पृथ्वी मोरचेपर गोले बरसा सकते हैं । ओऊने
 यह देख और असभ्य लोगोंको समाचार दिया ; किनची-खाड़ीमें
 जापानी गनबोटों आदिके संग्रहकी व्यवस्था हुई । घोत्र घोत्र
 एककी एक एक आरम्भिक तय्यारियां पूरी हुईं और शीघ्र
 संसद ओऊके आजाहवार जापानी पीछे गिरहावरी करती हुईं
 रूसी मोरचोंकी ओर अग्रसर होने लगीं । एक हिन्दी गिरहा-

गया; साम्यसन पर्वतके तोपखाने और भी सुड्डू किये गये और साम्यसन पर्वतके पीछेकी जापानी फौजे साम्यसन पर्वतके आगे तराईमें जमा की जाने लगीं। २४वीं मईको गिरदावरीके सवार, पूर्वोक्त जापानी तोपखाने और नानगान पहाड़ीके बीचमें अवस्थित जूंची शहरपनाइसे घिरे किनचौ नगरके समीप पहुँचे। किनचौ नगरपर रूसियोंका अधिकार था। रूसियोंने गिरदावरीके सवारोंपर गोला चलाई; सवार किनचौकी रूसी फौजकी मजबूतीकी धाह ले अपनी जगह वापस गये। दूसरे दिन २५वीं मईके प्रातःकाल हीसे साम्यसन पर्वतकी जापानी तोपोंने रूसी मोरचेपर गोला बृष्टि आरम्भ की। प्रत्युत्तरमें रूसी तोपखाने भी जापानी तोपखानोंपर गोले बरसाने लगे। जापानी तोपखानोंने रूसी तोपखानोंको गोलवाजीमें फंसा रखनेके लिये ही गोला-बृष्टि आरम्भ की थी। जापानियोंका उद्देश्य यह था, कि रूसी तोपखाने साम्यसन पर्वतके तोपखानोंका जवान देनेमें फंसे रहें और इस अवसरमें जापानी फौजे किनचौ नगरपर धावा करें। यह भी स्थिर हुआ था, कि त्रिम समय जापानी फौजे किनचौ नगरपर आक्रमण करें, उस समय जापानी गनबोट किनचौ-पहाड़ीमें पहुँच किनचौ और उसके समीपके रूसी मोरचेपर गोले बरसायें। किन्तु जापानियोंकी यह अन्तिम कल्पना कार्यमें प्रसिद्ध नहीं हुई। २५वीं मईको कुछदिन चढ़नेपर जापानी फौजे त्रिम समय धीरे धीरे किनचौ नगरकी ओर बढ़ने लगीं, उस समय सुड्डूकी ओरसे जापानी फौजोंकी किसी तरहका सहाय नहीं मिला। जापानी गनबोटोंका बड़ा सङ्गर्ष, जापानी और रूसियोंके नाविक चार नावोंकी-नावोंके

कात्तिकी शिवाके लिये कितने ही उपयोगी मसाले तय्यार करेगी ।" जापानी फौजोंकी पांच दिनोंको काररवाईके उपराल्त होने फौजोंकी स्थिति इनतरह हुई,—रूसी मोरचा जैसा पड़ने था, वैसा ही इस समय भी था । यानी रूसी मोरचा पूर्वोन्निखित मङ्गीर्य भूभागकी समूची चौड़ाईमें फैला हुआ था ; मोरचे का दाहना छोर लिशुटुन रासमें था और बायां छोर किनचौ खाड़ीके किनारे । लिशुटुन रासके पास समुद्र-बन्दमें रूसी गनवोट बन्न खड़ा था, जो युद्धमें भाग लेनेके लिये हर तरहसे तय्यार था । मोरचेके बीचमें बड़ी नाना छिलों और तोखानोंसे सुदृढ़ गानशान पहाड़ी थी । इधर जापानी फौजे गानशान पर्वतमालाके पीछेसे निकल आगे बढ़ रूसी मोरचेकी चौड़ाईमें फैलकर अवम्याग कर रही थीं । जापानी फौजके दाहने भागने रूसी फौजके बाये भागके सामने किनचौ नगरपर अधिकार कर दिया था । किनचौकी बगलकी किनचौ खाड़ीमें चार तारपेडो-नावोंके साथ चार गनवोट खड़े थे । चारो गनवोटोंकी तोपोंकी संख्या बीस थी । छिछले जलमें बड़े जहाज आ नहीं सकते थे ; इसीलिये खाड़ीमें गनवोटों और तारपेडो-नावोंका बेड़ा भेजा गया था । साम्बसन पर्वतपर और किनचौके पूर्व जापानी तोपखाने थे ; यह तोपखाने रूसी तोपखानोंकी अपेक्षा विर्यल थे ; इनमें उतनी बड़ी बड़ी तोपें नहीं थीं । पांच दिनोंको क्रमोन्नतिसे जापानी फौजे रूसी मोरचोंके बहुत ही न्योप पहुँच गई थीं । सब सामान तय्यार था ; आक्रमण करनेकी आज्ञाकी खबर थी ।

रूसी आज्ञा मिली ; रूसी मंडकी सभरे ही बन्नके पेंतास

एकादश परिच्छेद ।

मिगटपर अमली नागशान-बुद्ध चारम्भ करनेकी आज्ञा मिली
 और तदनुसार नागशान-बुद्ध चारम्भ हुआ । पिछ्छी रातकी
 और निस्तब्धता भङ्गकर ऊपरसे छिपे रहनी मोरघोंपर
 रबाएक जापानी तोपोंके गोले बरसने लगे । रहनी तोपखाने
 भी जापानी गोलोंका जवाब देने लगे । रात्रिके अन्धकारसे
 काला धाकाध अन्धिमडग चमकीके गोलोंसे उज्ज्वल हो उठा ।
 प्रति जग जग शत गोले जापानी और रहनी तोपखानोंपर गिरने
 लगे । शन शन तोपोंके सब साप मन्दन करनेसे पृथिवी हिलने
 लगी ; जल और गलके लीप जगु आकुल हुए ; गलोंके
 पतनर सतत भटस दुपहोंके क्रियता हो चारी धोर दरमनेसे
 मङ्गप्रलम्बवा विरट बण्ड दिखाई देने लगा । आज सागर-बड
 मिनर था ; जापानी गनघोंटोंके लिये राह साप था । इन्लिदे
 लेके ही गलके जापानी तोपखानोंके गोला-हटि चारम्भ ही
 लेके ही जापानी गनघोंट धोर सारंगे-गवटा देहा भी चमकी

कुछ शिथिल पड़ी। प्रातःकाल कोई छः बजे जापानी तोपें एकाएक एक साथ निस्तब्ध हो गईं।

होते हुए किसी गगनभेदी शब्द त एकाएक रुक जानेसे जैसा सन्नटाटा हुआ जाता है, जापानी तोपोंके निस्तब्ध हो जानेसे रणस्थलमें वंसा धी सन्नटाटा हुआ गया। जैसे ही जापानी तोपें निस्तब्ध हुईं, वैसे ही रूसी मोरचोंके सामने, ओरसे छोरतक विगुल बजने लगे; छथियार खड़खड़ाने, घोड़े छिनछिनाने लगे; सहस्र सहस्र जापानी सिपाही कवाइद साथ पंक्ति बांध रूसी मोरचोंकी ओर बढ़े। दाहने किनचौ नगरके पास ओसाका-डिविजन था, मध्यभागमें नानशान पहाड़ी के सामने टोकियो-डिविजन था और बायें लिगुटुन रासके पास नगोया-डिविजन था। तीनों डिविजन जब फैलकर आगे बढ़े तब राससे किनचौ-खाड़ीतक जापानी फौजें ही फौजें दिखाई देने लगीं। हर एक फौजकी हर एक कम्पनी छितराकर नहीं; बल्कि कवाइदके साथ पंक्ति बांधकर आगे बढ़ रही थी। रूसी तोपोंकी गोलावृष्टिमें जापानी फौजोंके पंक्ति बांधकर आगे बढ़नेके ही कारण हो सकते थे। पहला कारण यह था, कि जापानी फौजोंको जर्मन छद्मसे रणस्थल-युद्ध-विद्या सिखाई गई थी और जर्मन रणपद्धित गोलावृष्टिमें छितराकर आगे बढ़नेकी अपेक्षा पंक्ति बांधकर आगे बढ़ना ही अच्छा समझते हैं। दूसरा कारण यह था, कि जिन मैदानके जापानी फौजें आगे बढ़ रही थीं, उसमें जगह जगह कितने ही नाले और मन्दके थे; इसलिये जापानी फौजें स्थानाभावसे पंक्ति बांधकर आगे बढ़ती थीं। इसमें मन्दे नहीं, बल खूब लम्बाचौड़ा होनेपर भी बहुमंरसक जापानी

जैजैके' किये अत्यन्त सुदोषी था। ओसाका-डिविजन जब अपनी जगहसे आगे बढ़ा तब स्थानाभाववश उसकी कितनी ही बन्दगियां कियौकी जगहमें असुदजनमें ठहरा ही गईं। बिनगी ही बन्दगियोंके आगे निकल जानेपर जब राह साफ हुई, तब टपरी हुई बन्दगियां असुदजनसे निकल भूमिपर आईं और आगे बढ़ीं। गईं बरही और नये परिधारीमें सुमञ्जित इन जापानी बन्दगियोंका आग बढा बहुत ही भला जान पड़ता था। पौपी वाजे बज रहे थे ; मद्रस मद्रस कीर जापानी सिपाही एक एक काम उठा और सब रहे थे ; एक साथ मद्रस मद्रस पैरोके परिधीय प्रहरीसे मुख-गमोरे शब्द उल्लिखित ही रहा था। ऐसे समय दाल-सर्गों की मागी अपना वीचूहल हमन करकेने अत्यन्त ही श्रितिको का ऊपर पहुँच जापानी पौजोका कामगमन ईश्वर लगे थे। दालसर्गोंकी रक्षाभ रक्षिकोंसे जापानी सिप-रिधीकी अतदीही मद्रोनें और जापानी कफरोंके हाथोको दिखी हुई मद्रोनें बिना रक्तशत किये ही रक्तवर्त दिखाई देती थी।

डिविजनको यह सुविधा नहीं थी; दूसरी बात यह थी, कि रूसी मोरचे इस डिविजनके बहुत समीप थे; इसलिये रूसी गोलोंसे डिविजनको बहुत क्षति पहुँच रही थी। किन्तु जापानी फौजें इस क्षतिकी कोई परवा न कर बराबर आगे बढ़ती ही गईं और दिन दृष्ट वजेतक रूसी मोरचोंके सामने ओरसे छोर-तक मोरचोंसे तोग सौसे लेकर पाँच सौ गजके फासिलेतक अपने मोरचे बांध बैठ गईं।

इसके उपरान्त जागह जगहसे जापानी फौजें अपने मोरचोंसे निकल रूसी मोरचोंपर धावा करने लगीं। रूसी इन धावोंके रोकनेमें अपनी पूरी शक्ति व्यय करने लगे; अपने मोरचेसे लाल लाल गोली और गोलियोंका तूफान बहाने लगे। झाड़-मांससे भी नरदेह इस तूफानका सामना कैसे कर सकती थी? इसतरहके बहुसंख्यक धावोंसे एकका वर्णन छम यहाँ करते हैं; इसे पढ़ लेनेसे अन्याय धावोंकी कठिनताका अन्दाजा आपानीसे किया जा सकेगा। किगसौ नगर और रूसी मोरचेके बीच मौचियायिङ्ग नामक छोटासा एक ग्राम था। कुछ जापानी फौज उस ग्राममें पहुँच मोरचा बांध बैठ गईं। अफसरोंकी आज्ञासे जापानी गनवीटोंने इस गाँवके सामने रूसी मोरचोंपर खूब गोले बरसाये। अफसरोंका उद्देश्य यह था, कि जब रूसी मोरचेकी तोपें निस्तब्ध हों, तब जापानी फौजें धावा करें। दिन की बाराह बजे रूसी मोरचेकी तोपोंका सुँह बन्द हुआ; साथ साथ ग्राममें तैटी दो बटाखियन जापानी फौजको रूसी मोरचोंपर धावा करनेकी आज्ञा मिली। इस धावेका जो फल

न विलायतके अगदित्यान् अखवार "टाइम्स"के प्रौजी

एकदश परिच्छेद ।

मंदाहाजाने इत्यत्र लिखा है,—“इह देवतक सौच्यारूप
 ग्रामश्री टूटी और गोलोंकी भ्रमकसे घर घर कांपती दीवारोंके
 मोह्ये जाणती पलटनोंने दस लिया। इसके बाद बह छोटी
 छोटी दीर पकटनें ग्रामसे निकल कृष्णी मोरघोंके ग्रामने इने
 जगुर्षी भ्रमणर रूप गर्भे । नागा विह-वावाक्योंकी नामनेसे बडा
 भ्रमणर रूप जाना सम्भव कार्य था। हाय, इमने ऊपर
 मोरघोंकी भीतर हैट कृष्णी शिवाली कधी पूर्वमण्यसे विहयत इर
 तनीं थ। जिस समय जाणती पीन भ्रमणर जानि बहने तनी,
 एक समय लखनी शक्ति रोहनें लिखे ताकं य निरिः निरिः

इसीतरह कितनी ही जगह जापानी फौजें घावाकर आगे बढ़नेके समय नष्ट हुईं । जापानी सिपाहियोंको काश्यासे मैदान भर उठा । अब उपाय क्या था ? हीपहर टल चुकी थी ; यकी-माही जापानी फौजे हरेक घाबेमें नष्ट हो चुकी थीं ; रूसी फौजे अपने मोरचोंमें पूर्ववत् अचल-अटल भावसे जमी बैठी थीं ; अब जापानी फौजोंके लिये विजय-प्राप्तिकी कौनसी राह थी ? ऐसी अवस्थामें पृथिवीकी नौसौ निम्नानत्र फौजे उस दिनकी विजय असम्भव समझ घाबका सङ्कल्प छोड़ निरुत्साह हो अपने पड़ावमें लौट आतीं । किन्तु सेनापति ओकू और ही प्रकृतिके आदमी थे ; और ही मन्त्रसे दीक्षित थे । उन्होंने विचार किया, कि अभी सूर्यास्तमें कई घण्टे बाकी हैं ; सहस्र सहस्र जापानी सिपाही बाकी हैं ; अबसे विजय-प्राप्तिकी आशा परित्याग करनेका कारण क्या है ? जब जापानी फौजे वारंवार घावाकर हरेक घाबेमें प्रायः नष्ट हो गईं, तब उन्होंने बाकी जापानी फौजोंको अपने मोरचोंमें ही ठहरने और जापानी तोपखानोंको रूसी मोरचोंपर गोला-वृष्टि करनेको आज्ञा दी । विषम गोला-वृष्टि आरम्भ हुई । सेम्यसन पर्वतकी बड़ी बड़ी तोपोंके गोले रूसी मोरचोंको खाकमें मिलाते लगे । गोलोंकी चोटसे वैज्ञानिक ढङ्गसे बने रूसी किलोंकी दीवारें विदोय होने लगीं ; जिस नानशान पहाड़ीपर रूसी मोरचे थे ; उस नानशान पहाड़ीकी चट्टानें सुरमा बनने लगी । उधर जापानी गनबोट आगाई और चिचोकाई रूसी गोलोंकी कोई परवा न कर किनारेके अत्यन्त समीप पहुँच रूसी मोरचोंके बायें भागपर गोले बरसाने लगे । कहते हैं, कि इस भयङ्कर गोला-वृष्टिके फलसे रूसी मोरचा क्षीण हो क्षीण हो क्षीण हो गया ।

गोला-दृष्टि घमनेपर जापानी फौजोंको फिर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी गई । जापानी फौजे अपने मोरचोंमें बेठी दृढ़ता लिये उकता रहीं । उनके सामने ही उनके माघी सिपाहियोंकी जाशुं पड़ी थीं । उन जाशुंको देख मोरचोंमें बैठे जापानी सिपाही रूमियोंमें बदला लेनेके लिये व्यथित हो रहे थे । जैसे ही भादिका दिगुल बजा, जैसे ही जापानी फौजे मागर-तमझकी तरह अपने मोरचोंमें निकल रूमि मोरचोंकी ओर भपटों ।

हमारे पैरोंकी धमकसे माइनें फट जाये; हम उड़ जाये; हमारे पीछे आनेवाले हमारे साधियोंकी रक्षा हो। किन्तु प्रायः देखा गया है, कि जो लोग इनतरह जान हथेलीपर ले कोई काम करने जाते हैं, उनकी प्राणरक्षा स्वयं भगवान् करते हैं। आग युद्धारम्भसे कुछ पहले कुछ देरके लिये अच्छी वृष्टि हो गई थी। इस वृष्टिके फलसे माइनोंके ऊपरकी मट्टी बह गई थी और माइन साफ साफ दिखाई देती थीं। दौड़ते हुए जापानो सिपाहियोंने माइनोंको देख हर्षनाद किया और उनमें लगे उनके भीतर आग उत्पन्न करनेवाले विजलीके तार काटकर किनारे किये। माइनका भगड़ा मिटा। जापानो फौजोंकी रूसी मोरचोंको और बढ़नेका राह साफ हुई। जापानो फौजे भीम-वेगसे आगे बढ़ रूसी मोरचोंपर बारंबार आक्रमण करने लगीं।

क्रमशः दिन बीता, सन्ध्या उपस्थित हुई। सूर्यदेव उदय होनेपर जिस युद्धका आरम्भ देख सके थे, अस्त होनेके समय उस युद्धका अन्त देख न सके। दिन समाप्त हो गया; किन्तु युद्ध समाप्त नहीं हुआ; जिस चौरशोरसे आरम्भ हुआ था, उसी चौरशोरसे बराबर चलता रहा। हताहतोंसे युद्धस्थल भर उठा; रूधिर-मांसके संयोगसे बसुन्धार कर्दममयी हुई। गोलियोंकी चोटसे बहुसंख्यक सिपाही एक साथ चीथड़े होकर आकाशकी ओर उड़ जाते थे और दूसरे हो क्षण उनकी देहके चीथड़े की चारों ओर वृष्टि होती थी। कहीं फटी हुई खोपड़ी गिरती थी, कहीं पिडित सिर गिरता था और कहीं अङ्ग-प्रत्यङ्गके पिडित गिरते थे। रूसी किल्लोंको खन्दके, खन्दकोंके आगेके धूम और मोरचे सभी क्षणोंसे भर उठे थे। कौनोंकी लम्बा-

एतन्वाद्यः बजेके बाद और सात बजेसे पहले जापानी फौज
 दशवे या अन्तिम आक्रमणके लिये तय्यार हुई। समय उप-
 स्थित होनेपर सङ्घटित किया गया। औरसे छोर तरफकी जापानी
 फौज छर्षङ्गनसे दिग्बिदिक् कंपा रूसी मोरचोंकी छोर भपटो।
 पहले ही लिख चुके हैं, कि ओसाका-डिविजन जापानी फौजके
 दाहने था। दाहते हैं, कि जिस ओसाका-प्रदेशके जवानों
 द्वारा यह डिविजन संगठित हुआ था, उस ओसाका प्रदेशके
 लोग समस्त जापानमें कापुरुषता और निर्व्वलताके लिये प्रसिद्ध
 थे। किन्तु इस युद्धमें इन्हीं ओसाकावासियोंने अलौकिक
 पराक्रम प्रकाश किया। दशवें घावेमें जिस समय जापानकी
 कुल फौजें रूसी मोरचोंकी और भपटो, उस समय ओसाका
 डिविजन मोरचोंके सामने न जा अपने गनवोटोंके गोलोंके नीचे
 नीचे मसुद्रमें घुस पड़ा। क्षातीतक मसुद्रजलमें घुस ओसाका-
 डिविजन रूसी मोरचोंके पीछे पहुँच जानेके लिये आगे बढ़ने
 लगा। रूसियोंने जलमें भी इस बातकी आशा की नहीं थी,
 कि जापानी मसुद्र-जलसे चक्रर काट रूसी मोरचोंके पीछे पहुँच
 पायेंगे; इसीलिये रूसियोंने किनची-खाड़ीकी छोरसे जापान-
 निर्याका आक्रमण रोकनेका वैसा कोई सामान किया नहीं था।
 जापानी गनवोट जिन समय किनची-खाड़ीके जलतल
 सेले रूसी मोरचोंके बाधे छोरपर बारंबार गोले मारने और उन
 गोलोंके नीचे नीचे जापानके ओसाका-डिविजनके सिपाही जिस
 समय मसमानहकी तरह क्षातीमें मसुद्रजल विशीर्ण करत
 रूसी मोरचोंकी और बढ़े उस समय यह कल्पनातीन आसन्न
 सामने पा रहसः धरग गये। उस घबराहटमें उन्हें रूस

कुण ही उखड़ गये, उन समय जल सधसुच ही लाल हो गया था ।”

“लेना लेना” कहता ओसाका-डिविजन भागते रूसियोंके पीछे पीछे चला । सागरजलसे मानो जापानी फौजकी पञ्चतप्रमाण तुरङ्ग उठी, जो रूसी मोरचेके सिरेपर आर उसके पीछे रैख गई । जापानी निपाही उस समय रणोत्तम थे ; उनकी छातीमें प्रतिहिंसाकी आग धाय धाय जल रही थी, जिससे वह और भी ज्ञानशून्य और उत्तम थे ; उनकी खिंचो हुई तलवारोंके सामने रूसियोंकी पनाह मिलनी नहीं थी । जापानी रूसियोंके लिये साक्षात् यमप्रति दूत बन गये थे । वारंवार हर्षध्वनिसे दिशाये प्रतिध्वनेत करते रूसी मोरवोंके सामनेकी जापानी फौजके बाये भाग यानी ओसाका-डिविजनने समुद्र-जलसे निकल और फौज रूसी मोरचेके समुचे बाये भागपर बाये भागके पीछेसे आक्रमण किया । नागरूपकी सुदृढ़ किलाबन्दोकी अड़से भी जिन जापानियोंकी रोकना बहुत कठिन हो गया था ; उन्हीं वीर जापानियोंकी खुले मैदानमें मम्म ख पा मोरचेमें बैठी रूसी फौजके पैर उखड़ गये । गगनभेदी जयध्वनिकर ओसाका-डिविजन भागते रूसियोंपर टूट उन्हे खरखर करने लगा । पहले ही लिख चुके हैं, कि कोई एक कोमकी चौड़ाईमें यह युद्ध चल रहा था । रूसी फौजका बायां भाग टूटत ही उसके टूटनेका समाचार विजिजीकी तरह इस एक कोमकी लम्बाईमें लड़ती रूसी और जापानी दोनों फौजमें फैल गया । यह समाचार सुन रूसी फौजकी छाती दहल गई और जापानी फौजका मध्य भाग और भाग शब्दकाहसे अर्धर ही अपनी विध्वस्त शक्तियोंकी

जापानियोंका हिसाब जापान-सेनापति होने दिया ; ऐसी दृष्टांतों और युद्धकी भीषणताका खयाल करते हुए छोसेककी बताई हताहतोंकी संख्याका विश्वास कैसे किया जा सकता है ? किसी किसीका कहना है, कि रूस तुमानी चाहे जो झुक सके ; अखिरमें उसकी ओरके कोई दो या ढाई हजार सिपाही हताहत हुए । जबतक रूसी मोरचेके भीतर छिपे बैठे थे, तबतक उनकी अधिक क्षति नहीं हुई सही ; किन्तु जब वह अपना मांस अखिर छोड़ तोपें छोड़, अपने हताहत छोड़ मैदानसे भागे ; तब उनकी बहुत क्षति हुई । इसी अवसरपर जापानियोंने अपनी दिनभरकी क्षतिका पूरा पूरा प्रतिशोध ले लेनेकी चेष्टा की थी ।

इस विजयसे जापानियोंके हाथ किमने ही रूसी अफसर और सिपाही कौए हुए । सिवा इसके बहुततर बड़ी बड़ी तोपें, दस बरतार तोपें, एकान्द्र नका एंजिन, तीन सत्त-प्रकाश, पचास माइने, बहुसंख्यक बन्दके और बहुतसे कारतूस और गोले भी जापानियोंको मिले । सिवा इसके यह विजय प्राप्तकर जापानियोंने अरधर-बन्दरकी बहुसंख्यक किलाबन्दियोंमें सबसे पहली और निम्नान्त दुर्गम्य किलाबन्दीपर अधिकारकर बहिर्दृग्त्से अरधर-बन्दरके कुल सम्यक तोड़ दिये । इस विजयसे जापानियोंको यह सब लाभ यदि न भी होते, तो प्रबलपराक्रान्त रूसी फौजको पूर्णरूपसे पदरक्षित करनेका जो सुयश्च जापानियोंने प्राप्त किया ; उनकी उस युद्धकी सम्पूर्ण क्षतिका वही बहुत बड़ा प्रतिफल था । इस युद्धमें जय प्राप्तकर जापानी सिपाहियोंने रूसियोंके मोरचेकी अने पराने रोह ; रूसियोंको राजपनाका फाड़ अपनी राजका उद्धानेने भी सुख प्राप्त किया था ; वह भ कुच्छ कम

२६वीं मईको सन्ध्याको युद्ध विजय करनेके उपरान्त यकी-मांशी जापानी फौजे रातभर अपनी छीतो जगहमें खोईं । बड़े सवेरे उठ जापानी फौजोंने आगे बढ़ना आरम्भ किया । रूसी रातो रात नानशानसे दक्षिण-पश्चिम नानशानशीलीपू पार्वत्य रेल-स्टेशन पहुँच गये थे । यह रेल-स्टेशन अक्षुण्ण है । यहाँसे एक लाइन अरधर-वन्दर गई है और दूसरी डालनी-वन्दर । नानशानके युद्धमें रूसियोंकी पराजयकी बात सुन डालनी-वन्दरमें जो रूसी फौज थी, वह २६वीं ही मईको डालनी परित्यागकर राहके रेलके पुन तोड़ती नानशानशीलीपू पहुँच अपनी नानशानसे भागी हुई फौजके साथ शरीक हो गई थी । २७वीं मईको प्रातःकाल जापानी फौज नानशानसे चल अपने गश्ती स्वारीसे रूसी फौजकी स्थितिकी खबर पा सीधी नानशानशीलीपू स्टेशनकी धार बढ़ी । जापानी फौजोंके आनेका समाचार पाते ही रूसी फौजे नानशानशीलीपू छोड़ और पीछे हट गईं । जापान-सेना-पतिने आगे बढ़ इस अक्षुण्ण स्टेशनपर अधिकार कर लिया और अपनी फौजका प्रधान भाग रूसी फौजके पीछे पीछे अरधर-वन्दरकी ओर भेजा और एक छोटासा भाग डालनीकी ओर खाना किया ।

२६वीं मईको वैसे ही रूसी फौजने डालनी नगर खाती किया, वैसे ही नगरमें बसवा फेंक गया । रूसियोंने डालनी परित्याग करनेसे कुछ मछले कुछ चीनायोंको नगरकी शक्ति प्रदान करनेका समाचार किया था । बिना फौज और पुलिसके बेचारे चीना शक्ति नगरकी शक्ति वैसे कर सकते थे । उनको आतोंके आनेसे नगरमें बसवा फेंक गया ; अरधर-वन्दर और डालनीको रक्षाने लगे ;

नगरमें जापानी फौजोंका अड्डा बन सकता था; टूटी हुई रेल-खादोंको शीघ्र ही मरम्मत हो सकती थी। ऐसे ही डाकनों नगरको स्वाधिकारभुक्तकर जापानी फौजने अपनी नानशान-युद्धकी विजयको घोर भी लाभजनक बना लिया।

तो थीं, कि रूसियोंने कहां कहां तोपें चढ़ाई हैं और किस किस जगह नये किले तय्यार किये हैं। जल्दी नावोंने मोलोंकी कोई परवा न कर गणत सगा अन्तमें यह माजूम कर लिया, कि जियावटीशान रामकी ओर पर्वतमालापर रूसियोंने दो नये किले तय्यार किये हैं और एक पुराने पर्वतके समीप मर्च-प्रकाशके यन्त्र लगाये हैं। जापानियोंकी तोड़े हुए रेल-पथकी दुरस्तकर रूसी जो एक ट्रेन अरथर-बन्दरमें लाये थे; उसमें किलाबन्दीकी उपयोगी बहुतेरे सामान थे। उन्हींमें मर्च-प्रकाशके कितने ही यन्त्र थे और उन यन्त्रोंमें विजलीका प्रकाश उत्पन्न करनेवाले विजलीके खजाने या 'डिनामो' भी नावोंकी इस गिरदावरीमें जापानकी कोई बड़ी क्षति नहीं हुई; सिर्फ एक नावपर एक रूसी गोला आकर फटा, जिसके फलसे एक छोटे दरजेका आफसर उड़ गया और तीन अज्ञानी सिपाही जखमी हुए।

म्यलकी ओरमें जापान-सेनापति भीकूकी प्रौज क्रमशः अरथर-बन्दरके समीप पहुँच रही थी; जलकी ओर टोगोको जल्दी नावोंका जवरदस्त पहरा बैठा हुआ था; फिरभी अरथर-बन्दरके रूसी नामा छल वल-कौशलसे वहिजंगतसे कुछ न कुछ सम्बन्ध स्थापित किये हुए थे। कबूतर हरकारोंका काम देते थे। अरथर-बन्दरकी चिट्ठी बाहर ले जाने और बाहरकी चिट्ठी अरथर-बन्दरमें ले जाने के कामों के अद्वय रूसी जापानियोंके निगाह बचा अरथर-बन्दरने घुस आता और भीतरका रूसी इमीतरह अरथर-बन्दरके बाहर पहुँच जाता था। इमीतरह की आफसर सेनाओंकी एक नावमें सवार दो अरथर-

वक्तृता दिया करते थे। वक्तृताकी समाप्तिपर सहस्र सहस्र सिपाही समसूत्रसे प्रकारकर कहा करते थे,—“हमलोग प्रायः विषर्जन करेंगे ; किन्तु जापानियोंकी वश्यता स्वीकार न करेंगे।”

घेरा आरम्भ होनेके साथ साथ रूसियोंने अरधर-बन्दरके चीना अधिवासियोंको बन्दरसे निकाल बाहर करनेकी व्यवस्था की। क्रम क्रमसे चीनाओंने अरधर-बन्दर खाली करना आरम्भ किया। कोई चीना डेरा-डखा उठा स्थलपथसे गया ; कोई नाव द्वारा पल-पथसे। अफवाह है, कि अरधर-बन्दर परित्याग करनेवाले चीनाओंका कुल खाद्य-द्रव्य रूसियोंने रखवा लिया। राइकी रोटीतक रखवा ली। ऐसे कितने ही चीनाओंकी तलाशी लेते समय उनपर दयाकर उन्हें जापानियोंने आहार दिया।

उधर रूसका नयनमुखकर डालनी-बन्दर जापानी अफसरोंके तत्त्वावधानमें जल-स्थल सैन्यका सम्मिश्रित केन्द्रस्थल बनाया जा रहा था। एक ओर जिनतरह सेनापति ओकूकी फौजोंके लिये बार्डिके बनने लगी थीं ; टूटीफुटी शाखा रेल-लाइन दुबस्त होने लगी थी ; दूसरी ओर उसीतरह टोगीके बड़े कं किनारे यानोंके लिये खाड़ीकी जलमय माइनें तोड़ी जाने लगी थी। इसबार आखनो-बन्दरके सामनेकी तालीनवाम-खाड़ीमें डूबो माइनेके तोड़नेमें गोला-गोली बरसा कोई बाधा देनेवाला नहीं था ; इसलिये जापानियोंने जापानके कुशीरो प्रदेशके सुप्रसिद्ध गोताखोरोंको बुला इस भयङ्कर कामका भार दिया। गोताखोरोंने जल्दी नावों या माइन तोड़नेवाले घन्टोंकी अपेक्षा अधिक काम किया। बड़ी बड़े फुरतोंके साथ माइनें फूटीं। इरी जनसे इटी जूनतक—तीन

—इकनालीन माइनें फूटीं। गोताखोरोंके गुणसे आर-

स्विक्र भागमें ही जापानी जहाजोंके डालनी-बन्दर पहुँचने का एक एक निरापद राह तय्यार हो गई ।

डालनी-बन्दरमें घेरेके मसाले उतरने लगे और वह सब रेल-लाइन या गाना राहों द्वारा उन फौजोंके पास पहुँचने लगे, जो अर्द्धचन्द्राकारमें आगे बढ़ करथर-बन्दरको घेरे घेरे घेर रह्यौ थीं । बन्दरकी बाहरी किलाबन्दीके खामने पहुँच जापानी फौजे ठहरतीं और वहाँके प्रायः समग्र उपयोगी पर्वतशिखर खाधिकारभुक्तकर उनपर तोपखानेके चक्रतरे आदि बनाने और उनपर घिरावकी बड़ी बड़ी तोपें चढ़ाने लगीं । पचास पचास गजके फासिजेपर सन्तरी खड़े किये गये, जो चौबीसो घण्टे पहरा देने लगे । गिरदावरोके खदार और पलटनोंके दसते रूबियोंके किलोंके खामने गश्त लगाने लगे । मतलब यह, कि घेरा इतना जबरदस्त तय्यार किया गया, कि अरथर-बन्दरके रूबी उसे तोड़ निकल भागनेकी हिम्मत कर नहीं सकते थे ।

अरथर-बन्दरको मुट्फरूसे घेर लेनेकी सुब्यवस्था करके भी जापानी निश्चिन्त नहीं थे । उन्हें यह आशङ्का थी, कि अरथर-बन्दरका घेरा रूस यदि अरथर-बन्दरके भीतरसे नहीं, तो बाहरसे तोड़ सकता है ; घेरा करनेवाली फौजोंपर उनके पीछेसे आक्रमण कर सकता है । यह आशङ्का नई नहीं थी । जिस समय नानशान-युद्ध हुआ नहीं था, उन्ही समयसे जापान इस आशङ्कासे नितान्न आशङ्कित था । हम पीछे लिख आये हैं, कि रूसके प्रधान सेनापति कुरोपाटकिन अपने सहर लियाव-याङ्गमें अवस्थान कर रहे थे और उनकी अर्द्धचन्द्राकार यहाँमें पड़ी फौजका बायाँ निरा मोतोमलिङ्ग घाटीमें था और दाहिना

हैचोङ्ग नगरमें। हैचोङ्गसे किनचौतक सीधी रेल-लाइन बिछी थी; जिसके द्वारा सहज ही कुरोपाटकिनके सहस्र सहस्र सिपाही किनचौ या उसके पहोस पहुँच सकते थे। इसीलिये नानशान-युद्धसे पहले ही जापानियोंको आशङ्का हुई थी, कि जिस समय हमारो फौजे नानशान पहाड़ीकी रूसी फौजोंसे युद्धारम्भ करेगी; उसी समय कुरोपाटकिन अपनी फौजों द्वारा नानशान पहाड़ीपर आक्रमण करनेवाली जापानी फौजोंपर उनके पञ्चाङ्गागसे आक्रमण करेगे। ऐसा होनेसे फल चाहे कुछ ही क्यों न होता; किन्तु जापानो दो शत्रुओंके बीच अवश्य ही पड़ जाते। किन्तु ऐसा हुआ नहीं और ऐसा न करनेकी वजह युरोपके विचक्षण रणप्रण्डियों द्वारा कुरोपाटकिनको तिरस्कृत होना पड़ा था। यह एक सुअवसर निकल गया था सही; किन्तु दूसरा अवसर कुरोपाटकिनके सामने था और जापानियोंको इस बातकी पूर्ण आशङ्का थी, कि कुरोपाटकिनकी फौजे आगे बढ़ अरथर-बन्दर घेरनेवाली जापानी फौजोंपर यदि आक्रमण करना चाहे, तो कर सकती है और इस आक्रमण के फलसे या तो अरथर-बन्दरकी फौज नगर खालीकर निर्विघ्न निकल जा सकती है या उसकी खूब हलप्रति हो सकती है। और जापानियोंकी यह आशङ्का अकारण नहीं थी; भीतर ही भीतर रूस अरथर-बन्दरका मेरा तोड़ बन्दरके उद्धारके लिये तय्यार हो रहा था। मेघ इस्त्राइ नहीं देता था; किन्तु अरथर-बन्दर घेरनेवाले जापानियोंकी अपने पीछे उत्तरसे मेघका घोर-गम्भीर गर्जन वारंवार जाई देता था।

ऐसी ही आशङ्कामें अस्मिर हो उत्तरसे आनेवाली भावी

विपद् रोकनेके लिये जूनके आरम्भ हीमें जापानियोंने तरफ तरफकी तय्यारियां आरम्भ कर दीं। जापानकी इस समयकी कुल तय्यारियोंका हाण अतक किमीको मालूम हुआ नहीं है। फिर भी; इतनी बात उसी समय मालूम हुई थी, कि किंगचौसे कुछ ऊपर प्रायद्वीपकी एक ओर पुलानटोन या आदम-बन्दरमें और दूसरी ओर पीम्बोमें कितनी ही फौजे उतार और उन दोनोंको भूमिपर मिला जापानियोंने कुरोपाटकिनकी फौज और अरधर-बन्दरके बीच फौजोंकी एक सुट्टे दीवार खींचदी थी। हैचोङ्गकी ओरसे रूसी फौज अरधर-बन्दरकी ओर बढ़नेवाली थी; जापानी अफसरोंने किंगचौ-खाड़ीसे कुछ ऊपर आदम-बन्दरमें बहुत बड़ी जापानी फौज उतार उसे हैचोङ्गकी ओर फेंका दी थी। रूसी फौजके टुकड़े बहुत आगे बढ़ आये थे; इसलिये आदम-बन्दरसे कुछ ही आगे उत्तर जापानी और रूसी गिरदावरीके सवारोंके बीच हलकी हलकी लड़ाइयां होने लगी थीं। ३०वीं मईको दोनों ओरके गिरदावरीके सवारोंके बीच किमी कदर बड़ी लड़ाई हुई। जापानियोंकी ओरसे इस खण्ड-युद्धका वर्णन प्रकाशित नहीं हुआ; रूसियोंने इसे बहुत ही महत्त्वका समझ इसका बहुत ही सभा वर्णन प्रकाशित किया।

रूसके मित्रोंने निरपेक्षताकी दुहाई देकर इस खण्ड-युद्धका वर्णन इस प्रकार किया है,—एक दिन रूसी गिरदावरीके सवारोंने जापानी छावनीके समोप पहुँच जापानी फौजकी ओर जाती हुई घास-चारा आदिकी गाड़ियां लूट लीं। इससे जापानियोंको बड़ा क्रोध आया; उन्होंने रूसियोंसे इस लूटका बदला लेना स्थिर किया। जापान-सेनापति अकियामाके अधीन जापानी

रिमाला तीन बटालियन जापानी पैदल फौजके साथ आदम-वन्दरसे निकल वाफाङ्गकौ रेल-यंशनकी ओर चला । वाफाङ्ग-कौमें रूसियोंका फ्रिग्टियर गार्ड रिमाला था । जापान-सेनापति अक्रियामा इस रूसी रिमालेपर आक्रमणकर इसे ध्वस्तविध्वस्त कर छाटना चाहते थे । दोनो दलोंके समीप पहुँचनेपर युद्ध आरम्भ हुआ । रूसियोंने अपने पीछेसे तोपखाना और पत्तटने मंगाईं । रूसी रिमालेने जापानी फौजपर आक्रमणकर उसे अत्यन्त क्षतिग्रस्त किया । एक सम्झौता जापानी स्काडरन रूसी रिमालेके गोलोंसे फटकर नष्ट हो गया । जापानी फौज जब भगी, तब जापानी आफ्टर अपनी फौजके साथ साथ आखानीके साथ भाग न सकते थे ; इसलिये वह अपने छूते फेंक नङ्गे पैर अपनी फौजके साथ भागे ।

रूस और उसके गुप्त-प्रकट मित्रोंने जापानियोंकी इस पराजयका खेसा ही वर्णन किया है । किन्तु यह वर्णन प्रकट होनेके कुछ ही घण्टोंके उपरान्त रूस-सेनापति कुरोपाटकिनने अपनी सरकारको जो रिपोर्ट भेजी, उससे इस वर्णनकी सारी कसई खुल गई और वर्णनका यथार्थ रूप जगत्को दिखाई दिया । कुरोपाटकिनने रिपोर्ट भेजी,—“जापानी फौज आदम-वन्दरसे आगे बढ़ वाफाङ्गकौ रेल-यंशनसे कोई तीन मीलके फामिलेपर मोरचे बाँध सुड्डा रूपसे बैठ गई है ।” कहां जापानियोंकी पूर्ण पराजय और कहां उनका “मोरचे बाँध सुड्डा रूपसे” बैठ जाना ; इन दोनो बातोंके बीच कितना अन्तर है । रूसियों और उनके नाना मित्रोंका आत्यन्तिक युद्ध-वर्णन और कुरोपाटकिनकी रिपोर्ट दोनों परस्पर मित्रता देनेसे जान पड़ता है, कि जेम्स हो

जापानो फौज वाफाङ्गकौके समीप पहुँची, वैसे ही उसपर
रूसी रिखातेने आक्रमण किया। आरम्भमें शायद रूसो रिखा-
तेने जापानियोंको कुछ दवाधा; किन्तु इसके बाद ही जापानि-
योंकी बाकी फौज पहुँच जानेसे रूसी रिखातेको भागना पड़ा
और जापानी फौजे' जिस जगह पहुँच गई थीं, वहीं पछ
मोरचे बांध सुदृढ़ रूपसे बैठ गईं।

वाफाङ्गकौवाले खण्ड-युद्धके उपरान्त कोई दश या बारह दिनों-
तक वाफाङ्गकौ और आदम-बन्दर प्रभृति स्थानोंमें जापानी
फौजमें बड़ो हलचल दिखाई दी। जापान-सेनापति ओकू स्वयं
आदम-बन्दर पहुँच गये और अपने तत्त्वावधानमें नये नये मोरचे
बंधवाने और यथास्थान फौजे' बैठाने लगे। कहते हैं, कि
आदम-बन्दरसे आगे कोई दश मीलकी चौड़ाईमें जापानी फौज
फैल अवस्थान करने लगी। जापानकी इस फौज और रूसकी
गिरदावरीको फौजके बीच और भी कितनी ही क्वांटो क्वांटो
लड़ाइयां हुईं। यह सब १३वीं जूनतक हुईं। इसके उपरान्त
एकएक दोनो ओरको फौजोंकी गतिविधि रुक गई; जो फौज
जिस जगह थी, वह उसी जगह शान्त भावसे बैठ गईं जग-
तको यह देख बड़ा आश्चर्य हुआ; लड़ाईको खबरोंके शौकौन
बहुत परेशान हुए; किन्तु इसमें आश्चर्य या परेशानोंको कोई
बात नहीं। समुद्रमें तूफान आनेसे पहले सागर-जल खूब
स्थिर हो जाता है; रोगस्थानमें प्रचण्ड आँधो बहनेसे पहले
सलय-समीर बहता है; घोर युद्ध आरम्भ होनेसे पहले विप-
क्षोय फौजोंमें शान्ति फैल जाती है।

प्रादिक। मयङ्कर समरान्त प्रन्वलिप्त हुआ चाहता है; एक-

वार दोनो ओरकी फौजोंको स्थिति देखिये। रूस और जापान दोनो ओरको फौजे कोर्सीकी खासाईमें एक दूसरेके मुकाबिल पड़ी हुई है। जापानी फौजके दाहने यालू-युद्ध विजयी जापान-सेनापति कुरोकीकी फौज है। पहले ही लिख चुके हैं, कि कुरोकीकी फौजका दाहना भाग मोतीनलिङ्गके समीप रूसी मोरचेके पास पहुँच गया है; अमजमें वही भाग जापानी फौजका दाहना छोर है। कुरोकीकी फौजका बाधां छोर जिस जगह समप्त हुआ है, उस जगह और एक जापानी फौजने पहुँच अपना दाहना भाग फैला दिया है। हम पीछे एक परिच्छेदमें लिख आये हैं, कि जापान-सेनापति ओकूकी फौजे जिस समय बार-बार-बन्दरके समीप बारबरदारीके जहाजोंसे उतरी थी, उसी समय एक जबरदस्त जापानी फौज कोरिया-खाड़ीके ताकुशान स्थानमें बारबरदारीके जहाजोंसे उतरी थी। इस फौजकी काररवाई अतक बहुत गुप्त थी; इसीलिये वहिर्दुर्ग-तको जान न पड़ा, कि ताकुशानकी फौज क्या है; यह फौज कुरोकीकी फौजका टुकड़ा है या ओकूकी फौजका। अमजमें यह फौज पूर्वोक्त दोनो फौजोंसे ग्रथक थी, जापान-सेनापति नोजू इस फौजके प्रधान अफसर थे। नोजूकी फौज कुरोकी और ओकूकी फौजके बीचमें उतर दोनो फौजोंको सहारा देनेके लिये तय्यार थी; विशेषतः नानशान-युद्धमें ओकूकी फौजको सहारा देनेके लिये और भी तय्यार थी। अन्तमें जब नोजूने देखा, कि ओकूके बिना सहारा मांगे ही नानशान-युद्धमें विजयलाभ किया; तब नोजू अपनी फौज ले आगे बढ़े और कुरोकीके सहर स्थान के जहाजवेतके बराबर उसमें कोई बचीन मील दूर सेमनषी स्था-

नमें पहुँच गये । सिउवेनपर रूसियोंका अधिकार था । नोजूनी फौजने हलकी लड़ाईके बाद इस स्थानसे रूसियोंको मार भगाया और इसपर अपनी ध्वजा उड़ा दी । इसके बाद ही नोजूने अपनी फौज दाहने फेला कुरोकोकी फौजसे मिला दी और बाये फेला ओजूकी फौजके पास पहुँचा दी । इसतरह जापानी फौजकी शोर्षोकी लक्ष्मी एक पंक्ति तय्यार हुई ; जिसका दाहने सिरा मच्चरियाका मोतीगलिङ्ग हुआ और बायाँ सिरा किनचौके ऊपरका आदम-बन्दर । ओजू और नोगीकी फौजके बीच सिर्फ घोड़ासा अलगाव रह गया ।

१३वीं जूनके बाद कई घण्टोंतक कोई उल्लेखयोग्य लड़ाई नहीं हुई सही ; किन्तु पूर्वोक्त तीनों जापानी फौजे बहुत कुछ मिलकर घोर युद्धके लिये तय्यार हुईं । जापानियोंकी इस तय्यारीके साथ साथ और एक बहुत बड़ी तय्यारी हुई । जापान-राजधानी टोकियोमें सेनाप्रतियोंका जो दल था, उसके प्रधान अध्यक्ष मारशल काउण्ट ओयामा थे । टोकियोमें बैठे बैठे वह मच्चूरिया और लियावटुङ्ग प्रायद्वीपकी जापानी फौजोंकी परिचालना करते थे । साथ साथ साथ फौजे और अफसर युद्धस्थलको घोर भेजते थे । जान पड़ता है, कि इस अवसरमें मारशल ओयामाने जापानमें भावी टहत युद्धकी सब तय्यारियाँ समाप्त कर दीं । इसीलिये वह जापान परित्यागकर अपने सहायकारी वयोवृद्ध सेनापति शोशामाके साथ युद्धस्थलमें पहुँच गये । जापानकी पूर्वोक्त तीनों फौजोंका भार इन्हीं मारशल ओयामापर रखा गया । इसीके साथ साथ नौ-सेनापति टोगो और उनके अधीनस्थ कितने ही नौ-सेनाप्रतियोंकी पदवृद्धि की

गई और वह नाना सम्मानसूचक उपाधियोंसे विभूषित किये गये ।

जापान-सरकारके इस सेनापति-परिवर्त्तन, उपाधिवितरण और सैन्यसमावेश प्रभृतिका समाचार या समझदार समझ गये, कि नानशान-युद्ध समाप्त होनेके साथ साथ रूस-जापान-युद्धका प्रथम या आरम्भिक अंश समाप्त हुआ और द्वितीय या मध्य अंशका आयोजन आरम्भ हुआ है । युद्धका मध्य अंश ही अत्यन्त निकट और प्रयोजनीय होता । इसीलिये दोनों ओरकी फौजें कुछ समयके लिये युद्ध राख भावी भयङ्कर युद्धकी तय्यारियोंमें लग गई थीं । दोनों ओरकी फौजें दो जुदा उद्दीपनाओंसे उद्दीपित थीं । रूसी फौजें चाहती थीं, कि युद्धके प्रथम अंशमें जो कुछ होनेको था हो गया ; अथ इस दूसरे अंशमें खूब मावधानीके साथ, बड़े साजसामानके सहारे युद्ध करना चाहिये ; जिससे युद्धके पहले अंशमें रूसको जो क्षति हुई है, वह पूर्ण हो जाये । उधर जापानी फौजें सोच रचो थीं, कि युद्धके पहले अंशकी विजयप्राप्ति नाममात्रकी विजयप्राप्ति है ; अब युद्धके इस दूसरे अंशमें विजय प्राप्त करने हीसे युद्धके विजयसुकुटसे हमारे देशका अस्तित्व सुशोभित होगा । दोगी ही ओर बढ़े बढ़े होसके थे ; बड़ी बड़ी तय्यारियां थीं ; पाठक इनका परिचय आगे क्रम क्रमसे आप ही देख सकेंगे ।

तयोदय परिच्छेद ।

उद्धारका यत्न ।

पाटकोंकी स्मरण होगा, कि जिस समयका हाल हम लिख रहे हैं, उस समय रूसके प्रधान सेनापति कुरोपाटकिनका सहर स्थान रुकदनसे इधरका नगर लियावयाङ्ग था। इसी लियाव-याङ्गसे कुरोपाटकिनने अपनी फौज जापानी फौजके सामने अर्द्ध-चन्द्राकारमें फेला रखी थी। कुरोपाटकिनकी फौजका नार्थ गिरा जापानी फौजके दाहने सिरेके सामने मोतीनखिङ्ग घाटीमें था और दाहना सिरा जापानी फौजके बाये सिरेके सामने आश्म-बन्दरसे कुछ दूर अवस्थान कर रहा था।

कुरोपाटकिनका सहर स्थान लिशावयाङ्ग नगर अगले वज्जोंका बना हुआ चौखूटा नगर है। अन्योन्य प्राचीन नगरोंकी तरह इस नगरकी भी चारो ओर ऊंची शहरपनाह है। नगर बहुत बड़ा न होनेपर भी बिलकुल छोटा नहीं है। नगरमें कितने ही बाजार हैं, कितने ही चौक हैं, कितने ही बयनसुखकर स्थान हैं। प्रधान प्रधान बाजार ऊंची ऊंची पक्की अट्टालिकाओंसे सुलज्जित हैं। नगरके बाहर साइबेरिया-अरधर-बन्दर-रेलगा लिशावयाङ्ग नामक स्टेशन है। इसी स्टेशनके समीप कुरोपाटकिन रहते थे। रूसी फौजके प्रधान सेनापति होनेपर भी कुरोपाटकिनके इदंगिर्द किमी तरहकी शानशौकत दिखाई देती नहीं थी। कुरोपाटकिन सादगी बहुत पसन्द करते थे,

इसीलिये उनके प्रवासस्थानसे भी सादगीकी झलक दिखाई देने लगी थी। विलायती अखबार 'डेल्सी एक्सप्रेस'के मंचादाता मिस्टर एगलस थोरोने कुरोपाटकिनके सदर स्थानके सम्बन्धमें लिखा है, —“लियावयाङ्ग नगरके दक्षिण-पश्चिम लियावयाङ्ग रेल-स्टेशन है। इसी स्टेशनकी एक शाखा-लाइनपर रेलगाड़ीमें कुरोपाटकिन रहते हैं; रेलगाड़ी ही उनका मकान है। कुरोपाटकिनकी गाड़ीके इर्दगिर्द कितनी ही गाड़ियां और भांगड़ियां हैं; इनमें कुरोपाटकिनके अधीनस्थ सेनापति तथा अफसर रहते हैं। ग्राम-शौकत रुहों नामको भोगहीं। तोपें हैं ही नहीं। कुरोपाटकिनकी गाड़ीके पास एक ऊँचे खट्टेपर झरखेके बदले एक बड़ा रूमाल वायुमें फरफर उड़ता रहना है। यही मानी सदरका चिह्न है। गिनतीके बन्तरो हैं। हां चारो ओर वैज्ञानिक यन्त्रोंकी भरमार है; विशेषतः वैद्युतिक यन्त्रोंकी अधिकता। कुरोपाटकिनके पास जितने अफसर हैं, उनमें अधिकांश विज्ञानवित्त हैं। भूमिके ऊपर टेलिफोन, टेलिग्राफ प्रभृतिके बहुसंख्यक तार दिखाई देते हैं, जो सदर स्थानसे भिन्न भिन्न ओर गये हैं। तार ले जाने और ले आनेवाले चपरासियोंका काम अफसर करते हैं। इस बीचवों प्रताडिने एक सुशिक्षित सुवृद्ध सैन्यके सदर स्थानको बड़ा ही विषम सदर स्थान बना दिया है।”

यह न समझना चाहिये, कि कुरोपाटकिन रूमसे रथस्थलमें आकर अपनी रेलगाड़ीसे बाहर निकलना ही नहीं थे; समय समयपर वह अपनी गाड़ीसे निकल रूमों फौजों चार उनते मोरचाको देखभाल किया करते थे। आपानो पौखोंके सामने पड़ी रूसी फौजके प्रायः सभी मारके रोपाटकिनके देखे हुए

थे ; समय समयपर कुरोपाटकित्तन दौरेके लिये भी निकला करते थे । कुरोपाटकित्तन नाना गुणोंके आकर होनेपर भी सुदूर पूर्वके लुन्सी बड़े खाट अलकसिफको बंधीभूत कर नहीं सके थे । खबर है, कि कुरोपाटकित्तन और अलकसिफके बीच सदासे रङ्गिण चल रही थी । कुरोपाटकित्तन अलकसिफको और अलकसिफ कुरोपाटकित्तनको नीचा दिखानेकी चेष्टा किया करते थे । दो दिग्गजोंकी टक्कर थी । कुरोपाटकित्तन और अलकसिफ दोनों हीकी कार्यावली इतिहासका मसाला थी । दोनों अष्ट और गण्य-मान्य पुरुष थे खड़ी ; किन्तु दोनोंने अपना अष्टत्व दो जुदा पधसे चलकर प्राप्त किया था । कुरोपाटकित्तनने अष्टत्व प्राप्त किया था अस और विद्याबलसे और अलकसिफने अष्टत्व प्राप्त किया था ; दरवारी बाजिणके जोरसे । कुरोपाटकित्तन परिश्रमी और विद्वान् सीधेसादे सिपाही थे ; अलकसिफ जोड़तोड़ करनेवाले राजनीतिसागरके मगर थे । ऐसे ही दोनों महापुरुषोंके बीच इस युद्धके समय भी गज-कच्छपी चल रही थी ।

नामशान-युद्धको समाप्तिके उपरान्त इन दोनोंकी वीषका मनो-मालिन्य और बढ़ गया । मनोमालिन्य बढ़नेका कारण यह हुआ, कि नामशान-युद्धके उपरान्त अरधर-बन्दर घिर आनेपर अलकसिफने कहा, कि अरधर-बन्दरका उखार होना चाहिये ; कुरोपाटकित्तनने कहा यह असम्भव है । समझाकर कहा,— “कुरोकीकी फौज मेरे वाचे है ; ताकुशानसे आगे बढ़ लुन्सी मोरचोंके समीप बैठी हुई नोजूकी फौज मेरे सामने है ; ऐसी अवस्थानमें मैं यदि ओजूकी फौजको परास्तकर अरधर-बन्दरके

उद्धारकी चेष्टा कहूँगा, तो कुरोकी और नोजूकी फौज आगे बढ़ मेरी फौजके मध्यम गण (आक्रमण करेगी; फौज बट जानेसे मेरी फौजका मध्यम गण निर्जल हो जायेगा और वह कुरोकी तथा नोजूकी फौजके सम्मिलित वेगको संभाल न सकेगा।" सिवा इसके कुरोपाटकिन यह भी कहते थे,—“अभी मेरे अर्धौन लाख या दो लाख सिपाही हैं; जब चार लाख सिपाही हो जायेंगे, तब मैं अपना पराक्रम पूर्णरूपसे प्रकाशित कर सकूँगा।” किन्तु अलकसिफ कहते थे,—“यह सब कुरोपाटकिनके बहाने हैं; जो आदमी काम करना चाहता है, वह बेसरोमा-मानीसे भी सामानकी सूरतें बना लिया करता है।”

अलकसिफ सदलवण सुकदनमें थे। निमन्त्रणरक्षाके लिये या स्वतःप्रवृत्त हो २७वीं मईको सन्ध्या कोई ५ बजे कुरोपाटकिन स्पेशल ट्रेन द्वारा सुकदन पहुंचे। प्रधान सेनपति कुरोपाटकिन सरकारी तौरसे सुकदन गये थे; इनलिये रेल-स्टेशनपर बड़ी धूमके साथ उनकी अभ्यर्थना की गई और जुलूमके साथ उनकी सवारी गवरमेण्ट-भवनमें दाखिल हुई। एक कमरेमें कुरोपाटकिनसे बड़े खाट अलकसिफने भेंट की। कहते हैं, कि भेंट होनेके बाद ही दोनों प्रधान पुरुषोंमें हुज्जत-तकरार चल पड़ी, जो रात दश बजे तक चलती रह्यी। हुज्जतका फैसला नहीं होता; इस हुज्जतका भी पैमशा नहीं हुआ। रात दश बजेके उपरान्त कुरोपाटकिन गवरमेण्ट-भवनसे निकल स्टेशन आये और वहांसे अपनी उसी स्पेशल ट्रेन द्वारा अपने सहर खान लियावयाङ्ग पहुंच गये। इसके बाद ही अलकसिफने इनमें और कुरोपाटकिनने लियावयाङ्गसे रुस सन्नाट् द्वितीय

निकोलसके पास युक्ति-प्रमाणके साथ अपनी अपनी बातें लिख भेजीं। कहते हैं, कि शिम दिन इन दोनों प्रधान पुरुषोंके लम्बे लम्बे पत्र जारके पास पहुँचे, उस दि। जारने अपने महल 'जार लोसेलो'में अपने वयोवृद्ध सेनापतियों और राजनीतिविशारद मन्त्रियोंकी एक सभा ली; सभामें कुरोपाटकिन और अलकसिफके पत्र पेश किये। सभाके कुछ सभ्योंने कुरोपाटकिनका पत्र ग्रहण किया और कुछ सभ्योंने अलकसिफका। खूब तर्क-वितर्क चला। अन्तमें अविद्व सन्मतिक्रमसे बड़े काट अलकसिफ हीकी बात परिग्रहीत हुई। स्थिर हुवा,—“कुरोपाटकिन अरथर-वन्दरके उद्धारके लिये फौज भेजे; अरथर वन्दरका उद्धार करना ही होगा।”

अब कुरोपाटकिनके लिये दूसरा उपाय नहीं था। उनके प्रभु स्वयं जारने जब लिख भेजा, कि अरथर-वन्दरके उद्धारके लिये फौज भेजी जाये, तब कुरोपाटकिन उससे इनकार कैसे कर सकते थे? कितने ही लोगोंने कहा, कि जारने उचित ही आज्ञा दी थी। इसमें खन्देह नहीं, कि उस समय कुरोपाटकिनके पास कितने सिपाही थे, उनको रूखा जापानी सिपाहियोंकी संख्यासे किसी तरह कम नहीं थी और वह जापानके सामने पड़ी अपनी फौजका मध्यभाग बिना निर्जल किये ही अरथर-वन्दरके उद्धारका काम कर सकते थे। किसी किसीका यह भी खयाल है, कि अरथर-वन्दरके उद्धारका प्रयत्न करनेकी कल्पना कुरोपाटकिनकी नहीं; अलकसिफकी थी और कुरोपाटकिन यह सोचते थे, कि इस काममें खूबी फौजके हतकार्य होनेसे जान मेरी लहेगी और नाम अलकसिफका होगा; इसीलिये वह घांवार

अलकसिफको बातका खण्डन कर रहे थे। फिर किसी किसीका यह भी कहना है, कि रूसो सिपाहियोंकी संख्या जापानो सिपाहियोंकी संख्याकी अपेक्षा कम नहीं थी सही; किन्तु अब कुरोपाटकिनको अच्छी तरह मालूम हो गया था, कि जापानो सिपाही रूसो सिपाहियोंकी अपेक्षा आधिक शक्तिशाली हैं; रूसी सिपाही समानसंख्यक जापानो सिपाहियोंको भी रोकनेमें समर्थ नहीं; इसीलिये कुरोपाटकिन अरथर-बन्दरके उधारके लिये षौज भेजनेमें सङ्कोच करते थे। किन्तु अब सङ्कोच और आगापोहा करनेका समय नहीं था। जैसे ही रूस-सम्राट्की आज्ञा मिली, वैसे ही कुरोपाटकिनने अरथर-बन्दरके उधारके लिये अरथर-बन्दरकी ओर षौज भेजनेकी आज्ञा दी; आज्ञाके साथ साथ कार्य आरम्भ हुआ।

चतुर्दश परिच्छेद ।



तेलिस्सू-युद्ध—पराजयको विभीषिका ।

अरधर-बन्दरके उद्धारार्थ युद्ध-यात्राको तय्यारोका हाल इतने दिनों बाद अब लोगोंको मालूम हो गया है ; इसीलिये हम भी उसे पाठोंको सुना सके ; नहीं तो जिस समय रूसी फौज इस यात्राके लिये तय्यार हुई थी, उस समय इस यात्राका हाल बाहरों लोगोंको मालूम हो नहीं सका था । उस समयका जापानी फौजे रूसियोंके विलकुल सामने नौ बूंगसो तेलिस्सू उनतकपर इसका हाल खुला नहीं था और अपनी फौज देखि-दिपाने के लिये ही रूसी रिःप्रार्तष्ठित की, दूसरी ओर गिरदावरीके फिरता था । इस युद्ध-यात्रा वाफाङ्कसो जापानी फौजके होनेपर भी जापानी पहले ही पीछे हटाये । इस दिन जापानी लगाये थे ।

तो गिरदावरीके सवारोंमें कई बार

रूसियोंके लिये विलकुल

रूसियोंने प्रत्येक युद्धमें व्यागार भी गाफिल बटे नहीं थे । वह किन्तु इस युद्धमें रूसो व्यागार पहुँचे और उन्होंने अपनी व्यागारों युरोपकी सुसभ्य सर्वप्रधान शक्तियोंके देखी । जापानियोंको बहुत ही युद्धके लिये आगे बढ़ा थी, वही हुई ; अरधर-बन्दरके सामानोंसे सजघन आगे बढ़ने रूसी फौज तेलिस्सू आ पहुँची । युद्ध-यात्राके लिये फौजे चुनी पहले हीसे तय्यार थी ; वह आरम्भ-और यह सब इस खूबसूरत जगहका समाचार पानेकी प्रती

रहे थे। इससे एक दिन पहले १२ वीं जूनको ही ओजूको समाचार मिला था—“तेलिस्तूम में बड़ी हलचलके लक्षण दिखाई देते हैं; जान पड़ता है, कि रूसको एक जबरदस्त फौज तेलिस्तूम पहुँच रही है।” सेनापति यह समाचार सुननेके लिये तय्यार थे; इसीलिये उन्होंने रूसियोंसे युद्ध-करनेके लिये आदम-वन्दरमें एक फौज तय्यार कर रखी थी। उस समय तक इस फौजका हाल किसीको मालूम हुआ नहीं था। फौजमें कोई तीस या पैंतीस हजार सिपाही और खवार तथा कोई एक सौ तोपें थीं। जापानकी यह फौज रूस-सेनापति शकलवर्गकी फौजके बराबर ही थी। रूसियोंने कहा था, कि इस जापानी फौजकी संख्या बहुत अधिक थी और इसके हाथ कोई दो सौ तोपें थीं; किन्तु जापानी अफसरोंने इस बातका खण्डन किया, जिसके प्रत्यक्षरमें अपनी बातके प्रमाणस्वरूप रूसी कोई

बात पेश कर न सके। जापान-सेनापति ओजू यदि चाहते, तो और जबरदस्त फौज रूसियोंके सामने भेजते, किन्तु नाना कारणोंसे यह समसंख्यक फौज ही उन्होंने रूसियोंके लिये थथथ समझी। ओजू वालू नदी और नानग्रान-युद्धका फलफल जानते थे; उन्हें विश्वास हो गया था, कि एक रूसीके लिये एक जापानी बहुत है। सिवा इसके ओजू यह भी जानते थे, कि रूसी जिस स्थानमें हैं, उस स्थानमें वह यदि घेर लिये जायेंगे, तो उनके इर्दगिर्दकी पञ्चतमःसायोंसे—विशेषतः तेलिस्तूमके पश्चाद्भागको पञ्चतमाज्ञासे रूसियोंको बड़ी क्षति पहुँचानी। यही सब सोचसमझ उन्होंने जैसे ही रूसी फौजके

तेलिस्तू आनेकी खबर पाई, वैसे ही आगे बढ़ यथा-
सम्भव शीघ्र रूसी फौजपर आक्रमण करना स्थिर किया।
इस यात्राके लिये जो फौज उन्होंने पहलेसे तय्यार कर रखी थी,
उसे आगे बढ़नेकी आज्ञा दी।

१३ वीं जुलाईको जापानी फौज आदम-वन्दरसे तेलिस्तूको
छोर रवाना हुई। फौज तीन भागोंमें विभक्त की गई। मध्यभाग
रेलकी लाइन लाइन आगे बढ़ा। दाहना भाग ताशा गदी किनारे
किनारे अग्रसर हुआ; बायां भाग तीन टुकड़ोंमें जुदा होकर तीन
जुदा शाहराहोंसे तेलिस्तूको छोर चला। रिवाला दाहनेकी फौजके
किनारे किनारे चला। दाईं ओरकी लम्बाईमें फैलकर फौज आगे
बढ़ी। फौजका एक इतना चौड़ाकर फौज आगे बढ़ाना बहुत
खतरेकी बात है। इसीलिये जापानी फौजका इसतरह बढ़ना
देख यूरोपके कितने ही रणप्रखेडत आश्चर्यान्वित हुए थे; किन्तु
टाइम्सके फौजी संवाददाताने माने इन लोगोंके जवाबमें ठीक ही
कहा था,—“जापानियोंने सिर्फ नवाविष्कृत अस्त्र-शस्त्र हीपर
गर्हों; बल्कि अपनी बुद्धि और मुजबलपर निर्भर हो; इस-
तरह अपनी फौज आगे बढ़ाई थी।” जिस व्यवस्थाके साथ
जापानी फौजके तीनों टुकड़े आगे बढ़ाये गये थे, उससे जान
पड़ता था, कि बीचका टुकड़ा रूसी फौजको टकरा देकर पीछे
हटावेगा और अग्रसंगलके टुकड़े रूसी फौजको घेर लेंगे।
१३ वींकी मन्धाको जापानी फौजके तीनों टुकड़े आदम-
वन्दरसे कोई बारह मीलके फासिलेपर पहुँचे और वहाँ तीनों
टुकड़ोंने पड़ाव डाल रात बिताई।

१४ वीं जूनको प्रदूष धीरे जापानी फौजे समर डण्ड आगे

बढ़ने लगीं । आजकी यात्रा उतनी आसान नहीं थी ; कारण, आध जगह जगह रूखों गिरदावरीके सवार और रूखों चौकियोंके सिपाही जापानी फौजोंके आगे बढ़नेमें बाधा उपस्थित कर रहे थे । पर्वत भूमि आरम्भ हो गई थी ; इसलिये पर्वत-शिखरोंके अतिक्रम करने या उनसे बगलसे घूमकर जानेमें और भी देर लगती थी । जैसे जैसे जापानी फौजके टुकड़े आगे बढ़े, वैसे वैसे बाधायेँ बढ़ती गईं । फिर भी ; नागरतरङ्गवत् जापानी फौजके टुकड़े कुछ बाधाओंको तुच्छ समझ पर्वत-नदी-नाले पार करते, रूखों सब रों और सिपाहियोंको पीछे हटाते आगे बढ़ते ही गये । दो पहर छल चुकनेपर जापानी फौजके बायेँ टुकड़े ने एकत्र हो तेलिस्सूके बायेँ दक्षिण-पश्चिम कोई दश कोसके फामिजेपर पहुँच रूखियोंको भगा नैकियालिङ्ग ग्रामपर अधिकार कर लिया ; इसी समय दाहना टुकड़ा पञ्जनन ग्राममें अवस्थित रूखों फौजके बायेँ किनारे पहुँच गया । इस जगहसे तेलिस्सू कोई चार कोस दक्षिण था । दाहना-बायाँ टुकड़ा तो दोपहरके उपरान्त ही रूखों मोरचोंके सामने पहुँच गया ; किन्तु बीचवाले टुकड़ेके अपने निदिष्ट स्थानमें पहुँचनेमें कुछ देर लगी । इसका कारण यह था, कि दाहने बायेँ टुकड़ेके सामने उतनी बाधायेँ नहीं थीं, जितनी बीचवाले टुकड़ेके सामने । इस टुकड़ेकी धरेक कदमपर रूखियोंसे युद्ध करना पड़ना था । दही कठिनताके साथ तीसरेपहर कोई तीन बजे बीचवाला टुकड़ा लुङ्गकियाटुन ग्राम पहुँचा । इस ग्रामके सामने ही लुङ्गवाहामियाव ग्रामसे आगे पर्यनमातापर रूखों फौजका मध्यभाग मोरचा बाधेँ बैठा था । इस लुङ्गवाहामियाव ग्रामके

पीछे तेलिस्सू नगर है। जापान-सेनापति, ओजूने बीच-वाले टुकड़ेके साथ लुङ्गकियाटन पहुँच देखा, कि उसके सामने लूसी फौज चाहने पञ्चवन ग्रामसे लेकर बाये' तामाङ्गशेन ग्रामतक धन्वाकार बूँद बांध अवस्थान कर रही है।

जापानी फौजके तीनों टुकड़े लूसी यात्रा करनेकी वजह घक गये थे सही; किन्तु उन्हें विश्राम करनेका अवकाश विल-कुल ही नहीं था। लूसी जिस जगह मोरचे बांध बैठे थे; वह जगह लूस-सेनापति टाकलशर्गको दृष्टिमें बहुत अच्छी होने-पर भी सचतुर युद्धविद्यविशारद जापान-सेनापति ओजूकी दृष्टिमें बहुत ही खतरकी थी। लूसियोंका मोरचा देखते ही ओजूको विश्वास हो गया, कि ऐसे समय लूसी मोरचेपर आक्रमण करनेसे जापानियोंकी विजय और लूसियोंकी पराजय अवश्यभावी है। इतना ही नहीं; उन्होंने उसी समय यह भी जान लिया था, कि इस जगह लूसियोंको परास्त करनेसे अच्छी तरह पददलित भी कर सकेंगे; नानशानमें लूसियों द्वारा जापानी फौजको जो भयङ्कर क्षति पहुँच चुकी है, उसका प्रतिशोध भी ले सकेंगे। ओजूने विचार किया,—“यसंख्य आप-दाओंका खयाल न कर यह सुअवसर परित्याग करना न चाहिये। इस वर्षा-ऋतुमें युद्ध करनेमें नाना प्रकारकी असुविधयें उपस्थित होनी हैं; किन्तु भगवत्कृपासे सामनेका पार्वत्य युद्ध-स्थल उनका असुविधाओंसे रक्षा है। दूसरी बात यह है, कि यही युद्ध लूस-जापान-युद्धके द्वितीय भागकी शुरुआत है; इस युद्धमें यदि जापानी विजयी हुए, तो दूसरे भागके न्याय कृत दुष्टोंने

जापानियोंके विजयलाभकी प्रत्याशा की जा सकती है। तीसरी बात यह है, कि कुरोकीको सैन्य-पंक्तिसे नोजूकी सैन्य-पंक्ति मिली हुई है; नोजूकी सैन्य-पंक्तिके बायें छोर और मेरी सैन्य-पंक्तिके दाहने छोरके परस्पर सम्मिलित हो जानेमें थोड़ासा अलगाव है; इस युद्धमें विजय प्राप्त करते ही यह अलगाव मिट जायेगा और हमारी और नोजूको सैन्य का छोर आपसमें मिल जायेगा। इस मेलका फल सामान्य नहीं; सिर्फ इसीकी प्राप्तिके लिये अगणित आपदायें टणादपि टण समझी जा सकती हैं।” यही सब बातें मोचसमझ ओकूने अन्तमें स्थिर किया,—“विश्व करनेसे सम्भव है, कि रूस-सेनापति अपने स्थितिकी निश्चलता जान ले और अपने फौजको उसके वर्तमान स्थानसे हटा दे; ऐसा होते हो मेरी कुल आशायें मट्टीमें मिल जायेंगी; जापानी फौज रूसी फौजको परास्त कर न सकेगी; इसलिये जापानी फौजकी शक्ति-क्षान्तिकी कोई परवान कर अभी युद्धारम्भकी आज्ञा देना चाहिये।”

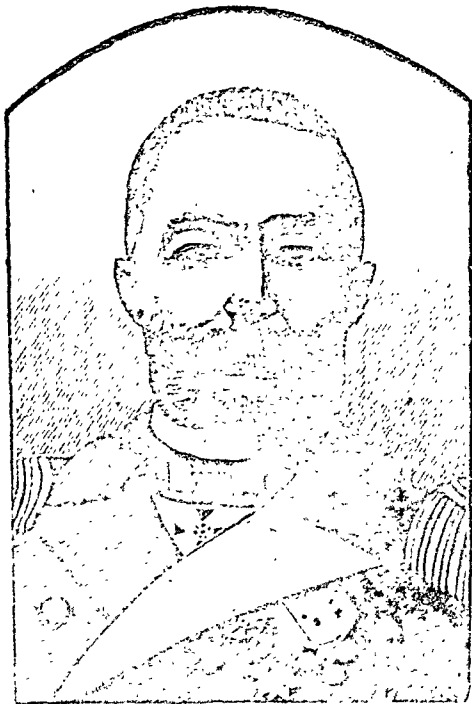
लिखनेमें जितना समय लगा, जापान-सेनापतिकी इन सब बातोंका विचार करनेमें उतना समय नहीं लगा। उन्होंने अति धल्पकालमें मन ही मन यह सब तर्क-वितर्ककर उनी समय अपनी फौजके तीनों टुकड़ोंको युद्ध आरम्भ करनेकी आज्ञा दी। युद्धकी आज्ञा घोषित होनेसे पहले ही जापानी फौजके तीनों टुकड़ोंके तोपखाने मौकेमें लग गये थे। विशेषतः बायें टुकड़ेका तोपखाना और भी अच्छे मौकेमें लगाया जा चुका था। बायें टुकड़ेका तोपखाना रूसी मोरचेके दाहनेछोरसे आगे ३३ नाचिपालिङ्ग नामी पर्वतमालापर स्थापित

कर दिया गया ; बाये टुकड़े का एक अंश इस तोपखानेसे भी बागे गश्चियाटुन पान्तव्य ग्रामतक पहुंच गया था ; यह अंश उस समय अपने सामने बढ़ता, तो रूसी फौजके बाये पार्श्वके पीछे पहुंच जाता । इसतरह जापानी फौजके तोपखाने यथास्थान लग चुके थे और जैसे ही सेनापति ओकूने युद्ध आरम्भ करनेकी आज्ञा दी, वैसे ही जापानी तोपखाने रूसी मोर्चोंपर गोले बरसाने लगे ; तेलिस्सूला युद्ध आरम्भ हुआ ।

दोनो ओरकी तोपोंकी संख्या प्रायः सामान थी ; किन्तु दोनो ओरके गोले समान बलशाली नहीं थे । रूसी तोपखाने युरोपके बने अस्त्र द्रव्यके गोले व्यवहार करते थे ; जापानी तोपखाने जापानी डाक्टर सिमोसकी बनाई बाह्रसे भरे गोले चलाते थे । युरोपके बने गोलोंकी अपेक्षा जापानके बने गोले अधिक बलसम्पन्न प्रमाणित हुए । रूसी तोपोंके गोले जिस चट्टानपर पड़ते थे, उसे तोड़ कई टुकड़े बना देते थे ; जापानी तोपोंके गोले जिस चट्टानपर पड़ते थे, उसे सुरमा बना घुलिसी तरह वायुमें उड़ा देते थे । आपनल गोलोंकी यदि कहीं, तो बहुत बड़ा कारतूस कह सकते हैं । आपनल गोला भीतरसे खाली रहता है, और गोलोंके उस खाली गर्भमें सहस्र सहस्र गोलियां भरी रहती हैं । आपनल गोला फौजोंके शिरपर पहुंच आकाशमें फटता है और उसके भीतर भरी वह सहस्र सहस्र गोलियां निकल सिपाहियोंपर बरसती हैं ; बहुसंख्यक सिपाही उन गोलियोंके आघातसे घराशाही होते हैं । जापानके यह आपनल गोले भी रूसी आपनल गोलोंकी अपेक्षा अधिक भयंकर थे । दोनो पक्ष सम-संख्यक तोपोंसे एक दूसरेपर गोला-वृष्टि करते

थे ; नियमानुसार इस गोला-वृष्टिका फल भी समान हो हीना चाहिये था ; किन्तु जापानी गोले रूसी गोलों से अथेक्षा अधिक भयङ्कर थे ; इसलिये रूसी गोलोंको अपेक्षा जापानी गोलोंका

प्रधान सेनापति ।



जनरल टाकलवाँ ।

फल भी अधिक भयङ्कर था । दिनको तीन बजेसे पांच बजेतक यह भयङ्कर गोला-वृष्टि हुई । इसके उपरान्त दोनो ओरके मोरचोंके मध्य अन्धकारके परदेमें छिपने ली दोनो ओरके

तोपखानोंने गोला-वृष्टि बन्द कर दी । पार्वत्य-भूमिने शान्त मूर्ति धारण की ।

रणाभूमिके सान्ध्य अन्वकार द्वारा आच्छन्न-छोनेपर दोनो औरकी फौजोंने क्या किया ? रूसी फौजने उल्लेखयोग्य वैसी कोई काररवाई नहीं की । पञ्चतनमें अर्वास्थित सिर्फ वाये पार्श्वने कुछ आगे बढ़ जाानी फौजके दाहने पार्श्वके पीछे पहुँचनेकी क्षीण चेष्टा की ; रूसी फौजका बाकी भाग जिस जगह था, उसी जगह रहा । किन्तु जापानी फौजें दिनभर श्रम करनेके उपरान्त भी रातको दस ले न सकीं । दो ही घण्टेकी जापानी गोला-वृष्टिके फलसे रूसी मोरचा हिल गया था ; विशेषतः बीचका और उससे भी अधिक दाहना भाग खूब हिल गया था । रूसी फौजके दाहने खिरेपर जापानी गोलोंकी वह मार पड़ी थी, कि उस औरकी रूसी फौजका कदूमर निकल गया था, अफसर-सिपाही सबमें उदासी द्वा गई थी । जिन जापानियोंने अपनी ही घण्टेकी गोलाबाजीका फल ध्यानपूर्वक तन्मय हो देखा था, वह जापानी रूसी फौजकी इस दुर्दशासे अनभिज्ञ नहीं थे ; इसीलिये वह कुछ घण्टोंका अल्प विश्राम उपभोग करनेके बदले शत्रुको भगा चिरानन्दमय बनना चाहते थे । रातोगत जापानी फौजका मध्यभाग अपने दाहने टुकड़ेकी ओर झुकता रूसी मोरचेकी ओर उत्तर-पश्चिम आगे बढ़ा और बायां भाग दक्षिणकी ओर किसी कदर आगे बढ़ रूसी मोरचेके दाहने सिरेके टीले पीछे कुछ दूरतक फैल गया ; बाघ बाघ तोपखाने भी खिना गया ; जो रूसी फौजके पीछे जंगली पहाड़ियोंपर खड़ा दिये गये । इन तोप-

खानोंसे छूटे गीले दूर दूर तक जा सकते थे ; तैलिस्तू और उमके पीछेकी पर्वतमाला और उमकी घाटियां इन पापानी तोपोंकी मारमें थीं । जापानी फौजकी इस गतिता मतलब नमस्कना कुक कठिन नहीं । जापानी फौजके बाये छोरके रूसी फौजके दाहने छोरको पीछेसे घेर लिया और मध्य भागके किमी कदर अपने दाहने अंगे बढ़ रूसी फौजके पीछे लगे अपने तोपखानेकी गोल-न्दाजीके लिये मैंग निकाला ; साथ साथ अपने सामनेकी रूसी फौजकी पीछे छकेल पूर्वार्ध तोपोंके गोलोंका विप्राना बनानेका आयोज किया । शतरंजकीनो यह चालें चली गईं, जिनका मुख्य उद्देश्य यह था, कि रूसी फौजे चारों ओरसे दबाई जानेपर भागे और जब तैलिस्तूके पीछेकी घाटियोंसे भागने लगे, तब तोपदम की जाये । जापानी फौजका दाहना टुकड़ा रूसी अधिकतम पञ्चतनके सामने जहाँका तहाँ रहा ; उसे आज्ञा मिली थी,—“इस टुकड़े को अपने सामनेकी रूसी फौज यानी रूसके बाये छोरको युद्धमें इसतरह उल-भा रखना होगा, कि वह जापानी फौजके मध्यभागके कार्यमें बाधात उपस्थित करनेका अवसर न पाये ।” जापानी फौजने रात सीकर कःटनेके पहले प्रातःकालके युद्धकी इन्हीं तयारियोंमें बिताई ।

१५वीं जूनका प्रभात उपस्थित हुआ । कोई साढ़े पांच बजे थे ; धुंधला धुंधला कुहरा चारों ओर छाया था, जो जल्द जल्द मिट रहा था ; ऐसे समय एकाएक जापानी फौजके मध्यभाग और दाहने भागकी तोपोंकी गूँहमें आग की लपक निकलती दिखाई दी ; इसके बाद ही महाभयङ्कर तोपध्वनिसे दिग्गये परिपूर्ण हुईं ।

रूसी मोरचोंपर गोले पड़ने लगे। रूसी भी तय्यार बैठे थे ; उनकी ओरसे भी गोलन्दार्जी आरम्भ हुई। इसीके साथ साथ रूसी फौजका बायां ओर जापानी फौजके दाहने ओरके पीछे पहुँचनेके लिये आगे बढ़ा। हम पहले ही लिख चुके हैं, कि जापानी रिसाला अपने इसी ओरके खम्भे पर था ; वह रूसी फौजके बायें ओरका बढ़ना देख उसपर उसके आगे पीछे और बगलसे बारंबार आक्रमण करने लगा ; साथ साथ जापानी फौजके दाहने भागने भी अपनी जगहसे कुछ आगे बढ़ रूसकी इस आगे बढ़ती फौजको रोक शुद्धमें फंसाया। रूसी फौज आगे बढ़ न सकी ; पीछे भी लौट न सकी। जहाँ थी, वहीं मोरचे बांध अपने सामनेकी बाधाओं मिटाने लगी ; खूब गोलो-गोले चलाने लगी। उसने विचार किया था, कि कुछ ही देरमें यह बाधा हटा वह आगे बढ़ने और जापानी फौजको पीछे पहुँच जानेमें समर्थ होगी। उसे क्या खबर, कि जापानी फौजने उसे फंसा रखनेके लिये कौशल-जाल रच रखा था और वह आप ही आप आगे बढ़ उस जालमें फंसा चुकी थी और अब जबतक शुद्ध चलेगा, तबतक

बढ़ने लगा, वैसे वैसे रूसी फौजका मध्यभाग पीछे हटने लगा ।
 कितनी ही रूसी पलटनें चालू-तारसे अर्धर हो जापानी
 फौजके आगे बढ़ते हुए मध्यभागपर टूट पड़नेके लिये आगे
 बढ़ती थीं ; किन्तु जापानी तोपखानोंके गोलोंकी विषम मारसे कुछ
 ही कदम आगे बढ़ प्रतिग्रस्त हो पीछे पलट जाती थीं । दिन
 कोई दश बजेतक जापानी फौजका मध्यभाग रूसी फौजके मध्य-
 भागको बहुत कुछ पीछे हटा ले गया । इसके उपरान्त ही एक
 ऐसी घटना हुई, जो युद्धके नये इतिहासमें विलक्षण ही अपूर्व
 लक्ष्य ला सकती है । हम ऊपर लिख आये हैं, कि रूसी फौजका
 मध्यभाग रेल-लाइनपर था ; या इसी बातकी ओं कहना चाहिये,
 कि रूसी फौजके मध्यभागकी बीचमें रेल-लाइन थी, जो लियाव-
 याङ्ग प्रभृतिकी ओरसे आकर जापानी फौजके मध्यभागके बीचसे
 होती हुई अरथर-बन्दरकी ओर चली गई थी । निम्न समय
 जापानी फौजका मध्यभाग रूसी फौजके मध्यभागको पीछे हटा ला
 दूरतक ले गया ; उस समय इनके ओरके सिपाहियोंको वेतहाशा
 ट्रेन दौड़नेकी गड़गड़ाहट सुनाई दी ; इनके बाद ही पञ्चतमा-
 लाओंके भीतरसे रूसी फौजसे खचाखच भरी एक ट्रेन आती
 दिखाई दी । एक एक धुआं फंफना एञ्जिन ट्रेनको ले रूसी
 फौजके युद्धमें प्रवृत्त मध्यभागके ठीक पीछे पश्च खड़ा हुआ
 और रूसी फौज अपने इधियार मंभाल ट्रेनसे उतर युद्धमें
 प्रवृत्त हो गई । ट्रेन युद्धमयत्त वापस जीट तेलिसू, रेल-रेलनमें
 आ खड़ी हुई । आधुनिक समयकी इन ट्रेन और प्राचीन-
 काएके योद्धानोंके रथमें बहुत थोड़ा अन्तर है । ट्रेनको
 रजिगन कहता है, प्राचीन समयके योद्धानोंके रथ अथवा हारा खींचे

जाती थी। लोग कहते हैं, कि जैसे जैसे समय आगे बढ़ता है, वैसे वैसे समयाधीन बातें भी आगे बढ़ती हैं, किन्तु कितने ही लोगोंका यह कहना है, कि समय आगे नहीं बढ़ता, बल्कि पक्षीके पाटकी तरह घूम घूमकर एक ही जगह रहता है और समयाधीन बातें भी आगे नहीं बढ़ती, बल्कि एक ही घात धरंवार घूमकर सामने आती हैं; हां उसके रूपमें थोड़ा बहुत परिवर्तन होता है, जिससे लोग उसे पहचान नहीं सकते। खैर; ताजाइम रूसी फौजके एकाएक युद्धस्थलमें पहुँचनेसे रूसी फौजके मध्यभागमें कुछ जान घा गड़ और बह हर्षध्वनि करता आगे बढ़ा; किन्तु जापानी फौजका मध्यभाग अत्यन्त प्रवण था और उसने अपनी वज्र-सृष्टिसे रूसी फौजको अग्रगति रोक अन्तमें उसे पीछे टक्के दिया। जापानी फौजका मध्यभाग किसी कदर अपने दाहने भागकी ओर झुकता हुआ आगे बढ़ रहा था; इसलिये रूसी फौजका मध्यभाग अपने बायें भागसे जुदा हो जापानी फौजके दाहने भागके सामने पहुँचनेपर बाध हुआ था।

जापानी फौजके मध्यभाग और दाहने भागके युद्धारम्भ करनेके बहुत देर बाद बायें भागने युद्धारम्भ किया। पहले हीं कुछ दूके हैं, कि रातोंरात जापानी फौजका बायां भाग घूमकर रूसी फौजके दाहने भागके पीछे पहुँच गया और वहाँके ऊँचे ऊँचे गिरिशृङ्गपर अपनी बड़ी बड़ी तोपें चढ़ा दी थीं। कुछ दिन चढ़नेपर इन तोपोंसे रूसके दाहने भागपर गोलावृष्टि आरम्भ हुई। रूसियोंने अपनी दुर्बुद्धिताकी वजह अपने दाहने भागमें हीं अघिर फौजे' जमा कर रखी थीं। विशेषतः

इसी भागके पीछे एक पञ्चमालाकी तराईमें कब्जाक और द्रुगून फौज सुरक्षित रखी थी रूसियोंने स्थिर किया था, कि जिस समय जापानी फौजे युद्धकाल्त होंगी, उस समय इस जवरदस्त फौजको जापानी फौजोंपर धावा करनेकी आज्ञा दी जायेगी और एक ही धावेमें वह फौज जापानियोंको कुचल बिलकुल परास्त कर देगी। किन्तु रूसियोंकी यह मनोकामना मन हीमें रह गई। जापानी फौजके बाधे छोरने रूसी फौजको अपनी पसरी हुई भुजाओंके भीतर ले सामने और पीछेसे जब लुखपर गोला-वृष्टि आरम्भ की; तब रूसी फौजका बायां भाग षड़ी ही दुर्दशाको प्राप्त हुआ। जापानी आपनल गोलोंके फटनेसे रूसी फौजपर लाल लाल गोलियोंकी वृष्टि होने लगी; बहुसंख्यक रूसी एक साथ जमीनपर लोटने लगे। रूसी तोपखाने लाख लाख चेंपा करके भी जापानी तोपखानोंकी अग्नि-वृष्टि घटा न सके। यह देख रूस-सेनापति टाकसवर्गने अपनी फौजके दाहिने भागमें रक्षित। कब्जाक और द्रुगून फौजको जापानी तोपखानोंपर धावा करनेकी आज्ञा दी। विगुल वजा; रूसी फौज तखवारें खींच बरछे तान जापानी तोपखाने की ओर आधीकी तरह झपटी। फौजकी घेरांकी आवाजसे दिशायें परिपूर्ण हुईं; धलिका वादण उड़ा। जापानी तोपखानोंने रूसी फौजका आना देख अपनी तोपोंके सुँह फौजकी ओर फेरे और अपने तोपखानोंसे कुछ आगे बढ़ जापानी पलटनें रूसी फौजपर गोलियां बरमाने लगीं। मानशान-युद्धके धावेमें जो हाल जापानी पलटनेंका हुआ था; इन धावेमें वही हाल जापानी फौजका हुआ। गोलियोंकी वृष्टिसे प्रत्येक पक्ष बहुसंख्यक

सिपाही मरकर गिरने लागे ; गोलींकी वृष्टिसे पल पलपर बहुतेरे रूसी सवार अपने घोड़ोंके साथ चीथड़े होन लगे । जिस राहसे फौज चली, वही राह देखते देखते हताहत सिपाहियों, घोड़ों और सवारोंसे परिपूर्ण हो गई । आहत घोड़ों और सिपाहियोंके चीत्काररूपसे पार्वत्य-भूमि वारंवार प्रतिध्वनित होने लगी । गोलींकी चोटसे उड़े घीड़े और सिपाहियोंकी देहके चीथड़े दूर दूर जा गिरने लगे ; इनके गिरनेसे आकाशसे रुधिर-मांसकी वृष्टि होती जान पड़ती थी । वानशान-युद्धके धावेमें जितने जापानी आगे बढ़े थे, वही सब मारे गये थे ; उनमें एक भी जीवित नहीं बचा था ; किन्तु इस धावेमें वही बात नहीं हुई । कुछ देरतक तो रूसी सिपाही गोला-गोली-वृष्टिकी कोई परवा न कर आगे बढ़ते गये ; किन्तु अन्तमें यह आंच उससे बर-दाशत नहीं हुई । फौजकी पंक्ति टूट गई । फौजका प्रत्येक सिपाही बड़ी ही बेतरतीब और घबराहटके साथ पीछे पलट भागा । भागते हुए सिपाही भी जापानी गोली-गोलींकी चोटसे मारे गये ; जो वही वही नाना ओरसे अपने तोपखानोंके पीछे सुरक्षित स्थानोंमें ठहरे । रूसियोंका यह धावा विषम अर्थ ही नहीं हुआ ; बल्कि इसमें उनकी बहुत बड़ी क्षति हुई ; इन क्षतिके समाचारसे समग्र रूसी सिपाही उदास हो गये ।

जापानी फौजके साथे भागता तोपखाना फौजको महीनें मिला अब अपनी मारी शक्ति रूसी फौजके हाथने भागके उड़ानेमें व्यय करने लगा । रूसी फौजके दाहने भागपर बड़ा सङ्कट उपस्थित हुआ । उसपर सामने, बागल और पीछे तीन ओरसे एक साथ महत्त महत्त आपनक गोलींकी वृष्टि होन लगी । रूसी

जापानी पीछे पीछे आरते दिखाई देते थे। कवाइए नहीं थी, कायदा नहीं था, ओरसे झोरतक भागड़ थी; कहींके रूसी सिपाही जल्द जल्द भाग रहे थे; कहींके धीरे धीरे। कहीं कहींके रूसी घमकर तलवार-खड्ग भी चला देते थे, जिसके वदले बड़ी ही बेदरदोसे प्रायः सबके सब काट दिये जाते थे।

इसीतरह भागते भागते अन्तमें रूसी तेलिस्तू नगर अपने पीछे बढते हुए जापानियोंके अधिकारमें छोड़ तेलिस्तूसे पीछेकी सुविशाल पर्वतमालाकी तराईमें पहुँचे। इससे आगे पीछे छटनेकी सिर्फ़ तीन ही राहें बानी तोन पहाड़ी घाटियां थीं। इस जगह पीछा करनेवाली जापानी फौजे रूसियोंसे जुदा हो कुछ पीछे ठहर गईं और घाटियोंके सामने जल्द जल्द तोपें लगाने लगीं। एक ओर रूसी फौजे समझत ही घाटोके मुहानेमें धंसीं; दूसरी ओर मुहानेके सामने लगी जापानी तोपोंको कल घुमाई गई; बड़ा ही भयङ्कर शब्द हुआ; युद्धस्थल दूरतक पन्धरी पर्वतमालाकी तराई होनेकी वजह वारंवारकी प्रतिश्रुतिसे शब्द और भी भयङ्कर हुना; साथ साथ अमंख्य आपनल या छापानल गोले भागते रूसी सिपाहियोंकी भीड़पर पड़े और उनसे सहस्र सहस्र गोलियां निकलकर बरसीं। बहुतरायदा रूसी थककर और सिपाही एक साथ गिरे; कितने ही निमतारह गिरे, उखीतरह गिरे रहे; कितने ही गिरकर करवटें लेने लगे; दन करवट लेनेवालोंमें कितने ही ह्राय ह्राय करने लगे; कितने ही आँसु निकाल उन्मत्तकी तरह भयङ्कर आँकार करने लगे। अपने साथियोंको यह दुर्गति भागते हुए अन्याय रूसी सिपाही अपने रक्षाके लिये

और भी शीघ्रतापूर्वक भागे। किन्तु यमदूत मड़े हँस रहे थे, कि हमसे वचकर कहाँ ? पहली बाढ़के बाद ही जापानी तोपें घाटियोंमें विषम अग्नि बृष्ट करने लगीं। घाटियां खुसी हुआ-हतोसे प्रायः भर उठीं। इस जगह खुसी फौजको बड़ी क्षति पहुँची। जबतक खुसी सिपाही घाटीमें जापानी तोपोंके सामने रहे, तबतक तोपें दगती रहीं और खुसी सिपाही उड़ते रहे। खुसी सिपाही, तबतक उड़े, जबतक वह घाटोंकी राह इस अग्नि-दृष्टिमें तयकर घाटीके मोड़ सुरक्षित स्थानमें पहुँच न गये। इस स्थलमें जापानियोंने खुनियोंके पीछे फौज भेजी नहीं थी; अड़तीस घण्टेके अविरोध अमके उपरान्त जापानी फौजको विश्रामकी बड़ी जरूरत थी और प्रीक्षा करनेका काम तोपखाना कर ही चुका था।

यूरोपके बहुतेरे लोगोंको भागते हुए खुसियोंके इस्तरह उड़नेसे बड़ा ही मनोदुःख हुआ था। टाइम्सके संवाददाताने इसे सिर्फ "जापानियोंकी गोलावृष्टिकी विभीषिका" कह टाल दिया। किन्तु वैश्वलके 'रुद्ध-जापान-युद्ध'में लिखा है,—“यह पहली बार प्रकृतरूपसे स्थलकी बड़ी बड़ी तोपें पीछा करनेके काममें व्यवहृत हुईं; वर्तमानकालके सर्वोत्कृष्ट तोपखानोंके जवान इसे गर्वान युद्ध-विद्याका एक अच्छा अङ्ग समझते हैं। सभी कभी सुदृढ़ गोलन्दाजोंके हाथकी तोपें भागते शत्रुका पीछा करनेवाले रिमालेकी तलवारोंकी अपेक्षा भी अधिक काम देती हैं। सभी कभी भागते हुए सिपाहियोंकी भोड़में हुए विजयी सिपाही तबतक तलवारें चलाते हैं, जबतक वह कुन्द नहीं पड़ जायें और इनने आदमी काटते हैं, जितनोंके काटे जानेकी एक-

रत युद्ध-नीतिके कठोर विचारसे भी दिखाई नहीं देती। किन्तु भागती हुई फौजके लिये इन सबकी अपेक्षा अधिक क्षतिजनक उन तोपोंकी मार होती है ; जो भागते सिपाहियोंसे-भरी राहोंके सामने किसी उँचाईपर लगा दी जाती हैं। भगेड़ू कल्पनातीत फुरतीके साथ प्रायः ले भागते हैं ; उनमें आशा नामकी नहीं रहती, उनकी शारीरिक तथा मास्लिष्क शक्तियाँ निरुद्योग हो जाती हैं। उस समय पीछा करनेवाले हिमाचली टोपोंके गर्जन, लपटोंकी हुई तलवारोंके अचतरण और तगे हुए भाजोंके निशेपणकी अनुपस्थितिसे भगेड़ूओंके मनमें धुंधला धुंधला सन्तोष प्रकट होने लगता है। किन्तु ऐसे समय इन सब विभीषिकाओंसे बड़ी विभीषिका भगेड़ूओंपर आकाशसे टूट पड़ती है। दूर एक धीमी आवाज होती है ; साथ साथ एक गोला आ भगेड़ूओंके शिरपर फटता है और उस फटे हुए आपनस गोलेसे सहस्र सहस्र गोशियाँ निकल प्राणनाशक जल-विन्दुकी तरह भगेड़ूओंके शिर या अङ्ग-प्रत्यङ्गपर गिरती हैं। उस समय भगेड़ू तभी बचते हैं, जब लंगड़ाते-कराहते घण्टोंक कष्ट सहन करते हुए भागते हैं और अन्तमें उस जगह पहुँच जाते हैं, जिस जगह उनके विमर्दिन साथी पहुँच हीन जा गिरते हैं।”

इसतरह तेनिस्सूकी लड़ाईमें जापानियोंने पूर्ण विजय प्राप्त की। यालू-युद्ध और नानशान-युद्धमें रूसी सिपाहियोंकी अपेक्षा जापानी सिपाहियोंकी संख्या अधिक थी ; इसलिये किसने ही स्वीकारे कदा था, कि संख्याधिक्यकी वजह से जापानी इन दोनों युद्धोंमें विजयी हुए। पूर्वोक्त युद्धमें जापानियोंके विजयी होनेका

और एक कारण उनके तोपोंकी अधिकता भी बताया जाता है ; किन्तु प्रेमोक्त युद्धमें यह कारण बताया नहीं जाता ; उसमें जापानियोंकी अपेक्षा रूसियों हीको तोपें अधिक थीं । किन्तु इस युद्धमें जापानियोंकी विषयप्राप्तिके कारणोंमें पूर्वोक्त दोनों कारणोंका पूर्ण अभाव था । इस युद्धमें कोई पैंतीस हजार जापानों और कोई पैंतीस हो हजार रूसी थे ; कोई एक सौ रूसी और कोई एक ही सौ जापानी तोपें थीं और अपने इसी समानसंख्यक बलसे रूसियोंकी जापानियोंने सिर्फ पराजित ही नहीं ; बल्कि बारंबार अच्छी तरह पददक्षित भी किया । इस युद्धका फलफल देख कहना पड़ता है, कि प्रथमोक्त दोनों युद्धमें जापानियोंने रूसियोंके बलकी घाह ली थी ; जैसे ही घाह मिल गई, जैसे ही जापानियोंकी मालूम हो गया, कि एक जापानी एक रूसीपर बहुत भारी है, ऐसे ही जापानी इस तीसरे युद्धमें निःशङ्कचित्तसे समानसंख्यक फौज ले रूसियोंके सामने ही अन्तमें विजयी हुए । इस युद्धमें विजय प्राप्तकर जापानियोंने जगत्को दिखा दिया, कि जापानी किसी विशेष कारणवश विजय प्राप्त नहीं करते ; बल्कि जापानियोंकी स्वदेशभक्ति, व्यात्माभिमान और बुद्धिपूर्वक आत्मोत्सर्ग ही उनकी दिश्यप्राप्तिका प्रधान कारण है ।

टाइम्सके फौजों संवाददाताने इस युद्धजनित क्षति-वृष्टिके सम्बन्धमें दड़ी ही खाद्योक्ति साथ संक्षेपमें लिख दिया है,—
 “रूसी अरपर-बन्दरकी घोर बर्फें और उसी सुषीकतमें फंसे जिनमें फंसनेके उपयुक्त थे । तेलिग्लू-युद्धमें रूसियोंके कोई दस हजार मिपाही हवाहत हुए । कितने ही कैदी, कितने ही फौजी मरते और बड़े तोपें जापानियोंके हाथ लगीं ।” रूस-

सेनापति कुरोपाटकिनने इस युद्धको बहुत ही अधूरी रिपोर्ट प्रकाशित की थी। उन्होंने लिखा था,—“हमारी ओरके तीन हजार सौ सिपाही हताहत हुए; किन्तु हताहतोंकी यह संख्या ठीक नहीं।” ठीक कैसे होती? कारण, इसक उपरान्त ही जापान-सेनापति अर्कने प्रकाशित किया,—“एक हजार आठ सौ चञ्चन रूसियोंकी लाशें हमने युद्धस्थलसे उठा करमें तोपीं; तीन सौ रूसी हमारे हाथ कैद हुए; कोई सात हजार चार सौ रूसी आहत हुए होंगे।” सिखा इनके रूसी सिपाहियोंकी बहू लाशें भी हैं, जिन्हें रूसी अपने साथ या रेलगाड़ीमें आहतोंके साथ ले गये। इस युद्धमें जापानको ओरके एक हजारसे भी कम सिपाही हताहत हुए।

एक ओर युद्धको समाप्तके उपरान्त विजयी जापानी फौज तेलिस्सू नगरमें प्रवेशकर विश्राम और आमोद-प्रमोदमें प्रवृत्त हुई; दूदरी ओर पराजित रूसी फौज घाटियोंसे निकल कैचौ नगरको ओर भागी। कैचौ नगर साइबेरिया-अरथर-बन्दरवाली रेल-लाइनपर था और यह लाइन अबतक रूसियोंके अधिकारमें थी; किन्तु ट्रुनके अभावसे पराजित रूसियोंको यह राह पैदा ही तय करना पड़ी। रातिके समय जब रूसी घाटी पार कर रहे थे, तब घोर वृष्टि हुई थी और उससे तरबतर हो आहत और आन्त-ज्ञान्त रूसियोंको यत्नया और भी बढ़ गई थी। युरोपके वैज्ञानिकोंने बताया था, कि इस वृष्टिके कारण भी जापानी ही थे; कारण, उन्होंने घोर गोला-वृष्टिकर वृष्टिके बादल उत्पन्न किये थे। चाहे जिसके कर्मफलमें हो; इसमें यह नहीं, कि वृष्टि होनेसे भागते हुए, बख्तबिहीन, आच्छा-

दनविहीन दुर्दशाग्रस्त रूसी और भी सङ्कटमें पड़े। फिर भी ; इससे रूसियोंकी भागनेकी शक्तिमें वैसी कोई कमी नहीं आई। १५ वीं जूनके तीन बजेसे १६ वींके सवेरेतक रूसी फौजे' कोई वाईस मीलकी राह तयकर कैची नगर पहुंच गईं ।

कैचीमें जिस समय रूसी फौजे' पहुंचीं, उस समय वह नितान्त दुर्दशाग्रस्त थीं। अक्षर-विपाही सभी बद्धवाम थे। २० वीं जूनको स्वयं कुरोपाटकिन इस पराजित फौजको देखने लंचे आये। उनके आनेका समानार पा रूसी फौजोंने अपनी दुर्दशाके चित्र बहुत ऊर्क मिटा दिये थे। कुरोपाटकिनने पराजित फौजको मैदानमें बुला उसे सन्तोष देनेके लिये उसके छाई सौ सैनिकोंको 'सिग्ट जार्ज' पदक प्रदान किये और कितनी ही आशापूर्ण बातें कहीं। चलते समय कुरोपाटकिनने पराजित फौजको लक्ष्यकर कहा,—“मैं शीघ्र ही तुमसे फिर मिलूंगा। मैं चाहता हूँ कि सुस्लेरीके साथ जापानियोंसे कुल सगर निकास ली जाये। हम यदि ऐसा कर न सकेंगे, तो धरने अपने घर लौट भी न सकेंगे।” इसके उपरान्त ट्रेन द्वारा कैची परित्याग करनेसे पहले कुरोपाटकिनने पराजित फौजके प्रत्येक उच्चपदस्थ व्यक्तरसे पृथक् पृथक् मिल बात ली और उसे खूब धैर्य तथा सन्तोष प्रदान किया। कुरोपाटकिनका यह कार्य फलश्रुत्य कैसे हो सकना था ?

पञ्चदश परिच्छेद ।



बलडोवटकका वेड़ा—अरधर-बन्दर ।

तेजिसूखकी लड़ाईमें परास्त होकर भी रूसके मनसे अरधर-बन्दरके उद्धारकी कामना न गई। कहते हैं, कि इस युद्धके उपरान्त अरधर-बन्दरके उद्धारकी दूसरी चेष्टाके समयमें रूस-मन्त्राट्ट चार और रूस-सेनापति कुरोपाटकिनके बीच खूब लिवापट्टी चली; अरधर-बन्दरवालोंको भी खबर दी गई, कि धराना नहीं; तुम लोगोंके उद्धारकी दूसरी चेष्टा की जायेगी। यह भी कहा गया,—“तुमलोग अरधर-बन्दरका सुहागा साफ और अपने जहाजोंकी मरम्मतकर स्थलकी ओरसे इस दूसरी चढ़ाईके समय बन्दरसे बाहर निकल जापानी वेड़ेसे टक्कर लेनेके लिये तयार हो जाओ।” उन्ही समय बलडोवटक-वेड़ेकी बन्दरसे निकल जापानी सौदागरो या वारवरदाशेके जहाजोंको घातमें पा डुवानेकी आज्ञा दी गई।

तेजिसूख-रणक्षेत्रसे भागे रूस-सेनापति एकादशवर्गके समैन्य अरधर-बन्दरकी ओर बढ़ने या न बढ़ने और अरधर-बन्दरकवाले वेड़ेके पूर्वोक्त आज्ञा प्रतिपादन क इने ध्यान करनेका ढाल यथास्थान लिवापट्टी जायेगा; इस समय हम बलडोवटकके रूसी वेड़ेकी बात लिखना चाहते हैं। जिस समय बलडोवटक-वेड़ेका शिकारकी आज्ञा मिली; इस समय वेड़ा रूस-सेनापति जेनसेनकी अधीनतामें निकल एडमिरल स्ट्रुडलाफकी अधीनतामें आ चुका था। पाठक पूछ

सकते हैं, कि जापानी सौदागरी; और बारबारदारी जहाजोंकी निह्वण्त शिकारी जेसेन बन्दे कर्तों गये । बलहोवचक-वेडोंको जो काम सौंपा गया था, उस कामके लिये जेनसेनकी अपेक्षा उपयुक्त मनुष्य और कौम ही सकता था ? पाठकोंकी यह आशङ्का व्युत्पन्न नहीं ; जेनसेन अपने अयोग्यता के लिये नहीं ; बल्कि एक दुर्घटनाके फलसे बन्दे गये थे । दुर्घटनाका संक्षिप्त विवरण इसतरह है,—बलहोवचक-वेडोंके चार जहाजोंमें एकका नाम 'बोगाटिर' था । यह चौबीस बड़ी बड़ी तोपोंमें सुसज्जित एक हजार सात सौ टनका छोटा जहाज था । मई मासमें एक दिन नौ-सेनापति जेनसेन अपने वेडोंके साथ शिकार टूँटनेकी अपलोद्य चैष्टार बलहोवचक वापस आये । उस समय बलहोवचक बन्दरके पंचेले सुहनेमें गूब कुहरा छाया हुआ था ; जल-स्थलमें कोई फर्क जान न पड़ता था । कहते हैं, कि इस कुहरकी वजह बोगाटिरके कप्तानको खानेकी जमोन दिखाई न दी और उनका जहाज जलमें जमोनपर चढ़ गया । जहाज पीछे घटानेकी चेष्टा व्यर्थ हुई ; खूब प्रयत्न करनेपर भी बोगाटिर जहाँदा तहाँ रहा । नौ-सेनापति जेनसेनको आशङ्का हुई कि एक दिन जापानी या जहाजशा फौज बड़ा उसे पैरा ले जा सकते हैं । इस आशङ्कासे आपने जहाजके कुल अस्त्र-धर सामान तोपादि उत्तार तारपेडो मार बोगाटिरको डूबा दिया । कोई पाँच लाख एरलिङ्गके बोगाटिरका ऐसा ही परियाम हुआ । इस दुर्घटनाके बाद ही जेनसेन पदच्युत हुए ; उनका पदभार एडमिरल स्कूटलामको मिला । इसीलिये कहा, कि जिन समय बलहोवचक-वेडोंको शिकारकी आज्ञा मिली, उस समय लखे

तत्त्वावधायक जैनसेनकी जगह स्कृडलाफ थे । स्कृडलाफ इस कामके लिये सम्पूर्ण उपयुक्त थे ।

शिकारकी आज्ञा पानेके उपरान्त १२वीं जूनको प्रातःकाल एडमिरल स्कृडलाफ वेड़ेके वाकी तीनों छोटे जह्जी जहाज—रोजिया, व्हिस्कर और ग्योमोवायके साथ जापानी अरक्षित जहाजोंके शिकारकी निकले । जापान द्वीप-पुञ्जकी मध्यम द्वीप हावो और उसके दक्षिण बागलके द्वीप किउशिउके बीच मिमानोसेकी नाम्नी चौड़ी प्रणाली है । १२वीं जूनकी प्रातःकाल व्हिस्कर-वेड़ा इस प्रणालीके सुहानेके सामने उत्तरसे पहुँचा । इस सुहानेसे छोड़े दृश कोमके फामिलेपर वेड़ेको दो जहाज दिखाई दिये, जो सुहानेके ओर जा रहे थे । वेड़ा उन जहाजोंकी ओर भपटा ; किन्तु उन्हें पान सका ; वह निर्विघ्न प्रणालीके सुहानेमें पहुँच गये । इसके बाद ही एक तीसरा जहाज प्रणालीकी ओर जाना दिखाई दिया । यह जह्ज जापानकी सुप्रसिद्ध 'नियन युमेन केगा' कम्पनीका इजुमो मात्सु नामक सुमाफिर जहाज था ; चीनसे आ रहा था ; जहाजने राहमें कुछ अक्षत और रुग्ण जापानी सिपाहो भी चढ़ा लिये थे । स्कृमी छोटा जह्जो जहाज 'ग्योमोवाय' इजुमो मात्सुके समीप पहुँचा और उसपर कितने ही गोले मारे ; दृश गोले जहाजकी ला ; उनको गति मन्द हुई ; वह डूबने लगा । जहाजके सुमाफिर नावोंमें मवार दो भागनेकी चेष्टा करत हुए पकड़े गये । सो निरे सुमाफिर थे, वह छोड़ दिये गये ; जो जापानी थे, वह बुद्धके वैदियोंमें मिलाये गये । उधर गोलोंको चोटसे जर्जर हो इल्लिम मात्सु डूब गया ।

यह पहला-शिकारकर रूसी वेड़ा और आगे बढ़ा। उसे ही जहाज मञ्चूरियाकी ओर जाते दिखाई दिये। इनमें एकका नाम हितैषी माखु था और दूसरेका साधु माखु। दोनों छः छः हजार टनके थे। प्रथमोक्त जहाजमें जापानी फौज और रसद घो और शेषोक्त जहाजमें फौजी तार-विभागके सिपाही, रसद और पोसेवाका पुल बांधनेका सामान। रूसी वेड़े और इन दोनों जहाजोंके बीच जब कोई आठ हजार गजका फासिला था, तब दोनोंने दोनोंको देखा। रूसी वेड़ेको देख दोनों अरचित्त जहाज बहुत धवराये और फुरतीसे घूम प्रणालीकी ओर भागे। किन्तु प्रणाली वहाँसे समीप नहीं; बहुत दूर थी; कोई चार कोसके फासिलेपर। रूसी वेड़ेका रोजिया जहाज साधु माखुको ओर झपटा और योमोवाय हितैषी माखुको ओर। कोई एक हजार गजके फासिलेसे पांच सौ गजके फासिलेतक योमोवाय हितैषी माखुपर बराबर गोला-वृष्टि करता रहा; इसके बाद महाभयङ्कर आपनल गोले बरसाने लगा। विलायती टाइमनके फौजी संवाददातने लिखा है—“आपनलकी पहली ही बाढ़में हितैषी माखुके कोई ही सौ आरोही हताहत हुए। दिन कोई एक बजेसे तीन बजेतक योमोवायने हितैषी माखुपर बहु-संख्यक आपनल गोले बरसाये। जहाजकी हीवारे और डेल गोला-गोली-वृष्टिसे चलनी दग गयी; जहाजमें सर्वत्र लाशों या जलमिश्रिते टिर दिखाई देने लगे; चारों ओर राधिर-घारा बहने लगी। गोला वृष्टिकी भयङ्कर यन्त्रणा सहकर भी हितैषी माखुके आरोहियोंने रूसकी वश्यता स्वीकार नहीं की। जो फौज जहाजमें सवार थी, उसने अफसरका नाम रूषी था।

सूचीकी आशासे सिर्फ एक सिपाही जहाजसे फाँद दितैवी मालके सङ्कटमें फ्रंसनेखा हाथ किनारे पहुँचानेके लिये सागर पैरता घला ; बाकी सब सिपाही अपनी जगह रह-नृत्यको प्रतीक्षा करने लगे। इस जहाजके रूपान और उनके दो अधीन अरु-



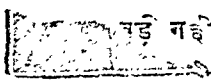
रूपके नौ-रतापति—स्वरूपान ।

अरु अङ्गरेज के। तीनोंके नाम यथ क्रम से,—मिटर कम्पन, मिटर विगप और मिटर गाल। यह तीनों अङ्गरेज अकसर यदि चाहते, तो खुशियोंकी आत्मन भ्रमणकर आत्मरक्षा कर सकते थे ; किन्तु वे नोने हस्तते वश्ये अपने स्वामी आपानियोंके लिये प्राण्योत्सर्ग

करना ही अग्रा कर्तव्य थिर किया। तीनों अन्तिम समय तक हितैषी मारुमें अपनी जगह खड़े और अपना दार्शन्य पालन करते रहे। आपनज गोलेजो वृष्टिसे अगणित मनुष्योंकी छता-छतकर अन्तमें योमोवायने हितैषी मारुपर कई तारपेडो मारे। गोलोंकी चोट हीसे जहाज धीरे धीरे डूब रहा था; तारपेडोकी चोट खा फटकर शीघ्र ही डूब गया। डूबते हुए मनुष्यों और पशुओंके छटपटानेसे सागर-जल अत्यन्तकी लिये बढ़ा ही पचक हुआ; जहाजोंके रक्तसे जल कुछ देरके लिये लाल दिखाई दिया। हितैषी मारु डूब गया; उसके साथ साथ कोई एक हजार जपानो डूब गये; अपने स्वामी और मित्र जापानियोंके लिये तीनों अङ्गरेज भी डूब गये।

एक और योमोवायने हितैषी मारुका यह हाल किया; दूसरी ओर रोजियाने साथ मारुकी जा टीका। रोजियाका सङ्केत देख साथ मारु टहर गया। इस जहाजमें भी कई जहाजी अफसर अङ्गरेज थे। उनमें एक अफसर रोजियाने गया और वहांसे अपने साथ कितने ही रूसी डिपाही और अफसर साथ मारुमें लाया। एक रूसी अफसरने साथ सृष्टि-क्षितिजमें लहा, कि तुम शीघ्र यह जहाज खाली जापान होका था। जहाज डूबा दिया जायेगा। कप्तानने रूसी बख्शीबशक-बड़े के अधिक सप्रय मांगा, तो रूसी अफसरहोंनेका मेजा जहाज रूसी "दुना समय दिया था नहीं सन्तिलने उपस्थित हुआ था। रक्षाके लिये तुम्हारे जड़ी जहाज; इस जहाजने भी उसी-अफसर-कप्तानने यह बातें ही रूसी अफसर रोजियाकी लहर अपने रूसी अफसरने जहाजवालोंकी प्रहुराका एन्डका बेड़ा रूसी

नहीं है, वह एक घण्टे के भीतर जहाजसे चले जाये, एक घण्टे के बाद जहाज डूबाया जायेगा। कोई एक हजार आदमी जहाजमें थे, जिनमें कोई छः सौ आदमी सिपाही नहीं थे। यह आज्ञा सुन यह सब जहाजसे उतर नावोंमें सवार हो गये। कोई चार सौ सिपाही जहाजमें रह गये। उन सबने रूसी अफसरोंसे साफ साफ कह दिया,—“मृत्युका भय हमसे वश्यता खोकार करा नहीं सकता।” यह सुन रूसी अफसर अपने जहाजमें लौट गये और निर्धारित समयके अतीत होनेपर रोजियाने साधु माहूको दो तारपेडो मारे। प्रायद और भी तारपेडो मारे जाते; किन्तु ऐसे समय क्षितिजमें एक काला धब्बा दिखाई दिया; रोजियाने दूरबीनसे देखा, कि यह नन्हासा धब्बा एक जापानी जहाज जहाज है। यह देखते ही रोजियाके अफसर सब झुक भूल आतारवाका यत्न करने लगे। साधु माहूको छोड़ रोजिया एक और भागा। रोजियाके अफसर अपनी समझमें साधु माहूको अत्यन्त क्षतिग्रस्त कर चुके थे; किन्तु भगवान्ने साधु माहूकी रक्षा की थी। दोनो तारपेडोके बनये

 नहीं थे। जैसे ही रोजिया भागा, वैसे ही

कोई चार सौ जापानी सिपाहियोंने जहाज

के नीचे और नवजीवन लाभ करनेके उपलक्ष्यमें

सन्ध्या ही रही थी; सुगभीर सागर-सखिलपर सान्ध्य अन्वकार फैल रहा था; जो झुहरेकी वजह प्रगाढ़से प्रगाढ़तर होता जाता था; इस अन्वकारकी रूखी वेड़ा अपने सौभाग्यका सुफल समझ एक और भाग। कोई कोई कहते हैं, कि बल्डीवटककी और भागनेके समय राहमें रूखी वेड़ेने जापानके दो पाली जहाज भी डबाये; किन्तु रूसने स्वयं इसके सम्बन्धमें कुछ नहीं कहा। १६वीं जूगकी वेड़ेने अज़रेजीके जहाज एक्लाएटनकी पकड़ लिया। कोई साढ़े छः हजार टन वीभक्त लाइ एक्लाएटन जापानसे सिङ्गापुर जाता था; उसे पकड़ रूसियोंने बल्डीवटक भेज दिया; कहा,—“शत्रुके मालके सम्बन्धमें फ़ैसला करनेवाली बल्डीवटककी अदागत इस जहाजके सम्बन्धमें फ़ैसला करेगी।” हमारे राजा अज़रेजीके प्रति रूस विरकालसे ऐसा ही घसाधु व्यवहार करता आया है। बल्डीवटकका वेड़ा यदहवास ही भागनेके समय भी अज़रेज-विद्देय न भूला।

टाइम्सके पौजी संवाद्दशताने ठीक ही लिखा है,—“सौभाग्य रूसियोंके प्रति रहस्य हुआ।” न होता, तो रूखी इस शिकारमें स्वयं शिकार ही जानेसे बच कैसे सकते? रोजियाने चित्तिजमें जिस जङ्गी जहाजको देखा था, वह सचमुच जापान ह्योका था। जापानी नौ-सेनापति कमीसुराके वेड़ेकी बल्डीवटक-वेड़ेके आनेका समाचार मिल गया था। उन्हींका भेजा जहाज रूखी वेड़ेको दृष्टता रोजियाके सामने चित्तिजमें उपस्थित हुआ था। रोजियाने जिनतरह इस जहाजको देखा, इन जहाजने भी उसी-तरह रोजियाको देखा। जापानी जहाजने रोजियाकी खबर अपने वेड़ेकी ही। समाचार पा कमीसुराका एम्बसा वेड़ा रूखी

वेड़े की और चला ; किन्तु रूसियोंके सौभाग्यवश कुद्धरे और साम्ब्यवन्धकार दोनोंने मिलकर जापानी वेड़ा और रूसी वेड़े के बीच एक गद्दरा परदा डाल दिया । जापानी वेड़ा पश्चिम और गया ; रूसी वेड़ा उत्तरसे भाग २०वीं जूनको निर्विघ्न बल्डीवयक पहुँच गया । उसकी यह यात्रा सज्जुलस वीती । इस यात्रामें बल्डीवयक-वेड़ेने कई जापानी जहाजोंका शिकार किया सही ; किन्तु ऐसा बड़ा शिकार वेड़ा कर सकता था, वैसा कर नहीं सका । भगवान्ने जापानियोंकी रक्षा की । जिस जगह और जिस समय रूसी वेड़ेने दितेधी मारू और साधु मारूको टोका था, उस समय और उस जगहसे कुछ ही आगे फ्रौजसे लदे तेरह बारबरदारीके जहाज जापानसे युद्धस्थलकी ओर जा रहे थे । रूसी वेड़ा यदि उन्हें पा जाता, तो जापानको बड़ी क्षति पहुँचाता ।

इस शिकारपर रूसियों और उनकी मितोने बड़ा आनन्द प्रकाश किया । साथ साथ जापानमें विषम उत्तेजना-स्रोत बहने लगे । जापानियोंने कहा,—“रूसियोंका यह कार्य उनकी भोक्ताका परिचायक है । रूसी सम्मुख समरमें ठहर नहीं सकते ; रूसी जङ्गी जहाज जापानी जङ्गी जहाजोंसे सामना करनेकी हिम्मतकर नहीं सकते ; इसीलिये वह इसतरहके कापु-रुषेचित्त कार्यमें प्रवृत्त होने हैं ।” इसीके साथ साथ सुवसुर प्यपच भाग्यहीन गौ-सेनापति कमीसुराके प्रति लोगोंने बड़ा क्रोध प्रकाश किया ; कहा,—“कमीसुरा यिन परपर हैं, उन पदके योग्य नहीं । एतवार नहीं ; यह दूसरे बार बल्डीवयक वेड़ेने पर किया और कमीसुरा अलाचार-नियारणका कीर्त

उपाय कर न सके। ऐसे ही कमीसुरा शीघ्र ही अपना पद परित्याग करनेके लिये बाध्य क्यों न किये जाये ?" जापानके साधारण लोगोंने और भी कहा,—“तोगो क्या करते हैं ? जिस-तरह उन्होंने अरधर-बन्दरका सुहाना बन्द किया; उसीतरह वह बल्डीवटकका सुहाना भी क्यों नहीं बन्द करते ?” नौ-सेनापति कमीसुरा रूमी वेड़ेके पहिले ही शिकारसे दुःखित थे; इस दूसरे शिकारसे और भी दुःखित हुए। कहते हैं, कि उस समय कमीसुरा दुःखसे अधीर हो आत्महत्या करनेके लिये प्रस्तुत हुए थे।

इस दूसरे शिकारके उपरान्त रूमियोंकी शिकारकी कामना प्रबलतर हो उठी। शिकार खेलनेके लिये बल्डीवटक-वेड़ेसे तारपेडो-नावोंका एक बड़ा भेजा गया, जिसने जापान-हीपपुञ्जके समीप कितनी ही छोटी छोटी नावें और दो एक बड़े पाली जहाज उदा निर्बिभ्र बल्डीवटक प्रत्यागत हुआ।

इससे बल्डीवटक-वेड़ेकी हिम्मत और भी बढ़ गई; एक दिन वह तीसरे बार शिकारके लिये बल्डीवटकके बाहर निकला। ३० वीं जूनकी प्रातःकाल बल्डीवटक-वेड़ा कोरियाकी जेनसाग-बन्दर पहुँचा। वेड़ा बन्दरके बाहर खड़ा हुआ; वेड़ेकी छः तारपेडो-नावें बन्दरमें गईं। बन्दरमें एक बाप्यबडसे चलनेवाला और एक पाली जहाज खड़ा था; इन दोनोंकी डूबा दुःखी नावें बन्दरसे निकल अपने वेड़ेमें मिल गईं। वेड़ेने जेनसाग-बन्दरपर गोलन्दाकी आरम्भ की; कोई दो ही गोलों तक ताककर मारे। बन्दरके पास ही पहुँच गईं। गोलन्दाकी समस्त बन्दरके अधिवासी बन्दर

परित्यागकर इस पर्वतके पीछे जा छिपे । इसलिये गोलन्दाजोंसे बन्दरके अघिवाबियोंको शारीरिक वैसे कोई क्षति नहीं हुई ; सिर्फ दो जापानी सिपाहों और दो कोरियावासो सामान्यरूपसे आहत हुए । हाँ बन्दरके मकानोंका अपेक्षाकृत कुछ अधिक नुकसान पहुँचा । कितने ही मकानोंको आग लग गई और किनारे ही मकान भूमिसात् हो गये । गोलन्दाजोंके उपरान्त ब्लाडीवष्टक-वेड़ा जेनसान-बन्दरसे रवाना हुआ ।

जेनसान-बन्दरपर इस दूसरे आक्रमणके फलसे चगतमें जापानियोंकी बड़ी निन्दा हुई । लोगोंने कहा,—“इतना कुप्रवन्ध ! इतनी असावधानी ! माना, कि कमीसुरा ब्लाडीवष्टक-वेड़ेके रोकनेमें पूर्ण असमर्थ है ; किन्तु जेनसान-बन्दरके जापानी अफसरोंने ब्लाडीवष्टक-वेड़ेके आक्रमणसे एकवार क्षतियस्त ही भविष्यतके लिये यह आक्रमण अर्घ्य करनेका कोई सामान क्यों न किया ? टोगो यदि बन्दरमें पहरेके लिये तारपेछो-नावें रख नहीं सकते थे, तो बन्दरके अफसरोंने बन्दरके सुहानेपर कुछ बड़ी बड़ी तोपें ही क्यों न लगावा दीं । इस दूसरे आक्रमणके दिन बन्दरके सुहानेपर यदि तोपें लगी रहतीं, तो तारपेछो-नावें बन्दरमें घुस जापानी अहाजोंके डुबानेका साहस कैसे करतीं ?” कितने ही लोगोंने इसीतरहकी कितनी ही बातें कहीं । जापानियोंकी घोरसे थोड़ीसी असावधानी हुई सही ; किन्तु इसके लिये वह अधिक निन्दाभाजन ही नहीं सकते । जान पड़ता है, कि ब्लाडीवष्टक-वेड़ेकी पहली चढ़ाईके उपरान्त ही जापान-सरकारने जेनसेनकी घोर अपनी वारवरदायीके अहाजोंका भेजना बन्द कर दिया था । ऐसा न होता, तो ब्लाडीवष्टक-वेड़ेको

इस दूसरे दौरमें कोई न कोई वावरशरीका जहाज निश्चय ही मिलता। इसतरह जड़ काट देनेकी वजह ही जापानियोंने जेनसान-बन्दरकी रक्षा का वैसा कोई प्रयत्न नहीं किया।

जेनसानसे रवाना होनेपर शिकार छूँटा बलडीवष्टक-वेड़ा सुशिमा-प्रणालीकी ओर निकल गया। इस प्रणालीके समीप ही कमीसुराका वेड़ा अवस्थानकर रहा था। भूलक देख कमीसुराका वेड़ा रूसी वेड़ेकी ओर झपटा। रूसी वेड़ा पहले हीसे चौकमा था। जैसे ही कमीसुराका वेड़ा रूसी वेड़ेकी ओर झपटा, जैसे ही रूसी वेड़ा अपनी पूरी शक्तके साथ बलडीवष्टककी ओर भागा। सन्ध्या समय कमीसुराका वेड़ा रूसी वेड़ेके समीप पहुँचा। कमीसुराने अपने वेड़ेके साथकी तारपेडो-नावोंकी आज्ञा दी, कि वह रूसी गोलोंकी कोई परवा न कर रूसी वेड़ेके समीप पहुँच उसपर तारपेडो द्वारा आक्रमण करें। छोटी छोटी द्रुतगति तारपेडो-नावें यह आज्ञा पा अपने वेड़ेसे जुदा हो तीरकी तेजीसे रूसी वेड़ेकी ओर झपटीं। रूसी वेड़ेने पहले गोलावृष्टिकर इन नावोंको रोकनेकी चेष्टा की; किन्तु इस चेष्टाका कोई फल नहीं हुआ। जापानियोंने गोलावृष्टिसे डरना सोखा ही नहीं था। रूसी वेड़ेने अपनी पहली चेष्टाका कोई फल न देख दूसरी चेष्टा की। रूसी वेड़ेके कुश जहाज अपनी बाहरकी कुश रीशनिर्था बुझा सहद्वार पर हाथ घोर अन्वहारमें मिल गये। जापानी वेड़ा—जापानी तारपेडो-नावें—रूसी वेड़ेकी देख न सकीं। इसतरह रूसी वेड़ेने अपनी प्रायश्चाती की। कमीसुरा रूसी वेड़ेके हाथसे निकल पानिस हाथ मलते रह गये।

जिस समय रूसका बलडीवष्टक-वेड़ा प्रिकारमें तत्पर था, उस समय रूसका अरथर-बन्दरवाला वेड़ा क्या कर रहा था ? चौकनेका प्रयोजन नहीं है। आ सोचते होंगे, कि अरथर-बन्दरका वेड़ा ही सही है, जिसका काम जाननेकी चिन्ता की जाये। आपका यह सोचना अनुचित नहीं ; किन्तु अरथर-बन्दरके वेड़ेको विलकुल नष्ट या निरन्त्रा रुमभ्रगा भी टोक नहीं। युद्ध आरम्भ होनेसे पहले अरथर-बन्दरमें रूसका बड़ा ही जवरदस्त वेड़ा था। रूस समझता था, कि यह जवरदस्त बड़ा जापानी वेड़ेको विलकुल ही नष्ट कर मकेगा ; किन्तु ऐसा नहीं हुआ ; इसके बदले जापानी वेड़े ने ही रूसी वेड़ेकी क्षतिग्रस्त किया। युद्ध आरम्भ होनेके उपरान्त जापानी वेड़े द्वारा अरथर-बन्दरका रूसी वेड़ा क्षतिग्रस्त हुआ था सही, उससे कितने ही जङ्गी जहाज टूटफूट गये थे सही, अरथर-बन्दरका सुधाना बन्द होनेसे बचेवचाये जङ्गी जहाजोंका बन्दरसे बहर निकलना असम्भव हो गया था सही ; फिर भी ; अरथर-बन्दरका रूसी वेड़ा पूर्णरूपसे नष्ट हुआ नहीं था ; उसमें बहुत कुछ जान बाकी थी।

आपदकालमें अदमी दिगुण शक्तिसे काम करता है। रूसियोंने अब देखा, कि अरथर-बन्दर भूमिकी ओरसे बिर गया, तब अरथर-बन्दरवाले वेड़ेके अनायाम ही जापानियोंके हाथ समनेके भयसे अरथर-बन्दरके रूसी आफसर सहस्र सहस्र चीना मजदूरों द्वारा एक ओर टूटेफूटे जङ्गी जहाजोंकी मरम्मत कराने और दूसरी ओर माइन द्वारा अरथर-बन्दरके सुधानेमें लूटे जापानी जहाजोंको उड़ा सुधानेकी राह माफ करने लगे।

रूसियोंने स्थिर किया, कि एक ओर जब जापानी सिपाही स्थलकी ओरसे अरघर-बन्दरमें प्रवेश करेंगे; तब दूसरी ओर अरघर-बन्दरका बड़ा जलका ओरसे अरघर-बन्दर परित्यागकर भागेगा। दिनरात कामकर सहस्र सहस्र चीना कुलियोंने घोड़े ही दिनोंमें टूटेफूटे रूसी जङ्गी जहाजोंकी मरम्मत कर दी। इस मरम्मतका समाचार पा रूसके बड़े खाट अलकसिफने अपने सम्पादकों तार द्वारा सूचना दी,—“अरघर-बन्दरके बड़े की मरम्मत हो गई; सिवा जङ्गी जहाज पेट्रोपावलस्की बाकी कुल जहाज युद्धके लिये तय्यार हैं।” जिस बड़ेके मर हो जानेका समाचार जगतभरमें घोषित हो चुका था, एकाएक उसी बड़ेके युद्धार्थ तय्यार होनेका समाचार पा लोगोंको बड़ा ही कौतुक हुआ: इतना ही नहीं; लोगोंका आश्चर्य तब और बढ़ा, जब यह समाचार प्रसिद्ध हुआ, कि बन्दरका सुहाना भाग हो गया; रूसके बड़े बड़े जहाज बन्दरके सुहानेसे धीमेधामे लगे। और यह दोनों समाचार तथे; अन्ततः व्याश्रिक-रूपसे निश्चय ही मत्त थे। रूसी जङ्गी जहाज फौलादीके पैरने हुए किले थे सही; किन्तु जो जापानी तारपेडो उन फौलादी किलोंको लगे, वह और भी भयङ्कर थे। एक एक जापानी तारपेडोने एक एक फौलादी किलेमें इतने बड़े सुरास बना दिये थे, कि उससे घादमी तो आदमी, अच्छा खासा सवारतक मजेसे निकल जा सकता था। इन सुरासोंपर पल्स पल्स घेगलों लगा रङ्ग फेर देनेसे लोईं टूटाफूटा जङ्गी जहाज युद्धके लिये अर्थात्क तय्यार हो सकता है, रूसी जङ्गी जहाज अर्थात्क तय्यार हुआ। और अरघर-बन्दरके सुहानेमें

एक समयमें सिर्फ एक जहाज अनेकाने लायत राह तय्यार हुई ; सो भी कब ; जब समुद्रमें ज्वार आता था, जब सागर-जल पुरसों बढ़ जाता था ।

यह समाचार सतर्क टोगोको यथासमय मिल गया । वह इसके सत्यासत्यकी जांचका सुबसर छूटने लगे । अरथर-बन्दरसे कोई पन्द्रह कोसके फासिलेपर टोगोका बेड़ा ठहरा हुआ था । २३वींकी प्रातःकाल बेसाके तार द्वारा अरथर बन्दरके मामनेकी समुद्री-नावोंने टोगोको समाचार दिया, —“२३वींकी रातमें अरथर-बन्दरके सुहानेसे रूसी जहाज निकल रहे हैं ; कितने ही निकल चुके हैं ; कितने ही निकलनेको हैं ।” समाचार मल्य था । २५वींकी रातसे प्रातःकाल तक रूसके तीव्र जङ्गी जहाज और चार छोटे जङ्गी जहाज बन्दरके सुहानेसे बाहर निकल आये थे और बाकी निकल रहे थे । जो जङ्गी जहाज निकले थे, वह यथासम्भव सौदागरी जहाजोंकी आड़में थे ; और इम-तरह छिपे थे, भिन्नतरह गर्नोंके खेतमें ऊंट छिप सकता है । यह समाचार पर टोगो तुरन्त युद्धके लिये उठ खड़े हुए । कुछ छोटे जङ्गी जहाजोंको अरथर-बन्दरके सुहानेकी ओर रवाना किया और उनसे कह दिया, कि रूसी बेड़ेकी अपने पीछे लगाकर अर्धांतक समय हो, वहाँतक खुले समुद्रकी ओर निकल आओ । टोगो चाहते थे, कि खुले समुद्रमें अरथर बन्दरवाले बेड़ेसे आज युद्ध हो ; बेड़ेकी नवसञ्चित शक्ति आजमावे पाये ।

दिन कोई दो बजे टोगोके भेजे छोटे जङ्गी जहाज अरथर-बन्दरके सुहानेपर पहुँचे । वहाँ पहुँच उन्होंने देखा, कि उस

समयतक रूमी वेड़े ने सभी जङ्गी जहाज बन्दरसे बाहर निकल आये थे। सिवा जङ्गी जहाज पेट्रोपावतस्क और कई तारपेठो तथा डिब्रायेर-नावोंके रूसका अरधर-बन्दरवाला समूचा वेड़ा इस समय अरधर-बन्दरके सुहानेपर खड़ा था। वेड़ेमें जङ्गी जहाज जारविच, रेटविष्का, पोलटावा, सिवस्तपोल, परसेवीट और पवैदा था; छोटे जङ्गी जहाजोंमें क्यान, पलाडा, डायना, असकोल्ड और नाविक था। सिवा इसके चौदह डिब्रायेर नावें भी थीं। पचीस जलपानोंका यह बन्दरदस्त वेड़ा सजधजकर सुहानेके लिये तैयार था। निश्चय ही जापानी भी इस वेड़ेको देख आश्चर्यान्वित हुए होंगे।

किन्तु आश्चर्यान्वित होनेपर भी जापानी अपने कामसे गहरी चूके। छोटे जङ्गी जहाजोंको अपने पीछे छोड़ कितनी ही डिब्रायेर-नावें आगे बढ़ीं और उन सबने रूमी डिब्रायेर नावोंको सुहाने प्रवृत्त किया। रूसका छोटा जङ्गी जहाज नाविक भी जापानी डिब्रायेर-नावोंसे भिड़ पड़ा। जापानी डिब्रायेर-नावें समुद्रमें धधरधध दौड़ती और रूमी नावों तथा जहाजोंपर गोले बरसाती धीरे धीरे पीछे हटने लगीं। जापानी नावोंका पीछे हटना देख समग्र रूमी वेड़ेमें हलचल पड़ी। जङ्गी जहाज जारविच-पर रूमी नौ-सनापति विशेष सवार थे; जहाजोंमें सबका धम-धर जारविच था; उसीके इशारेपर कुल जहाज काम करते थे। जापानी डिब्रायेर-नावोंके पीछे हटनेके साथ साथ जारविच आगे बढ़ा; उसके इशारेपर अन्यान्य जहाज पीछे पीछे चले। जापानी डिब्रायेरोंके साथ साथ जापानी छोटे जङ्गी जहाज भी पीछे हटने लगे। रूमी वेड़ा बड़े उल्हासके साथ जापानी जहा-

एक समयमें मिर्झा एक जहाज स्थानेजाने जायत राह तय्यार हुई ; सो भी कब ; जब समुद्रमें ज्वार आता था, जब सागर-जल पुरसीं बढ़ जाता था ।

यह समाचार सतर्क टोगोको यथासमय मिल गया । वह इसके सत्यासत्यकी जांचका सुबसेर छूँटने लगे । अरधर-बन्दरसे कोई पन्द्रह कोसके फासिलेपर टोगोका बड़ा ठहरा हुआ था । २३वींकी प्रातःकाल बेताकि तार द्वारा अरधर बन्दरके नामकेकी सम्बन्धी-बावोंने टोगोको समाचार दिया, — “२३वींकी रातमें अरधर-बन्दरके मुहानेसे रूसी जहाज निकल रहे हैं ; कितने छी निकल चुके हैं ; कितने छी निकलनेको हैं ।” समाचार मत्व था । २४वींकी रातसे प्रातःकालतक रूसके तीग जह्जी जहाज और चार छोटे जह्जी जहाज बन्दरके मुहानेसे बाहर निकल आये थे और बाकी निकल रहे थे । जो जह्जी जहाज निकले थे, वह यथासम्भव सौदागरी जहाजोंकी आड़में थे ; और इन्-तरह छिपे थे, जिसतरह गन्नेंके खेतमें ऊँट छिप सकता है । यह समाचार पर टोगो तुरन्त युद्धके लिये उठ खड़े हुए । कुछ छोटे जह्जी जहाजोंको अरधर-बन्दरके मुहानेकी ओर रवाना किया और उनसे कह दिया, कि रूसी बेड़ेकी अपने पीछे लगाकर जहांतक सम्भव हो, वहाँतक खुले समुद्रकी ओर निःशाल आओ । टोगो चाहते थे, कि खुले समुद्रमें अरधर बन्दरवाले बेड़ेसे आज युद्ध हो ; बेड़ेकी नवसञ्चित शक्ति आजमाई जाये ।

दिन कोई दो बजे टोगोके भेजे छोटे जह्जी जहाज अरधर-बन्दरके मुहानेपर पहुँचे । वहाँ पहुँच उन्होंने देखा, कि उन

समयतक रूसी बंदे के सभी जङ्गी जहाज बन्दरसे बाहर निकल आये थे । किंवा जङ्गी जहाज पेट्रोपावलस्क और कई तारपेटो तथा डिब्रायेर-नावोंके रूसका अरधर-बन्दरवाला मन्तवा बंदूक इस समय अरधर-बन्दरके मुहानेपर खड़ा था । बंदेमें जङ्गी जहाज जारविच, रेटविजा, पीलटावा, सिवस्तपोल, परसेवीट और पवैदा था ; छोटे जङ्गी जहाजोंमें क्यान, पलाडा, डायना, असकोल्ड और नाविक था । दिना इसके चौदह डिब्रायेर नावें भी थीं । पचीस जलयानोंका यह जबरदस्त बंदूक सबघनकर गृहके छिपे तयार था । निश्चय ही जापानी भी इस बंदेको देग आश्चर्यान्वित हुए होंगे ।

किन्तु आश्चर्यान्वित होनेपर भी जापानी अपने कामसे नहीं चूके । छोटे जङ्गी जहाजोंको अपने पीछे छोड़ कितनी ही डिब्रायेर-नावें आगे बढ़ीं और उन सबने रूसी डिब्रायेर नावोंकी गृहमें प्रवृत्त किया । रूसका छोटा जङ्गी जहाज नाविक भी जापानी डिब्रायेर-नावोंके भिड़ पड़ा । जापानी डिब्रायेर-नावें समुद्रमें धरधर दौड़तीं और रूसी नावों तथा जहाजोंपर गोले बरसाती धीरे धीरे पीछे हटने लगीं । जापानी नावोंका पीछे हटना देख समग्र रूसी बंदे में हलचल पड़ी । जङ्गी जहाज जारविच-पर रूसी नौ-सेनापति विशेष स्वार थे ; जहाजोंमें खसका अफसर जारविच था ; उसीके इशारेपर कुल जहाज काम करते थे । जापानी डिब्रायेर-नावोंके पीछे हटनेके साथ साथ जारविच आगे बढ़ा ; उसके इशारेपर अग्राय जहाज पीछे पीछे चले । जापानी डिब्रायेरोंके साथ साथ जापानी छोटे जङ्गी जहाज भी पीछे हटने लगे । रूसी बंदूक बड़े उल्हासेके साथ जापानी जहा-

जोंके पीछे पीछे दौड़ा। दौड़ता दौड़ता रूसी बेड़ा अरधर-बन्दरसे बहुत दूर निकल गया। कोई तीन बगैरे तक यह दौड़ हुई; मन्था छः बज गये; ऐसे समय एकाएक मन्थचा जापानी बेड़ा चित्तिजमें प्रकट हुआ। बेड़े में चार अखल दरजेके और एक दूसरे दरजेका जड़ी जहाज था, चार अखल दरजेके छोटे जड़ी जहाज थे, पांच तीसरे दरजेके छोटे जड़ी जहाज थे और तीस डिब्बाघेर-नावें थीं, जो दो भागोंमें विभक्त थीं। नारपेडो नावोंके पास ही डिब्बाघेर-नावें थीं। मन्था इनके रूसी बेड़ेको बहकाबर अरधर-बन्दरसे दूर निकाल ले जानेवाला छोटे जड़ी जहाजों और डिब्बाघेर-नावोंका बह छोटा बेड़ा तो था ही।

कितने ही लोग कहते हैं, कि टोगोके बेड़ेको सामने देख रूसी जहाजोंपर लड़ाईके निशान उड़ने लगे; किन्तु जैसे ही टोगोका बेड़ा रूसी बेड़ेके समीप पहुँचा, वैसे ही रूसी बेड़ा अपनी जगह छोड़ अरधर-बन्दरकी ओर भागा। टोगोके बेड़ेने पीछा किया और अरधर-बन्दर समीप देख अपने डिब्बाघेर-नावोंके बेड़ेको रूसी बेड़ेपर आक्रमण करनेके लिये आगे भेजा। उस समय सागर-जल स्थिर था और निर्मल आकाशके सुनिर्मल चन्द्रको साफ चाँदनी जलपर उसके साथ साथ नाच रही थी। ऐसे समय भागते हुए रूसी बेड़ेके अत्यन्त निकट पहुँच जापानी डिब्बाघेर नावोंने युद्ध आरम्भ किया। कहते हैं, कि जापानी डिब्बाघेर-नावोंके पहले ही आक्रमणने रूसी बेड़ेमें हलचल डाल दी। बेड़ेका धरक जहाज जापानी नावोंपर आक्रमण करता धरतीके साथ अरधर-बन्दरकी ओर

भागने लगा । रूसी गोलीको परवा न कर जापानी डिग्रायेर-
 नावोंने घुस घुसकर रूसी जङ्गी जहाजोंपर तारपेडो चलाये ।
 रान कोई डाढ़े ग्यारह बजे रूसी जहाज प्रत्येक क्षण जापानी
 डिग्रायेर-नावों के आक्रमणसे परेशान होते अन्तमें अरधर बन्दरके
 सुहानेके समीप अपने किलेकी तोपोंके आश्रयमें पहुँचे ।
 बन्दरके सुहानेकी राह अत्यन्त बहोली होने और मसुद-जलकी
 गहराई बड़े-बड़े नौनेकी बगल कोई छः घण्टेमें रूसी बेड़ा अर-
 धर बन्दरमें आ सका । जबतक बेड़ा बाहर था, तब तक जापानी
 डिग्रायेर-नावों द्वारा बारीबारी आक्रमण होता रहा । रूसियोंका
 कहना है, कि इस आक्रमणसे हमारी ऐसी कोई क्षति नहीं
 हुई ; किन्तु जापानकी सरकारो रिपोर्टमें निकला,—“इस आक्र-
 मणसे एक जङ्गी जहाज डूब गया और दो छोटे जङ्गी जहाजोंको
 बड़ी चोट पहुँची ।” जापानी रिपोर्टपर खोगोंने विन्यास किया,
 कारण, कुछ रूसी जापानी रिपोर्ट कभी मिथ्या प्रमाणित हुई
 नहीं थी । जापानने यह भी स्वीकार किया,—“इन दिग्दृष्टानोंमें
 हमारी डिग्रायेर-नाव शिवाकुमोको हलकी चोट आई ;
 उसके तीन डिग्रायी मारे गये और तीन घखमी हुए । तार-
 पेडो-नाव डिग्रायेरके रक्षिक गृहकी छतपर एक गोला पड़ा ;
 कोई घाहमी नहीं मरा । तारपेडो-नाव नम्बर ६४ और ६६ को
 छलकी हलकी चोट आई । सिवा इसके और कोई नुकसान
 नहीं हुआ । सिर्फ इतनी ही क्षति अरधर जापानियोंने अरधर-
 बन्दरके बंदेकी नीचा दिखाया । कोई बड़ा क्षण-युद्ध नहीं
 हुआ ; किन्तु जो हुआ, उसके एक बड़ा ही प्रभावशाली
 हुआ । अगले दिन लिवा : टोगोने भी आक्रमण कर लिया, कि

अरधर-बन्दरका वेड़ा सिर्फं पेरने और गिनती गिनानेके लिये पुनर्जीवित हुआ है ; सम्म ख समरमें डटकर युद्ध करनेके लिये नहीं। रूसी वेड़ेकी इस दिनकी काररवाइका हाल जान एक रूसी अफसरने कहा था,—“बस अब इस वेड़ेके अफसरोंके लिये यही बाकी रह गया है, कि जब जाप भी म्यलकी ओरसे अरधर-बन्दरमें दाखिल हों, तब रूसी अपने हाथों अपने जहाजोंको तोड़ पानोंमें डबा दें।”

इसके उपरान्त रूसी नौ सेनापति के निरुद्योग ही बैठ रहने-पर भी जापानी नौ-सेनापति अकर्मस्थ नहीं थे। २७ वीं जूनकी रातको अरधर-बन्दरपर टोगोको और एक चोट पड़ी। अबके १२ नम्बर तारपेडो-नावोंका वेड़ा धीरे धीरे आगे बढ़े बंदरके समीप पहुंचा। सर्व-प्रकाशमें इस वेड़ेको देख इसपर किलेकी तोपें गोले बरसाने लगीं। वेड़ा इस अग्नि-वृष्टिको तुच्छ समझ सुधानेके बाहर खड़े एक वेड़े या छोटे जड़ी जहाजके समीप पहुंचा और उसपर वेड़ेने कई तारपेडो चलाये। एक तारपेडो ठीक निशानेपर बैठा; बड़ा शब्द हुआ; रूसी जहाज शीघ्र ही डूब गया; विशालाकार जहाजके एकाएक डूबनेसे सागर-वज्र देरतक अत्यन्त विच्युब्ध रहा। इसतरह अपनी साहसिकता दिखा और वीरत्व प्रकाशकर जापानी तारपेडो-नावोंका वेड़ा बन्दरके समीपसे डट सुरक्षित स्थानमें पहुंच गया। जापानी वेड़ेके चौदह मिषाही मारे गये और तीन जखमी हुए।

इसके बाद कुछ दिनोंतक अरधर-बन्दरके सामने कितनी ही छोटी छोटी घटनायें होती रहीं। २८ वीं जूनको एक रूसी

डिह्रियेर-नाव टोगोकी सन्तरो-नावोंकी निगाह बचा अरधर-
बन्दरसे भाग निउच्चाङ्ग पहुँची और वहाँ तरह तरहके असार
समाचार प्रसिद्ध किये । इसके उपरान्त जूनके अन्तिम दो
दिनों अरधर-बन्दरपर खूब गोले बरसाये गये । ५ वीं जुलाईको
अरधर-बन्दरकी बगल की तालीनवान-खाड़ीमें एक दुर्घटना हुई ।
जापानका एक साधारण जहाज किसी कामसे खाड़ीमें बाहर
जा रहा था : ऐसे समय एक लूनी मारनसे टकरा डूब गया ।

अब आगे क्या होगा ? क्या बल्डीवटकका बेड़ा हर बार
शिकार खेल निकल जाया करेगा और जापानी नौ-सेनापति
कमीसुरा उसके निकल जानेपर हाथ ही मलते रहेंगे ? क्या
अरधर-बन्दरका बेड़ा धन और समय दोनोंके सहारे सिर्फ
इसलिये फिरसे तय्यार हुआ, कि एक ही दिनकी छलकी छेड़-
खाड़के बाद अरधर-बन्दरमें घुसकर बंट जाये ? इसका जवाब
हम कैसे दें ? कारण, यीत्र ही बल्डीवटक-बेड़ी कमीसुरा और
अरधर-बन्दरवाले बेड़ेके काम ही इन प्रश्नोंका उत्तर देंगे ।



षोडश परिच्छेद ।

ओजूकी अग्रगति—पंक्ति का मेल ।

जहाजी बेटोंकी बातें बहुत हुईं ; अब माल-सैन्यका कुछ हाल सुनाना चाहते हैं। माल-सैन्यका हाल सुनानेमें सबसे पहले हमें जापान-सेनापति ओजूकी ओर मुड़ना पड़ेगा ; क्योंकि उस समय इन ओजू हीकी सैन्यने सबसे पहले कितने ही कार्य किये थे ।

विवय-पुलकावलीसे पुलकित ओजूकी सैन्यकी हमने जापानियोंके नवाधिकृत तेलिस्सू नगरमें छोड़ा था। कोई दो दिनकी धकीमाही जापानी सैन्यने रातभर तेलिस्सूमें सुखपूर्वक विपाम किया। दूसरे दिन—यानी १६ वीं जूनकी बड़े सुबहे जापानी फौज तेलिस्सूसे निकल अपने बायें फ्लैल गई और फेलती फेलती निकटके समुद्रतटतक पहुंच गई। समुद्रपर जापानियोंका अधिकार था ; इसलिये कितने ही बारबरदारीके जहाज रस-दादि के समुद्रकिनारे खड़े थे। जापानी फौजके एक होरने समुद्रकिनारे पहुंच अपने जहाजोंसे इनदादि लिया और शीघ्र ही वह रसद तथा अन्य चीजें जापानी फौजकी मम्बुची लम्बाईमें पहुंच गईं। रसदसे लैस हो १६ वीं जूनको जापानी फौज तेलिस्सूसे आगे बढ़ी। बढ़ती हुई जापानी फौजकी पंक्ति बहुत ही खम्बी थी। जापानी फौजकी पंक्तिका राहना निरा तेलिस्सूके समीप था और बायां निरा समुद्र किनारे ।

पहले ही लिखा जा चुका है, कि रुस-सेनापति शकलवर्ग तेलिसू से भाग कैचौ पहुँचे थे। प्रधान सेनापति कुरोपाटकिनने शकलवर्गकी विध्वस्त और परदलित सैन्यमें और सैन्य मित्रा शकलवर्गकी फिर दलपृष्टि कर दी थी। शकलवर्गने अपनी फौजकी चौकियाँ बहुत दूर तक फैला दी थीं। कैचौ और तेलिसूके बीच सुनयावचिन नामक छोटासा एक नगर है। इस नगरसे भी बहुत आगेतक तेलिसूको ओर रुसी फौजकी चौकियाँ पड़ी थीं। इसीनिये क्रमशः कैचौको ओर बढ़ते जापानो गिरहादरीके सवार और रुसी चौकियोंके सिपाहियोंके बीच मारकाट चल पड़ी। ज्यों ज्यों जापानी फौज आगे बढ़ी, त्यों त्यों यह मारकाट बढ़ी।

ओजूकी फौज धीरे धीरे आगे बढ़ती थी; जिस जाह्न शब्दा होती थी उस जगह ठहर जाती थी। खोमे नहीं थे, डेरे नहीं थे; ऊपर आकाश प, नीचे अस्म भूमि थी। इसी भूमिपर जापानी फौज घेर फंजा चनेसे रातभर खोती थी। दिन जगह फौज खोती थी, उस जगहसे कुछ पानिखेपर रुगियोंकी ओर जापानियोंके सन्तरी और सवार उड़ते होते थे। छोड़ी पोड़ी दूरके पानिखेपर सन्तरियों और सवारोंकी बड़ी बड़ी चौकियाँ रहती थीं। ततएव यह, कि जिस जगह जापानी फौज खोती थी, उस जगहसे सामने ओरसे दूरतक सवारों और सन्तरियोंका एक बन्ना पराश नकार कर दिया जाता था। इन परसे ही जापानी फौज बढ़े ही तुखसे घेर फंकार खोती थी। फौजकी अपन सन्तरियों और सवारोंपर इनका विश्वास रहता था, कि फौज खोनेके समय बहुतसे सवारोंका बन्ना खोती तमिद

भी चिन्ता किया नहीं करती थी। रूसी गिरदावरोके सवार जापानी फौजकी संख्या आदि जाननेके लिये सन्तरियोंका परदा तोड़ भीतर घुसनेकी चेष्टा करते थे; किन्तु यह चेष्टा कभी सफल होती नहीं थी। हर रात सन्तरियों और रूसी गिरदावरोके सवारोंके बीच दस पाँच बार तलवारें चल जाती थीं; किन्तु रूसी एकवार भी सन्तरियोंको पंक्ति में जापानी फौजके समीप पहुँच नहीं सकते थे। रात्रि बीतने और सुप्रभात उपस्थित होनेसे अन्तरह अन्वहार दूर होता है; उन्नीतरह जापानी सन्तरियोंकी पंक्तिके पास झंडताते रूसी गिरदावरोके सवार दूर होते और दूर—अति दूर ठहर दूरकोन द्वारा जापानी फौजकी गतिविधि देखते। प्रायः नित्य ही प्रातःकाल उन्हें एक ही दृश्य दिखाई देता। सूर्योदयके साथ साथ एकएक विंगुल बजता; जापानी सन्तरी विंगुलकी आवाज सुन पंक्ति तोड़ जगह जगह खिमटकर खड़े हो जाते और इसके बाद तुरन्त ही पीछे हट जाते थे। सन्तरियोंके हटते ही पंक्तिबद्ध जापानी फौज खड़ी दिखाई देती थी। फौज सजधज लैस ही आगे बढ़नेके लिये तय्यार रहती थी। आगे बढ़नेकी आज्ञा मिलते ही फौजी बाजे बजने लगते थे; सन्तरियोंके घोड़े इधर उधर दौड़ने लगते थे और पंक्तिबद्ध जापानी फौजका हर एक सिपाही अपनी जमीनसे टिकी बन्दूकें बाधे हाथमें लटका आगे बढ़ाने लगता था। फौजोंके पीछे जगह जगह उन उदयोन्मुखी रविके प्यारे प्रकाशमें उदयोन्मुखी सूर्यसे चिह्नित जापानकी शाही पताकाधे प्रातःसमीर्यमें मन्द मन्द लहराने लगती थीं। बड़ा ही मनोरम दृश्य उपस्थित होता था। किन्तु सूरसे देखनेवाले

रूसी सवारोंको यह दृश्य अत्यन्त भयङ्कर जान पड़ता था। जापानी फौजका आगे बढ़ना देख रूसी सवार पीछे भागते थे और अपने पीछेकी चौकियोंको जापानी फौजके आगे बढ़नेका समाचार देते थे।

इसीतरह आगे बढ़ती और कभी कभी हठी रूसी चौकियोंको मट्टीमें मिलाती शीर्षो पूनको जापानी फौज तेलिसू और कैपै नगरके मध्यमें अवस्थित सुनयानचेन नगरके सामने पहुँची। जापानी फौज और नगरके बीच एक भी रूसी सिपाही या सवार नहीं था। जापानियोंको विश्वास था, कि सुनयानचेन नगरमें युद्ध होगा; इसलिए वहाँ पहले हीसे इस युद्धके लिये तय्यार थे; किन्तु नगरके सामने एक भी रूसी सिपाही न देख जापानियोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। सामाविलरूपसे जापानी अफसरोंके समने यह सन्देश हुआ, कि रूसी नगरमें छिपे बैठे हैं और भेदाग साफ दिखा जापानियोंको प्रलोभनमें डाल नगरके समीप बुला किन्तो पन्दे में पंजा निर्दयतापूर्वक मार डालना चाहते हैं। ऐसी ही चिन्ताकर जापानी अफसरोंने गिरदावरीके सवारोंको नगरके सामने नगरके पीछे भेजा और कई तोपोंके साथ गैर स्क्वाडरन रिवाला नगरकी ओर रवाना किया। रिवालेशो आशा है ही गई, कि जैसे ही शत्रु दिखाई दे, वैसे ही बड़ी चौड़ी प्रतिक्रिया में लगे हुए आरम्भ कर दो; सवारोंके लिये जापानी फौजके पहुँचने। रिवाला धीरे धीरे नगरकी ओर चला; परन्तु वह जापानी फौजके नगरसे दूर टहर रिवालेशो बढ़ना देखने लगी। रिवालेशो आगे आगे जापानी गिरदावरीके सवार थे। इन सवारोंने नगरके अत्यन्त समीप पहुँचकर भी रूसियोंका

कोई निशान न देखा। कई उत्साही सवार चोड़ा उड़ा नगरमें घुस गये; वहाँ उन्हें एक भी रूसी दिग्गड़ न दिया। जापानी अफसरोंको दह समाचार दिया गया। साथ साथ जो सवार नगरके पीछे भेजे गये, उन्होंने भी अफसरोंको समाचार दिया,— “रूसी शाश्वद नगरमें नहीं; काग्य रूसी निपाही नगरसे दक्षिण वैचौकी ओर हट रहे हैं।” वृथा बन्दूक किया गया। जापानी फौजोंको नगरमें घैटनेकी आज्ञा मिली। आगे आगे दिखाया था; पहले उमीने नगरमें घुस पगह जगह जापानी राजपताकाये उड़ाईं। रिनालके पीछे पीछे जापानी पलटने नगरमें घुसीं। ‘वेनजई वेनजई’को ध्वनिसे नगर प्रतिध्वनित हुआ। नगरकी प्रधान प्रधान इमारतोंपर—रेल-थे गनपर, तारवरपर, अदागतपर जापानी ध्वजा उड़ने लगी। सुनवानचेन नगर तीनसे रूसने लिया और रूससे हीन जापानने स्वाधिकारभुक्त किया। जापानमें रोमा ही लेन-देन हुआ करता है।

सुनयावचेनमें कोई दो दिन जापानी फौजने टहर विश्राम किया। इस अवसरमें जापानी फौजको चौकियां बराबर आगे बढ़ती रहीं। जापानी और रूसी चौकियोंके बीच हलकी हलकी कई लड़ाइयां हुईं। दो दिनों बाद २२वीं जूनको जापानी फौज सुनयावचेन नगरसे वैचौकी ओर बढ़ी। अबके जापानो फौजका आग्रामन और ही छड़का था। फौजमें आगे बहुत बड़ा शिवाला था, जो तीन टुकड़ोंमें विभक्त था; रिनालके पीछे पलटनोंको कई पंक्तियां थीं; इन पंक्तियोंके भरो पीछे रूसकी रूस जापानी पलटने थीं। दह फौज जब आगे बढ़ती थी, तब मनुष्य-भार खहरें मारता आगे बढ़ता जान पड़ता था। २२वीं-

की सभ्याको जापानी फौजका बायां भाग मोयशियाटुङ्ग ग्राममें पहुँचा और उषार अधिका कर तीपवाने लगा बैठ गया। इससे आगे बढ़ना आसान नहीं था। कारण, मोयशियाटुङ्गसे कुछ ही मासिटेपा कैची नगर था और खबर थी, कि सदलवल रुम-सेनापति आकसवर्ग कैची नगर अपने पीछे रात मोयशियाटुङ्गको और आगे बढ़ मोरचा बांध बैठे हुए हैं। जिस समयका हाल हम लिख रहे हैं, उस समय मञ्चूरियामें रुमो फौजके तीन प्रधान कैन्ड थे। एक लिशावपाङ्गमें, दूसरा हैचेङ्गमें और तीसरा कैचीमें। जापान-सेनापति ओकुकी फौज इन तीनोंमें श्रेष्ठोक्त केन्द्रस्थल कैचीके कामने पहुँच गई।

इसी जगह एक प्रयोजनीय बात सुन लेना चाहिये। फेङ्ग-झाङ्गकेङ्गमें बैठे कुगोकी और ताङ्गशानमें उतरे नोबूकी फौजकी पंक्ति इससे पहले ही एक दूसरेसे मिल गई थी; नोबूकी फौजका बायां हिस्सा ओकुकी फौजके दाहिने हिस्सेके पास पहुँच गया था नहीं; किन्तु अबतक इन दोनों सेनापतियोंकी फौजोंके बिरे आपसमें मिले नहीं थे। सर्वप्रधान सेनापति मारशल ओयासा इन दोनों फौजोंकी शीघ्र ही जोड़ देनेके लिये व्यत्यन्त चिन्तित थे। इतने दिनोंके बाद १३वीं जूनको मारशल ओयामाकी आन्तरिक कामना पूर्ण हुई। ओकुने मोयशियाटुङ्ग ग्रामपर अधिकार करने ही अपनी फौजका दाहिना भाग और आगे बढ़ा नोबूकी फौजके बायें हिस्से मिला दिया। अब जापानी फौजकी अर्द्धदन्ताकार बहुर बड़ी पंक्ति तयार हुई। जो रात: आधे मञ्चूरियामें पंक्त व्यवस्था करके लगी। उस समय जापानी फौजका दाहिना हिस्सा इरीवाटजिरीके रुदर सान लिशावपाङ्गसे इस आगे

मीतीन-लिङ्ग घाटीके समीप था और वहाँ मिरा लियावटुङ्ग-खाड़ीके किनारे। एक मिरा दूसरे मिरासे नैकड़ो नहीं, ती प्रनाधिक कोसके फासिलेपर था। इससे पहले किसी युद्धमें किसी जातिकी फौजने ऐसी पंक्ति तय्यार की नहीं थी; जापानियोंने पंक्ति तय्यार कर समग्र जागतिके लोगोंको आश्चर्यान्वित किया और रथप्रखिडतोंको एक नई वान दिखाई। यह पंक्ति तय्यार होनेसे पहले जापानकी तीनी फौजोंका लक्ष्य कोई समझ नहीं सका था; किन्तु इसके उपरान्त ही जान पड़ा, कि वह कुगेकीका यालू नदी पारकर झाङ्गचेङ्गकी खाधि क्षारमुक्त कर मोरजे बांध बैठ जाना, वह सेनापति नोजूका चुपके चुपके ताकूशानमें उतर आगे बढ़ना और वह ओजूका अरघर-बन्दरके समीप उतर अरघर बन्दरके घेरेका आघोषनकर बराबर कैचौकी और उन्नमर होना, — यह सब—आदिसे अन्ततक—इसलिये हुआ, कि तीनी जापानो फौजे' मिसकर एक बहूत बड़ा अर्द्धचन्द्राकार ब्यूह तय्यार करे'। सुननेसे आश्चर्य होगा, कि युद्ध आरम्भ होनेसे पहले ही मारशल ओयामा इस ब्यूहरचनाकी कल्पना कर चुके थे। ओयामाके आज्ञानुसार धीरे धीरे जापानी फौजोंने अपना काम किया,— धीरे धीरे यह ब्यूह तय्यार होने लगा। जब यह ब्यूह तय्यार हो चुका, तब जागतिके इसे देखा; क्या ही अपूर्व अलौकिक ब्यूह था।

सहस्र सहस्र रूसी तोपें, सहस्र सहस्र रूसी सवार, सत्स लक्ष रूसी क्षिपाही इस अर्द्धचन्द्राकार ब्यूहके भीतर आ गये। त-सेनापतिसि कुरोवाटकिन आगणित बड़ी बड़ी लड़ाइयोंके बोद्धा थे। लड़तेलड़ते उनकी उन्नमर लगी थी; लड़ते लड़ते उन्होंने

अपने यौवन और बाल्यका अनेक अंश बिताया था। कुरोपाटकिन युद्धविद्याके सुपण्डित थे; युद्धविद्याके सम्बन्धमें कुरोपाटकिनने कितनी ही पुस्तकें रची थीं; जो युद्ध-विद्याशिष्याओं को पढ़ाई जाती थीं। किन्तु यही कुरोपाटकिन जापानी सैन्यका यह अपूर्व ब्रह्म देख चौंक पड़े; इससे पहले उन्होंने इस ब्रह्मकी कल्पनातक की नहीं थी। कुरोपाटकिन समझ गये, कि इस अभूतपूर्व आयोजनके फलसे अभूतपूर्व युद्ध होगा। हुआ भी ऐसा ही। जापानकी इस ब्रह्मरचनाके उपरान्त सचमुच ही ऐसे युद्ध हुए; जैसे गत शत शत वर्षमें हुए नहीं थे।



सप्तमः परिच्छेदः ।

सेनापति ओजू और नोचूको फौजी गति-विधि—अपूर्व
घोर समाप्तन प्रज्वलित होनेको तथ्याख्या ।

बुलावा भी नहीं; महासमाप्तपूर्वक प्रेरित निमन्त्रण भी नहीं; जिस बातके होनेका समय आता है, वह बात व्यपही आप ही जाती है। वर्षाकाल उपस्थित होते हो वृष्टि होती है; शीतकाल आते हो प्राणो शीत अनुभव करते हैं। मञ्चूरियोंमें जापानियोंका अर्द्धचन्द्र यह तय्यार होते ही एक ही समयमें नाना और नाना युद्धज्वालाओंके प्रज्वलित होनेका समय आ उपस्थित हुआ; युद्धज्वाला कैसे प्रज्वलित न होती ?

इस अर्द्धचन्द्र यूःके दक्षिण भागमें कुरोकीकी फौज थी, मध्यभागमें नोचूकी और वामभागमें ओजूकी। यूःहमें दाहने रहनेकी वजह पहले कुरोकी होकी सैन्यकी गतिविधि लिखनेकी इच्छा होती है। सिवा इसके आघद पाठक भी सोच सकते हैं, कि इतने दिनोंका इतना हल लिखा गया; कुरोकीका क्यों लिखा न गया ? वह क्या करते थे ? क्या वह इतने दिनोंसे निकम्मे बैठे थे ? नहीं; कुरोकी निकम्मे नहीं थे; प्रत्यक्षमें दैमा काम न करके भी वह धीरे धीरे विजयकी आवश्यकतावी और ध्रुव निश्चय बनानेकी तथ्याख्या कर रहे थे। कुरोकीका स्वभाव पाठकोंको याद रह सकता है और उनकी युद्ध सम्बन्धीय तथ्याख्या भी पाठकोंकी सम्भवतः भूल नहीं सकती; वह आसाधारण पुरुष थे। उन्हें सबसे बड़ी चिन्ता थी सदरथो; वह सोचते थे; कि यथास-

मय और वयास्यान रसद पहुंच न सकेगी, तो उनकी फौज युद्धमें कैसे प्रवृत्त होगी। कुरोकीको फौजकी स्थिति भी उस जगह थी, जिस जगह रसद कठिनतासे पहुंच सकती थी। ओजूकी फौजका बचाव छोर वसुद्रसे लगा हुआ था; जहाजसे रसद उतरती और उनको फौजमें बंट जातो थी; नोजूकी फौज जिस जगह थी, उस जगहसे कोरिया-खाड़ेका ताकुमान-बन्दर दूर नहीं था; जहाँसे नोजूकी फौजको बराबर रसद मिलती जाती थी; एक कुरोकी छोटी फौज उस जगह थी, जिस जगहसे वसुद्रका किनारा बहुत दूर पड़ना था; इसलिये वसुद्रसे यालू नदीमें जहाज आते थे और उन जहाजोंसे रसद उतरती और यालूकिनारेसे उस सुदूरकी मोतीनलिङ्गनद फँतो कुरोकीकी फौजमें पहुँचती थी। कुरोकीने आगे बढ़नेसे पहले रसदकी राह और उस राहकी रक्षा बन्दावस्तु किया। यालूकिनारेसे उस चाण्डुङ्ग नगरसे कुरोकीकी फौजतककी सुप्रसन्न शाहबाह और भी प्रसन्न तथा हम करा ही और जगह जगह बढ़े छोटे दितने ही एक बंधवा दिये और एक छोटी पटरोकी रेल चाण्डुङ्गमें फैलानेकी समस्तक विश्राना आरम्भ किया। इससे अधिक यह किया, कि राहकी होनी और वयास्यान वैज्ञानिक रीतिसे छोटे छोटे अथवा अत्यन्त सुदृढ़ दिये बंधवा दिये। वर्षाकाक था; इसलिये इस किलेमें जो सुविशाल छावनी बनाई गई, उसकी आसानी लिये विशेष प्रयत्न किया गया। युद्धसमयमें पड़ी फौजोंको आसानी भी प्रयत्न किया गया। और यह सब प्रयत्न इतनी सूक्ष्मरतीकी साथ हुआ, कि उसे देख विदेशी द्विद्वान्वेषी रस-पत्रिकीय भी प्रशंसा का। एक दिन कुरोकीकी फौजकी यूरोपीय

राजदूत तथा समाचारपत्रोंके संवाददातागण झुरोकीकी बनवाई इन सब जागहोंकी नैरकी गये थे। नैरार कितने ही लोगोंने कहा था,—“जिस अवस्थामें जापानी फौज थी, उस अवस्थामें रूसनेपर कोई भी युरोपीय फौज इतना कुछ स्वीकारकर ऐसे सामान तय्यार न करती।”

सिवा इसके इस अवसरमें झुरोकीकी फौजमें और भी कितने ही काम किये थे। पीछे हम लिख आये हैं, कि नोङ्गूकी फौज ताङ्गुशानमें उतरी थी और एक दिन उसने आगे बढ़ रूसके शिवयेन नगरपर आक्रमणकर अधिकार कर लिया था। इस अधिकारके उपरान्त इसी शिवयेनमें झुरोकी और नोङ्गूकी फौजका सिरेसे शिरा मिल गया। नोङ्गूकी फौजसे मिलनेके लिये झुरोकीने एक दिन पहले हीसे तय्यारी आरम्भ कर दी थी। यानी इठी जूनको ही झुरोकीकी आज्ञासे चार जापानी पलटनें समतसे और शिवयेनकी ओर रवाना हुईं; उन्हें आज्ञा मिली, कि वह इन दोनों स्थानोंसे रूसियोंको भगा उनपर कब्जा कर लें। फेङ्गङ्गाङ्गवेङ्गसे कई प्रैंतीम मील उत्तर समतसे बसतो है। ७वीं जूनको जापानी पलटनें समतसे पहुँचीं। समतसेकी रूसी फौजने जापानी पलटनोंसे हलकासा मुकाबला किया। अल्पकालके लिये गोलियाँ चलीं। जापानियोंके तीन सिपाही मारे गये और चौबीस घखमी हुए। रूसियोंके तेईस सिपाही मारे गये; पाँच सिपाहियोंके साथ ही अफसर कौद कर लिये गये। रूसी फौज समतसे छोड़ भाग गई; जापानियोंने उसपर अधिकार कर लिया। समतसे बड़ा ही प्रयोजनीय नगर था। दालू-किनारेसे पार्वत्य-प्रदेश भेद झुरोपेटकिनके सदर लिखावयाङ्ग था

सुदहन प्रभृति नगरोंको और एक राह मोर्न नलिङ्ग ।
 धी और दूसरी इसी समयसे नगरसे । मोतीनलिङ्ग घाटीवाली राह
 एक जानसे इस दूसरी राहसे जापानी फौजे' लियावयाङ्ग पहुँच
 सकनी थीं ।

पहले हीसे सब तय हो चुका था ; स्थिर हो चुका था, कि
 धीं जूनको एक ओरसे ताऊमानकी फौज क्वाधिकारभुक्त
 शिवदेन नगरकी ओर बढ़ेगी और दूसरी ओरसे झरोलीकी भेजी
 पलटनें । ऐसा ही हुआ । इस दिन प्रातःकाल दोनों फौजोंने
 दो ओरसे शिवदेन नगरपर आक्रमण किया । शिवदेनमें हजार दो
 हजार नहीं ; चार हजार क्की फौज थी ; छः तोपें भी थीं ।
 क्खियोंने कुछ देरतक खूब जमकर जापानियोंसे युद्ध किया ; किन्तु
 अन्तमें उन्हें अपना स्थान परित्यागकर भागना पड़ा । गोल
 और बुरे दो रोगीकी फौजोंके सम्मिलित दलविद्रुमप्रकाशसे यह
 स्थान जापानियोंने क्षण लगा और दोनों फौजोंने इस नगरमें
 अवस्थित दो झरोली और गोठूकी फौजकी पंक्तियोंकी मिला
 दिया । समयसे स्थानको अपेक्षा शिवदेन कुछ कम उपयोगी
 नहीं था । समयसेसे लियावयाङ्ग प्रभृतिकी ओर राह गई थी,
 तो शिवदेनसे रैचिङ्ग, कैची प्रभृतिही ओर । इसी राहसे
 गोठूकी सैन्य-पंक्ति आगे बढ़ी थी और बढ़ती बढ़ती कैचीके
 समीप झरोलीकी सैन्यसे मिल गई थी ।

जिह समय गोजूकी सैन्य-पंक्ति धीरे धीरे आगे बढ़ रही थी
 प्रोजसे मिलने जा रही थी, उए समय कुधेदीकी फौजके गिरदा-
 वरीके सवार समयसे आदसे कुरोमाटकिनके सहर लियावयाङ्ग
 नगरकी ओर बढ़ रहे थे । लिङ्गने ही सवार यथासमय लियावया-

झने समीप पहुँचे और वहाँकी रूसी फौजकी गतिविधि अच्छी तरह देख उसकी खबर उन्होंने लौटकर सेनापति कुरोकीकी दी। सवारोंने कहा,—“लियावयाङ्गमें युद्धकी बड़ी बड़ी तय्यारियाँ हैं। रूसके सर्वप्रधान सेनापति कुरोपाटकिनने जापानी फौजोंकी रक्षावटके सामाग तय्यार करनेमें अपने मायेका नारा वैज्ञानिक बल खर्च कर दिया है; लियावयाङ्ग नगरकी शहरपनाहपर बड़े बड़ी तोपें चढ़वा दी हैं। नगरके बाहर वैज्ञानिक टङ्गके कितने ही दुर्भेद्य किले तय्यार किये हैं।”

कुरोकीकी फौज इतने काम करने भी उस समय अपनी जगहसे आगे नहीं बढ़ी। कोई कोई दाहन है, कि कुरोकीकी फौज अपनी जगह ठहर नोजू और ओजूकी संन्य-पंक्ति परस्पर मिल जानेकी प्रतीक्षा कर रही थी। कुरोकीकी फौजके आगे न बढ़नेपर भी रूसी फौजके बड़े बड़े टुकड़े प्रायः ही आगे बढ़ आया करते और कुरोकीकी फौजी चौकियोंसे युद्ध किया करते थे। कुरोकीके साथके विदेशी दूत तथा संवाददातामण्डली इन चौकियोंकी लड़ाई देखनेके लिये गितान्त उत्सुक थी और अपनी यह इच्छा सेनापति कुरोकीसे बारंबार प्रकट किया करती थी। एक दिन कुरोकीने वैदेशिकोंकी यह इच्छा पूर्ण करनेका प्रवन्ध किया। पहले हीसे खबर मिल गई थी, कि आद्य समतसेने समीप जापानी चौकियोंपर रूसियोंका आक्रमण होनेको है। कुरोकीने यह समाचार पा युद्धका तमाशा अपनी आँखों देखनेके लिये वैदेशिकोंकी एक जबरदस्त शरीररक्षक सैन्यके साथ अपने सहर फेङ्गङ्गङ्गचेङ्गङ्ग पूर्वोक्त चौकियोंकी ओर भेज दिया।

रूस-जापान-युद्ध ।

(चित्र)।

द्वितीय भाग ।

कलकत्ता,

रुपाश भदानीचरण हत्त, स्ट्रीट, हिन्दी-बज़वासी एलेक्ट्रो मैशीन प्रेसमें
श्रीनटवर चक्रवर्ती द्वारा
संस्कृत और प्रकाशित ।

संवत् १९६७ ।

मूल्य दो रुपय ।

जापानो विजय-वै जयन्ती ।



द्वय भाग १ पृष्ठ ।

रूस-जापान-युद्ध ।

द्वितीय भाग ।

प्रथम परिच्छेद ।

वार्टवोपर कवचा ।

२२ वीं जूनको आकाश सुनिर्मल था । यह भूमिमें तथा प्रा
फैली हुई थी । क्रमागत गन लई दिनोंतक मूक दृष्टि हो जानेकी
वजह सेगनके इदगिरे प लव्य भूमिमें निवृत्त गमें आकर
जगह बहुत जल भर गया था । उच्चभागमें जल नहीं था ;
कीचड़ भी नहीं था ; तरी सी, जो हैज धूप-काफूर हो रही थी ।
जापानियोंने खुलियोंके पीछे हटा दृष्टि-फलके वचनेके लिये इन्गे
उच्चभागमें अपनी चौकियों प्रतिष्ठित की थीं । विदेशी दूत और
संवाददातामण्डली पहाड़ी अचलरी रहते आवाजके ज प्रावी
चौकियोंतक पहुँच गईं । जल्द ही त गभिरें लिये आये विदेशि
योही मनोकामना पूर्ण हुई । जापानी आसनेने पकटकर चौकीके
आफसोंको लहर ही, कि लगी आते हैं । लखी आये ; अवार-
पेहल हांगी सिबहर गेहे चार चवार आये ; इत तीरे भी
आये । रिमाग क आतीका था , सिंगपर खुलके बहु प्रमक ।

ग्रह-रचना की। जिस जगह स्थली फौज थी या जिस मैदानमें कैचौ, लियावयाङ्ग, सुकदन प्रभृति नगर थे, उसके पीछे एक समभूमि थी और अग्रे तथः अगल-बागल दड़े बड़े पर्वत थे, जिनके पीछे जापानी फौजोंकी बह विचित्र पंक्ति थी। ओजूकी फौज और कैचौकी समतल भूमिके बीच जो पर्वतमाला थी, वह उतनी दुर्लभ नहीं थी। घाटी न पानेपर भी जापानी फौजे पर्वतमाला पारकर कैचौके मैदानमें पहुँच सकती थीं। ओजू और नोजूके सामनेकी पर्वतमाला बहुत ऊँची थी; फौज उसे पार कर नहीं सकती थी। इस पर्वतमालासे कैचौ, लियावयाङ्ग आदिके समतल भूखण्डमें उतरनेके लिये तीन घाटियाँ थीं। एक तालिङ्ग घाटी, जिसके समीप दो सोनोबलिङ्गका दुर्ग था; दूसरी फेनशुलिङ्ग घाटी और तीसरी तातीनलिङ्ग घाटी। तालिङ्ग घाटीके सामने इरीकीधी पौन्टा या जापानी फौजकी लम्बी पंक्तिका दाहना सिरा था। इस घाटीसे बहुत दूर स्थित न स्थान पानो नोजूकी पौधके सामने फेनशुलिङ्ग और तातीनलिङ्ग घाटी थीं; इन दोनोंके बीच ज्यादा फासिला नहीं था।

जापानके सर्वप्रधान सेनापति फोल्ड मारशल ओयामा खुस फौजकी गति-विधि अत्यन्त ध्यानपूर्वक देखते थे; उन्होंने कुरोपाटकिनको नवीन अद्भुत-रचनाका समाचार पाते ही जापानी फौजोंको आगे बढ़नेकी आज्ञा दी। कुरोकी अर नोजूके आगेकी पर्वतमाला अत्यन्त दुर्भेद्य थी; इसलिये आपने पहले इन्हीं दोनो सेनापतियोंकी फौजको आगे बढ़नेकी आज्ञा दी। आपने खयाल किया, कि यदि शीघ्रता की ग जायेगी, तो तीनों घाटियोंकी कूची फौजें और भी सोरने बांध अधिक सुदृढ़ हो जायेंगी और उनके घोर पकड़ लेनेपर उन्हें जापानी फौजें सहज ही स्थानच्युत कर न सकेंगे। २६ वीं जूनको एकाएक जापानी फौजें आगे बढ़नेके लिये तय्यार हुईं। कूसियोंके बीचवाली घाटी फेनशुलिङ्ग अपेक्षाकृत अधिक सुदृढ़ कर ली थी। टाइम्सके संवाददाता लिखा है, कि इस घाटीमें कूसियोंके अर्धचन्द्राकार कितने ही किये बना उनपर दोम तीपें चढ़ा दी थीं। किलोंके सामने गहरी गहरी खन्दके तय्यार ली थीं, जिनके बाहरी किनारोंपर बरभरीवेधक लोहेके कांटोंसे भरे जाल लगा दिये थे। चौदह बटालियन प्लटर्न और रिखालेकी तीन रेजिमेण्टें इन किलोंमें बैठा दी थीं।

फेनशुलिङ्ग घाटी नोजूकी फौजके सामने थी; उन्हींपर इसे स्वाधिकारभुक्त करनेका भार रखा गया। नोजूने फेनशुलिङ्ग घाटीपर अधिकार करनेके लिये एक फौज तय्यार की, जिसे तीन टुकड़ोंमें बांट दिया। करनल असादाके अर्धन पहला टुकड़ा किया गया और उसे घाटीके पश्चिमकी पर्वतमालापर अधिकार करनेकी आज्ञा दी गई। दूसरा टुकड़ा मेजर जनरल असादाकी

ब्राह्मण निरुक्त घाटीके प्रच्छिन्नको पर्वतमालाकी छोरकी ओर बढ़ी। दो रूसी बटालियन पलटनें इस जापानी फौजको देख विकल हो इसकी राह रोकने दौड़ीं। युद्ध हुआ। अन्तमें दिन कोई ११ बजे मैरूसी फौज रूसियोंको भगा घाटी और उसमें बने हुए रूसी तिलोके पोक्रे पर्वतमाथाने छोरपर पहुँच गई और जगह जगह तोपें लगाने लगी।

२६वींको सेनापति आसादाको फौजने घाटीके पूर्व या बायें बट्ट अपने सामने कोई दो हजार रूसी देखे। दोनो फौजोंके बीच कुछ देरके लिये घोर युद्ध हुआ। रूसी भागे और जापानी फौजोंने छोटी छंटी पहाड़ियोंपर तोपें लगा दीं। २७वींको अंधरे कोई पांच बजे युद्धारम्भ हुआ। घाटीके भीतर रूसो किले अत्यन्त सुदृढ़ थे और उनपर चढ़ी बढ़ी बढ़ी तोपें भयङ्कर अग्निवृष्टि करती थीं। घाटीके सामने घाटा बड़े जोखोंका काम था; इसलिये सेनापति आसादाने अपनी फौजका एक टुकड़ा और भी दाहने हटा आगे बढ़ा सुमाफिरा घाटीके पूर्व या बायेंकी पर्वतमालापर अधिकार कर लिया।

करनल रुमाडाकी फौजने, २६वींको आगे बढ़ घाटीके दाहने अवस्थित अपनी मदद्गार फौजके पीछेसे निरुक्त दिन कोई सात बजे घाटीके ठीक दाहने दिनारे पहुँच अपने तोपखाने लगा दिये। इसतरह फेनगुलिङ्ग घाटीपर आक्रमण न करके भी उसे दाहने वाले और किसी कश्र पीछेसे जापानी फौजोंने धर लिया और घाटीकी ओर अपनी तोपोंके सुँह फेर दिये। प्रकृत प्रस्तावसे युद्ध न करके भी जापानियोंने यथार्थमें

किसीं बा.। सुदृढ़ बना रहे थे। स्वयं सेनापति कुरोपाटकिनको विश्वास था, कि मोतीनलिङ्ग दूर पर जापानी अधिकार कर न सकेंगे। तालिङ्ग वाटीपर जागनियोंके अधिकारका समाचार पा कुरोपाटकिनने अपने समको यह कुछ खान्ता ही होगी, कि एक वाटी गई तो गई. उसकी बागकाम दुर्भेद्य दूर अभीतक खुम्बियोंके अधिकारमें है।

जापन-सेनापति कुरोपाटकी भी इस दूरकी सुदृढ़ताके गहनत्वमें अनभिज्ञ नहीं थे। वह जानते थे कि दूर पर यदि नाममेंसे आक्रमण दिशा जायेगा. तो जापानी फौजोंकी निरान्त विपश्यता ही होगी। इसलिये खुम्बियोंके तालिङ्ग वाटीपर अधिकार करनेके उपमान्त खुम्बियों गहन नहीं, बल्कि सर्वतमानाके ऊपरी भागसे एक ऊपरदक्ष पाँज मोतीनलिङ्ग दूर का और रवाना की। दूरमें बेटा स्वयं, पाँज दूरके सामनेका प्रादुर्भावमें जापानी फौजोंके आनेकी प्रतीक्षा कर रहा था; ऐसे समय जापानी फौज दृश्यमें दूरके दृश्यमें प्रकट हुई और तीनों का दूरमें गोल बरसाने लगा। खान्ता करवा रद्द था। जापानी तीनों आकाशमें थीं और खुम्बियों तीनों मानादने। जापानी तीनों तीनों दूरकी खुम्बियों फौजों और तीनोंकी दुर्बुद्धि दुर्बुद्धि दर रद्द था। खुम्बियों तीनों तीनों जापानी तीनोंके लक्ष्मी पक्षमें भी दूरमें करती थीं। विपश्यती खुम्बियों फौजों दूर परित्यागकर पीछे हट गईं। इन तीनों तीनों जापानी फौजोंके प्रकृतले उतर और दूरके सामने नहीं जापानी फौजोंके लक्ष्मी दूर पर अधिकार कर दिशा। इसतरह स्वयं-सेनापतिजा जापानी मोतीनलिङ्ग दूर परमान ही जापानियोंके दृश्य लगा। दूर

स्यात भी जापानियोंके अपने अस्त्र-बलमें नहीं; बुद्धि-बलमें पाया ।

इसतरह तालिङ्ग घाटीके साथ मोतीनलिङ्ग दर्रा और कैम्पुलिङ्ग घाटी जापानियोंके हाथ लगी। इरेके साथ साथ अन्वाच्य दो घाटियोंका पतन इस रूमियोंने तीसरी घाटी तानीनलिङ्गका पहरा छाप ही आप डटा लिया। गोजूकी फौजने इस घाटीपर भी अधिकार कर लिया। इन तीनों घाटियोंपर अधिकारकर जापानी गिरदावरीके सवार घाटियोंसे आगेको सम-तल भूमितक पहुँच गये। अब जापानी फौजे पार्वत्य प्रदेश परित्यागकर उम मैदानमें सरलतापूर्वक पहुँच सकती थीं, जिसमें रूसी अधिकारभक्त और रूसी सैन्यसे परिपूर्ण कैची, लियावथाङ्क और सुङ्गका बह मुकदन नगर अवस्थित था।

वर्षाऋतुमें जापानियोंने इन तीनों घाटियोंपर अधिकार किया था। उन दिनों मौसमपर विश्वास किया जा नहीं सकता था। कुछ देर पहलेका निर्मोघ आकाश एकाएक कालो कालो घटाओंसे आच्छन्न हो जाया करता था, मत्र गर्जन करने लगते थे, चपला चमकने लगती थी और आकाशसे मूषकधार वारिधाग गिरने लगती थी। सञ्चरियाकी वृष्टि बड़ी ही भयङ्कर होती है। दो दो चार घण्टीकी वृष्टिसे निम्नस्थल धलसे परिपूर्ण हो जाता है नदी-नाले वढ़ विषम प्रावन उपस्थित होता है। ऐसी ही वर्षाऋतुमें उस मैदानके द्वार पूर्वोक्त तीनों घाटियोंपर अधिकार करके भी जापानी फौजे आगे बढ़ जल और कीचड़से भरे मैदानमें निकलनेका साहस कर न सकीं; अपने सुङ्ग और सुर-चित्त पहावमें ठेठ वर्षाऋतुका वेग रक्तनेको प्रतीक्षा करने लगीं।

जापान-सेनापति ओयामाके सर्वप्रधान सेनापति होनेका समाचार हम इस पुस्तकके प्रथम भागमें लिख चुके हैं । व्याप अवतक जापानमें थे । जापानो फौज जब तीनों घाटियोंपर अधिकारकर अपने आगे बढ़नेका पथ प्रशस्त कर चुकीं, तब मारशल ओयामाके बुद्धस्यलमें पहुँचनेकी तयारी हुई । इसी जूनको इस सर्वप्रधान सेनापतिने सदलदल जापान-राजधानी टो-कियो परित्याग किया । आठके चलनेके दिन जापान-राजधानीसे ध्वजा-पताका, होरया-बन्दनवार प्रभृतिमें मजघजकर नयनाभिराम शोभा धारण की थी ।

द्वितीय परिच्छेद

वेड़े की मरम्मत,—बेड़काड़ ।

सलसलुह तां कुछ समयके लिये सगित हुआ ; अन्ततः
 धृष्टिका वेग रकनेतक एक भी प्रयोजनीय जलसुह होनेकी
 आशा की जा नहीं सकती ; ऐसी अवस्थानें आइये, पाटक !
 हम आपको जलसुह-सम्बन्धीय एक घटनाका प्रयोजनीय हाल
 सुनाये ।

जून मासके चौथे मसाले अरथर-बन्दरसे निकाले गये
 चीनाओं द्वारा एकाएक यह समाचार प्रसिद्ध हुआ कि, अरथर-
 बन्दरवाले जङ्गी जहाजोंके टूटेफूटे वेड़े की शीघ्र शीघ्र मरम्मत
 हो रही है । चीनाओंके कहा,—“मरम्मत क्या ;—मरम्मतका त-
 माशा ही रहता है । तारपेड़ोंके बाधनसे जहाजोंमें जो बड़े बड़े
 छेद हो गये हैं, उन छेदोंमें बाहरसे लोहेकी चादरें जड़ी
 जाती हैं और उनपर रङ्ग कर दिया जाता है । दूरसे देखनेमें
 जहाज ठरसुत दिखाई देते हैं ; किन्तु समीपसे उनकी
 शोचनीय अवस्था स्पष्ट दिखाई देती है ।” इसीके साथ साथ यह
 भी प्रसिद्ध हुआ,—“जापानियोंने अपने जहाज उवा अरथर-बन्द-
 रके जिस सुहागेकी बन्द किया था ; उसी उन डूबे जापानी
 जहाजोंकी माइन द्वारा उड़ा अरथर-बन्दरका सुहाना एकवार
 फिर खोल रहे हैं ।”

कितने ही लोग इन समाचारोंको सुन सुनकराये ; कितने ही

लोगोंने बड़ी बेपरवाईके साथ कहा,—“यह सब ध्यान देने योग्य बातें नहीं; इतने छोड़े ज्वरमें अरधर-बन्दरका वैदा सुधरहर मनुष्यमें निकल जायानियोंसे बृद्ध करने लायक ही नहीं सकता।” किन्तु नौ-सेनाप्रति टोगी इन नमाचारोंसे उतनी उधेचा कर नहीं सकते थे। उन्हें दिग्भ्रम स्वतसे नमाचार मिया था, कि कृत्तियोंके कई दिनोंतक अविनास नाम करके अरधर-बन्दरका सुधाना नाम करनीकी चेष्टा की है। उन्होंने अदमान किया, कि अरधर-बन्दरकी देह को नरकत छो गई है; यह कारर नियत-नेकी छिटे तय्यार है; यदि देना न होता, तो ममपूर्णक शांति प्रीति दन्दरदा सुधाना नाम करनीकी पररत क्या थी? टोगीके अरधर-बन्दरकी सुधानेपर जल्दी गदीला मधरा बैठा रिया।

इसी पूनकी रातकी अरधर-बन्दरकी सुधानेपर रण-रत रणरत परी। जापानो गानेके रिया, कि बन्दरके भीतरसे प्रकृति कितने ही नौदागरीके कृष्ण दिवसे। इन्हे प्रीति प्रीति कितने ही जल्दी जराप बन्दरके दिवद्वर बाहर

आश्चर्य न होगा ? जल-युद्धके इतिहासमें ऐसी घटनायें बहुत नहीं ।

टोगोका प्रधान वेड़ा अरधर-बन्दरसे कोई पन्द्रह कोस दूर समुद्र-में लङ्गर डाल पड़ा था । रात कोई दो बजे टोगोको एकाएक समाचार मिला, कि रूसी वेड़ा अरधर-बन्दरसे बाहर निकल रहा है । टोगो बड़े समाचार सुननेके लिये पहले हीन तय्यार थे । यह समाचार पा उन्हें उतना आश्चर्य नहीं हुआ । घोर-गम्भीर-भावसे टोगोने पहले तारपेडो और डिग्रावेर नावोंका वेड़ा, उसके पीछे छोटे जह्जी जहाजोंका वेड़ा अरधर-बन्दरकी ओर रवाना किया । अन्तमें कितने ही अजबल दरजेके छोटे जह्जी जहाजोंसे परिष्कृत हो बड़े बड़े जहाज साथ ले टोगो स्वयं घटनास्थलकी ओर चले । टोगोने अनुमान किया, कि जापानी वेड़ेके लिये आब बड़ा ही मुद्दिन है ; रूसी वेड़ा अब बाहर निकला है, तब खुले समुद्रमें आ जापानी वेड़ेको जी खोलकर युद्ध करनेका सुअ वसर देगा ।

रूसकी अन्तिम जहाज अभी बन्दरसे निकलने नहीं पाये थे ऐसी समय टोगोका भेजा जह्जी नावोंका वेड़ा अरधर-बन्दरमें खामने पहुँच रूसी वेड़ेकी ओर झपटा । रूसकी भी जह्जी नावें तय्यार खड़ी थीं, उन सबने आगे बढ़ जीच हीमें जापानी नावोंको रोक उनसे युद्ध आरम्भ किया । कुछ देर दोनों ओर तारपेडो और गोले चले । रूसका छोटा जह्जी जहाज नाविक अपनी नावोंको सहारा देनेके लिये आगे बढ़ा । नाविककी देखभाल जापानी नावें पीछे हट गईं । रूसी सिपाहियोंने हथैनाद

इस छोटेसे जल-बुके उपरान्त टोंगोका भेजा छोटे जड़ो जहाजोंका देड़ा अरघर-बन्दरकी नामने पहुँचा। यह देड़ा दूर खड़ा हो खुली वेड़े की गति-विधि देखता रहा। टाइम्सके संवादाताका कहना है, कि टोंगोने इस वेड़ेके अफसरोंसे यह दिया था, कि तुमकोग बुद्धने प्रवृत्त न होकर खुली वेड़ेकी अपने पीछे लगा खुले बसुद्रने गिवाल जाना। जान पड़ता है, कि टाइम्सके संवादाताके जो कुछ अनुमान किया था, वह सत्य नहीं था। क्योंकि टोंगो अपने वेड़ेके नाव अरघर-बन्दरके समीप पहुँचकर भी खुली वेड़ेके नामने न आये; दूर से ही खुली वेड़ेके खुले बसुद्रने आनेकी बात जोड़ते रहे।

तीसरेपक्षर कोई भी बने खुली देड़ा अफसरोंके सजाएके साथ जापानी छोटे जहाजोंकी ओर भागता। पारसिक मयमें आगे था। जापानी देड़ा खुले बसुद्रकी ओर भागा। खुली वेड़ेके पीछा किया। खुली कोई ह बने यह खुली देड़ा खुले बसुद्रने पहुँचा, तब उसे अनभगतं हुए जापानी वेड़े के पीछे से रस्ताए टोंगोका प्रथम देड़ा आता दिखाई दिया। जापानी

वेड़े की अपेक्षा रूसी वेड़ा बहुत ही जबरदस्त था। यह कछ-नेमें अत्यन्त न होगी, कि जापानी वेड़े की अपेक्षा रूसी वेड़ा दूना था या उससे भी अधिक। किन्तु रूसी वेड़े की प्रचलतासे तनिक थो विचलित न हो उससे युद्ध करनेके लिये जापानी वेड़ा झपटा।

जापानी वेड़े का चाल बहुत तेज थी और उसके कुछ जहाजोंपर लड़ाईके भाँडे फहरा रहे थे। जापानी वेड़े की देखते ही रूसी जहाजोंने भी लड़ाईके भाँडे चढ़ाये। रूसी वेड़ेपर लड़ाईके भाँडे देख टोगोके हर्षका ठिकाना न रहा।; उन्होंने खयाल किया, कि आज फ्लेब्लेको वाइर ही जायेगी इतने दिनोंके क्राये वाइल आज ही वरद जायेगे। टाइमनके संवाददाता अपने जहाजपर युद्धस्थलके समीप थे और उन्होंने बेतारके तार द्वारा अपने अखबारको समाचार भेजा,—“कुछ ही देरमें भीषण जल-युद्ध आरम्भ होना चाहता है।” प्रत्यक्षमें जो दृश्य दिखाई दिया था, उसे देख सिवा इसके कोई और क्या अनुमान कर सकता था ? दोनो वेड़े कवाइइके साथ एक दूसरेके समीप हुए। टोगो सागर वक्षपर अपने वेड़े की कौशुलके साथ घुमाने-फिराने लगे। टोगोके वेड़े के साथ साथ रूसी वेड़ा भी घूमता-फिरता था। टोगो चाहते थे, कि रूसी वेड़े को मारपर ला उखपर आक्रमण आरम्भ करें, रूसी वेड़ा टोगोका मनोभाव समझता था; इसीलिये जब जब जापानी वेड़ा उसे अपनी मारपर लाता, तब तब वह अपनी स्थिति बदल देता था।

सन्धा कोई माफ़े सात बजेतक दोनो वेड़ोंके बीच ऐसे ही शक-पेच चलते रहे। अन्तमें सान्ध्य अन्वकार सघन होता देख

रुनी देहा भीत हुआ। उभे भागने हीमें अपना कज्जाण
 दिखाई दिया। रुनी ब्रह्मर्षीकी एकाएक भागनेकी आशा
 मिली और वह सब द्रुतगतिसे अरधर-दरधरकी ओर भागे।
 रुनी देहे की भागता देख टोमो घाघ मत्त प्रहृताने लगे। वह
 यदि जागते, कि अन्तमें रुनी बड़ा भगीता, तो रुनी देहेके
 समीप पहुँचते ही बृह आरम्भ कर दंते; उन्हे धपती
 अगभिक्षतापर नितागत हुआ हुआ। रुनी देहेकी भागद
 देख उन्होंने अपनी देहे की पीछा करने और तांसेनी नावीसे
 बड़े से पागे वह रुनी देहे पर आक्रमण करनेकी मत्ता ही।
 कपतान असाईकी अधीनतामें पापनी तारपनी-नावीना रुनी
 कीर भागतेके दिग्गता ही रुनी देहेके समीप पहुँच उगपर
 टूट पड़ा। रुनी देहेके धीर दिग्गता उपस्थित हुई। रुनी
 देहेके जिण असाजको जिधरसे राए मिली, वह उधर हीमें
 अरधर-दरधरकी ओर भागा। असाई तरए पीछे पड़ी तार-
 पनी नावीसे पिण हुआता रुनी देहा रात होई ग्याए बने
 अरधर-दरधरकी सुधानेपर पहुँचा। सुधानेपर पहुँचनेपर
 भी रुनी देहेका पिण न घटा। रुनी देहेका होई प्रका
 न कर पापनी नावीं वांवार रुनी देहाकीपर व असाए रुनी

वेड़े की अपेक्षा रूसी वेड़ा बहुत ही जबरदस्त था। वह कष्ट-नेमों अत्यन्त न हीगी, कि जापानी वेड़े की अपेक्षा रूसी वेड़ा दूना था या उससे भी अधिक। किन्तु रूसी वेड़े की प्रबलतासे तनिक भी विचलित न हो उससे युद्ध करनेके लिये जापानी वेड़ा भ्रष्टा।

जापानी वेड़े का चाल बहुत तेज थी और उसके कुछ जहाजोंपर लड़ाईके भाँडे फहरा रहे थे। जापानी वेड़े को देखते ही रूसी जहाजोंने भी लड़ाईके भाँडे चढ़ाये। रूसी वेड़ेपर लड़ाईके भाँडे देख टोगोके हृदयका ठिकाना न रहा; उन्होंने खयाल किया, कि आज फ़ैसलेको घड़ाई हो जावेगी इतने दिनोंके छाये बादल आज ही वरद जायेंगे। टाइमनके संवाददाता अपने जहाजपर युद्धस्थलके समीप थे और उन्होंने वेतारके तार द्वारा अपने अखबारको समाचार भेजा,—“जुद्ध ही देरमें भीषण बल-युद्ध आरम्भ होना चाहता है।” प्रत्यक्षमें जो दृश्य दिखाई दिया था, उसे देख सिवा इसके कोई और क्या अनुमान कर सकता था ? दोनों वेड़े कवाइइके साथ एक दूसरेके समीप हुए। टोगो सागर वक्षपर अपने वेड़े की कौशलसे साथ घुमाने-फिराने लगे। टोगोके वेड़े के साथ साथ रूसी वेड़ा भी घूमता-फिरता था। टोगो चाहते थे, कि रूसी वेड़े को मारपर का उसपर आक्रमण आरम्भ करें, रूसी वेड़ा टोगोका मनोभाव समझता था; इसीलिये जब जब जापानी वेड़ा उसे अपनी मारपर लाता, तब तब वह अपनी स्थिति बदल देता था।

सन्ध्या कोई साढ़े सात बजेतक दोनों वेड़ोंकी बीच ऐसी ही अपेक्षा चलते रहे। अन्तमें सन्ध्य अन्वकार मघन होता देख

रुखी वेड़ा भीत हुआ। उधे भागने हीमें अपना कलापण दिखाई दिया। रुखी जहाजोंको एकाएक भागनेकी आज्ञा मिली और वह सब द्रुतगतिसे अरधर-बन्दरकी ओर भागे। रुखी वेड़ेको भागता देख टोगो हाथ मज पकृताने लगे। वह यदि जागते, कि अन्तमें रुखी वेड़ा भागेगा, तो रुखी वेड़ेके समीप पहुँचते ही युद्ध आरम्भ कर देते; उन्हें अपनी अगभित्तापर नितान्त दुःख हुआ। रुखी वेड़ेकी भागड़ देख उन्होंने अपनी वेड़ेको पीछा करने और तारपेछी नावोंके वेड़ेको आगे बढ़ रुखी वेड़ पर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। कप्तान चमड़ाकी अधीनतामें जापानी तारपेछी-नावोंका वेड़ा तीन भागोंमें विभक्त हो रुखी वेड़ेके समीप पहुँच उसपर टूट पड़ा। रुखी वेड़ेमें घोर विषमझला उपस्थित हुई। रुखी वेड़ेके जिल जहाजको जिधरसे राह मिली, वह उधर हीसे अरधर-बन्दरकी ओर भागा। बलाकी तरह पीछे पड़ी तारपेछी नावोंसे पिछ हुड़ाता रुखी वेड़ा रात कोई ग्यारह बजे अरधर-बन्दरकी सुहानेपर पहुँचा। सुहानेपर पहुँचनेपर भी रुखी वेड़ेका पिछ न छटा। रुखी गोलोंकी कोई परवा न कर जापानी नावें बारंबार रुखी जहाजोंपर आक्रमण करती रहीं। शुक्लपक्षी रजनी थी; निर्मल घाकाशमें चन्द्र तारा-बक्षपर प्रियकर सुशीलत प्रकाश फैला रहे थे; जिस जगह सुहानेके पर्वतोंकी छाया थी, जम जगह सच्च-प्रदीपका उल्लस प्रकाश फैल रहा था; अन्वहार नहीं; चारो ओर उजैला था। इस उजैलेमें जापानी नावोंकी साफ साफ देखवार भी उन्हें रुखी गोले भगा नहीं सकती थी। टोगोका प्रधान वेड़ा दूर खड़ा

समाप्त देख रहा था; उसको जापानी नावें रूसी बड़े को विकल किये हुई थीं। अन्तमें जापानी नावों द्वारा वाग्वार आक्रान्त हो रूसका एक बड़ा जङ्गी जहाज—गायद 'परसवीट'—डूब गया और डायना तथा अन्कोल दूसरे दरजे के दो जङ्गी जहाज टूटटाट गये। रूसी बड़े को इतनी क्षति पहुँचा सन्तुष्ट हो जापानी नावें रूसी जहाजोंसे निकल भागीं और अपने प्रभान बड़ेमें मिल गईं। इस हलकेसे जल-युद्धमें जापानकी वैसे कोई क्षति नहीं हुई। डिब्रायेर 'शिराकुमो'की चौकीको कोठरीपर एक गोला पड़ा; कोठरी किसी कदर टूट गई; तीन सिपाही मारे गये; एक सरजन और दो सिपाही जखमी हुए। 'चिदोरी' नामक तारपेडो नावजो एड्मिगकी कोठरीके ऊपर एक गोला पड़ा, सिर्फ कोठरी टूट गई; किसीको किसी तरहका जखम नहीं आया। तारपेडो नाव नम्बर ६४ और ६६को थोड़ा थोड़ा नुकसान पहुँचा। वस जापानी बंदूके को इतना ही नुकसान पहुँचा; अन्ततः कभी मिथ्या समाचार न देनेवाले एडमिरल टोगोने अपने बड़ेकी क्षतिका ऐसा ही समाचार प्रकाशित किया। रूसियोंकी ओरसे इस समाचारका कोई प्रतिवाद प्रकाशित किया नहीं गया। रूसियोंने अपनी क्षतिके सम्बन्धमें भी किसी तरहका खण्डन-भण्डन नहीं किया।

जापानी बेड़ा जब अपनी नावोंको एकतन्त्र अरथर-बन्दरके सामनेसे हटने लगा, तब उसने देखा; कि बन्दरमें घुसनेके लिये अघोर हौदर भी रूसी जङ्गी जहाज शीघ्र शीघ्र बन्दरमें घुस नहीं सकते हैं। एकके बाद दूसरा जहाज धीरे धीरे मुहाने किनारेसे भीतर जाता है। इससे जान पड़ा, कि

सुहानेकी राह पूर्णतया खुली नहीं है; यदि खुलती, तो रूसी जहाज इतनी सावधानी और असुविधाके साथ बन्दरमें न घुसते। अरधर-बन्दरके वेड़ेकी तय्यारीका समाचार पा रूसी अत्यन्त हर्षित हुए थे; लोगोंने रूसकी बड़ी प्रशंसा की थी, लोगोंने रूसकी प्रतिष्ठा फैल गई थी; किन्तु जैसे ही इस जलकी छेड़छाड़ और उसके फलका समाचार जगतको मिला, जैसे ही लोगोंके मनसे रूसकी प्रतिष्ठा दूर हो गई; लोगोंने खशम किया, कि चपलाको क्षणस्थायी चमक दिखाई दी नहीं; किन्तु रूस जिस अन्वकारमें पहुँचे था, उसी अन्वकारमें फिर पतित हुआ।

२७ वीं जूनकी रातको अरधर-बन्दरपर टोंगीका और एक आक्रमण हुआ। जापान नौ-सेनापतिने अपने १२ गम्बर तारपेड़ों-नावके वेड़ेको अरधर-बन्दरके सुहानेसे भीतर घुस रूसी वेड़ेपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। वेड़ेकी छोटी छोटी नावें सागर-वक्ष विदीर्ण करती बड़ी गुरतीसे अरधर-बन्दरके सुहानेकी ओर दौड़ीं। सुहानेमें नावोंपर खच्च-प्रकाश पड़ा। सुहानेके दोनो छिनारेकी लगी तोपें नावोंपर गोले बरसाने लगीं। किन्तु जापानी नावें एक भयङ्कर बाधाको लयवत् तुच्छ समझ बन्दरमें घुस गईं। बन्दरके भीतर सुहानेके ठोक सामने एक जङ्गी जहाज पहरा दे रहा था। जापानी नावें आगे न बढ़ इसी जहाजको बारंबार तारपेड़ों द्वारा आक्रान्त करने लगीं। एक तारपेड़ो जहाजके भीतर जहाजके पंटेसे टकराकर फटा। मयङ्कर शब्द उत्थित हुआ; समुद्र-जलकी बहुत बड़ी चादर उड़कर आकाशकी ओर गई और फिर नीचे आई। इसके उपरान्त ही पहरादार जहाज

रुसता दिखाई दी। देसते देसते पर्वत जैसा जहाज चल-
गभमें समा गया ; इन अवनरमें नमग्र चरधर-बन्दरमें खलसी
पड़ गई। कितनी ही रुसी जहाजी गांव जापानी नावोंकी ओर
भपटीं। जापानी नावोंने ज़रूर देरके लिये इनसे जमकर सामना
किया। दोनों पक्षने एक दूसरेपर तारपेडो, गोलों और गोखि-
योंकी वृष्टि की। किनारेको रुसी तोपोंने गोला-वृष्टि रोकी ; गोला-
न्दाजोंने खयाल किया, कि जयदोनों शल गुंथ गये हैं, तब हमारे
चलाये गोलों जिनतरह जापानियोंको क्षति पहुँचा सकते हैं,
उसीतरह रुसियोंको भी। छोड़ो ही देरके युद्धके उपरान्त जाप-
नियोंके चलाये तारपेडोकी बोटसे रुसकी एक तारपेडो नाव
उसल गई। जापानका १२ नम्बर तारपेडो नावोंका बड़ा इतने
कामोंसे सन्तुष्ट ही चरधर-बन्दरसे निकल अपने प्रधान बेड़ेमें
मिल गया, इस आक्रमणमें जापानके चौदह सिपाही मारे गये
और तीन जखमी हुए। रुसियोंके सुकाविल जापानियोंकी क्षति
बिनाकुल ही नगण्य थी। नौ-सेनापति टोगोने रुसियोंकी
क्षमिका समाचार प्रकाशित कर दिया; रुसियोंकी ओरसे इस
समाचारका प्रतिवाद नहीं निकला। हां चरधर-बन्दरसे भागे
किरने ही रुसियोंने २८ वीं जूनको निउरवाज़ पहुँच कहा,—
“जापानियोंने रुसी बेड़ेके क्षतिग्रस्त होनेका जो समाचार प्रका-
शित किया है, वह झूठा मिथ्या है। रुसी बेड़ा व्योंदा त्यों है।
चरधर-बन्दरमें बहुत रसद होनेकी वजह रुसी और निपाहियोंमें
पूर्ण शान्ति विराज रही है।” रुसकी ओरसे इसुगाक-गल्पका
भी कोई प्रतिवाद न हुआ।

ज्याड़ेकी अन्तिम कई दिनों टोगोके बेड़ेने चरधर-बन्दरके

समीप पहुँच ऊपर घोर गोला-वृष्टि की । समझदारोंने कहा,
 कि स्पल-पथसे जापानी फौजे' अरधर-बन्दरकी समीप पहुँचना
 चाहती है ; टोगोली इस गोला-वृष्टिका अर्थ यह है, कि अरधर-
 बन्दरकी रूसी फौजे' गोलोंसे आत्मरक्षाकी चेष्टामें तत्पर रह
 स्पलपथकी ओरसे बढ़ती हुई जापानी फौजको रोकनेका सविशेष
 आयोजनकर न सके ।

द्वितीय परिच्छेद ।



अरधर-वन्दरकी समस्या—द्विरावका श्रीगणेश—

आरम्भिक युद्ध ।

कहिबे, पाठक ! अरधर-वन्दरके सामनेके उन घोर नानशान-युद्धकी बात यह है न ? गानशानमें हस्तिवोंकी परास्तकर जापानियोंके डालनी-वन्दरपर जघिहार करनेकी बात श्रुत तो नहीं गये हैं ? इसी युद्धके फलसे जापानियोंने अरधर-वन्दरको स्थलपथसे घेर लिया था और यही घेरा ताड़नेके लिये आगे बढ़ तैलिस्सूमें रुच-सेनापति शकलवर्ग जापान-सेनापति ओजू द्वारा परास्त हुए थे । शकलवर्गके आगे बढ़नेपर अरधर-वन्दरकी हस्ती फौज बढ़ी बढ़ी आशाओंसे आशान्वित हुई थी ; किन्तु तैलिस्सूमें शकलवर्गके परास्त होनेका समाचार पा अरधर-वन्दरको हस्ती फौज अत्यन्त हतोत्साह हुई ।

पाठकोंको स्मरण रह सक्षता है, कि ओजूकी फौजमें तीन डिविजन थे,—पहला, तीसरा और चौथा । यह तीनों डिविजन नानशान-युद्धमें शरीक हुए थे । इस युद्धके उपरान्त रुच-सेनापति शकलवर्गके आनेका समाचार पा उनसे तैलिस्सूमें युद्ध करनेके लिये जब ओजू आगे बढ़े, तब तीसरा और चौथा डिविजन अपने साथ ले गये ; सिर्फ पहले डिविजनको नानशान और डालनी प्रभृतिकी रक्षाके लिये अपने पीछे छोड़ गये । लोगोंने अनुमान किया था, कि जापान-सेनापति ओजू शकल-

वर्गोंको परास्त करनेके उपरान्त अरधर-बन्दरकी ओर वापस आवेगें और अपने अधीनस्थ तीनों द्विविजनोंको एकत्रकर महावेगसे अरधर-बन्दरपर टूट उसे स्वाधिकारभुक्तकर उसपर अपनी जयपताका उड़ावेगें । किन्तु यह कल्पना कार्यमें परिष्कृत हो नहीं सकती थी । पहले तो ओजूपर अरधर-बन्दरपर अधिकार करनेका भार रखा गया ही नहीं था । उन्हें आज्ञा मिली थी, कि वह अरधर-बन्दर अपने पीछे छोड़ आगे बढ़ें और कुरोकीकी बगलके नोजूकी सैन्यपंक्तिसे अपनी सैन्यपंक्ति मिला जापानी फौजका बड़ा व्यूर्व अर्द्धचन्द्र तयार करें । दूखरे, ओजू अपने तीनों द्विविजनका सम्बन्ध शक्ति-सामर्थ्य खर्च करके भी अरधर-बन्दरपर एकाएक अधिकार कर नहीं सकते थे । अरधर-बन्दरपर अधिकार करनेका कार्य समय-मापेक्ष था ; चटपट पूरा कैसे हो जाता ? अरधर-बन्दर वैज्ञानिक प्रणालीसे बने किलों और भयङ्कर आग्नेय अस्त्र-शस्त्रसे सुरक्षित था ; सहस्र सहस्र दुर्द्वर्ष साहसी रूढ़ी अरधर-बन्दरकी रक्षाके लिये बैठे थे ; ऐसे ही अरधर-बन्दरको चुटकी बनाते स्वाधिकार-भुक्त कर लेना क्या आसान काम था ?

यही सब सोच-समस्त जापानी फौज मारशल ओयामाने अरधर बन्दरपर कब्जा करनेमें किसी तरहकी त्वरा या उत्सुकता प्रकाश नहीं की । ओजू जब तेलिसूकी ओर चले गये, तब ओयामाने ओजूके पीछे छोड़े पहले द्विविजनोंमें ग्यारहवां और छठां द्विविजन मिला एक नई फौज तयार की । वह दोनों द्विविजन जापानमें इस कामके लिये पहले हीन तयार बैठे थे ।

११वां द्विविजन आया और १८वीं धूनकी छटां द्विविजन ।

जानो-वन्दर जापानियोंके हाथमें था। यह दोनों डिविजन इसी डालनी वन्दरमें उतरे। इन डिविजनोंके साथ बड़ी बड़ी तोपें साइनें आदि किनने ही सामान भी उतरे। अरघर-वन्दरके सामने जापानके अब फिर तीन डिविजन एकत्र हो गये। हर एक डिविजनमें कोई बीस हजार सिपाही थे, इस हिसाबसे तीनों डिविजनोंके सिपाहियोंकी संख्या कोई साठ हजार थी। जापान-सेनापति नोगो? जापानसे आ इन तीनों डिविजनों या अरघर-वन्दर घेरनेवाली जापानी फौजका सेनापतित्व ग्रहण किया।

जापानी फौजके अरघर-वन्दरको किलावन्दीकी ओर बढ़नेसे पहले अपने पाठकोंको हम संक्षेपमें अरघर-वन्दरकी किलावन्दी की एक भाषण दिखा देना चाहते हैं। अरघर-वन्दरकी तीन ओर जो पर्वतमाला है ; उसीमें यह किलावन्दी है। पर्वतमालापर थोड़ी थोड़ी दूरपर किला है। हर एक किला अर्द्धचन्द्राकार खाई है ; मैदानकी ओर किलेका घेरा है, और अरघर-वन्दरको ओर किलेकी राह। हर एक किलेके सामने अर्द्धचन्द्राकार है। एक किलेकी खाई वगलेके किलेकी खाईसे मिली हुई है और इसी खाईसे एक किलेसे दूसरे किलेमें जानेकी राह है। राह जमीनके भीतर होनेकी वजह शत्रुकी गोला-टिष्टमें भी सिपाही अनायास ही एक किलेसे दूसरे किलेमें जा सकते थे। हर एक किलेमें ५६ इंचसे ११ इंचतककी मेंदेकी ओरसे भरी जानेवाली या ब्रीचलोडिङ्ग तोपें लगी हैं। इन लम्बी लम्बी तोपोंके भरने खाती करने और घोलकी कारखाने मेंदेकी ओरसे होती है। जिसतरह बन्दूकमें उसके पिछले भागसे कारतूस भरे जाते हैं, वरइ इन तोपोंमें मेंदेकी ओरसे 'पाउटिलाफ़' नामक बड़े

ही वजनी कारतूष मरे जाते हैं। एक जर्मन रणप्रदितने इस किलाबन्दोका वर्णन करते हुए लिखा है,—“यह किलाबन्दो सात भागोंमें विभक्त की जा सकती है ; किलाबन्दोके तीन भाग चलकी ओर हैं और चार भाग स्थलको ओर।” हम इतना ही कहना यथेष्ट समझते हैं, कि अरधर-बन्दरके गिर्दको किलाबन्दोकी कई मालाये हैं, जिनका एक सिरा एक ओरके समुद्र-तटके समीप है और दूसरा सिरा दूसरी ओरके। जापानियोंके और अरधर-बन्दरके बीच उन समय ऐसी ही सुदृढ़ और दुर्भेद्य किलाबन्दोयो ; पाठक सोच देखें, कि इस किलाबन्दोको भेद अरधर-बन्दरपर अधिकार दरा क्या हंसी-खेल था ?

जापान-सेनापति नोगीने अरधर-बन्दरके सामने पहुंच कि किलाबन्दोकी दृढ़ताका पूर्ण ज्ञान प्राप्तकर धीरे धीरे किलाबन्दोके ओर अग्रसर होना स्थिर किया। २४ वीं जूनको नोगीने अपनी फौजको आगे बढ़नेकी आज्ञा दी। उन समय नोगीके अधीन सिर्फ दो डिविजन फौज ; कोई चालीस हजार ब्रिगादो थे ; पहले ही लिखा जा चुका है, कि छठां या अन्तिम डिविजन २८ वीं जूनको कहाजसे उतरा ; जिस दिन नोगीने अपनी फौजको आगे बढ़नेकी आज्ञा दी, उसके दो दिन बाद।

अरधर-बन्दरको किलाबन्दोका पश्चिम-भाग ; यानी वह भाग जो नानशान-बुद्धवाले किनारोंको बालको फ़ैलो खाड़ीकी ओर पड़ता है, बहुत ही सुदृढ़ है, अरधर-बन्दरसे ले समुद्रतटतक अमंथ्य किये वने हैं। जैसे तूफानसे विचुम्ब खुले समुद्रमें सामने देखनेपर पहले सुदूरवापी एक लहर, फिर दूसरी लहर, फिर

तीसरी लहर;—इसीतरह एकतं बाद दूसरी दृष्टिभ्रमादातक लहर ही लहर दिखाई देती है; उमोतरह पूर्वोक्त खाड़ीके किनारेसे अरधर-बन्दरको और देखनेपर चित्तिगतत किला-बन्दियोंकी पंक्ति ही पंक्ति नजर आती है। इसलिये पहले पहल इसी ओरसे अरधर-बन्दरमें बुखनेकी चेष्टा कोई भी समझदार सेनापति कर नहींसकता। अरधर-बन्दरका मध्यभाग यानो जिस ओरसे साइबेरिया-अरधर-बन्दर-रेल बन्दरमें आई है, उस भागकी किलाबन्दीकी पंक्तियां यदि बहुत अधिक नहीं, तो कम भी नहीं हैं। अरधर-बन्दरके सिर्फ पूर्व-भागमें यानो उस भागमें, जो जापानाधिकृत डाकनी-बन्दरके समने सहद्रकिनारे है, किला-बन्दियोंकी संख्या बहुत कम है और इसीलिये बन्दरके पूर्वोक्त दोनो पार्श्वोंकी अपेक्षा यह तीसरा पार्श्व निर्व्वल है। इसी ओरकी भूमिमें 'सुरद जमीन' या दो अगलवगतकी उच्चभूमिके बीच निम्नभूमिभी है; धावा करमेवाली फौजे जिनमें ठहर शत्रुकी गोलः-दृष्टिसे बचकर आगे बढ़नेके लिये क्षणिक विश्राम कर सकती है। सेनापति नोगीने इसी ओरसे अपनी फौजको आगे बढ़नेकी आज्ञा दी।

२५ वीं जूनकी रात हीको चढ़ाईकी तय्यारी हुई। जापानो तोपखाने डाकनी-बन्दरसे आगे बढ़ सियावपिङ्गताव-खाड़ीके पासके रूसी मोरचोंके सामने लगा दिये गये। तोपखानोंके इंद गिंद जापानो फौजे बैठा दी गईं। टोगोकेवेड़ेका एक अंश सियावपिङ्गताव-खाड़ी और उससे और आगे अरधर बन्दरको ओर फैल गया। सियावपिङ्गताव-खाड़ी उस समयतक रूसी अधिकारमें थी,—खाड़ीसे अरधर-बन्दर सिर्फ सात कोस

दूर था। २८ वीं को प्रातःकाल जापानी तोपवालों और जापानी जङ्गी जहाजोंने रूसी मोरचोंपर भयङ्कर अग्नि-वृष्टि आरम्भ की। रूसी मोरचे जापानी तोपोंके अहातेसे उग उग हिलने लगे। प्रातःकाल जापानी फौजोंने अपनी तोपोंके समीपसे आगे बढ़ रूसी मोरचोंपर आक्रमण किया। इन मोरचोंमें बैठी रूसकी इष्ट साइबेरियन 'राइफल्स' नाम्नी फौजोंने पहले गोलीसे फिर तपचों, सङ्गीनों और तलवारोंसे जापानी फौजोंको रोकनेकी चेष्टा की। जापानी फौजें पास पहुँच गईं; सिपाही लोहेसे लोहा लड़ाने लगे। कोई तपचूकी गोलीसे टेर हो गया; किसीका शिर धड़से गाइव हुआ और धड़ झुक कर ठहर अन्तमें भूमिपर गिर कूट-पटाने लगा, किसीका हाथ काटा; किसीका जबड़ा फटा, देखते देखते मोरचे हताहतोंसे भर गये। बहुतेरे रूसी मारे गये; जापानी सिपाहियोंका विक्रम बढ़ा। ऐसे समय सियावपिङ्गताव-खाड़ीमें कितने ही जापानी सिपाही अपने जहाजोंसे उतरे और युद्धस्थलकी ओर चले। जिस मोरचोंमें युद्ध हो रहा था, सियावपिङ्गताव-खाड़ों उससे पोछे है। लड़ते हुए रूसी सिपाहियोंने जब सुना, कि एक जापानी फौज उनके पश्चाद्भाग सियावपिङ्गताव-खाड़ोंकी ओरसे आ रहा है, तब उनके कूके कूट गये; उन्हें भागने हीमें अपना भला दिखाई दिया।

रूसी फौजमें भगदड़ पड़ी। रूसी आगे आगे और मोरचोंमें लड़नेवाले जापानी पीछे पीछे। राहमें युद्ध होता चला; रूसी जिस जगह ठहर आते; जापानी उसी जगह टूट पड़ते और उन्हें मार-काटकर फिर भागनेके लिये बाध्य करते। युद्धमें अन्तरे सिपाही नहीं मरते, उतने भागेड़में मारे जाते हैं।

रूसी जो मोरचे छोड़ भागे थे, उनके पीछे लुङ्गवाङ्गताङ्ग नाम्नी पर्वतमाला थी। इस पर्वतमालापर भी रूसी मोरचे थे। जापानियों द्वारा विताडित पट्टलित रूसी सिपाही अपने इन्हीं मोरचोंमें जा दुसे और पलटकर आगे बढ़ते हुए जापानियोंको रोकने लगे। जापानी फौजे रूसियोंको इस दूसरे मोरचेमें पाठहर गईं। छिटकी हुई जापानी फौजे एकत्र हुईं और सागर-तरङ्ग जिमतरह किसी पत्थरकी दीवारसे टक्कर देतो है; उसी-तरह जापानी फौजोंने झपटकर मोरचेमें बैठी रूसी फौजोंसे टक्कर ली। एकवार फिर तलवार-सङ्गीनकी खूनी जड़ाई आरम्भ हुई; एकवार फिर रूख-सुखकी विभीषिकाले युद्धस्थल घोर-दर्शन बना। कुछ देरतक दोनों ओरके सिपाही जी खोलकर लड़े। जयपराजय निर्णय करना कठिन हो गया। कभी रूसी पीछे हटते थे; कभी जापानी, अन्तमें गगनभेदी जयध्वनिकर आंधीकी तरह आगे बढ़ जापानी फौजोंने रूसियोंको पीछे टकेल दिया। इस दूसरे मोरचेसे भी रूसी फौज भागी। रूसी मोरचोंपर जापानी ध्वजा उड़ने लगी। इस लुङ्गवाङ्गताङ्ग पर्वतके मोरचेसे ष धर-बन्दर सिर्फ चार कोस दूर था।

रूसियोंने पहले प्रसिद्ध किया—“जापानियोंने लुङ्गवाङ्गताङ्गके मोरचोंपर बढ़े ही वेगसे आक्रमण किया था सही; किन्तु उसका कोई फल नहीं हुआ; रूसी फौजोंने जापानियोंको अत्यन्त क्षतिग्रस्तकर मारकाट पीछे हटा दिया।” इसके बाद ही रूसियोंने मानो अपनी पहली बात भुलाकर यह समाचार निकाल दिया,—“जापानी फौजे लुङ्गवाङ्गताङ्ग पर्वतमालापर सुदूर-दूरसे बैठ गईं हैं और घेरेकी बड़ी बड़ी तोपें लगा रही हैं।”

कहाँ जापानियोंका पूर्णरूपसे विध्वस्त हो पीछे हटना और कहाँ जिस स्थानसे उनके हटनेका समाचार प्रकाशित किया गया था, उसी स्थानमें उनका तोपें लगाना । यह दोनों समाचार एक दूसरेसे कहाँतक दूर हैं ? यूरोपकी सर्वप्रधान शक्ति रूसका गुण-वर्णन कहाँतक करिये ! खैर ; रूसने प्रकाशित किया, कि इस २६ वीं जूनकी लड़ाईमें हमारी ओरके सात अफसर और दो सिपाही हताहत हुए । रूसियोंने यह भी प्रकाशित किया,— “जापानियोंकी बहुत क्षति हुई ; मोरचेमें लगी रूसकी एक ही माइन फटनेसे कोई पचास सिपाही यमलोक गये ।” जापानियोंकी ओरसे इसतरहकी कोई बात प्रकाशित नहीं हुई ; सादगीके साथ यह कह दिया गया कि इस युद्धमें कोई एक सौ सिपाही हताहत हूँ, रूसियोंके हताहतोंकी ठीक संख्या मालूम नहीं ; पचास सिपाहियोंकी लाशें मैदानमें मिलीं और बहुसंख्यक कारतूस और बन्दूकके साथ दो कलशर तोपें मोरचोंमें जापानियोंके हाथ लगीं ।

रूसी मिथ्या समाचार प्रकाशित करनेमें तनिक भी सफ़ोच करते नहीं थे । जुलाईमें अरथर-बन्दरके रूस-सेनापतिने इस समाचार निकाशा,—“गत १०वीं जुलाईको जापानी फौजे अरथर-बन्दरकी ओर बढ़ीं ; घोरयुद्ध हुआ ; अन्तमें जापानी फौजे पीछे हटा ही गईं ; तीस हजार जापानी सिपाही मारे गये ।” जोग रूसी समाचारोंका मर्म जानने नहीं थे, वह यह जापानियोंके दुर्भाग्य और रूसियोंके सौभाग्यकी हुर ; किन्तु रूसी समाचारोंका प्रकृत मर्म जापानकी ओरसे इस समाचारका खण्डन-सखण्डन

निकलनेकी प्रतीक्षा करने लगे। अन्तमें जापानको ओरसे इस समाचारका खफन प्रकाशित हुआ। कहा गया,—“नित दिनके युद्धमें जापानियोंकी इतनी चति होनेकी बात शत्रुने प्रकाशित की है, उस दिन एक भी युद्ध नहीं हुआ। हां गिरदावरीके सवारोंमें दो दो हाथ जल्लर हुए; पर वह कोई प्रयोजनीय बात नहीं; नित्य ही हो जाते हैं।” रूसने यदि खज्जासे नहीं, तो शायद प्रमाणाभावसे इस समाचारका प्रतिवाद प्रकाशित नहीं किया।

असलमें १०वीं जुलाईतक जापानियोंने आगे बढ़नेका कोई यत्न नहीं किया। पूर्व ओर जापानी फौजें लुङ्गबाङ्गतङ्ग पर्वत-तक पहुँच असकर बैठ गई थीं। इस जगहको खूब तृट्ट करानेके उपरान्त आगे बढ़ना चाहती थीं। ११वां १२वां १३वां डिविजन जापानसे आ नोगोकी फौजमें मिल गया था। सिपाहियोंकी संख्या बढ़नेसे नोगीने अपनी फौजका टुकड़ा साइबेरिया-अरधर-बन्दर रेलपथसे सटाकर यानी अरधर-बन्दरकी किलाबन्दीके मध्य भागसे अरधर-बन्दरकी ओर अग्रसर होनेके लिये भेज दिया था। अरधर-बन्दरकी किलाबन्दीका आगे जिस जगह अवस्थित था, उस जगहसे कुछ आगे शुइशिलिङ्ग नामक पूर्वोक्त रेलका स्टेशन और नगर है। रूसी फौजें अत्यन्त दृढ़भावसे इस नगरपर कब्जा रखे बैठी थीं। शुइशिलिङ्ग, किलाबन्दीके मध्यभागका फाटक था और रूसी फौजें इस फाटकका पहरा देती थीं। नोगीने अपनी फौजके जिस टुकड़ेको अरधर-बन्दरके मध्यभागपर आक्रमण करनेके लिये भेजा टुकड़ा अपनी शुइशिलिङ्ग नगरके सामने पहुँचा। इस

चतुर्थ परिच्छेद ।

कोषीपर चढ़ाई—कैचो-पतन—हूसी फौजकी स्थिति ।

कुरोकी, ओजू और नोजू यह तीनो जापान-सेनापति यों ती पहले हीसे सर्वप्रधान जापान-सेनापति मारशल ओयामाके अधीन थे ; किन्तु जबसे मारशल ओयामा जापान परित्यागकर युद्धस्थलमें आये हैं, तबसे इन तीनोंको कदम कदमपर ओयामाके आज्ञानुसार काम करना पड़ता था । ओयामा एक जगह नहीं थे ; जहां उनका प्रयोगन होता था, वहाँ वह जा पहुँचते थे । ओयामा मानो भविष्यदर्शी थे ; उन्हें पहले हीसे मालूम हो जाता था, कि अमुक समयमें अमुक जगह मेरी अवस्थितिका प्रयोजन होगा ; कौसों दूर रहनेपर भी ओयामा ठीक समयमें उस जगह जा पहुँचते थे । ओयामा यदि इतने सुस्तैद न होते ; उनके अधीनस्थ वीरपुङ्गव कुरोकी, ओजू और नोजू यदि सदा सतकं और ओयामाके वारीकसे भी वारीक इशारेको तुरन्त मगभा उसके अनुसार कार्य न करते ; ती शिथिलाका नन्हासा जापान महावज्रपराक्रान्त हूनको क्या परास्त करनेमें सक्षम होता ?

जिष दिन ओजू, नोजू और कुरोकीकी फौजने हाथसे हाथ मिलाया, उसी दिन लिधावयाङ्ग सुकादन प्रभृतिके वैशानमें पड़ी हूसी फौज जापानी फौज द्वारा लीप जोरसे फिर गई । इस्के

उपराक्त प्रधान सेनापति ओशामाने जापानी फौजकी इस अर्द्ध-
चन्द्राकार पंक्तिको कुछ आगे बढ़ा तथा सङ्कीर्ण कर रखी फौजको
जापानी फौजको वज्रमुष्टिके भीतर डाल देनेका मनसूवा बांधा ।
इसी मनसूबेकी कार्यमें परिणत करनेके लिये ओशामाने कुरोको
और नोजूकी फौजका आगे बढ़ा प्रथम परिच्छेदमें लिखी तीनों
घाटियोंपर अधिकार करनेकी आज्ञा दी । घाटियोंपर अधिकार
होनेसे जापानी सैन्य-पंक्ति और आगे बढ़ी ; रखी फौजकी गति-
विधिका स्थान और भी सङ्कीर्ण हुआ । किन्तु जापानी फौजके
सिर्फ दाहने और मध्यभागके आगे बढ़ने हीसे जापानी फौज
द्वारा बना अर्द्धचन्द्राकार सङ्कीर्ण कैसे हो सकता था ? इस
कामके लिये अर्द्धचन्द्राकारके वामभागमें अवस्थित सेनापति
ओजूकी फौजकी भी आगे बढ़नेकी जरूरत थी । मारशुल
ओशामाने यथासमय ओजूकी फौजको भी आगे बढ़नेकी
आज्ञा दी ।

प्रथम भागके घोटप्य परिच्छेदमें हम यह लिये चुके हैं,
कि ओजूकी फौजने तेलिस्तूसे आगे बढ़ सुनयानचेनपर अधिकार
किया और २३वीं घूँनको सुनयानचेनसे आगे बढ़ नोजूकी फौजसे
हाथ मिला रख-अधिकृत कैची नगरके सामनेतक अपनी चौकियाँ
फैला दीं । प्रायः दो सप्ताहतक ओजूकी फौज आगे नहीं बढ़ी ;
अपने बायें समुद्रतटसे अपने बारबरदारीके अहाजोंसे रसद तथा
सुहोपकरण ले अपनी नगर सैन्य-पंक्तिमें पहुँचाती तथा दुष्टता-
पूर्वक अपनी जगह अवस्थान करती रहती । कुरोकी आदिही फौज
द्वारा तीनों घाटियोंपर अधिकार हो चुकनेके उपरान्त प्रायः
५वीं जुलाईकी ओजूकी मारशुल ओशामाने आगे बढ़ रखियोंके

कैची नगरपर अधिकार कर लेनेकी आज्ञा दी। ओजूने उसी समय बड़ी ही लम्बी पंक्तिमें पड़ी अपनी फौजको इन आज्ञाकी सूचना दी। फौज आगे बढ़नेकी लिये तयारियाँ करने लगीं। फिर हुआ, कि एक धनी इटो जुलाईकी प्रातःकाल हीने आगे बढ़ना आरम्भ करना चाहिये। कोई दो सप्ताहके विश्रामके उपरान्त आगे बढ़नेकी आज्ञा पा ओजूके अधीनस्थ कोई पचास हजार जापानी सिपाहियोंका हृदय आशा और हर्षसे उत्फुल्ल हो उठा।

नहीं जानते, कि उस समय कैची तथा उनसे आगेके मोरपोमें बैठी रूसी फौजकी संख्या कितनी थी। कोई कोई कहते हैं, कि उस समय वहाँ बीस हजार रूसी सिपाही थे; कोई कोई कहते हैं, कि बीस नहीं; चालीस हजार। बीस हजार ही वा चालीस हजार; किन्तु इसमें सन्देह नहीं, कि रूसियोंको प्रायः दो सप्ताहका समय प्राप्त हुआ और इसे मुख्यतः समस्त कैचीके उस समयके रूस-सेनापति प्रधान सेनापति कुरोपाटकिनके परम-विश्वासपात्र रूस-सेनापति शकराफने जापानियोंका बल-विक्रम वाप उन्हे रोकनेके पुरे सामान किये होंगे।

इटी जुलाईको प्रातःकाल एकाएक जापानी चौकियाँ पीछे हट गईं और जापानी सिपाहियोंका सतुद्र कक्राइके साथ—फौजी वाजेके तालके साथ—बदम उठाना कैचीकी ओर बढ़ा। रेशमपथके पूर्वका भूभाग समतल था; इसलिये जापानी फौजे उनी ओरसे आगे बढ़ीं। क्राइ ही दूर आगे बढ़नेपर पूर्वसे उत्तर पूर्वतक फंलो हुई शरचावहोती माम्नी पर्वतमाला दिखाई। कोई सोलह नौ रूसी सिपाही कितनी ही तोपोंके साथ

इस पर्वतमालाकी चोटीपर बैठ जापानियोंके आगेकी प्रतीचा कर रहे थे । जापानो फौजोंको सामने पा उनपर रूसी तोपें गोले बरसाने लगीं । जापानो फौजोंने भी अपनी तोपें लगा रूसी फौजोंपर गोले उतारे । कुछ ही देरको गोलाबाजीके उपरान्त रूसी तोपोंका सुंह बन्द हो गया । इसके उपरान्त जापानो फौजोंका आगे बढ़ना देख रूसी बिपाहो पर्वत-गिखर परिह्रागकर अपनी तोपोंके साथ अपने पीछेकी एक दूसरी पर्वत-मालापर जा बंठे । जापानो फौजोंने ६ ठी तारीखकी रात्रि अपने आजके जीते स्थानमें बिता सूर्योदयके साथ साथ दूसरे रूसी मोरचेपर आक्रमण किया । इसीदिन जापान-सेनापतिने और एक काररवाई की । छः रूसी जापानी रिसाला समुद्रतटकी ओर भेज दिया । इस रिसालेको दो आज्ञायें दी गईं ; एक यह, कि यह रूसी रिसालेको आगे बढ़नेसे रोके ; दूसरे यह, कि यदि सुअवसर मिले, तो यह समुद्रके किनारे किनारे आगे बढ़ और पलटकर रूसी मोरचोंके पीछे पहुंच जाये । जापानी रिसालेने अपनी निर्दिष्ट जगह पहुंच पहली आज्ञाका प्रतिपालन किया ; यानी रूसी रिसालेको जापान-अधिष्ठित मोरचोंकी ओर बढ़ने न ही दिया ; किन्तु दूसरी आज्ञाका प्रतिपालन कर न सका । कारण, रूसियोंका बहुत बड़ा कब्जा-रिसाला समुद्रकिनारे मौजूद था और उसने जापानियोंके रिसालेको आगे बढ़ने न दिया । इधर प्रधान जापानी फौजे रूसियोंको पीछे हटाती आगे बढ़ने लगीं । रूसी एक मोरचेसे हटते और उसने पीछेके दूसरे मोरचेपर जा जमतें थे ; मचल मचल-कर पीछे हटते थे । जापानी फौजे शायद और भी दूरतीके

साथ रूसियोंकी सार भगा कैचौके पास पहुँच जातीं; किन्तु धोक्की आपदा थी, कि जापानी फौजे यदि असावधानीके साथ शीघ्र शीघ्र आगे बढ़ेंगे, तो रूसियोंके पैलाये किसी फन्देमें फँस मारी जायेंगे; इमीलिये उन्होंने अपनी फौजोंको बहुत सावधानीके साथ खूब सतर्क ही धीरे धीरे आगे बढ़नेकी आज्ञा दी थी। इसीतरह तिल तिल भूमिपर अधिकार करती जापानी फौजे ध्वी जुलाईको कैचौके दक्षिण एक पर्वतपर पहुँच गईं। कैचौ नगर इस पर्वतसे कोई छः कोस दूर रह गया। कैचौ नगर और जापानी फौजोंके बीच सिर्फ एक रूसी मोरचा बाकी रह गया।

ध्वी जुलाई शनिवारको प्रातःकाल हीसे जापानी तोपें उस एक रूसी मोरचेपर गोले बरसाने लगीं। सवेरे कोई सात बजे एकाएक गोलाघटि रुक गई और जापानी फौजे अपनी तोपोंकी बगलसे निकल रूसी मोरचोंकी ओर बढ़ीं। रूसी फौजे जापानियोंका आना देख अपनी बगल उठकर न बर्की; अपने मोरचे छोड़ भागीं। जापानी फौजेने आगे बढ़ इन मोरचोंपर अधिकार कर लिया। इस अवसरमें भगैले रूसियोंने नगरके समीपके पर्वतोंपर अधिकार कर लिया और शायद इसी समयसे कैचौकी झुल रूसी फौजे कैचौ परिश्रमकर पीछे हटने लगीं। जापानियोंने कैचौ की बगलके रूसियोंके नवाधिकृत मोरचोंपर आक्रमण किया। दोपहरतक खूब युद्ध हुआ। अन्तमें रूसी यह अन्तिम मोरचा भी छोड़ कैचौकी बगलसे पीछे भागे। जापानियोंने रूसियोंके मोरचोंपर अधिकारकर तोपें लगा दीं और भागते हुए रूसियोंपर गोले बरसाये। बड़-

संख्यक रूसी सिपाही गोलोंकी चोटसे उड़े । उस पार्वत-भूमिमें जापानी गोले ही पोछा करनेवाले रिसालेका काम करते थे ।

कैचौ नगरके उत्तर किसी कदर पोछे और एक पर्वतमाळा है । भागते हुए रूसियोंने इसपर अधिकारकर जापानियोंपर गोले बरसाये । जापानी समझ गये, कि यह मोरचा कैचौके हमीपका रूसियोंका अन्तिम मोरचा है । इस मोरचेसे जैसे ही रूसी हटा दिये जायेंगे, वैसे ही कैचौ नगरपर जापानियोंका पूर्ण अधिकार हो जायेगा । विलम्ब करनेका समय नहीं था ; सूर्यदेव अस्ताबलकी ओर झुक पड़े थे । आज सन्ध्यातक यदि कैचौपर अधिकार किया न गया ; तो कैचौ-अधिकारमें और भी एक दिनका विलम्ब होगा । यही सब सोच-समझ दिनभरकी पक्षीमांसी जापानी फौजोंको विश्राम करनेकी आज्ञा देनेके पहले सेनापति ओकूने रूसके उस अन्तिम मोरचेपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी । पहले जापानी तोपोंने रूसी तोपोंके सुंह बन्द किये ; इसके उपरान्त जापानी फौजोंने रूसी मोरचोंपर घावा किया । सहस्र सहस्र सिपाहियोंके मिश्रित कण्डसे निकलती हुई धनिसे बड़ा ही भयङ्कर शब्द उत्पन्न हुआ ; सहस्र सहस्र सिपाहियोंके एक साथ दौड़नेसे वहाँकी भूमि धरधर कांपी । निराश रूसी सिपाही पहले जैसे भागनेके लिये तय्यार थे ; जापानियोंका आगमन देख, अपने मोरचे छोड़ भागे । जापानियोंने धरलता पूर्वक एक ओर इस अन्तिम मोरचेपर अधिकार किया ; दूसरी ओर कैचौ नगरमें पैठारी की ।

कैचौ नगरकी रूसी फौजें पहले हीसे पीछे हट गई थीं ; सिने सेना सिपाही अपने पीछे छोड़ उनसे कट गई थीं । कि

जापानियोंके अनिष्टर जब तुम लोग नगर परित्याग करोगा, तब जा
 झुंझ सामने पाना, नष्ट कर देना ; अन्ततः रेलवे शून तो निश्चय ही
 नष्ट कर देना । किन्तु जापानियोंके नगरप्रवेश करनेपर प्राणोंकी
 समता छोड़ बुद्धि स्थिर रख कोई काम करना कठिन था ।
 वायुवेगसे जापानी रिम्बाला हर्षध्वनि करता कैचौ नगरमें फ़ैल
 गया ; रिम्बालेके पीछे पीछे जापानी फ़ौजे विजयध्वसे उन्नत ही
 गागाभेदी ध्वनि करती नगरमें धूमों । उस समय वह डेढ़ सौ हत्ती
 शून तोड़ना तो दूरकी बात रही ; अपना भोला और असहायक
 अपने साथ ले जा न सके ; खुली राह सामने या प्राणोंकी सम-
 तासे वेसुध ही भागे । मान्य-अश्वकार फ़ैलनेसे पहले ही जापा-
 नियोंने रूसके अन्तिम मोरचे और कैचौ नगर शूनोपर अधिकार
 कर लिया । विजयिनी जापान-त्राहिनीका उन समयका मनोभाव
 वर्णन करनेमें कौन सक्षम हो सकता है ?

कोई चार दिनोंके इस युद्धमें चौबीस निपाही मारे
 गये और एक सौ उन्नीस जखमी हुए । रूसियोंकी इतनी बड़ी
 पराजय हुई ; उनकी ओरसे विज्ञापन निकला,—“हमारी ओरके
 हताहतोंकी संख्या दो सौसे अधिक नहीं ।” हलकीसो मार-
 काटके उपरान्त ही कैचौ जैसा प्रयोजनीय नगर रूसियोंने जापा-
 नियोंको दे दिया । कैसेलूकके रूस-जापान-युद्धमें रूसकी इस
 पराजयकी बड़ी प्रशंसा की गई है । कहा गया है, कि बहुत बड़ी
 जापानी फ़ौजके सामनेसे रूसी जिस खूबीसे पीछे हट गये,
 उसकी लिये रूसियोंकी जितनी प्रशंसा की जाये कम है । यह भी
 कहा यालू नदीकी लड़ाईमें, नानशान-युद्धमें जापानियोंकी बड़ी
 विजय हुई ; किन्तु उन दोनों युद्धोंमें जापानियोंने पूर्ण उद्यमके

साथ युद्धकर अन्तमें पूर्ण विजय प्राप्त की; कैचा-युद्धमें जापा नियोंका उद्यम भी प्रकाशित नहीं हुआ; जापानियोंने वैसी विजय भी प्राप्त नहीं की। फिर अन्तमें इसी इतिहासमें लिखा है,—कैचौ बड़ा ही प्रयोजनीय ग्यांत है। रूसियोंने इसे खोलकर अपनी बड़ी क्षति की।”

कैचौके पीछे दृष्टनेमें रूसियोंकी और एक बड़ी क्षति हुई। पठकोंसे यह कहनेका प्रयोजन नहीं, कि ओजूकी फौज जैसे जैसे आगे बढ़ती गई, ऐसे ही जैसे वह अपने दाहनेकी नोकूकी सेन्च-पंक्तिसे और भी दृढ़भासते मिलती गई। मारश्ल ओयामाने ओजूकी फौजको जिस दिन कैचौपर अधिकार करनेकी आज्ञा दी; उसी दिन उसकी बगलकी नोकूकी फौजको भी आगे बढ़ने और कैचौसे भागे हुए रूसियोंको मारकाट पीछे घटा देनेकी आज्ञा दी। धवीं जुलाईकी सन्ध्याका; ओजूने रूसियोंको कैचौकी बगलके पार्वत्य मोरचेसे घटा कैचौपर लवजा कर लिया। इस मोरचेसे भागकररूसी कैचौके पीछे दूरके एक मोरचेमें जा बैठे। इस मोरचेमें रूसियोंकी घोंड़ोकी फौज पहल्लेसे जमा थी। इस फौजमें दो बटालियन पलटने और एक तोपखाना था। इस फौजका मुंह कैचौको ओर था; फौज समझती थी, कि जापानियोंका आक्रमण होगा, तो कैचौ होकी ओरसे होगा। ऐसे समय मारश्ल ओयामाके आदेशानुसार नोकूकी भेची फौज पार्वत्य-भूमिसे निकल आयाआर रूसी फौजके पीछे पहुंच गई। रूसी इस फौजको देख हैरान हुए। अचानकसे यह हुआ। अन्तमें रूसी अपना मोरचा छोड़ ताशीचाव नगरको ओर भागे। इस मोरचेपर अधिकार कर नोकूकी फौज ओजूकी फौजसे पूर्णरूपसे मिल गई। एक

फौजकी रमदमे दूसरी फौजकी मदद मिलने लगी। रूसियोंकी ओरसे प्रकाशित हुआ, इन दोनों फौजोंमें कुल कोई एक लाख चाक्रीस हथार सिपाही थे। आपानियोंने अपनी सैन्यकी दृढ़तापर उतना भरोसा नहीं किया। उन्होंने समुद्रतटसे लेकर नौकरीकी फौज द्वारा अधिलत अन्तिम मोरचेतक शीघ्र तय्यार होनेवाली अथच सुदृढ़ किलाबन्दी कर ली; मोरचाबन्दीमें फौजे बैठा दें, तोपें लगावा दें; मोरचेकी पीछे जंचे जंचे मीनार बनवा दिये, जिनपर खड़ा सन्तरी दूर दूरतक निगाह रखने लगा। ओयामा जानते थे, कि वर्षाकाल है; वृष्टि होनेका कोई ठिकाना नहीं; एकाएक अतिरिक्त वृष्टि होनेसे ओजूकी फौज कई सप्ताहतक आगे बढ़ नहीं सकेगी; उसे अपने मोरचों हीमें रहना होगा; इसीलिये आपने ओजूकी फौजोंके सामने सुदृढ़ मोरचे तय्यार कर दिये।

उधर साख्किन पददलित परामित रूसी फौजे कैचीसे भाग ताशीचाव नगरके इर्दगिर्दके मोरचों और छावनियोंमें पहुँची। ताशीचाव नगरमें 'ताशीचाव जङ्गशन' नामक रेल-स्टेशन है। आदविरियावाला रेलपथ इस स्टेशनसे दो भागोंमें विभक्त हुआ है। इसका एक भाग कैची-तेलिस्तू इत्यादिसे होता हुआ अरघर-बन्दरकी ओर गया है। दूसरा भाग लियावयाङ्ग-खाड़ीके यङ्गकी बन्दरसे चीन-घरकारकी रेलमें मिल गया है। ऐसे ही ताशीचाव नगरके इर्दगिर्द रूसी फौजे एकत्र हो धूमके साथ भयङ्कर युद्धकी तय्यारी करने लगीं। रूसकी तय्यारियोंका हाल सुन लोगोंको मालूम हुआ, कि निश्चय ही कोई भयङ्कर युद्ध होनेको है।

पञ्चम परिच्छेद ।

रूसियोंके आक्रमण—होटी छोटी लड़ाइयां ।

ओरु और गोपूका साथ छोड़कर अब हम जापानी अर्द्ध-चन्द्राकार नैन्य-पंक्तिसे दाहने अवस्थित कूरोकीकी नैन्यमें पहुँचते हैं। तालिङ्ग-घाटी और मोतोनशिङ्ग दर्रेपर अधिकार कर चुकनेके उपरान्त कूरोकी कुछ दिनोंके लिये ; अन्ततः वृष्टिका वेग स्वमित होनेतकके लिये अपने नैन्य आगे बढ़ाना नहीं चाहते थे। अपनी ओरसे उन्होंने अपने इसी सङ्कल्पके अनुसार कार्य किया, किन्तु रूसी अपने शौचनीय अवस्था समझ स्थिर रह न सके ; बारंबार जापानी फौजोंपर आक्रमण करने लगे। रूसियोंकी यह चञ्चलता स्वाभाविक ही थी। सबतक रूसी और जापानी दोनों फौजें पार्वत्य-भूमिमें थीं। पार्वत्य-भूमिमें रह सस्य वृष्टि-जलसे उतना कष्ट नहीं पाता। पितनी देरतक वृष्टि होती रहती है, उतनी ही देरतक पार्वत्य-भूमिमें पल रहता और जैसे ही वृष्टि घमकी है, वैसे ही पार्वत्य-भूमि साफ-सुपरो हो जाती है ; पार्वत्य-भूमिका वृष्टि-जल नाना पल सोतोंमें विभक्त हो पार्वत्य-भूमिसे वह तराईके मैदानमें पहुँच जाता है। जबतक रूसी और जापानी दोनों फौजें पार्वत्य-भूमिमें थीं, तबतक दोनों वृष्टि-जलके कष्टसे बची हुई थीं ; किन्तु जबसे जापानी फौजोंने घाटियोंपर अधिकारकर रूसियोंकी पार्वत्य-भूमिसे बाहर निकाल मैदानमें पहुँचा दिया था, तबसे

जापानी फौजे' आरामसे थीं और रूसी फौजे' नाना प्रकारके कष्टमें। वृष्टि-जलसे, ज्वालनसे, खोचड़से, वनविधपोंसे,—नाना प्रकारसे तराईकी रूसी फौजे' अक्षयनोय यन्त्रणावे' भोगने लगी थीं। इन्हीं यन्त्रणाओंसे अघोर हो तथा घाटियोंके हाथसे निकल जानेके दुःखसे उत्तेजित हो रूसी फौजे' मैदानसे पार्वत्य भूमिमें चढ़ जापानियोंपर वारंवार आक्रमणकर उन्हें स्थान भ्रष्ट करनेका यत्न करने लगीं। रूसियोंकी इन चेष्टाओंका फलफल हम आगे प्रकाशित करते हैं।

इसी जगह हम यह भी लिख देना उचित समझते हैं, कि रूसकी प्रायः सभी फौजोंके साथ वैदेशिक समाचारपत्रोंके संवाददाता मौजूद रहते थे; किन्तु अतः जापानकी फौजी भी फौजके साथ कोई भी संवाददाता मौजूद रहता नहीं था या अन्ततः युद्धमें प्रवृत्त होनेवाली जापानी फौजके साथ कोई भी संवाददाता जाने नहीं पाता था। विलायतके जगद्विख्यात अखबार टाइम्सके संवाददाता भी युद्धस्थलमें पहुँचकर युद्धके समय सेनापति कुरोकीके घेरे स्थानसे बाहर निकल नहीं सकते थे। इसके लिये वैदेशिक संवाददाताओंने जापान-सेनापतियोंकी निन्दा की थी, जिसका जापान-सेनापतियोंने कोई खयाल किया नहीं था। किन्तु अबसे जापानी फौजोंने घाटियोंपर अधिकार कर लिया, तबसे इन संवाददाताओंको युद्धस्थलमें जानेको आजा मिल गई थी; विशेषतः जिन कुरोकीकी फौजका हाल हम इस परिच्छेदमें लिखने चले हैं, उनको फौजमें संवाददाताओंकी बड़ी स्वतन्त्रता दे दी गई थी। तभीसे अखबारोंमें युद्धका पूर्ण विवरण प्रकाशित होने लगा पूर्ण विवरणका अर्थ सिर्फ पूर्ण वि-

रख है,—और झुल्ल नहीं । यह संवाददाता द्विविधनोंकी सेनापतियोंके साथ रहते और समय समयपर युद्ध अपनी आंखों देखते थे ।

प्रथम परिच्छेदमें लिखा जा चुका है, कि जापानी फौज तालिङ्ग-वाटीसे पर्वतके ऊपर ही ऊपर सोतीनलिङ्ग दर्रेके ऊपर पहुँच गई; जिसे देख रूसी सिपाही फुरतीसे दर्रा परित्यागकर भागे । रूसी उस समय भागनेकी तो भागे, किन्तु झुल्ल ही उसके उपरान्त सोतीनलिङ्ग दर्रेपर अधिकार करनेके लिये फिर कौटे । सोतीनलिङ्गपर अधिकार करते ही जापानियोंने अपनी चौकियां दस दर्रेसे आगे बैठा दी थीं । जापानी बहुत झुल्ल निश्चिन्त थे; उन्हें खबर नहीं थी, कि हताश ही भागे हुए रूसी शीघ्र ही चौकियोंपर घावा करेंगे । ४थी जुलाईकी अर्द्धनिशाचि उपरान्त चारो ओरके छाये हुए गहरे कुहरमें सोतीनलिङ्गके सामनेकी जापानी चौकियोंमें एकाएक 'रूसी रूसी' का शोर हुआ । चौकीके सिपाही अभी संभलने भी न पाये थे, कि उनपर रूसी आ टूटे । गोलियोंकी लड़ाई नहीं हुई; क्योंकि छाये हुए गहरे कुहरमें दस पाँच हाथ फासिलेकी भी कोईचौल देखना कठिन था । तलवारें; खड्गोंने धर धरे चलने लगे । जगह जगह लाशोंकी ढेर लग गये । रूसी सिपाहियोंकी संख्या बहुत ही अधिक थी । चौकियोंके जापानी सिपाही बर्ष प्रायगाश युक्तिबद्धत ग दमक पीछे हटे । शौकीकी पीछे शौकीकी मददगार फौज थी । रूसियोंके आनेका समाचार था यह फौज आगे बढ़े और शौकीके सिपाहियोंको साथ ले एक जगह ठहर आगे बढ़ते हुए रूसियोंपर चार चरने लगे । लड़ाई उलझ गई । रूसी अपनी

संख्या के आधिक्यको वपह जापानियोंको पीछे हटा मोतीगलिङ्गके समीप पहुँचनेकी चेष्टा करते थे; किन्तु जापानो अपनी जाग हथेलीपर रख रूसियोंको एक दृश्य भी आगे बढ़ने न देते थे। इसी उलझनमें रात बँती; सबैरा हुआ। जापानो दो पलटनें अपनी फौजकी मददकी आईं। बिल मैदानमें रूसो थे, उसको दोनो बगल बन घा। दोनो जापानो पलटनें इन वनोंमें घुस रूसो फौजपर विषम गोलो-वृष्टि करने लगीं। अब भी रूसियों हीको संख्या अधिक थी; किन्तु उन सबने अनुमान किया, कि वनमें जापानियोंकी अवरुद्ध फौज पहुँच गई है। इस अनुमानसे रूसियोंकी हिज्जत टूट गई और वह भागे। भागते समय रूसियोंको बड़ी क्षति हुई; राह रूसियोंकी लाशोंसे भर गई। इसतरह सुदोभर जापानियोंने सहस्र सहस्र रूसियोंको मोतीगलिङ्ग-उद्धारकी चेष्टा विफल कर दी।

दूसरे दिन यानी पूर्वी जुलाईको नोबू और इरोकीकी फौजके सन्धिस्थल समतसे आगे फेनशुलिङ्ग-वाटोके समीप जापानो चौकियोंपर रूसियोंने आक्रमण किया। इस आक्रमणका भी वही उद्देश्य था,—जापानियोंको फेनशुलिङ्ग-वाटोसे पीछे हटा देना। किन्तु इस बार जापानो पड़े हीसे सावधान थे। कोई तरह से खवारोंका रिसाला ज से ही जापानो चौकियोंके सामने पहुँचा, वसे ही जापानो सिपाही रिसालेपर गोलियां बरमाने लगे; खवारोंने घोड़े और भी तेज दिये; चौकी और उनके सिपाहियोंको खाद्यमें मिला देनेके लिये वायुवेगसे याता की। खवारोंकी मनोबलामन; समझ जापानो सिपाहियोंकी गोलो-वृष्टि और भी तेज हुई। रूसियोंके रिसालेकी घगलो पंक्ति टूट गई;

उसके अधिकांश नवार और घोड़े धराशायी हुए । खवारोंके सारे जानेली वजह कितने ही कौतल घोड़े मैदानमें भयवश सरपट दौड़ने और अपने स्थालेके घावमें घोर विश्रुद्धा उपस्थित करने लगे । स्थालेके अफरोने देखा, कि घावा वृथा है; जापानी सिपाही अपने समीप पहुँचनेसे पहले ही रूनी स्थालेकी भून डालेंगे । स्थालेकी लौटनेकी आज्ञा मिली । स्थालेके लौटने ही, जो गोलिभां अतक रूसी खवारोंकी छातीपर पड़ती थीं, वह अब उनकी पीठपर पड़ने लगीं । जबतक स्थाला गोलिकी मारके भीतर था, तबतक उसपर अविराम गोलि-वृष्टि होती रही । इस घावमें बहुतेरे रूसी मारे गये । जापानी मैदानमें आये ही नहीं, इसलिये उनकी ओरके सिर्फ चार सिपाही मारे गये और तीन जखमी हुए ।

इसके उपरान्त नौ दिनोंतक दोनों ओर शान्ति विराजती रही । १६वीं जुलाईको सेमतेके समीप नोबूको फौजके दाहने या कुरोकीकी को फौजके बाये सेमतेके व्यागे फेनशुलिङ्ग-घाटीके समीप रूसियों और जापानियोंके बीच फिर चल गई । इस खण्ड युद्धके सखन्वमें दोनों ओरसे ही तरहसे समाचार मिले । रूसियोंने कहा, कि जापानी फेनशुलिङ्ग उठे चा॥ एक टोलेपर अधिकार करना चाहते थे; इसलिये लड़ाई हुई । जापानियोंकी ओरसे कहा गया, —रूसियोंने फेनशुलिङ्ग-घाटीपर अधिकार करनेको फिर कस्य की; इससे यह युद्ध हुआ । यह दिखीही औरसे ब्यारम्भ किया गया हो; इसका परिणाम रूसियोंके हर्षमें अन्त नहीं हुआ । कितने ही हताहतोंको मैदानमें छोड़ रूसियोंकी पीछे हटना पड़ा । जो लोग मारे गये, उनमें एक कप्तान थे ।

जनरल रेननेकम्फ रूसी कब्जाक-रिवाजके अधिनामक थे । युरोपके अखबारोंने आपकी बड़ी प्रशंसा की थी; चित्र और चरित्र दोनों प्रकाशित किये थे । इस खरख-युद्धमें यही सेनापति रेननेकम्फ वीररूपमें धाष्टर हुए । जाघनें गोली लगी; जाघ काट दी गई और शायद इसी क्षमकी वफाद शायद आपने इन्होंने परिहास किये । युरोपमें इन सेनापतिके विनाशसे बड़ा दुःख प्रकाश किया गया ।

१७ वीं जुलाईको कई खरख-युद्ध हुए, जिनमें एक अच्छा खाला युद्ध कहा जा सकता है । इसीका वर्णन पहले करते हैं । १७ वीं जुलाई रविवारको प्रातःकाल कोई तीन बजे मोतीनलिङ्ग दर्रेके सामने फैंकी हुई जापानी चौकियोंके सम्मुख रूसियोंका प्रादुर्भाव हुआ । पाठक जानते हैं, कि इन्हीं चौकियोंपर कोई दो सप्ताह पहले ४थी जुलाईको भी रूसियोंका आक्रमण हुआ था । उस वारकी अपेक्षा इस वार रूसी सिपाहियोंकी संख्या और भी अधिक थी । इस वारकी चढ़ाईमें पेदल-सवार मिनाकर कोई पालीस हजार रूसी सिपाही थे, जो चौदह बटालिनोंमें विभक्त थे; इनके साथ बारह तोपें थीं । रूस-सेनापति कष्टलिनस्कीका नामका पाठकोंको स्मरण रह सकता है; आप इससे पहले यालूवाथे युद्धमें जापानियोंसे भिड़ चुके थे । यही सेनापति कष्टलिनस्की इस फौजके प्रधान सेनापति थे । मोतीनलिङ्गके सामनेको छापानी चौकियोंको सम्मुख या आपने अपनी फौजको तीन भागोंमें विभक्त किया । सबसे बड़े भागको अपने अघीन रख सामनेसे बढ़ाया और दो छोटे छोटे भागोंको बाएँ बाएँ से रवाना किया ।

जापानी चौकियोंको पहरे हीसे रूमियोंके आनेकी खबर मिला चुकी थी। जापानी चौकियों हीको बतों,—प्रायः समग्र जापानी फौजको रूमियोंके आनेकी खबर मिला मिला गई थी। जापानी फौजकी चौकियोंतकमें तार लगे थे। चौकियोंने तार द्वारा अपने सर्वप्रधान सेनापति कुरोंकोको और उन्होंने अपने समग्र अश्वीनस्य अफसरोंको रूमियोंके आगमनका समाचार दे दिया था। जापानी चौकियों और उसके पीछेकी मददगार फौजमें इस या पन्द्रह हजारसे अधिक सिपाही नहीं थे। रूमियोंको समीप या चौकियोंके सिपाही रूमियोंपर गोली बरसाते पीछे हटे और अपनी मददगार फौजमें मिला गये। यह सब मिलकर पीछे हटते और मोतिनलिङ्ग दर्रेसे आगे पश्चिम एक उच्चभूभागपर मोरचे बांध बैठ गईं। रूमि-सेनापति कथलित्वकी जापानियोंको घोड़ा पीछे हटा बहुत प्रसन्न हुए; उन्हें विधि सुप्रदत्त दिखाई दिये। जापानी फौजके उच्चभूभागका आश्रय ग्रहण करते ही अपने अपनी तोपें एक टीलेपर लगवा दीं। रूसी तोपें जापानियोंपर गोले बरसाने लगीं इस अवसरमें रूसी फौजके तीनों टुकड़े जापानियोंके अधिष्ठित उच्च भूभागके सामने एकत्र हुए। दिन सोई ६ बजे रूसी फौजोंको जापानियोंपर आक्रमण करनेकी आज्ञा मिली। सोई चालीस हजार रूसी एक साथ 'मार मार' कहते जापानियोंकी ओर भ्रष्टे।

पहले ही लिखा चुके हैं, कि रूमियोंकी अपेक्षा जापानियोंकी संख्या बहुत ही कम थी। एक जापानीके सामने तीन रूसी थे। जापान-सेनापतिने रूमियोंकी संख्याधिकता का ज्ञान-

कर भी अपनी फौजको संहारा नहीं दिया। उन्हें विश्वास था, कि एक जापानी दो रूसियोंपर भारी है; शायद वह यह भी देखना चाहते थे, कि एक जापानी तीन रूसियोंसे टक्कर ले सकता है या नहीं। चाहे जिस बजह हो, उच्चभूभागपर बैठे जापानियोंकी बेसी मदद नहीं मिली और वह सब अपने ही भुजबलपर भरोसाकर आगे बढ़ते रूसियोंको रोकनेके लिये तय्यार हुए। जैसे ही रूसी फौजें उच्चभूभागके समीप पहुँचीं, वैसे ही उनपर जापानी फौजोंने गोळियोंकी बौछार आरम्भ की। बाढ़पर बाढ़ पड़ने लगी। विदेशी संवाददाताओंने लिखा है, कि जापानी सिपाही तनिक भी विचलित हुए नहीं थे। शान्तिपूर्वक निश्चिन्तमनसे कोई बैठकर, कोई लेटकर, कोई घुटने टेककर रूसियोंपर गोली बरसाता था; जापानी फौजका प्रायः प्रत्येक सिपाही अच्छा निशाना मार सकता था; उधर जापानी सिपाहीकी बन्दूक सर होती थी; उधर आगे बढ़ती हुई रूसी फौजका एक सिपाही जमीनपर लोट जाता था। विदेशी संवाददाताओंने जापानी सिपाहियोंके ऐसे ही ऐसे कितने ही गुण बखाने हैं। बखाननेकी बात ही है। थोड़ेसे जापानी सिपाहियोंने इतनी बड़ी रूसी फौजको आगे बढ़नेसे रोक दिया। रूसी फौजकी जो पंक्ति उस उच्चभूभागके समीप पहुँचती थी, वही खाकमें मिला दी जाती थी। पहले एक गटालियन रूसी फौज जापानियोंके समीप पहुँची। वह गोळियोंकी मारसे जल-भुन पीछे हटी; और आगे बढ़ती, तो शायद वहीं रुक जाती; पीछे हट ही न सकती। फिर गटालियन फौज जापानियोंके समीप पहुँची; अन्तमें उसकी

भी वही दशा हुई; उसे भी घबराकर भागना पड़ा। प्रातः-
काल कोई ६ बजेसे ६ बजेतक तीन घण्टे ऐसा ही युद्ध हुआ।
बहुसंख्यक साधियोंके हताहत होनेसे बाकी रूसी सिपाहि-
योंकी हिम्मत टूट गई। विजयकी कोई आशा न रहने
और मददकी जापानी फौजके आ पहुँचनेपर भागनेमें भी
बाधा उपस्थित होनेके भयसे दिन कोई दश बजे रूस-सेना-
पति कष्टलिनवकीने अपनी फौजको लौटनेकी आज्ञा दी।
रूसी फौजके पीठ दिखाते ही पूर्वोक्त उच्च भूभागके पीछेसे
जापानी रिवाला और पलटनें निकल भागते हुए रूसियोंपर
टूट पड़े। पश्चाद्भागके रूसी जापानियोंसे गुंथ गये; मध्य
और आरम्भिक भागके रूसी जल्द जल्द भागने लगे। कोई तीन
कोसतक जापानियोंने रूसियोंका पीछा किया। अन्तमें भाग-
नेमें अस्मर्ष हो चार तोपें ले रूसकी सात बटालियन फौज
एक पर्वतपर चढ़ गई और रात्रिका अन्धकार फैलनेतक वह
स्थानपरित्याग कर पीछे हटनेका साहस कर न सकी।

सिवा इसके इसी दिन तीनों घाटियोंके बीच चार और
सङ्घ-युद्ध हुए। पहले युद्धमें जापानी गिरदावरीके सवारोंका एक
दल एक रूसी पलटनके सामने आ गया। दोनों ओरसे मद-
दकी फौजें पहुँचीं। खूब युद्ध हुआ। अन्तमें दिन कोई
एक बजे रूसी परास्त हो भाग गये। दूसरे युद्धमें एक रूसी
फौजने एक जापानी चौकीपर आक्रमण किया। अन्तमें रूसी
जापानी चाँकियोंसे मार भगाये गये। तीसरे युद्धमें भी और एक
जापानी चौकीके समीप ऐसा ही अपलोद्य हुआ। सब
युद्धमें पहले रूसियोंने दड़ा धीरत्व प्रकाश किया; किन्तु अन्तमें

तीनरेपहर कोई साढ़े चार बजे रूसी फौज जापानी फौजकी मारसे विकल हो बड़ी ही धवराहटके साथ भागी। रूसी अपने हताहत सिपाहीतक युद्धस्थलसे उठा न सके। भागनेके समय इस रूसी फौजके करनलने जापान-सेनापतिके नाम एक चिट्ठी लिख उसे एक मृत रूसी सिपाहीकी छातीपर आलपीन द्वारा खोंस दिया। चिट्ठीमें लिखा था,—“सुभे विश्वास है, कि आप हमारे हताहतोंके प्रति सदैव व्यवहार करेंगे।” चौथे युद्धमें जापानियोंकी और एक चोकोपर आक्रमण हुआ। जापानी इञ्जीनियर समीप ही रहें बनवा रहे थे; बन्दूकोंको आवाज सुन वह सब चौकीके सिपाहियोंको सहारा देन पहुंचे। जापानी सिपाही इञ्जीनियरोंको सहारेके लिये आया देख हंस हंस पड़े। हंसी हंसीमें रूसी मार भगाये गये। दिन एक बजे चौकीके सामने एक भी स्वस्थ रूसी सिपाही न रहा। विदेशी संपादकताओंने इन कई लड़ाइयोंके सम्बन्धमें जो समाचार दिया, उसका मर्म इसतरह है,—“जापानियोंके चार अफसर तैतालीस सिपाही मारे गये और पन्द्रह अफसर दो सौ क्षण सिपाही जखमी हुए।” रूसियोंके सम्बन्धमें सिर्फ इतना ही प्रकाशित किया,—“एक सहस्रसे अधिक रूसी सिपाही हताहत हुए।” जापानियोंने प्रकाशित किया,—“दो सौ रूसियोंकी लाशें हमने मैदानसे उठा करमें तोपीं।”

यह कहनेका प्रयोजन नहीं, कि इन कई छोटी छोटी लड़ाइयोंमें जापानियोंने अतुलनीय पराक्रम प्रकाश किया। प्रायः प्रत्येक खण्ड-युद्धमें रूसियोंकी संख्या अधिक थी और जापानियोंकी कम। फिर भी; जापानियोंने रूसियोंसे सिर्फ आत्म-

रक्षा ही नहीं की, बल्कि रूसियोंको पूर्णरूपसे पददखितकर सामनेसे भगा दिया; किसी किसी युद्धमें रूसियोंको बड़ी ही दुर्दशाके साथ भगाया। अधिक प्रशंसाकी वार यह हुई, कि इन छोटी छोटी लड़ाइयोंमें जापानसे हालमें प्याईं ध्वीं डिविजन फौजके सिपाही शरीक हुए थे; इस डिविजनके प्रायः सभी सिपाही यह पहलेपहल युद्धमें प्रवृत्त हुए थे और इस पहले ही युद्धमें इस शानसे लड़े, कि उनके सम्बन्धमें विदेशी संवाद-ताओंके मुँहसे भी कितने ही प्रशंसा-वाक्य निकल गये। इस डिविजनके प्रायः सभी सिपाही नवयुवक, बलिष्ठ और सुन्दर थे; जापानी जनरल निम्नि इस डिविजनके तत्त्वावधायक थे। जापान-सम्राट मेकाडोने इस डिविजनके पराक्रमका हाल सुन इसे बधाईका एक तार भेजा था। तारमें लिखा था,—“धन्य! धन्य!—तुम षोड़े से बीसने मिलकर दससंख्यक रूसियोंको नीचा दिखा बड़ी ही प्रशंसाका काम किया।”

इसी परिच्छेदमें और एक प्रयोजनीय खण्ड-युद्धका हाल लिखेंगे। यह युद्ध भी उन तीनों घाटियोंके बीच हुआ। व्यव-हक जिन खण्ड-युद्धोंका वर्णन किया गया, वह उन तीनों घाटियोंमें बाविकी तातीनलिङ्ग-वाटी और मध्यकी फेनशुलिङ्ग-घाटेसे वे मोतीनलिङ्ग दर्रे तक हुए। कुरोकीकी फौजके हाथने दोरपर बरसित दारुकी उस तालिङ्ग-घाटेके समोप कोई युद्ध हुआ न उसका वर्णन किया गया। जित्तरह मोतीनलिङ्ग दर्रे और फेनशुलिङ्ग-वाटीकी पुनःप्राप्तिकी रूसियोंने चेष्टा की; तालिङ्ग घाटेपर एकराधिकारकी उस्तरेहकी कोई चेष्टा नहीं की। अबलमें तालिङ्ग-घाटेने जापानियों द्वारा परास्त हो रूसी इन घाटोने

समीप कहीं ठहरे ही नहीं। रूसी तालिङ्ग-घाटीसे भागनेपर सीधे सिहोयेन नामक स्थानमें पहुंचे। सिहोयेन पार्वत्य-भूमि की तराईमें छोटासा एक नगर है। तराईकी भूमि होनेकी वजह वसतीकी चारों ओर सुरम्य उद्यान और श्यामल खेत हैं। वसतीकी एक ओर तो वही पर्वतमालाये है, जिनमें घाटियां अवस्थित हैं और दूसरी ओर जहां तक दृष्टि जातो है, वहां तक शस्य श्यामल मैदान ही मैदान दिखाई देते हैं। नगरसे कुछ ही फामिलेपर मैदानको ओर बरसातकी वजह बढ़ी हुई एक छोटी नदी दिखाई देती है। तालिङ्ग घाटीसे जो शाह-राह लियावयाङ्ग सुकदन प्रभृति नगरोंकी ओर गई है, वह इस नगरको घूमती हुई आगे बढ़ी है। नगरकी बगलसे नदी पारकर नगरकी परिक्रमा करतो फिर नदी पारकर आगे बढ़ गई है। तालिङ्ग-घाटीसे सुकदन प्रभृतिकी ओर जानेके लिये यही एक राह है। तालिङ्ग-घाटीसे यह नगर आगे या उसके सामने नहीं; बल्कि ठीक बायें अवस्थित है। दुर्गन्ध पर्वतमालाओंके बीचमें रहनेकी वजह मोतीनलिङ्ग दर्रे और इस नगरके बीच वैसा कोई सम्बन्ध नहीं; किन्तु यदि कोई राह रहनी, तो यह नगर मोतीनलिङ्ग दर्रेके सामने या किसी कदर उत्तर पन्द्रह या बीस मीलके फामिलेपर रह जात। तालिङ्ग-घाटीसे भाग इसी नगरमें रूसियोंने अपनी छावनी डाली। रूसी जानते थे, कि तालिङ्ग-घाटीसे जापानको फौज लियावयाङ्ग या सुकदनको ओर बढ़ेगी और उस ओर बढ़नेसे जापानी फौजको इसी ओरसे जाना होगा। इसीलिये रूसी फौजने इस नगरके समीप जापानियोंको राह के पूरे सामानकर सजधज तैयार किए।

नगरसे कुछ आगे बाये' नदीकी ओर राहकी किनारेसे नदीके किनारेतक मिहोयेन नगरका परदा बनी एक खड़ी पहाड़ी थी। सामनेसे आनेवाले शाहराहको जापानी फौजकी गति रोकनेके लिये रूसियोंने इसी पहाड़ीपर उमकी प्रायः सम्बन्धी कन्दईने मोरचावन्दी की थी। मोरचे इस करीनेसे बनाये थे, कि सामने ओर बगलके पर्वतकी जड़तकके मैदानपर आधिपत्य-विस्तार कर रहे थे ; मोरचोंकी तोपोंके गोले नोनो ओरकी सभी जगहोंमें सहज ही पहुँच सकते थे। मोरचेपर बत्तोन बड़ी तोपें चढ़ी थीं और एक लफटण्ट जनरलकी अभोनतामें सात बटालियन फौज काम करनेके लिये तय्यार थी। मोरचोंको सुदृढ़ बनाने और रक्षित रखनेके लिये प्राचीन खाई आदिका आयोजन होनेके साथ साथ खाईके आगे-पीछे नवाविष्कृत कंटोले तारके जालके सुतकों और उनके बीच जगह जगह भयङ्कर व्यापक-अच्छ बाइन कादि तोपनेका आयोजन भी किया गया था। सदाकी शान्त उर पार्वत्य-अञ्जलकी लहलहाती भूमिकी शान्तिमें घोर विपन्न उपस्थित करनेके इतने सामानकर उनके बीच बैठ रूसी जापानियोंकी राह देखने लगे। राहमें दूर घोड़ीनी भी गई उड़नेसे रूसी जासूसोंकी जापानी जासूसोंकी भ्रम-मूर्ति दिखाई देती थी। दही प्रतीक्षाके उपरान्त अन्तमें १८ वीं जुलाईको रूसी जासूसोंकी सामने उनका भूत प्रत्यक्ष हुआ। रूसी जासूसोंने बारंबार देखा ; हज दूरबीन द्वारा कई ओरसे देखा ; इस बार भ्रमकी कोई बात नहीं थी ; उनकी आंखोंके सामने एक जापानी जासूस दूरबीन आंखोंपर लगाये लड़ा उनी रूसी जासूसको देख रहा था। रूसी जासूसने घोड़ा पीछे लगा

अपने पाँखोंके जासूसकी खबर दी ; उसने अपने पीछेके जासूसकी ; इसीतरह चलकर कुछ ही देरमें यह खबर समग्र रूसी फौजमें फैल गई। रूसी सिपाहियोंके जीको घक्का लगा ; उनके चेहरे एक दूसरेसे कहने लगे, कि जापानी आ गये ।

जापानी आ गये : उसी ऊपरवाले कायदेसे उन्हें भी खबर मिल गई, कि सामने पहाड़ोंपर रूसियोंके मोरने हैं। उस समयतक जापानी सैन्यके अधिनायकोंको रूसियोंके मोरनोंकी दृढ़ताकी पक्की खबर मिली नहीं थी ; इसीलिये अपने सदरमें बैठे वीरवर कुरोकीने जापान समाचार भेजा था, कि सिहोयेनमें बैठे जो रूसी जापानी फौजकी अग्रगति रोकना चाहते हैं, उनकी संख्या अभीतक अज्ञात है ।

सिहोयेनसे कुछ फ्रांसिलेके शानचूज नामक एक क्षुद्र ग्रामके समीप जापानी फौजने छावनी की और शत्रुको शक्तिकी याह लेनेके लिये एक बटालियन फौज रूसी मोरनेकी ओर गिरदावरीके लिये भेजी। उधर रूसियोंने भी इसी कामके लिये अपनी दो बटालियन फौज भेजी। जापानकी एक बटालियन फौजसे रूसकी दो बटालियन फौजका टक्कर हो गया। दोनोंके बीच घोर युद्ध हुआ। दोनों ही ओरके बहुतेरे सिपाही हताहत हुए। लड़ाईका उलभाव देख सन्ध्या कोई साढ़े छः बजे जापान-सेना-पतिने रूसियोंसे लड़ती हुई अपनी गिरदावरीकी फौजमें और एक बटालियन फौज मिला दी। रात्रिका अन्वकार फैलते ही रूसी बटालियन युद्ध मौजूफकर पाँके हट गये। जापानी गिरदावरीकी फौजें युद्धस्थल हीमें विश्रामके लिये लेट गईं। फौजकी चारों ओर जबरदस्त पहरा खड़ा किया गया। रूसियोंने रात्रिके अन्व-

कारणें जापानियोंको मार भगानेके लिये उनपर दो बार आक्रमण किया ; किन्तु इन दोनों आक्रमणोंका कोई फल नहीं हुआ ; घको-सांही जापानी फौजको उठनेकी जरूरत नहीं हुई ; इस फौजकी पहरादार फौजने ही रूसियोंके दोनों आक्रमण व्यर्थ किये ।

एक ओर युद्धमें घको हुई गिरदावरोकी फौज युद्धस्थलमें छेद विश्राम करती रही ; दूसरी ओर जापान-सेनापतिने सवेरेसे प्रकृत प्रस्तावके साथ युद्ध करनेके लिये तयारी आरम्भ की । सन्ध्या होसे अपने पड़ावसे जापानी फौजे निकलने और रूसी मोरचोंके सामने जगह जगह पहुँचने लगीं । एकडे पीछे दूसरी—दूसरीके पीछे तीसरी,—इसी तरह बहु खूबक जापानी फौजे अपने पड़ावसे निकल पड़ावके बाहर भागे हुए अन्वकारमें छिप जाती थीं । सन्ध्यासे पिछली राततक फौजोंकी खानगीका काम चलता रहा । रूसी मोरचोंके बायें नदी थी और दाहने मैदान । जापानी फौजका बड़ा अंश इसी दाहने पार्श्वके सामने मैदान और वृक्षोंकी आड़में एकत्र हुआ । इस अंशके समने घुसके भीतर बड़ी बड़ी तोपें लगाई गईं । और एक घुस तयार की गई,—रूसी मोरचोंके मध्य भागके सामने । इस घुसमें भी बड़ी बड़ी तोपें लगा दी गईं । इसतरह दूर्योदयसे कई घण्टे पहले जापानी फौजे युद्धस्थलमें पहुँच सबप्रकार युद्धारम्भ करनेके लिये तयार हो गईं ।

दूसरे दिन १६वीं जुलाईको प्रलयमें कोई पाँच बजे एकएक जापानी तोपोंने गर्जनकर युद्धारम्भ होनेकी घोषणा की । रूसी तोपोंने जवाब दिया । गोलाबाजी आरम्भ हुई । शान्तिपूर्ण

मिहोयेन अश्वक्षमं घोर अशान्ति उपस्थित हुई। बहुतेरी बड़ी बड़ी तोपोंके एक साथ चलनेसे मिहोयेन नगरकी इमारतें हिलने लगीं; शोताधिव्यसे जिसतरह मनुष्यके दांत कटकटाने लगते हैं; मकानोंके हिलनेसे उसी तरह मकानोंके द्वार खिड़कियां आदि शब्द करने लगे। नगरके हाट-बाजार बन्द हुए; वस्तु व्याकुल साधिवानों मकानोंके द्वार बन्दकर नीचेकी मञ्जिलकी निम्न कोठरीमें जा लड़े। पशु-पक्षी व्याकुल हो बुझसकसे दूर भागे। हिंस पशु भयङ्कर होते हैं सही; किन्तु युद्धमें प्रवृत्त मनुष्य उन पशुओंसे भी अधिक भयङ्कर होते हैं।

प्रातःकाल सोई पांच बजेसे दिन नौ बजेतक चार घण्टे खूब गोलन्दाजी हुई। कितने ही रूसी मोरचोंके सामनेकी धुसबन्दी खाकमें मिल गई। जापानी गोलन्दाजोंका निशाना अच्छक था; रूसी गोलन्दाजोंकी नालायकीसे रूसी गोलोंका वेसा असर होता नहीं था। नौ बनते ही जापानी तोपोंको गोलन्दकी बहुत ही धीमी हो गई। जापानी फौजोंको आगे बढ़ने की आज्ञा दी गई। बहुत ही धीरे धीरे,—प्रत्येक वृत्त, प्रत्येक टीले, प्रत्येक झाड़ीका आश्रय लेते जापानी सिपाही रूसी मोरचोंकी ओर बढ़े। पहले ही लिख चुके हैं, कि रूसी मोरचोंके दाहने याने शाहराहके समीप ही जापानी सिपाहियोंकी संख्या अघिब घी। यह सिपाही तरह तरहकी आड़सं, शस्त्रसे भरे खेतोंके भीतरसे; झुककर, लेटकर, रेंगकर, दौड़कर रूसी मोरचके दाहने भागककी धोड़ीसी परिक्रमाकर उसके पीछे पहुँच ठहर गये। मोरचके सामनेकी जापानी फौजें भी इसीतरह धीरे धीरे आगे मोरचोंके समीप पहुँच गईं। मोरचोंमें जैसी हुई रूसी

फौजे जापानियोंपर बाढ़पर बाढ़ चला रही थीं; किन्तु उनकी उन बाढ़ोंसे जापानी फौजोंका आगे बढ़ना शकता नहीं था। कितने ही जापानी सपाही हताहत हुए; जो स्वल्प थे, वह आगे बढ़ते हो गये। दिन नौ बजेमे तीसरेपहर कोई तीन बजे तक जापानी फौजे इमीतरह आगे बढ़ीं।

तीन बघनेके उपरान्त एकाएक जापानी तोपखाने एकवार फिर रूसी मोरचोंपर ओलेकी तरह गोले बरसाने लगे। विशेषतः रूसी मोरचेके दाहनें जो जापानी तोपखाना था, उसने भयङ्कर गोळा-वृष्टि आरम्भ की। रूसी सज्जते थे, कि इस ओर सामनेसे आक्रमण होगा; उन्हें खबर नहीं थी, कि उनके पीछे जो शस्य-श्यामल खेत हैं, वह जापानी मिपाहियोंसे भरे हुए हैं। रूसी सामनेसे आते जापानी गोलोंकी क्षतिसे, बघनेके उपाय कर रहे थे; ऐसे समय रूसियोंके पीछे खेतोंमें एकाएक विगुल बघने लगे; रूसियोंने पलटकर देखा, कि विगुलकी ध्वनि होते ही सहस्र सहस्र जापानो खेतोंमें उठ खड़े हुए और पलक भपकते 'वेनज वनजई' के निनादसे दिशायें प्रतिध्वनित करते रूसी मोरचोंकी ओर भपटे। इसी समय रूसियोंकी उलभनेमें डाहनेके लिये; जो जापाना फौज जिस जगह पहुंच गई थी, वह उस जगहसे उठ रूसी मोरचोंकी ओर भपटी। रूसियोंकी गोलियोंकी कोई परवा न कर मरती मारती जापानी फौजने रूसी फौजके दाहनेके मोरचेमें घुस रूसियोंकी भागा ऊपर कबजा कर लिया। रूसी मोरचेपर जापानी धजा उड़ती देख अन्यान्य स्थानोंकी जापानी फौजोंको आते गजभरकी हुई; अग्नि-वृष्टियोंके बन् तुच्छ समझ कर मोरचोंके पीछे समीप पहुंच गई। पहले ही लिह चुके हैं,

कि रूसी मोरचे पहाड़ीपर थे और वह पहाड़ी विलकुल खड़ी थी। मोरचोंके पीछे पहुँचनेवाली जापानी फौज अचानकीसे मोरचोंमें घुस गई नहीं; किन्तु सामनेकी फौजे उस अचानकीसे मोरचोंमें घुस नहीं सकीं। इस कामके लिये पहले हीसे अच्छी लम्बी सीढ़ियाँ तय्यार थीं। जापानी फौजे पहाड़ीपर सीढ़ियाँ लगा ऊपर चढ़ने लगीं। इस जागह बहुतरे निपाही मारे गये। जो निपाही सीढ़ीके ऊपरी भागमें पहुँचता वही मरकर नीचे गिरता। किन्तु यह बाधा भी बहुत देरतक न टिकी। एक जापानीके मरनेसे अगलिये जापानी उत्साहपूर्वक ऊपर चढ़ते थे। देखते देखते रूसी मोरचों अनेक स्थानोंमें जापानियोंका अधिकार हो गया। जापानी अजाये उड़ने लगीं। अब काम आस न हो गया; जापानी निपाही अपने अधिकृत मोरचोंमें घुस शीघ्र शीघ्र दाहने-बाये फ़ैलने और रूसियोंको स्थानभ्रष्ट करने लगे।

जापानियोंकी इस विजय-प्राप्तिसे रूसियोंको हिम्मत झूट गई। घिर जानेके भयसे एकाएक कुल रूसी फौजे अपने मोरचे छोड़ सिहोयेन नगरकी बगलसे अचानकिकी ओर भागीं। अब जापानियोंका वारो आई। जापानी रूसियोंपर वारंवार टूटने और धक्के खण्ड खण्ड करने लगे। गोलीसे, तपकसे मझोनेसे तलवारसे, हुरेसे—बहुतेरे रूसी मारे गये। कहीं कहीं जापानी सिखले या पलटमें बहुतेरे भगेले रूसियोंको बूँह बाँध देर लेतीं और खण्ड खण्ड कर डालतीं। भगेले रूसियोंको चाल और भी तेज हुई और रातका अन्धकार फेरनेसे पहले ही रूसी फौजे भागकर सिहोयेन नगरसे बहुत दूर निकल गईं। इस युद्धमें

जापानकी ओरके दो अफसर मत्तर सिपाही मारे गये और मोलद अफसर चार सौ बत्तीस सिपाही आहत हुए । रूसियोंकी ओरसे कोई रिपोर्ट नहीं निकली । जापानियोंने कहा, कि हमें रूसियोंकी एक सौ इक्कीस काशे' मैदानमें मिलीं । विदेशी स'वाद-दाताओंने केवल इतना ही कहा,—“इस युद्धमें एक हजारसे अधिक रूसी सिपाही हताहत हुए होंगे ।” वस,—इसी समा-चारसे सबको सन्तोष करना होगा ।

रूसियोंकी चतिका शाल खुले या न खुले ; किन्तु थोड़ा बात दिसीसे छिपी नहीं, कि इस भोरचेपर अधिकारकर जापानियोंने अपनी आगे बढ़नेकी राह और भी सुप्रशस्त कर ली ।



षष्ठ परिच्छेद ।

ताशीचावमें रूसी—जापानियोंका आगे बढ़ना—

ताशीचाव-युद्ध—निउच्चाङ्गमें जापानो ।

पाठक ! एकवार फिर ओजूकी फौजकी और लौटिये । ओजूकी फौज कहाँ है ?—उसो कैचौ नगरके पास, जिसके पतनका हाल आप चतुर्थ परिच्छेदमें पढ़ चुके हैं । आपको थाद होगा, कि कैचौपर अधिकार करनेके उपरान्त झुरोकीकी फौज कैचौके सामने बहुत ही लम्बा मोरचा बांध बैठ गई थी । इस परिच्छेदमें यह देखिये, कि इसके बाद इस फाँवने, आगे बढ़ क्या कार-रवाई की ।

कैचौसे आगे ताशीचाव नगर है । कैचौसे भागकर रूसी फौज इसी नगरके पास पहुँच जमा हुई और भयङ्कर युद्धकी तयारियोंमें प्रवृत्त हुई । तेलिस्सू, सुगय वच्चेन, कैचौ आदि नगरोंकी तरह ताशीचाव नगर भी लियावटुङ्ग-खाड़ीसे बहुत दूर नहीं और जिसतरह उन नगरोंमें उनके नामके रेल-स्टेशन हैं ; उसी-तरह ताशीचाव नगरमें भी इसी नामका रेल-स्टेशन है । यह कहनेका प्रयोजन नहीं, कि ताशीचावसे आगे रेल-पथपर जापानियोंका अधिकार है और तशीचावसे पीछे यानी लियावयाङ्ग, सुकदन इभ्रतिकी ओरके रेलपथपर जापानियोंका अधिकार । रेलपथके एक भागसे जिसतरह रूसी लाभ उठा रहे थे ; रेलपथके दूसरे भागसे उसी तरह जापानो लाभान्वित हो रहे थे । युद्धके समय रेल बड़े काम आती है ।

ताशीचाव स्थानका रूसो मोरचा बड़ी सुविधाका था। ताशीचाव नगरकी बगलमें कई छोटे-बड़े पर्वत हैं और एक लम्बी पर्वत-माला है, जो ताशीचाव नगरके बायें लियावटुङ्ग-खाड़ीकी किनारे-तक फैली हुई है। इस पर्वतमालाके सामगे एक खुला मैदान है; उस मैदानमें रेना कौड़ भी जं चा स्थान नहीं, जिसपर तोपखाना लगा इस पर्वतमालापर जगे रूसी तोपखानोंका जवाब दिया जा सके। रूसियोंने ताशीचावसे लौटते ही इस पर्वतमालापर तथा इसके आगे-पीछे बगल-बगलके अन्यान्य छोटे-बड़े पर्वतोंपर मोरचे बना तोपखाने लगा दिये और फौजे बैठा दीं। ताशीचावके मोरचोंमें बैठाये गये रूसियोंकी संख्या कौड़ एक लाख थी और बड़ी बड़ी तोपोंकी संख्या कौड़ एक थी। रूस-सेनापति जारूवाइफपर ताशीचाव-रक्षाका भार र्पित किया गया। जिस समय जापानकी शोरसे रूसी फौज र तोपोंकी यह संख्या प्रकाशित की गई, उस समय विदेशी

राश्योंने शोर किया था, कि जापानियोंकी बसाई यह जगह है; किन्तु पीछे उन्होंने संवाददाताओंने प्रकाशित कि हमने जिस समय वह बातें लिखी थीं, उस समय सिपाहियोंकी संख्या उतनी नहीं थी; इसके उपरान्त भी शीघ्र शीघ्र ताशीचावमें और भी अन्य संयुक्त

संयुक्त और इत्यादि विषय बरनेके लिये लिखे जा चुके हैं। हम इत्यादि संवाददाताओंने लिखा है, कि रूसी सैन्योंने जापानी सैन्यको शक्तिका परिचय बहुत बुरी तरह प्रा चुके थे और उन्हीं

जापानी फौजको ताशीचावमें रोकनेके लिये रूसियोंने थोड़ा आयोजन किया न होगा। ताशीचावकी बालनें रूसियोंने जो मोरचे तय्यार किये थे; एक ही वह प्राकृतिक बनावकी बजह अत्यन्त सुदृढ़ थे; दूसरे रूसियोंकी चरदस्त फौज और तोपोंने उन मोरचोंको और भी दुर्भेद्य बना दिया था। ओजू अपने वाहियों द्वारा इन रूसी मोरचोंका सविस्तार समाचार पा चुके थे और वह जानते थे, कि अरुसी मज्जिल कठिन है। ओजूने ताशीचावके रूसी मोरचोंका हाल सुन सम्भवतः नानशान-युद्धकी याद की होगी; नानशान-पर्वतमालाके मोरचे जैसे दुर्भेद्य थे, इस ताशीचावकी पर्वतमालाके मोरचे भी प्रायः वैसे ही दुर्भेद्य थे; फिर भी सरना या इन मोरचोंको स्वाधिकारमुक्त करना ही होगा। मारशल ओयामाकी आज्ञा ही चुकी है; जापान-सम्राट्की, समग्र जापानकी, समग्र जगतकी आंखें ओजूकी घोर लग चुकी हैं। ऐसे समय क्या ओजू रूसी मोरचोंकी दृढ़ता देख पश्चात्पद हो सकते थे ?

ताशीचावपर आक्रमण करनेकी कुल तय्यारियां की गईं। पहले नोजूकी फौजके बायें छोरको आगे बढ़नेकी आज्ञा दी गई। ताशीचाव और उसके सामनेकी पर्वतमालाके बायें तोम्ब्रान नामक स्थान है। तोम्ब्रानमें रूसियोंकी एक घोरदार फौज थी। ओजूकी फौजकी अग्रगण्यसे पहले नोजूकी फौजने आगे बढ़ तोम्ब्रानकी रूसी फौजपर आक्रमण किया। कुछ देर युद्ध हुआ। चौदह रूसी मारे गये और तीन गिरफ्तार हुए। अन्तमें रूसी स्थानछुत हो भाग गये। तोम्ब्रान-जापानियोंका अधिकार हो गया। इसतरह बड़े ही

एवुरूपमें ताश्रीचाव युद्ध चारम्भ हुआ। रूखियोंने उस समय नोबूकी फौजकी इस विषयका उतना खयाल नहीं किया; किन्तु जब प्रहृत प्रस्तावसे युद्ध चारम्भ हुआ, तब रूस-सेनापतिने देखा, कि तोम्बूशानकी पराधरसे उपेक्षाकर उन्होंने अच्छा काम नहीं किया; तोम्बूशानसे आगे बढ़ नोबूकी फौज ताश्रीचावके रूसी मोरचोंके ठोक पीछे पहुँच सकती थी।

२३वीं जुलाईकी प्रातःकाल ओज़की सैन्य आगे बढ़ी। इस सैन्यका बायां भाग चानो सागरतटकी चौरका भाग अपनी छागड़ रखा; दाहिना भाग आगे बढ़ा। ताश्रीचाव नगरके सामने अन्यान्य पर्वतोंने दीवार जैसी तापिइलिङ्ग नाम्नी पर्वतमाला है। रूसी फौजे इस पर्वतमालापर और भी सुदृढ़ मोरचे बांध बेठी थीं। विशेषतः पर्वतमालाका जो दक्षिण भाग ताश्रीचाव नगरके समीप था, उस भागको रूखियोंने बहुत ही सुदृढ़ बना लिया था। माइन, कंटोले तार, खन्दक आदि किशो चीजको भी कमी नहीं थी। इस भागके सामने वनाच्छादित मैदान था। मैदानमें छागड़ रूसी चौकियां थीं। २३वीं को दिनभर आपानी फौजे इस चौकियोंके रूखियोंको मारकाटकर पाछे हटाता चौर पृथ्वीके सुदृढ़ मोरचोंका चार आगे बढ़ता रहा। राति उपस्थित हो-पर चापना फौजाने खुले मैदानमें डेरा डाला।

२४वीं जुलाईकी प्रातःकाल आपानी फौजे फिर आगे बढ़ी। दूरसे रिखाई देनेवाली तापिइलिङ्ग पर्वतमालाक्रमशः नर्मथे पहुँच-और भी उन्नीच हुई। दिन होई ६ बजे आपानी फौजे परसे निकल छागड़ छागड़ उग मैदानमें प्रवेश करने लगी, किन्तु

दूसरे किनारे तापिङ्गलिङ्ग पर्वतमाला है। जैसे ही जापानी फौजे मैदानमें पहुँचीं, वैसे ही उनपर तापिङ्गलिङ्गके रूसी तोपखाने गोले बरसाने लगे। जापानी फौजोंका आगे बढ़ना कठिन हो गया। मैदानमें टीलों या उच्चभूखण्डका जहाँतक आश्रय पा सकीं, वहाँतक जापानी फौजे आगे बढ़ीं; वहाँतक आगे बढ़ना मानो नृत्य-सुखमें पैर देना था। सूर्यदेव निर्मल गगनमें चमक रहे थे; मोरचेमें बैठे रूसी मैदानका कोना कोना अच्छी तरह देख रहे थे; जिस मैदानमें जिस जगह जापानी सिपाहियोंका समूह देखते, उसी जगह थड़े बड़े गोलोंकी बौद्धार करते। जापानियोंके पास भी बड़ी बड़ी तोपें थीं और उन तोपोंके बड़े बड़े गोले बहुत ही भयङ्कर थे; किन्तु उस मैदानमें या उसके आसपास तापिङ्गलिङ्ग पर्वतमालाके सुकाविष जापानी तोपखाना लगानेके लिये एक भी ऊँचा पर्वत नहीं था। जापानियोंका बड़ी मुशकिलसे सामना था। रूसी गोलोंकी कोई परवा न कर मैदानमें निकल धुस तथ्यारकर जापानियोंने अपनी तोपें लगा दीं सही; किन्तु उनसे वैसा सुफल उत्पन्न नहीं हुआ। सुफल ही कैसे सकता था? पर्वतमालाके शिखरपर बड़ी बड़ी चट्टानोंके पीछे लगी रूसी तोपोंको नीचेके खुले मैदानमें लगी जापानी तोपें प्रतिग्रस्त कैसे कर सकती थीं? साहससे, पुरुषार्थसे, उद्यमसे उतने ही काम होते हैं, जितने हो सकते हैं; जो काम किसी अवस्था और किसी रूपसे हो नहीं सकते, वह काम कैसे हो सकते हैं?

फिर भी; जापानी तोपोंने रूसी तोपखानोंपर पधाग्रथक रूब बरसाये और दोपहर बाद जापानी फौजोंने अपना आश्रय-

स्थान परित्यागकर मैदानमें निकल तापिङ्गविङ्ग पर्वतमालापर धावा किया। पहले ही सिख चुके हैं, कि तापिङ्गविङ्ग पर्वतमालापर रुखकी एक सौ बड़ी बड़ी तोपें लगी थीं। जापानियोंका अग्रसर होना देख यह सब कजदार तोपें क्षण क्षणके उपरान्त आगे बढ़ती हुई जापानो फौजोंपर गोले बरसाने लगीं। कोई क्रम नहीं था—नियम नहीं था—रुखकी जो तोप जहांतक शीघ्र गोलावृष्टि कर सकती थी; वह तोप जहांतक शीघ्र गोले बरसाने लगी। मन्द्रते मैदानमें गोलोंके टुकड़े बरसने लगे। बिना फटे गोलोंके समीपपर गिरनेसे भूगर्भ छिन्नभिन्न हो आकाशकी ओर उड़ जाता और घूँस बनकर रणभूमिपर बरसता। छिन्नभिन्न भूखण्डके खाप खाप कितने हो सिपाही भी उड़ जाते और धूमिमय मांसपिण्डमें परिणत हो घरातलमें गिरते। साथ साथ लगातार भयङ्कर शब्द होता; एक विजली—दो विजली—दश-बीस विजली नहीं; दृष्टुंख विजलियोंकी अविराम कड़कड़ाहटसे जैसे एक अविश्रान्त विकट ज्ञानमूय वगानेवाली महाध्वनि हो सकती है; रुखियोंको उल अदिराम गोलावृष्टिसे प्रायः देसी ही महाध्वनिसे विश्रांति परिपूर्ण हो रही थीं। उल भीषण गोलावृष्टिमें—उल भयङ्कर महाध्वनिमें; आत्ममत्वाश्रय जापानी पलटनें सुदृढाद करती स्थान स्थानमें महावेगसे रुही मोरतोंकी ओर दौड़ीं। बहुसंख्यक सिपाहियोंसे एताएन रोमपर भी उनकी अग्रगतिमें कोई रुके न आया; कोई शौच पर्वतके तलदेशमें पहुँची; कोई तलदेश पीछे छोड़ पर्वतमालापर चढ़ रुही मोरतोंके समीप पहुँची। कोई रुही मोरतोंके सिद्ध

दूसरे किनारे तापिङ्गलिङ्ग पर्वतमाला है। जैसे ही जापानी फौजें मैदानमें पहुँचीं, वैसे ही उनपर तापिङ्गलिङ्गके रूसी तोपखाने गोले बरसाने लगे। जापानी फौजोंका आगे बढ़ना कठिन हो गया। मैदानमें टीलों या उच्चभूखण्डका जहाँतक आश्रय पा सकीं, वहाँतक जापानी फौजें आगे बढ़ीं; वहाँसे आगे बढ़ना मानो नृत्य सुखमें पैर देना था। सूर्यदेव निर्मोघ गगनमें चमक रहे थे; मोरचेमें बैठे रूसी मैदानका कोना कोना अच्छे तरह देख रहे थे; जिस मैदानमें जिस जगह जापानी विप्रादियोंका समूह देखते, उसी जगह बड़े बड़े गोलोंकी बौद्धार करते। जापानियोंके पास भी बड़ी बड़ी तोपें थीं और उन तोपोंके बड़े बड़े गोले बहुत ही भयङ्कर थे; किन्तु उस मैदानमें या उसके आसपास तापिङ्गलिङ्ग पर्वतमालाके सुकाविष जापानी तोपखाना लगानेके लिये एक भी ऊँचा पर्वत नहीं था। जापानियोंका बड़ा सुशक्तसे सामना था। रूसी गोलोंकी कोई परवा न कर मैदानमें निकल धुस तय्यारकर जापानियोंने अपनी तोपें लगा दीं सही; किन्तु उनसे वैसा सुफल उत्पन्न नहीं हुआ। सुफल ही कैसे सकता था? पर्वतमालाके शिखरपर बड़ी बड़ी चट्टानोंके पीछे लगी रूसी तोपोंकी नीचेके खुले मैदानमें लगी जापानी तोपें क्षतिग्रस्त कैसे कर सकती थीं? साहससे, पुरुषार्थसे, उद्यमसे उतने ही काम होते हैं, जितने हो सकते हैं; जो काम किसी अवस्था और किसी रूपसे हो नहीं सकते, वह काम कैसे हो सकते हैं?

फिर भी; जापानी तोपोंने रूसी तोपखानोंपर पचाशकड़ रुब गोले बरसाये और दोपहर बाद जापानी फौजोंने अपना आश्रय-

स्थान परिव्यागरर मैदानमें निकल तापिङ्गलिङ्ग पर्वतमालापर धावा किया । पहले ही लिख चुके हैं, कि तापिङ्गलिङ्ग पर्वत-मालापर रुखकी एक सौ बड़ी बड़ी तोपें लगी थीं । जापानियोंका अग्रसर होना देख यह सब कजदार तोपें क्षण क्षणके उपरान्त आगे बढ़ती हुई जापानो फौजों-पर गोले बरसाने लगीं । कोई क्रम नहीँ था—नियम नहीं था—रुखकी जो तोप जहांतक शीघ्र गोलावृष्टि कर सकती थी; वह तोप वहांतक शीघ्र गोले बरसाने लगी । खन्डके मैदानमें गोलोंके टुकड़े बरसने लगे । बिना फटे गोलोंके जमीनपर गिरनेसे भूगर्भ छिन्नभिन्न हो आकाशकी ओर उड़ जाता और घूँघि बनकर रणभूमिपर बरसता । छिन्नभिन्न भूखण्डके साथ साथ कितने ही सिपाही भी उड़ जाते और धूमिमय मांघ-पिच्छमें परिखत हो घरातलमें गिरते । साथ साथ लगातार भयङ्कर शब्द होता; एक विजली—दो विजली—दश-बीस विजली नहीं; बहुसंख्य विजलियोंकी अविराम कड़कड़ाहटसे जैसी एक अविश्रान्त विकट ज्ञानशून्य बगानेवाली महाध्वनि हो सकती है; रुखियोंको उस अविराम गोलावृष्टिसे प्रायः देसी ही महाध्वनिसे दिशावे परिपूर्ण हो रही थीं । उस भीषण गोलावृष्टिमें—उस भयङ्कर महाध्वनिमें; व्यात्मममता-शून्य जापानी पलटने युद्धनाद करती स्थान स्थानमें महावेगसे रुखी मोरचोंकी ओर दौड़ें । बहुसंख्यक सिपाहियोंके हताहत होनेपर भी उनकी अग्रगतिमें कोई फर्क न आया; कोई फौज पर्वतके तलदेशमें पहुँची; कोई तलदेश पीछे छोड़ पर्वतमालापर चढ़ रुखी मोरचोंके समीप पहुँची । कोई रुखी मोरचोंके भिन्न

अपने बचे हुए अंगुली प्रीत्र प्रीत्र नष्ट करने लगे। इतना ही श्रम—इतना ही पराक्रम अतौकिक था—अङ्ग तथा। जापान-सेनापति ओकू दूर अपने घाफके बीच खड़े दूरबीन द्वारा अपनी सैन्यको यह साहसिकता देख रहे थे; उन्होंने भी इसे यथेष्ट पाया; खयाल किया, कि आगे और भी क्षति है; लाभ नहीं। आपने आगे गई फौजोंको लौटने और दूसरी रक्षित फौजोंको आगे बढ़नेकी आज्ञा दी। दूसरी फौजें भी सागरतल-ज्वत् अग्रसर हो पहाड़से टक्कर ले खौटनेके लिये आदिष्ट हुईं; उनके कौटनेसे पहले और रक्षित फौजें आगे बढ़ीं; और बढ़ीं; फिर बढ़ीं। फिर तो फौजोंके आगे बढ़ने और पीछे हटनेका तांता लग गया।

विलायतके 'डेलोमेल' अखबारके रिपोर्टर वृडल साइव रूसी फौजके साथ थे। युद्धस्थलसे दस कोस पीछे एक चीना मोनारपर बैठ दूरबीन द्वारा आप इस युद्धके एक अंगुली दृश्य देख रहे थे। इस युद्धका दृश्य देख आपने इसका जो वर्णन उस समय प्रकाशित किया था, उसका मर्मानुवाद इसतरह है,—

“जापानी गोलन्दाजी जोरदार बहीं थी; दोपहरतक किसी तरह आरो रङ्गर समाप्त हो गई। जापानी सिपाही आगे बढ़े; ऐसे समय ताशीचावके पूर्व और एक रूसी तोपखाना प्रकट हुआ; अन्यान्य तोपखानोंकी तरह यह तोपखाना भी जापानी फौजोंपर गोलावृष्टि करने लगा। अफेद धुएँ और उनके बीचकी लाल चमकसे रूसी आपनल गोशोंका फटना स्पष्ट दिखाई देता था।

“रूसी मोरचोंके सामने बारंबार धुएँकी लम्बी पंक्ति दिखाई

देती थी; यह पंक्ति प्रति जय रूसी मोरचोंके समीप छाती जाती थी। जापानी फौजे आगे बढ़ रही थीं और हरेक कदमपर रूसी मोरचोंपर गोलियां बरनाती आती थीं; जापानी सिपाहियोंकी छूटती बन्दूकों हीसे यह धुआं तय्यार होता था। अन्तमें यह पंक्ति रूसी मोरचोंके सामने एक जगह ठहर गई और शीघ्र शीघ्र दाहने-बांये पनर इसने वारंवाः प्रकट और अन्तर्धान होनेवाले धुएँका एक विशाल अड्डंचन्द्राकार तय्यार कर दिया।

“जापनियोंको यह गति देख रूसियोंको नये स्थानोंमें तोपखाना लगानेका प्रयोजन हुआ। रूसियोंने शीघ्र शीघ्र एक नया मोरचा तय्यारकर उसमें दश बड़ी बड़ी तोपें लगा दीं। श्यामल लय तथा लता-गुल्मादिसे हरिद्वयी इस नये रूसी मोरचेमें रूसकी दशो भूरे रङ्गकी तोपें स्पष्ट दिखाई देती थीं।

“इसके उपरान्त एक ओरसे जापानी फौजोंने धावा किया; दूसरी ओरसे अन्यान्य तोपखानोंके साथ साथ इस नये तोपखानेने भी जापानी फौजां पर विकट गोलावृष्टि आरम्भ की। इसके उपरान्त ही धूलि और धुएँसे रयाभूमि आच्छन्न हो गई; मेरी छांखोंके सामनेसे रयाभूमि अन्तर्हित हुई। कुछ देरतक धूलि और धुआं अपनी जगह रहा; तुम्हे कुछ भी दिखाई न दिया। अन्तमें परदा हटा; तेज वायुके झोंकोंने धुआं पौर धूलि दोनोंको रयाक्षलपरसे दूर हटा दिया; युद्धस्थल स्पष्ट दिखाई देने लगा। अब और ही दृश्य दिखाई देता था। जापानी फौजे पीछे हट रही थीं; उनकी श्रेणी भङ्ग हो गई थी।”

घोर संग्राम आरम्भ हुआ। जापानी फौजोंसे मैदान भर उठा। कितनी ही फौजे आगे बढ़ती थीं; कितनी ही पीछे हटती थीं। एक ओरके आक्रमणसे लौट जापानी फौजे दूसरी ओर आक्रमण करतीं, उस ओरके भी आक्रमणमें अकृतकार्य होनेपर तीसरी ओर आक्रमण करतीं; इसीतरह दिनभर जापानी फौज आक्रमणका खेल बदलती रहतीं। सूखी मोरचोंका मध्यभाग चैन-कियाकी नामक पर्वतखण्डपर था। दिनभरमें चार बार जापानी फौजे इस पर्वतपर चढ़ रूसी मोरचोंमें बैठे रूसी सिपाहियोंसे भिड़ गईं। एकवार तो यहाँतक हुआ, कि इस पर्वतपर जापानी फौजोंने अपना ध्वजातक गाड़ दी और मोरचे बांधनेकी तयारी की। किन्तु जापानी तोपोंकी निस्तब्धता और रूसी तोपोंकी विषम गोलवृष्टिके सामने जापानी फौजोंकी किसी कार-रवाईका कोई फल न हुआ; जापानी फौजोंका प्रत्येक आक्रमण व्यर्थ हुआ। धीरे धीरे सूर्यदेव अस्ताचलगामी हुए; युद्धस्थलने विकट मूर्ति धारण की। सन्ध्या होनेपर जापान-सेनापति योकोने अपना ओरसे युद्ध रोकनेकी आज्ञा दी। जापानी फौजे रुकीं; कुछ देरके उपरान्त रूसी तोपोंकी वह दिनभरकी चकती हुई भीषण गोलन्दाजी रुकी। रणस्थलमें अपेक्षाकृत शान्ति उप-स्थित होनेपर भी दोनों ओरके सिपाहियोंके मस्तकमें बहुत देरतक अशान्ति फैली रहती; वेगपूर्वक चलती हुई वायुकी ध्वनि भी उनके माथेमें दिनभरकी उसी विषम गोलन्दाजीका भयङ्कर शब्द उल्लिखित करती थी।

जापान-सेनापति योकोने क्या करे? जापानी फौजोंके असाह्यिक पराक्रम प्रकाश करनेपर भी उपपर विजय-सूचनी

सुप्रसन्न न हुईं ; जापानो फौजोंके लाख लाख यत्न करनेपर भी रूसी सौरचोंका पतन न हुआ ? यही सब देख सेनापति ओजू सोचने लगे, कि अब क्या किया जाये ? वह जानते थे, कि आजके युद्धमें अपने तोपखानोंका सहारा न पानेका बजह ही जापानी फौजे' हतहाय्य हो नहीं सकीं और बिना जापानी तोपखानोंके ताहाय्यके जापानो फौजे' विजयी हो न सकेंगे। किन्तु जापानी तोपखाने किस जगह लगाये जाये ? तापिङ्गलिङ्गके सामने एक भी ऊंचा स्थान नहीं था ; बारह घण्टेके उपरान्त फिर प्रातःकाल उपस्थित होगा ; उस समयतक ऊंचो धूम तय्यारकर जापानो तोपखानोंका खगाना एक तो बड़ा ही अमसापेक्ष काम था ; दूसरे उस कामके होनेपर भी सुफुलकी वैसे प्रत्याशा की जा नहीं सकती थी।

तब क्या किया जाये ? जिन जापानी फौजोंकी अग्रगति अचतक अप्रतिहत प्रमायित हुई थी ; जो जापानी फौजे' समय समयपर अपनेसे तिगुनो रूसी फौजकी भी नीचा दिखा चुकी थीं ; जो जापानो फौजे' सिर्फ एक दिनके युद्धमें नानशान जैसी दुर्गम्य और दुरारोह पर्वतमालापर अधिकार कर चुकी थीं ; उन्हीं जापानो फौजोंको क्या इस ताशीचाव-युद्धमें रूसियों द्वारा परास्त हो पीछे हटना होगा ? कुरीको, नांगी प्रभृति सेनापतियोंको छोड़ क्या जापान-कुल-कुल्ल दनका कलङ्क ओजू हकी माये लगेगा ? धीरे धीरे सुचतुर ओजू, अपना सैन्यको दुर्दशा ; अपनी निन्दाके ध्यानसे अत्यन्त व्यथित हुए। वीरवरको ऐसे कलङ्कपूर्ण जीवनकी अपेक्षा नृत्य भी भली जाग पड़ी। अधीर और व्याकुल हो जापान-सेनापतिने विजय प्राप्तिकी एक युक्ति

निकाली। यह युक्ति जमी आशाप्रद थी, जो ही निराश्रयपूर्ण भी थी; इस युक्तिके पूर्ण होनेसे एक ओर यदि जापानी फौजोंके विजय पा सकती थीं, तो दूसरी ओर युक्तिके विफल होनेसे दखनातीत दुर्दशाओंमें भी फँस सकती थीं।

ओकूने स्थिर किया, कि दिनके युद्धमें तोपखानेका बड़ा प्रयोजन है; किन्तु रात्रिके युद्धमें तोपखानेका तनिक भी प्रयोजन नहीं। इसलिये रात्रि होकर युद्ध जापानी फौजोंके लिये मङ्गलजनक है। वह जानते थे, कि रात्रिका युद्ध नाना विभीषिकाओंका आकर है। रात्रिके युद्धमें बड़े सावधानीका प्रयोजन है। शत्रुको पहलेसे इस युद्धका समाचार मिलना न चाहिये; युद्ध-यात्राके समय किसीको किसी तरहकी बातचीत करना न चाहिये; शत्रुको चौकियोंके सिपाहियों, और राहके सन्तरियोंका उनसे औरसे बन्दूक दगनेसे पहले उनके पास पहुँच उन्हें बन्दूकके बन्दे—तलवार या सङ्गीनसे समाप्त करना चाहिये; इतनी व्यवस्थाओंके सफल होनेका पूर्ण विश्वास करनेके उपरान्त नैश-युद्धके लिये प्रस्तुत होना चाहिये। ओकू यह भी जानते थे, कि रात्रिके घोर अन्धकारमें शत्रु-मित्तमें किसी तरहका अज्ञान नही रहता; भाई भाईको नष्ट कर सकता है। किन्तु यह अन्तिम अमुविधा बहुत बड़ी अमुविधा होनेपर भी जापानी फौजोंके लिये नगण्य थी। जापानी फौजोंके प्रत्येक सिपाहीको जिसतरह अन्यान्य साज-सामान दिये जाते हैं; उसीतरह एक एक कम्पास भी दिया जाता है। इस कम्पासकी दिक्क बगानेवाली छःके ऊपर जो चन्द्राक्षर शीशा था, उसपर अन्धकारमें प्रकाश उत्पन्न करनेवाला 'फावफोरन' नामक

द्रव्य विशेष लगा था और इसके फलसे घोर अन्वकारमें भी जापानी सिपाही दिक्कत हो नहीं सकते थे : सेनापति ओजूने स्थिर किया कि प्रत्येक फौजके आक्रमण करनेका कि इस पद्धति स्थिर किया जाये, जिससे एक जापानी फौजको टक्कर दूपरी जापानी फौजसे हो न सके। अपने नैशयुद्धको अन्यान्य बाधाओंके भी दूर करनेकी व्यवस्था की। यत्र करना दोषही बात नहीं; यत्र निष्कण होनेका अवश्यम्भवी फल नष्ट सुखमें पतित होना भी कोई दोषकी बातकी नहीं; खूब शोच-विचारके उपरान्त अन्तमें ओजूने नैशयुद्धके प्रवृत्त होना ही स्थिर किया।

सिपाहियोंको समाचार दिया नहीं गया; ओजूने अपने अधीनस्थोंके अफसरोंसे अपनी यह मनोकामना प्रकट की। सन्ध्याकी दालिमा प्रगाढ़ होनेसे पहले ही जापानी अफसरोंको नैशयुद्धकी सूचना मिल गई और अब लोगोंके उसी समय इस युद्धकी तय्यारी आरम्भ की। अफवाह है, कि ओजूके अधीनस्थ कितने ही अफसरोंने इस युद्धपर घोर अपत्ति प्रकाश की; अपनी अपत्तिको पृष्टिके लिये अन्यान्य युक्तिके साथ साथ एक यह युक्ति भी उपस्थित की, कि दिनभर युद्धके करनेके उपरान्त जापानी फौजे खूब घबरा गई है और उनके विद्यामलाभ विना जिये उन्हें युद्धमें प्रवृत्त करना कभी युक्तिमद्गत नहीं। इसपर ओजूने उत्तर दिया,—“यदि जापानी फौजे अन्त-ज्ञान्त है, तो खूबी फौजे कम अन्त-ज्ञान्त नहीं; रुद्धियोंको क्लान्तिको वजह जापानी फौजोंको अधिक अस करना न हीगा।” किसीकी कोई बाधा न टिकी; पूर्ण वेग और अत्यन्त तरापूरवक नैशयुद्धकी तय्यारी चली।

२४वें जुलाईको रात कोई माढ़े सात बजे राहने भागकी जापानी फौजोंको एकाएक इस युद्ध-यात्राका समाचार दिया गया। किन्ती और देशके सिपाही होते, तो शायद इस दो या छह घण्टोंके विश्रामके उपान्त इस नई और अतीव अश्रद्धाजनक यात्राका समाचार सुन असचुर होते; गुप्त प्रकट भावसे अपने अफसरोंको उलटो-तोड़ो बातें सुनाते; किन्तु जापानी सिपाही वैसे नहीं थे। आज दिनभरकी लड़ाईके फलसे अंग्रेजकी जीतका प्रथम जापानी सिपाही उदास हो गया था; ग्लासिसे, दुःखसे, चोमसे हरेक स्वदेशभक्त जापानी सिपाही को छाती फट रही थी। युद्ध समाप्त होनेपर शरीर-वेदना दूर हो गई थी सही; किन्तु मानसिक वेदना बहुत ही बढ़ गई थी, जो उस शारीरिक वेदनाकी अपेक्षा कहीं भयङ्कर थी। जापानी सिपाही विनयप्राप्तिको कोई भी युक्ति निकाल नहीं सके थे। ऐसे समय जब उन्होंने इस युद्ध-यात्राका समाचार पाया, तब उनके हृदयकी सीमा न रहो। उनके चेहरे ध्यानन्दसे उज्ज्वल हो उठे; जिन रूसियोंने आज दिनके युद्धमें उनके बहुतेरे भाई जापानियोंको मारा था; उन्हीं रूसियोंसे एकवार फिर भिड़ खदेड़का सुखीज्ज्वल करनेका; आज दिनके युद्धके संशोधनका समय उपयुक्त आया। जिन सिपाहियोंके हृदयमें इतना स्वदेशानुराग था; इतना आत्ममर्त्यादाका विचार था; वह जापानी सिपाही कौनसा असम्भव सम्भव कर नहीं सकते थे ?

हथियारोंसे लेश हो रात कोई आठ बजे जापानी सिपाहियोंने रूसी मोरचेके मध्यभाग केनकियाकी गिरिशृङ्ग और बायें भागको घेरे यात्रा की। दिनके व्याक्रमणमें फौजे विगुलकी आवाज-

पर, फौजी वाजिके तालपर घघियार खड़खड़ाती, पदशब्द करती पंक्ति बांध आगे बढ़ती है; किन्तु रात्रिके आक्रमणमें यह सब कुछ नहीं होता। विगुल और वेणु तो दूर रखा; किसी सिपाहीको नटुखरमें भी बातचीत करनेको आज्ञा दी नहीं जाती। सिपाहियोंकी पंक्ति भी नहीं बंधती। रात्रियुद्धका साधारण नियम यह है, कि आक्रमण करनेवाली सैन्य दो स्थान निदिष्ट करती है। एक स्थानमें कम्पसे चलकर सिपाही एकत्र होते हैं और अङ्गरेजोंमें इस स्थानको point of assembly कहते हैं। इस स्थानमें सिपाहियोंको और आगे बढ़ एकत्र होनेके लिये दूसरा स्थान बताया जाता है; इस दूसरे स्थानका नाम अङ्गरेजोंमें point of deployment है। इस दूसरे स्थानसे आक्रान्त होनेवाली शत्रुकी फौजे अधिक दूर नहीं रहतीं। आक्रमण करनेवाली सैन्यके सिपाही छोटे छोटे दलोंमें विभक्त हो जब उस दूसरे स्थानमें पहुँच जाते हैं, तब उनके प्रति शत्रुपर आक्रमण करनेके लिये एक विशेष सङ्केत किया जाता है। रात्रि-युद्धका साधारण नियम ऐसा ही है, किन्तु ओऊने अपनी सैन्यके लिये एक नया नियम बना दिया। आपने आज्ञा दी, कि पहले स्थानमें सैन्य-समावेशका प्रयोजन नहीं; सिपाही पड़ावसे निकल चौकियों और सन्तरियोंको मारकाट सीधे पूर्वोक्त दूसरे स्थान point of assembly में एकत्र हों और वहाँ सङ्केत पाते ही शत्रु पर टट पड़ें।

रात्रिकी घटना थी। उस वनमें, पर्वतमें, घोर अन्धकारमें प्रतिहिंसाके अन्तर्दाहसे जलते हुए जापानी सिपाहियोंने आगे बढ़नेके समय रूसी सन्तरियों और रूसी चौकियोंको जो दुर्दशा

की होंगी, उसका वर्णन सिवा उन मुक्तभोगी, रुमियों या जापानियोंके दूसरा कोई कैसे कर सकता है ? हाँ इतना अवश्य ही कहा जा सकता है, कि जगह जगह अन्वकारमें खड़े रूसी सैन्यियोंके समीप जापानी निपाहो बेटकर, लोटकर, वृत्तोंकी आड़ पकड़कर पहुँचे होंगे। वनकी उन समयकी वह शान्ति एकाएक किसी कदर भङ्ग हुई होगी। हलके आक्रमणका शब्द हुआ होगा; किसी बौद्धके भूमिपर गिरनेका शब्द हुआ होगा; हाथ धेर पटकनेका शब्द हुआ होगा; अन्तमें फिर वही पूर्ववत् शीघ्र शान्तिका विस्तार हुआ होगा। उस समय उस वनमें कितने भयङ्कर शान्ति छाई थी ? यह बातें हम इस प्रमाणपर निर्भर हो कहते हैं, कि जापानियोंकी यह यात्रा निर्विघ्न बीती। एक भी रूसी सन्तरी अपनी सैन्यको जापानियोंके आगमनकी सूचना दे न सका या बन्दूक आदि चलानेका अवसर पा न सका। कुल विघ्न-बाधाये अतिक्रमकर जापानी फौजे रात कोई दश बजे रूसी मोरचेके अतीव सुदृढ़ मध्य-भाग चिनकियाशौ और बाये पाश्चिके सामने निर्दिष्ट स्थान या point of deployment के सामने जा पहुँचीं।

जापानी फौजोंके निर्दिष्ट स्थानमें समवेत होते ही रात कोई दश बजे प्रधान सेनापति ओजूकी आज्ञाते एक हवाई दागी गई। हवाई आकाशमें जा फटी; उसके चमकीले गुल नैश-गगनमें खिज गये। जापानी फौजके प्रति बुद्धारम्भना यही लक्ष्य था। हवाईके आगेय फूल अभी दुझने भी न पाये थे, कि घसीन कांपो, पर्वत बांपा—खावर-जङ्गल सभी कांपे; सगस सगस सिपाहो बन्दूकों पर सङ्गीत चढ़ा वजनिघोषंभी तरह

दूटनेवाले आग्नेय-अस्त्रोंका व्यवहार नहीं था; तख्तारें थीं; सङ्गीनें थीं; छुरे थे; फिरचें थीं,—महासमरका अन्तिम फ़ैसला जिन अस्त्रोंके व्यवहारसे हुआ करता है, उन्हींका व्यवहार होने लगा। दमभरमें जगह जगह हताहतोंके ढेर लग गये। कहीं कोई किसी भयङ्कर जल्मसे जखमो ही भरते हुए पशुको तरह चोत्कार करने लगा; कहीं कोई रोड़ टूट जानेको बजह हिलनेमें बिलकुल ही असमर्थ हो पड़ा पड़ा अपनी दुईशापर अश्रुपात करने लगा। किसीका हाथ उड़ गया; किसीका पैर कट गया; किसीका भङ्गारा खुल गया, अंतिं बाहर निकलने लगीं। हताहतोंके ढेरसे उत्तम रक्तधारा बह चट्टानोंको भिगाती, पर्वतकी तलदेशकी ओर दौड़ी। जापानी मानो अपनी दिनभरकी चतिका प्रतिशोध ले रहे थे। दिनभर लाख लाख चेष्टा करके भी रूसियोंका सान्निध्य प्राप्त कर नहीं सके थे; इस समय उस दिनभरको हृदयस्थ युद्ध-कामना प्रकाश कर रहे थे।

जापानियोंके लोहेकी आंच बसह्य थी। रूसी अपने मोरचे छोड़ पर्वतमालासे उतर भागे। रूसियोंकी भागड़का विशेष विवरण हमें नहीं मिला; इसलिये प्रकाशित नहीं हुआ। 'केसल्स'ने दिनभरका पूर्ण विवरण लिखकर रात्रि युद्धमें जिस जगहसे जापानियोंका आक्रमण हुआ है, उस जगहसे आगेके युद्ध-विवरणपर परदा छोड़ दिया है; कुछ लिखा ही नहीं। टाइम्सके एक वाददाताने सिर्फ़ इतना लिखा है,—“रात कोई दश बजे जापानी फौजोंने रूसी मोरचोंपर आक्रमणकर प्रातःकाल कोई तीन बजेतक अधिकार कर लिया।” और भी लिखा है,—“इसी रात जापानियोंके दूसरे दलने रूसियोंके मध्यभाग के कियेको प्रभृति

अधिवासी बड़े ही सङ्कटमें थे। निर्द्वन्द्व रूशियोंने जापानियोंको विजयप्राप्तिका समाचार पाते ही रात हीको ताशीचाव नगर और रेल-स्टेशनको आग लगा दी थी। रेल-स्टेशन पूर्णरूपसे भस्म हो चुका था; नगरका एक अंश जल रह गया और नगरके चोना अधिवासी भीत-त्रस्त हो प्राणरक्षाके लिये इधर उधर भाग रहे थे। जापानियोंने नगर प्रवेश करते ही प्रजाको घेर्य दिया और यथासम्भव शीघ्र आग बुझाने नगरमें आन्ति स्थापन की। कुछ रात्रि पर्यन्त ताशीचावको जिन सरकारी इमारतोंपर रूसी ध्वजा उड़ती थी, आज उन्हीं इमारतोंपर जापानी ध्वजा उड़ने लगी। युद्धका प्रथम रेखा ही होता है; देखते देखते बल्पनातीत परिवर्तन हो जाता है।

दोनो ओरके मिलाकर कुल कोई छह लाख पिपाही इस युद्धमें प्रवृत्त हुए थे। विदेशी संवाददाताओंने वा स्वयं रूस-सरकारने रूसी फौजकी चतिका बैसा कोई समाचार प्रकाशित नहीं किया। रूसको ओरके विदेशी संवाददाताओं तथा रूस-सरकारने तो रात्रि-युद्धका भी समाचार प्रकाशित नहीं किया। रूस-सरकारकी ओरसे सिर्फ इतना समाचार मिला,—“प्रधान सेनापति कुरोपाटकिंगने दाहने बङ्ककौ-बन्दरकी ओरसे और बाये सोम्सुशानके नोजू-अधिष्ठित स्थानसे ताशीचावपर जापानियोंका आक्रमण होनेकी आशङ्कासे रूसी फौजको ताशीचाव परित्यागकर पोखे सौटनेकी आज्ञा दी। जापानियोंने रूसी मोरचोंकी खाली पा अथवा आश्चर्य प्रकाश किया।” देखा, पठक! युरोपकी प्रथम अश्विनी शक्ति रूसके समाचार देनेका वह रेखा ही दृष्ट कर और उसके साथियोंके इस युद्धके हताहतोंका समाचार

प्रकाशित न करनेपर भी जापानियोंने अपने चताहत्तोंका समाचार प्रकाशित कर दिया । उनको चोरसे निकाला —“इस युद्धमें हमारे एक सौ हियागीस पुख मारे गये, जिनमें दश अफसर थे और नौ सौ पचीस सिपाही आहत हुए, जिनमें सैंतालीस अफसर थे ; रात्रियुद्ध हीमें अधिक अफसर आहत हुए ।” जापानियोंने रूसी फौजके बहुसंख्यक सिपाही और अफसर गिरफ्तार कर लिये थे । गिरफ्तार अफसरोंमें एकने प्रकट किया,—“इस युद्धमें रूसकी घोरके कोई दो हजार पुख चताहत हुए । सिवा इनके रूस-सेनापति सेकासाफ और दशटोनिच आहत हुए हैं ।” यह समाचार एक रूसी अफसरने दिया था । रूसकी इतनी बड़ी पराजयकी खति लोगोंकी अटकल और कल्पनापर आजतक छूटी हुई है । इसी युद्धमें फलसे रूसियोंको जापानके क्रम क्रमसे बहुचित होनेवाले अर्द्धचन्द्राकार सैन्य-यूद्धके द्वावसे पीछे हट निउच्चाङ्गसे कुछ ही दूर आगेके हैचिङ्ग नगर और उसके आसपासकी छोटी पहाड़ियोंका आश्रय लेना पड़ा था । हैचिङ्ग-युद्ध और अभूतपूर्व रणक्षीशक-जनित अर्द्धचन्द्राकार जापान-सैन्य-समूहके क्रमिक सङ्कोचका हाल इस आगे चलकर खतन्त्र परिच्छेदमें लिखेंगे ; इस समय पाठक ताशीचाङ्ग-युद्धकी एक आनु-सङ्गिक घटना हुन लें ; जो काम प्रयोजनीय नहीं ।

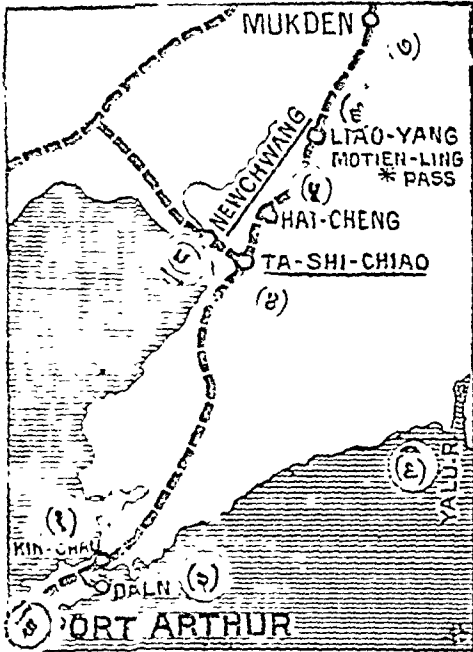
यङ्गकौ उष्ट्र निउच्चाङ्ग-नन्दरका नाम हमारे किसी पाठककी यदि याद आये, तो आ सकता है ; क्योंकि इस पुस्तकके प्रथम भागके किसी परिच्छेदमें इसका नामोल्लेख ही चुका है । जिन दिनों ताकूशान खानमें सेनापति नोचूकी सैन्य जहाजसे उतरी थी, उन्हीं दिनों जापानके लार्ड जड़ी जहाजोंने एरधर-नन्दरकी

परिक्रमाकर इस निउच्वाङ्ग बन्दरके समीप जापानी सैन्य जा उतारी थी। यह जापानी फौज किनारे उतर कुछ दूर तक यङ्ग-कौकी बगलमें बढ़ी, जिससे बन्दरस्य नगरमें बढ़ी हलचल पड़ गई थी; निउच्वाङ्गकी रूसी फौज भाग खड़ी हुई थी। उस समय वहाँ कुछ ही देर ठहर जापानी फौज अपने जहाजोंसे वापस गई थी और इस फौजके जानेका समाचार सुन भागी हुई रूसी फौज बन्दरमें लौट आई थी। उस समय इतना ही हुआ था; इसलिये इतना ही समाचार इस पुस्तकके प्रथम भागके एक परिच्छेदमें दिय गया।

जैसे भारतमें कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, करांची प्रभृति समुद्र-तटके व्यवसाय-केन्द्र हैं, उसी तरह लम्बी लियावटुङ्ग-खाड़ीके बायें छोरपर अवस्थित यह निउच्वाङ्ग-बन्दर है। बन्दरकी बगलमें लियावटो-नदी और लियावटुङ्ग-खाड़ीका सङ्गमस्थल है। लियावटो नदीके चौड़े मुहानेके इसपार रूसका निउच्वाङ्ग-बन्दर है और उसपार चीनकी कोई बसती। मागे लियावटो नदी ही रूसके मञ्चरियाकी चीनके चीन-सान्नाय्यसे जुदा करती थी; उसके इसपार रूसका राज्य था और उसपार चीनका। यथास्थान लिख चुके हैं, कि ताशोचाव, साइबिरिया-व्यरथर-बन्दर रेल-पथका जङ्गलन रोशन था; इस जङ्गलनसे एक शाखा रेल-पथ चल इसी निउच्वाङ्ग तक आया था; यहाँ इसपार रूसके निउच्वाङ्गमें रूसियोंके रेलपथका छोर था और उसपार चीनकी उस बसतानमें चीनके रेलपथका। एक रेलपथसे दूसरे रेल-पथमें आनेवालोंको लियावटो नदी नाथ द्वारा पार करना पड़ती थी।

उन दिनों रूसके इस निउच्वाङ्ग-बन्दरमें अवधाय बढ़े चीरों-

दृष्ट क्षेत्रका मानचित्र ।



(१) किनचौ ; (२) डालनी-बन्दर ; (३) पोर्ट आर्थर-बन्दर ; (४) ताशीचाव (५) है-चिङ्ग ; (६) लियाषयाङ्ग ; (७) मुकदन ; (८) निउच्चाङ्ग-बन्दर ; (९) यालू नदीका सुहाना ।

२५ भाग ८० पृष्ठ ।

पर धा ; अत्राद्य प्रधान सभी जातियां बन्दरमें जमी बैठी थीं ।
 रूसका प्रधान वनाय—चीना बोड़ेके चाटेकी मीठी रोटी थी ।
 रूसी अत्रायायी लियावछो नदीकी तटस्थ बसन्तियोंसे बोड़ेके दाने
 खरीद सैकड़ों नावों द्वारा निउच्चाङ्ग लाते और वहां कजों द्वारा
 दाने पिसवा उनको 'केक' नाम्नी एक तरहकी खमीरी मीठी रोटी
 बनवा रेल द्वारा, जहाज द्वारा दक्षिण-चीन, जापान और कोरिया
 भेजते । नावों द्वारा चमड़ा, फर और लकड़ भी लाते ; किन्तु इनसे
 उतना लाभ उठा न सकते । बन्दरका बाजार हमारे राजा अङ्गरे-
 जोंके हाथ धा । अमनो और अमेरिका यह दोनों शक्तियां भी
 अपने अपने व्यवसाय फैला डटी बैठी थीं ; इसतरह विविध
 जातियों और विविध द्रव्योंका व्यवसाय-केन्द्र होनेको बजह निउ-
 च्चाङ्ग नाना जातिके अधिवासियोंसे ; प्रधानतः चीना जातिके
 अधिवासियोंसे परिपूर्ण हो बड़ा ही रौनकदार बना हुआ था ।
 इस बोनवीं शताब्दिकी सभी उजावटोंसे निउच्चाङ्ग सुसज्जित था ।
 रेल थी, तार धा, राहें थीं, मकान थे, बड़े बड़े बाजार थे,
 युरोपीय तथा अमेरिकन जातियोंकी अङ्गुत दुकानें थीं,—दूसरी
 और मिउनिस्विप्रद्विटी थी, पुलिस थी, अशालत थी, बङ्क धा, कल-
 कारखाने थे ;—कहाँतक गिनावे—समझ लीजिये, कि निउ-
 च्चाङ्गमें सब झूठ था ।

ताशीचाव-युद्धसे पहले जापान-सेनापति ओजूको फौज जिह
 कैचौ नगरमें अवस्थित थी, उसके और उसको बगलकी खाड़ीके
 बीचसे यदि कोई सीधी पंक्ति खींची जाती, तो उस पंक्तिका सिरा
 पहले निउच्चाङ्ग-बन्दरके सामने और पीछे पूर्वोक्त युद्धस्थल ताशीचाव
 नगरके सामने पहुँचती । ऐसी स्थितिमें जापानी फौजें यदि चाहतीं,

तो ताशीचाव-युद्धसे पहले निउच्चाङ्ग-बन्दरपर अधिकार कर लेतीं ; किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया । ओकूकी नैजका वह भाग, जो लैगके मध्यभागसे समुद्रतटतक फैल अपने जहाजोंसे रसदादि लेता हुआ आगे बढ़ रहा था ; निउच्चाङ्गसे कुछ इधर ठहर अपने दाहने अंशको आगे बढ़ ताशीचावके-युद्धमें प्रवृत्त होने दे और उस युद्धका फल प्रकट होनेतक अपनी जगह बैठा रहा ।

ताशीचाव-युद्ध और जापानी फौजके बाये भागके आगे बढ़ निउच्चाङ्गसे कुछ साबिलेपर ठहरनेका छाल निउच्चाङ्गके अधिवासियोंसे छिपा नहीं था । दमवदम तार द्वारा समाचार आते, जो समाचारपत्रों द्वारा या अन्यान्य उपायों द्वारा लोगोंको मालूम हो जाते ।

२४वीं जुलाईको जापानी सैन्यपंक्ति निउच्चाङ्ग छोड़ ताशीचावकी ओर बढ़ी; २४वीं हीसे ताशीचावकी घनो बसतीमें उदासी का गई । २५वींको दिन कोई नौ या दश बजेसे ताशीचाव-युद्ध आरम्भ हुआ । निउच्चाङ्गके रूसी बड़ी बेचैनीसे युद्धके फलफलकी प्रतीक्षा करते थे । २५वींकी दिनभर युद्धस्थलसे जो समाचार मिला, रूसियोंके लिये वह परमआनन्दका समाचार था । किन्तु इसी दिन रात दश बजेके उपरान्त एकाएक अब जापानियों द्वारा राति-युद्ध आरम्भ होनेका समाचार मिला, तब निउच्चाङ्गके रूसियोंके हृदयें द्रुट गये । उधर प्रधान सेनापति कुरोपाटकिगको जैसे ही ताशीचावमें राति-युद्ध आरम्भ होनेका समाचार मिला, वैसे ही उन्होंने निउच्चाङ्गके रूसियोंको वैद होनेसे बचानेके लिये यथासम्भव शीघ्र निउच्चाङ्ग परित्यागकर पीछे हटनेकी आज्ञा दी । २५वीं को अर्द्धनिशासे पहले एक

और ताशीचावमें घोर युद्ध चल रहा था ; रात्रिके सन्नाटेमें युद्धका कोलाहल दूर दूरतक पहुंच रहा था—निउच्चाङ्गतक पहुंच रहा था ; दूसरी ओर निउच्चाङ्गके रूसी निउच्चाङ्ग परित्याग करनेकी तय्यारी कर रहे थे । चीना महल्लोंसे बटा हुआ निउच्चाङ्गके राजा रूसियोंका स्वतन्त्र महत्ता था । दुकानदार, कार-खानादार, जहाजी क्लार्क, सरकारी कर्मचारी, गैर सरकारी कर्मचारी,—सभी तरहके सहस्र सहस्र रूसियोंका इस महल्ले में निवास था । रूसी स्त्रियां थीं, रूसी शिशु-दन्त्याये थीं,—रूसी घर बना निउच्चाङ्गमें रहते थे । २५वीं जुलाईको प्रायः अर्द्ध-दिशाके समय महल्लेके समग्र रूसियोंको जिस समय शीघ्र ही नगर परित्याग कर-की आज्ञा मिली, उस समय उनमें खलवली पड़ गई ।

ग.ड़ियोंपर, पशुओंपर, कुलियोंपर,—नाना वाहन नाना यानपर रूसियोंका माल-कुरबाव करने लगा । कहीं दीवारगीर दीवारसे तोड़ जुड़ा लिये जाने लगे ; कहीं झाड़ू-फाड़ूच छतसे उतारे जाने लगे । कोई किसीको सहारेके लिये बुलाने लगा ; कोई किसीको सहारा देने लगा । रूसी महल्लेमें इतनी हलचल देख पड़ोसी चीना तमाशा देखनेके लिये रूसी महल्ले में आ जमा हुए । उन्होंने देखा, कि इतने दिनोंका बसा हुआ रूसी महल्ला चुटकियोंमें उजड़ गया ; लहल्लेके कुल रूसी जब एक जगह एकत्र हों चुके, तब कुछ रूसियोंके आगे वफ़ रूसी महल्लेके मकानोंको धाग लगा दी । रूसी महल्ला जलने लगा साथ साथ पड़ोसका चीना महल्ला भी जलने लगा । जो चीना आग बुझानेकी चेष्टा करते थे, वह रूसियों द्वारा दण्ड पाते थे । इतना ही

नहीं; भागते हुए कमियोनि चीनाओंपर शायद भयङ्कर व्यत्याचार किये थे; निउच्चाङ्गके विदेशियोंतकने दो चार शब्दोंमें कमियोनिके इस कामको निन्दा की है। इसतरफ़ निउच्चाङ्गके कमिो महत्ते की समाप्ति रात हीकी हो गई; रात हीकी नगरके कमिो हाकिमोंकी मखलो और पुलिस रफ़ूचकाई हो गई। प्रातःकाल सूर्योदयसे पहले निउच्चाङ्गके समीपके किलोंकी कमिो फ़ौज छः ठोपोंके साथ एक ओर भागी। भागनेके समय निउच्चाङ्ग रेल-रेषनकी आग लगाती गई, किन्तु इस आगसे कोई क्षति नहीं हुई। जैसे ही आग लगा कमिो फ़ौज घटनास्थलसे दूटी, वैसे ही व्यवस्थाकी प्रतीक्षा करते हुए चीनाओंने झपटकर रेषनकी आग बुझा दी।

२६वींकी प्रातःकाल निउच्चाङ्ग बहुत कुछ वीरान दिखाई दिया। कमिो महत्ते और उसके समीपके चीना महत्ते की आग बुझकर भी अभी पूर्णरूपसे बुझी नहीं थी। रेषन भुलसा हुआ था। बाजार-हाट बन्द थे; दुकानोंपर मोटे मोटे ताबे चढ़े थे। कमिश्नल नहीं थे, घाना नहीं था, घानादार नहीं थे,—फ़ौजदारी अदालत नहीं थी, दीवानी, अदालत नहीं थी, चुङ्गीवर नहीं था,—सिर्फ़ एक मकानपर कमिो ध्वजा उड़ती थी, जिसमें एक सुलकी अक्षर बैठ जापानियोंके ध्वाने और उनके हाथ कुछ प्रयोक्तीय कागज दं चले जानेके लिये बैठे थे। नगर अनाथ था, हरक अपना अपना रक्तक था। नगरकी ऐसी व्यवस्थामें जो कुछ होता है, वही होने लगा। कहींसे 'मार मार' की आवाज आने लगी; कहींसे 'खून खून' का शोर होने लगा।

जगहसे मार-पीट या भागने-पीछा करनेकी आवाज,

झाने लगीं । नगरके बहुमाश्रीने सुअवसर पा अपना कार्य आरम्भ किया ।

रूसी चले गये थे ; किन्तु अङ्गरेज, जर्मन, अमेरिकन, फ्रा-
न्सीसी प्रभृति अवतक नगरमें मौजूद थे । नगरके चीना
अधिवासो इन विदेशियोंको उतना प्रसन्द करते नहीं थे । विदेशी
भी यह बात जानते थे । उनके मनमें भय उत्पन्न हुआ । बन्द-
रनें विदेशियोंका एक भी गनबोट नहीं था ; होता तो, वह उससे
सहारा लेते ; ऐसी अवस्थामें वह सब साहाय्यार्थ जापानी फौजोंके
आगमनकी प्रतीक्षा करने लगे । दिन आठ बजा, नौ बजा, दश
बजा,—शेपहर हो गई, तो भी जापानो फौज निउच्चाङ्गमें न
आई । अब क्या किया जाये ? विदेशी होचने लगे, कि आज यदि
जापानी निउच्चाङ्गमें न आये, तो रात्रिके समय उन्हें चीनाओंके
हाथों अक्षणीय दुर्दशा भोगना होगी । इस खड्कके समय
समग्र विदेशी पुरुषोंने मिळकर पहरेका काम आरम्भ किया ।
विदेशी आप अपने महल्लोंकी रक्षा करने लगे । दिन छलनेपर
भी जापानियोंको न देख उत्पातो चीनाओंके हर्षका ठिडकाना न
रहा ; रात्रिके आगमनतक लूटकी उत्कण्ठा संवरण करनेमें अक्षम
हो कितने ही चीना लुटेरोंने नगरमें घुस दुकान तोड़ माल
लूटना आरम्भ किया । इस समाचारसे अधीर हो विदेशी पह-
रादार चीना लुटेरोंकी मार भगानेका आयोजन करने लगे ; ऐसे
समय समग्र नगरमें 'जापानो जापानो' का शोर हुआ ।

गिनतीके जापानी हवार निउच्चाङ्ग आये । उन्हें देख
नगरके एक मकानपर जो रूसी ध्वजा उड़ती थी, वह उतार
दी गई ; उसके बड़े फ्रान्स-सरकारकी त्रिवर्ण ध्वजा चढ़ा दी

गई। इन गिगतोके सवारोंने निउच्चाङ्गमें युद्ध कोई काम न किया, घने मइत्तोंमें सिर्फ दूर दूर खड़े रहे। सन्ध्या कोई चाढ़े प्रांच बजे एकाएक घोड़ोंके टापोंकी आवाजे आने लगीं; रिसाला आता जान पड़ा। देखते देखते कोई डेढ़ सौ जापानी सवारोंने नगरप्रवेश किया। जापानी सवारोंके बह घोड़े, उनकी बह पमकीली वरदियां उनकी बह शानदार हथियार, उनकी बह गन्नीर म्हाफ, उनका घमो हुई रानपटरीके साथ बह तगकर टैटना; निउच्चाङ्गके अधिवासियोंकी बहुत ही पमन्द आया। चीना जापानियोंके जाति-भाई ही थे; भय भुझा—झल आशङ्काये मनसे निकाल अपने अपने मकानोंसे निकल इन नवागत जापानी सवारोंकी नागा रूप और नाना भावसे अभ्यर्थना करने लगे; चीनाओंके कण्ठसे निकली हर्षध्वनि द्वारा वारंवार निउच्चाङ्ग नगर प्रतिध्वनित होने लगा। चीनाओंके साथ साथ विदेशियोंने भी जापानी रिसालेका स्वागत किया।

जापानी रिसालेके प्रधान अफसरसे नगरके प्रतिष्ठित पुरुषों और गण्य-मान्य विदेशियोंने भेट को। विदेशियोंने पूछा, कि आप अब क्या करना चाहते हैं? अफसरने प्रत्युत्तरमें कहा,— “मैं एक रिसालेके साथ हूँ; बड़े अफसरकी आज्ञा पा इतने सवार साथ ले नगरमें चला आया हूँ। नगरमें कुछ देर गण्ड लगा नगरकी अवस्था अपनी आंखों देख ताशीचाव पहुँच अपने सेनापतिकी नगरका समाचार दूंगा।” यह सुन विदेशियोंने सोचा; हे राम! इतनी प्रतीक्षाके उपरान्त इतने सुख्यवसरपर रिसाला आया भी, तो शीघ्र ही लौटनेके लिये; रात कैसे बटगी? विदेशियोंने जापानी अफसरसे अपना आशङ्का

प्रकट को। जापानो अफसरने कुछ शोच-विचार रातभर नगरमें रहना स्थिर किया।

इस बातचीतके उपरान्त जापानो रिमाका नगरमें गश्त लगाने निकला। जिस ओरसे निकला, उसी ओरके अधिवासियोंने हर्ष-हर्षि, पुष्पवृष्ट या अन्यान्य हर्ष-स्तुचक चिह्नों द्वारा जापानी रिमालेका स्वागत किया। जापानियोंने नगर-परिक्रमा करनेके साथ साथ कुल सरकारी इमारतों, कुल किलों आदिका विशेषरूपसे निरीक्षण कर अन्तमें विदेशियोंके महत्त्वेमें लौट एक बड़ी इमारतमें डेरा डाला। जिस मकानमें जापानियोंका डेरा पड़ा, उसके समीप हीके एक मकानमें अपने देश-भाई युरोपियोंमें डिपा एक रूसी सिपाहा बैठा था। जापानो स्वार इस रूसीको देखते ही इसके पास पहुंचे। जापानियोंको देख मानो अत्यन्त गर्म हो रूसी सिपाही अपने शिरकी टोपी उतार उससे अपने चे-हरेपर हवा करने लगा। इसपर एक जापानीने तुस्कुटाकर अपना हस्तो पञ्जा निकाल रूसीको दिया। पञ्जे पर जापानको राज-पताका चिह्नित थी। यह पताका देख खूब नाशज हो रूसी पञ्जा तोड़ डालनेकी इच्छासे उससे अपनेको प्रवल वेगसे हवा करने लगा। रूसीके इहंगिहं बैठे लोग खिलखिलाकर हंस पड़े; किन्तु जिन जापानीकाईपञ्जा था, उसका आकार एकाएक गम्भीर हो गया और उसने अघोर हो भरा हुआ तपञ्जा निकाल उस रूसीके शिरके सामने कर दिया। घबरापञ्जा कैसे तोड़ा जा सकता था? जिन प्राणोंकी ममताके लिये रूसी मौज परित्याग की गई, वही प्राण क्या एक सड़के से पञ्जेके लिये गंवाये जा सकते थे? रूसी कैद किया और पहरेमें रखा गया। इसी रात कितने

ही विदेशियोंने मिलकर एक भागड़े की बात निकाली। जापानी अफसरसे कहा,—“रूसकी कुल सरकारी इमारतोंपर फ्रान्सीसी भाषा थपड़ा दिया गया है ; यह सब इमारतें अब फ्रान्सकी हैं ; इनपर जापानका आधिकार ही नहीं सकता।” सुचतुर और बुद्धिमान् जापानी अफसरने सुस्क्रुराकर सिर्फं गरदनके इशारेसे यह बात स्वीकारकर भागड़ा मिटा दिया।” विदेशियोंको भागड़ा बढ़ानेका तनिक भी अवसर न दिया।

दूसरे दिन प्रातःकाल एक लफटनण्टकी अधीनतामें घोड़ेसे सवारोंको नगरमें छोड़ जापानी रिमाळा अपने नवाधिकृत स्थान ताशीचावकी ओर चला गया। दूसरे दिन जापानियोंकी एक बटालियन पैदल फौज व्यापट्टुंको। इस फौजके साथ साय जापानी मुल्को हाकिम मेजर तकयाना थे। आपने नगरप्रवेश करते ही रूसकी सरकारी इमारतोंपर अधिकारकर नगरवासियोंके नाम एक विज्ञापन निकाला। विज्ञापनमें लिखा था,—“आपसे निउच्चाङ्ग नगरपर जापानियोंका अधिकार हुआ ; नगरवासियोंकी धन-प्राण-रक्षा जापानियों द्वारा होगी।” रूसी मुल्को अफसर जापानी मुल्को अफसरके हाथ कागज-पत्र दे नगरसे चले गये। अन्यान्य नगरोंमें कागज-पत्र देनेके लिये रूसी मुल्की अफसर छोड़े नहीं गये थे ; निउच्चाङ्गमें शायद इसलिये छोड़े गये, कि कहीं जापानी मुल्को अफसर विदेशियोंसे अतिरिक्त कर या महुसुलादि ग्रहणकर उन्हें कष्ट न दें।

जापानी फौज एक दिन नगरके निकटस्थ किलोंमें रही। इस अवसरमें घोड़ेसे फौजी सिपाही ले जापानियोंने नगरके पहरेका प्रबन्ध कर लिया। इसके उपरान्त जापानी फौज नगर परित्याग-

कार आगे बढ़ गई। इसर कुछ ही दिनोंमें जापानी सुल्की व्यफर-
रोंने नगरमें पूर्ववत् शान्ति स्थापित कर दी। रूसियोंके कियेबत्या-
चार आदिके कुल चिह्न मिटा दिये। रूसी सरकारी इमारतोंपर
जापानियोंका कब्जा हो गया; किसीने किसी तरहकी विघ्न-बाधा
उपस्थित नहीं की। भागड़ेकी सिर्फ एक बात रह गई।
रूसने मञ्चूरिया-यास करनेके उपरान्त अपनी स्वार्थ-सिद्धिके
लिये 'रेशो-चाइनीजवङ्क' नामक एक बङ्क खोला था। इस बङ्ककी
शाखायें समग्र मञ्चूरियामें खोल दी थीं। मञ्चूरिया तो मञ्चूरिया,
—भारतके इस कलकत्ता और बन्दई नगरमें भी इस बङ्ककी शाखायें
स्थापित कर दीं, जो आज तक मौजूद हैं। इस बङ्ककी ऐसी ही
एक शाखा निउच्चाङ्गमें भी थी। यह शाखा कोई पन्द्रह लाख
रुपये निउच्चाङ्गवासी चोगाओंको ऋण दे चुकी थी; ऐसे समय
जापानियोंके आगमनका समाचार प्रकाशित हुआ। बङ्कके रूसी
अफसर और कोई उपाय न देख बङ्क फ्रान्चोसियोंके नाम लिख
रफूचकर हुए। निउच्चाङ्गमें अवस्थित जापानी सुल्की व्यफ-
रोंने जब बङ्कको शत्रुका माल बटा उसपर अधिकार करनेकी
चेष्टा की, तब फ्रान्चोसियोंने जापानियोंके इस कामपर घोर आ-
पत्ति की। किन्तु यह आपत्ति ठिक न सकी; अन्तमें घर्मकी
जय हुई; बङ्कको फ्रान्चोसी ध्वजा उतर गई और जापानी पताका
फहराने लगी।

एक और निउच्चाङ्गमें जापानियोंका सिक्रा जमा; दूसरी
ओर कितने ही विदेशी जङ्गी जहाज निउच्चाङ्ग-बन्दरकी ओर
चले; किन्तु उनके बन्दरमें पहुँचनेसे पहले ही निउच्चाङ्गमें
मारशल ओयामाका दुरुसती एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ।

विज्ञापनमें लिखा था,—“जबतक दूसरा अज्ञापन न निकले, तबतक किसी विदेशीका कोई जङ्गी जहाज निउच्वाङ्ग-बन्दरमें आने न पाये।” इस आज्ञा-प्रचारसे विदेशियोंमें बड़ा असन्तोष फैला; किन्तु उपाय क्या था; प्रबलप्रताप जापनियोंकी आज्ञाका निरादर कैसे किया जा सकता था? १ लो अगस्तकी जापानका एक बड़ा जङ्गी जहाज, एक छोटा जङ्गी जहाज और तीन गनबोट निउच्वाङ्ग-बन्दर पहुँच गये। सिवा इनके रेल द्वारा, जहाज द्वारा यहूतसे व्यवसायी अपने माल-अखबारके साथ निउच्वाङ्गके बाजारोंमें पहुँच गये। इतना ही चुकनेपर मारशल ओयामाने विदेशियोंके जहाजोंको बन्दरमें आनेकी परवानगी दी। यह आज्ञा पाते ही बन्दर विदेशियोंके जहाजोंसे परिपूर्ण हुआ; बाजारमें विदेशी मालका टेर लगने लगा। खरीद-फरोख्त चल पड़ी। कुछ ही दिनोंमें निउच्वाङ्गका व्यवसाय पूर्ववत् चलने लगा। एक राजाका राज्य गया; दूजरेखा आया। आंधी-निकल गई; संसार अपने काममें लगा। आंधी निकल जाते ही, तूफान शान्त होते ही संसार इसीतरह अपने काममें लग जाया करता है।

सप्तम परिच्छेद ।



रूस और विदेशियोंके जङ्गी जहाज—

मस्का, नाइट कमाण्डर, हिस्सङ्ग इत्यादि ।

क्रमागत युद्ध-घटनाओंके वर्णनमें उलभकरा इस युद्धको कितनी ही सामयिक बातें हम लिख नहीं सके; जानबूझकर छोड़ आये। किन्तु अब उन्हें छोड़ना भला जान नहीं पड़ता, क्योंकि जिन घटनाओंका वर्णन हम छोड़ आये हैं, वह पीछेका है और अब हम जैसे वैसे आगे बढ़ते जायेंगे, वैसे वैसे वह घटनायें और भी पीछे होती जायेंगी। भूमिका देख व्यग्र होनेका प्रयोजन नहीं; कुल बातें एक साथ हम लिख भी नहीं सकते और कुल बातें एक साथ व्याप पढ़ भी नहीं सकते। धैर्यसे काम बनता; त्वरासे विगड़ता है;—हम धीरे धीरे कुल घटनायें लिखे देते हैं; व्याप धीरे धीरे उन्हें पढ़ लीजिये।

इस युद्धके वर्णनमें रूसके दो जङ्गी जहाजोंके वेड़ेका जिक्र आया है। एक अरपर-बन्दरके वेड़ेका और दूसरा बल्डीव-एकके वेड़ेका। किन्तु रूसके इन्हीं दोनों वेड़ोंको रूसकी पूरी जल-शक्ति समझना न चाहिये। जो रूस-साम्राज्य आधे यूरोप और आधे एशियामें विस्तृत है, उसकी जल-शक्ति इतनी ही कैसे हो सकती है ? सिवा पूर्वोक्त दोनों वेड़ोंके उस समय रूसके दो वेड़े और थे। एक वेड़ा रूसके बालटिक-सागरमें था; बालटिक-वेड़ा कहलाता था; दूसरा वेड़ा कृष्ण-सागरमें था। प्रथमोक्त

वेड़े की अपेक्षा श्रेष्ठोक्त वेड़ा छोटा था; बल्लमटेर-वेड़ा कह-
लाता था। इस बल्लमटेर वेड़े का होना न होना बराबर था।
कारण, रूसके डारडनेलेस-सुहानेसे ही यह वेड़ा खुले समुद्रमें
आ सकता था और रूसने जगत्के सम्मुख बहुत दिनों पहलेसे
यह बात स्वीकार कर ली थी, कि शान्तिके समय यह वेड़ा कृष्ण-
सागरसे निकल सकता था; किन्तु युद्ध-विग्रहके समय नहीं।
इसलिये वर्तमान नियमनुसार वर्तमान युद्धके समय यह वेड़ा तो
वेड़ा,—इसका एक जहाज भी कृष्णसागरसे निकल नहीं सकता
था। रूसी वेड़ा यदि निकलना भी चाहता, तो रूसके डारड-
नेलेसमें बैठे रूसी सिपाही उसे आगे बढ़ने न देंगे।

किन्तु युरोपकी सर्वप्रधान शक्ति रूस सभी बातोंमें बड़ी
है। एक दिन कृष्णसागर-वेड़ेके दो छोटे जङ्गी जहाजोंको दो
आज्ञापत्र मिले। दोनों आज्ञापत्रोंके साथ एक एक बन्द लिफाफा
था। आज्ञापत्रमें लिखा था,—“दोनों जहाजोंके कप्तान अपने
सिपाहियोंके साथ अपने जहाजोंका रूप-रङ्ग बदल उन्हें डारड-
नेलेस-सुहानेसे निकाल रूस-राजधानी क्रुस्तुनतुनिया पहुँचाये
और वहाँ इस आज्ञापत्रके साथके दोनों लिफाफे खोल उनमें
बन्द कागजमें लिखे विषयसे अवगत हों।” दोनों जहाजोंमें
एकका नाम था पिटरवर्ग और दूसरेका सोवेस्क। रूस-सर-
कारके आज्ञानुसार कार्य आरम्भ हुआ। दोनों जङ्गी जहाजोंने
सोपे चादि छिपा सौदागरीके जहाजोंकी मूर्ति धारण की और
बहु डारडनेलेसमें बैठे रूसी सिपाहियोंकी आंखोंमें खाक भोंक
क्रुस्तुनतुनिया नगरके किनारे पहुँच गये। वहाँ दोनों जहाजोंके
दो बन्द लिफाफे खोले। लिफाफोंके भीतरके कागजोंमें

लिखा था,—“दोनों जहाज दूसरे दरजेके छोटे जङ्गी जहाज बनाये गये और दोनों जहाजोंके अफसरोंको असुक असुक पद प्रदान किया गया ।” इसके उपरान्त दोनों जहाजोंके अफसरोंको लिखा गया था, कि तुम दोनों रक्त-सागरमें पहुँच यूरोपसे एशिया जाते हुए जहाजोंको गिरफ्तारकर उनकी तलाशी लो ; जिस जहाजमें जापान जाते हुए युद्धोपकरण दिखाई दें, उस जहाजको पकड़ जव्त कर लो ।

दोनों जहाज क्लस्तुनतुनिया परिव्यागकर रक्त-सागरकी ओर चले । ६वीं जूनको दोनों रक्त-सागरके छोरपर खेज नहर पहुँच गये और यूरोप तथा एशियाके बीच आनेजानेवाले यूरोपीय जहाजोंके आगमनका प्रतीक्षा करने लगे । १५वीं जूनको दोनोंने जर्मनीका ‘प्रिन्स हेनरिक’ जहाज गिरफ्तार किया और उसकी खूब तलाशी ले उसे छोड़ दिया ।

१३वीं जुलाईको और एक गिरफ्तारी हुई । इसबार जापानियोंके मित्र अङ्गरेजोंके जहाजोंको वारी आई । अङ्गरेजोंकी दिस “पेनिनसुलर एण्ड ओरियण्टल कम्पनी” या पी० एण्ड ओ० कम्पनीके जहाज विलायत और भारतके बीच लाकादि पहुँचाया करते हैं, जिसके जहाज जलकान्ते और सुदूर पूर्वके बीच चला करते हैं ; उसी कम्पनीका मलक्का नामक जहाज सुलाफिर और माल ले लखनसे चीन और जापान जा रहा था । १३वीं जुलाईको दिन कोई साढ़े दश बजे खेजसे आगे पेरिस टापूसे कोई सत्तर मील उत्तर रूसके दोनों जहाजोंको मलक्का मिला । दोनों जहाजोंने सहैत दारा मलक्काको ठहरा दिया । कितने ही जहाजो सिपाहियोंके साथ एक रूसी अफसर मलक्कामें

पहुँचे । आपने युद्ध-सामग्रीका अनुपस्थान किया ; म मिलनेपर मुषाफिरोंसे पूँछताँछ की । अङ्गरेजोंकी चोरसे तो यहाँतक प्रकाशित हुआ है, कि रूसी अफसरने मलक्काके कप्तान यूट साहबको युद्ध-सामग्रीका पता बता देनेके लिये कोई तीस सहस्र रुपये पारितोषिक देना स्थिर किया था ; किन्तु इन बातोंका कोई फल नहीं हुआ । मलक्काके कप्तानने स्पष्ट कह दिया, कि इस जहाजमें कोई युद्ध-सामग्री नहीं ; जो विस्फोरक पदार्थ भौंडू है ; वह सरकारी है ; बिक्रीके या जापानके लिये नहीं । कप्तानकी बातें सुन रूसी अफसर कन्तुष्ट होनेके बदले क्रुद्ध हुए । आपने अपने जहाजमें लौट चालीस सिपाहियोंकी मलक्का जहाजमें भेज दिया । इन सिपाहियोंने जहाजपर अधिकार कर लिया और जहाजपर उड़ती हुई दृष्टिगत पताका फाड़ उसकी जगह रूस-पताका उड़ा दी । २०वाँ जुलाईको दोनो रूसी जहाजोंके पहरेमें मलक्का सर्वद-बन्दर पहुँचाया गया और वहाँ मिथ-सरदारके पहरेमें रोक दिया गया । मलक्काको गिरफ्तारीके समाचारसे समय जगत्के अङ्गरेजोंमें खलबली पड़ गई । अङ्गरेजोंका भूमध्य-सागरका वेड़ा सजने लगा ; इस वेड़ेके निन्तान्त श्रीप्रतापी 'टेरिबुल' और 'पाकमपुल' नामक दो दूसरे दर्जेके जहाज जहाज रक्तसागरकी चोर दौड़े ।

मलक्काको गिरफ्तारीपर अङ्गरेजोंने जैसा क्रोध प्रकाश किया था, उससे रूस और अङ्गरेजोंके बीच युद्ध छिड़ जानेको आशङ्का उपस्थित हुई थी ; किन्तु ऐसा हो नहीं सक्ता था । युरोपकी शक्तियाँ अपनी हानि-लाभ खूब समझती हैं ; गिनाट उपस्थित हुए घरमें युद्ध आरम्भ नहीं करतीं । युद्धके

समय अङ्गरेजोंने जापानका पक्ष ग्रहण किया था और फ्रान्सीसियोंने रूसका । अङ्गरेज यदि रूससे भिड़ जाते, तो रूसकी चोरसे फ्रान्स अङ्गरेजोंसे भिड़ जाता ; इसतरह एक एशियाई और तीन यूरोपीय शक्तियां इस संग्राममें शरीक हो जातीं ; अधिक शक्ति यूरोपीय शक्तियों ही को होती ; इन्हीं सब कारणोंसे युद्ध आन्त नहीं हुआ । फिर ; रूसी भी मान गये । ब्रिटिश सरकारने जब मलक्काके सम्बन्धमें रूस-सरकारसे लिखा-पढ़ी की, तब रूस-सरकारने प्रत्युत्तरमें कहा,—“मलक्काके कप्तानने अपने जहाजको तलाशी करानेसे इनकार किया था ; इसीलिये वह गिरफ्तार कर लिया गया । शौध ही मलक्काको तलाशी होगी और हमके उपरान्त उस जहाजका फैसला होगा ।” २७वीं जुलाईको मलक्का फ्रान्सीसियोंके अशजीर बन्दरमें पहुँचाया गया । वहाँ एक ब्रिटिश अफसरके सामने उस जहाजकी तलाशी हुई । तलाशीमें ऐसी कोई चीज न निकली । मलक्का छोड़ लिया गया ; उस समयका वह झगड़ा मिटा ।

हीनो रूसी जहाजों द्वारा यूरोपीय जहाजोंकी इसतरह रोक-टोक होनेसे जर्मनी और इङ्गलण्ड दोनोंने रूसको खूब लाल आंखें दिखाईं । इसके फलसे रूस-सरकारने अपने हीनो जहाजोंको क्रूरसे फिर सौरागरोका जहाज बना दिया और वाश किया, कि भविष्यमें और कोई जहाज कृष्णनगरसे चोरी चोरी निकाला न आवेगा । शायद ब्रिटिश सरकारने रूसके इस वादेका उतना विश्वास नहीं किया ; इसीलिये उसने अपना दस हजार टनका छोटा जहाज लक्ष्मणेश्वरी उदरदेवलस-सुहानेपर भेज दिया । कहते हैं, कि खूब पक्का वादा करनेपर भी एक दिन रूसके कृष्ण-

सागरके और कितने ही जहाज खुले समुद्रमें निकलनेके लिये डारडेनेलेस-सुदानेतक गये ; किन्तु वहाँ अङ्गरेजोंको लङ्कापरको खड़ा पा दुम दवा लौट गये ।

एक और यह हुआ, दूसरी ओर रूसी द्वालीवष्टक-वेड़े द्वारा कितने ही जहाज पकड़े, ज्वत् किये और डुवाये गये । नाइट कमाण्डर और छिपसङ्ग नामक जहाज डुवाया गया, अल-ननन पकड़ा और वूलडोवष्टककी फौजी अदालत द्वारा ज्वत् कर लिया गया । सिवा इसके छोटे मोटे और भी कितने ही जहाज घरे पकड़े गये । वारंवार परास्त हो रूस मानो झुका उठा था ; विशेषतः जापानके पक्षपाती अपने चिरभ्रात्र अङ्गरेजोंसे और भी चिढ़ा था और उनके जहाजोंपर तीव्र दृष्टि रखता था । उन्हीं दिनों रूस रूड-सरकारने कितनी ही चीजोंकी एक फिहरिस्त प्रकाशितकर कहा, कि जिस जहाजमें इस फिहरिस्तके अनुसार चीजे मिलेंगे, वह जहाज ज्वत् कर लिया जायेगा । इस फिहरिस्तमें ऐसी चीजोंका भी नाम लिख लिख दिया गया था, जो युद्धोपकरण समझी जा नहीं सकती थी ; ऐसे रूई, सूखे विस-कूट । इङ्गलण्डमें, जर्मनीमें रूसकी इस फिहरिस्तकी खूब आ-लोचना की गई ; इससे आगे और कुछ न हुआ । रूसके कोई क्या पूछता और पूछनेपर भी पूछनेवालेकी उष वातको कौन सुनता ?

ऋषभ परिच्छेद ।

अपर-बन्दर—आक्रमण और आत्मरक्षा—

जल-युद्धका रीतनाममा—'दूल्हा छिन्न' पर्व-

तका प्रथम—अन्याय दटनाये ।

अपर-बन्दरको और क्या ही रक्षा है ? यत अतुल्य परि-
च्छेदमें जिस समयतकदा अपर-बन्दरके घेरेला पिछये दिख
आये है, उह समयसे आगे दितने ही दिनोंका घेरेला प्रकृत वर्धन
लिखना लटिन है । कारण, खुदकी छोरसे घेरेला जो हाल
समय समयपर प्रकाशित हुआ, उसे पूर्णतया दब माग लेकेही
प्रकृति नहीं होती । खुदकी छोरसे पद पद जापानियोंके आक्र-
मणका विवरण प्रकाशित हुआ, तब तब यही रक्षा गया, कि
जापानियोंने अपना पूर्ण शक्तिसे अपर-बन्दरपर आक्रमण
किया ; घोर शूद्र हुआ ; एतन्में जापानी मयपुर अतिग्रस्त
होकेही मजह पौछे छट गये । खुदियोंने जिस पैमानेसे जापा-
नियोंकी अतिवा हाह प्रकाशित किया था, उह पैमानेसे वह
जापानियोंकी अति हुई होती, सो वरसे बहुत पहले खुदी पौछे
दिलान्दियोंसे निकल टिकान्दीरा घेरा दरमेवासी जापानी
पौजोपर टूट उन्हें 'टुकड़े टुकड़े कर पावतीं ; वा जापानी
पौछे ही अपनाही निर्व्यथ या अपर-बन्दरका घेरा परित्यागकर
रहें और वा आश्रय लेतीं । किन्तु इन हीनो शक्तियों से भी

नहीं हुईं; रूसी फौजे अपनी किलाबन्दियोंसे नहीं निकलीं और जापानी फौजे अपनी जागहसे पीछे नहीं हटीं। पीछे हटना दूर रखा, वह क्रम क्रमसे आगे ही बढ़ती गईं। ऐसी दृष्टामें रूसकी ओरसे प्रकाशित उन समाचारोंका विश्वास कैसे किया जा सकता है ?

वाकी रक्षा जापान। जापानकी ओरसे इन कई दिनोंका कुछ भी युद्ध-विवरण प्रकाशित नहीं हुआ। अखबारोंमें सायतो-बन्दरसे आगे बढ़ कर अरधर-बन्दरकी गहरी किलाबन्दीका घेरा आरम्भ होनेके उपरान्त कोई छः सप्ताहतक जापानकी ओरसे एक भी सरकारी समाचार प्रकाशित नहीं हुआ। जापान-राजधानी टोकियोमें सरकारने विशेषरूपसे घोषणा प्रचारित कर दी थी, कि अरधर-बन्दर-सम्बन्धीय समाचार अखबारोंमें निकलने न पाये; जो अखबार प्रामाणिक या अप्रामाणिक किसी तरह भी प्राप्त यह समाचार प्रकाशित करेगा, राजद्वारसे उसे दण्ड दिया जायेगा। उन दिनों जापानके यकोहामा-बन्दरसे एक अङ्गरेजी अखबार निकलता था। २६वीं जूनके जिस युद्धका वर्णन हम अपने पिछले किरी परिच्छेदमें प्रकाशित कर चुके हैं, यकोहामाके इस अङ्गरेजी समाचारपत्रके सम्पादकने विश्वस्त स्वसे वह समाचार या अपने पत्रमें प्रकाशित कर दिया। इससे सन्पादकपर आपत्त आ गई; वह अदालत चली गये; सरकारी आज्ञा भङ्ग करनेका उनपर अपराध लगावा गया। विवामित रूपसे विचार होनेपर उन सम्पादकको जुर्माना हुआ। अदालतने अपने फैसलेमें सम्पादकसे आग्रह किया कि पहला पत्र ही है; इसलिये अबु दूसरी अवस्था ली गई; फिर ऐसा

अपराध करनेसे गुरु दण्ड दिया जावेगा । इस एक ही समाचारसे स्पष्ट प्रकट होता है, कि उस समय जापान-सरकार अरधर-बन्दरके घेरेका समाचार छिपानेमें कहांतक यत्नतत्पर थी । इस-तरह जापान-सरकारकी ओरसे घेरेका कोई समाचार न मिल-नेकी वजह ही उन कई समाहका घेरेका प्रकृत वर्ष न लिखना कठिन है । फिर भी, जो बातें अकर्म प्रकाशित हुईं या जो बातें उस समयके अरधर-बन्दरके भगेड़ुओं द्वारा मालूम हुईं, उनका सारांश हम आगे प्रकाशित करेंगे । इस समय पाठक स्थल-युद्धका हाल पढ़नेकी उत्कण्ठा संवरयकर यह देखें, कि घेरेके आरम्भकालमें अरधर-बन्दरके उद्यानेकी ओर सामरवक्षपर क्या होता रहा । स्थानका अभाव और विषयकी अनुपयोगिताकी वजह हम कई दिनोंका जल-युद्ध रोज-नामकेकी तरह लिखे जाते हैं ।

१०वीं जुलाईको ब्यान, डायना, पक्षाण और नाविक यह चारो जहाज ही गनपोट और सात डिग्रायर नावोंके साथ बन्दरसे बाहर निकल बन्दरकी बगलकी जापान-अधिष्ठित स्थानोंकी ओर चले । तीसरेपहर एक बगल एकाएक कई जापानी जहाजों नावोंके एक वेड़ीने आगे बढ़ करती वेड़ीपर आक्रमण किया । जापानी जहाजों नावोंको देखते ही कभी वेड़ा पीछे हटा और यथामन्यद शीघ्र अरधर-बन्दरके सामने पहुँच बन्दरमें घुस गया । इसी दिन रात्रिके समय जापानी तारपेटो-नावे अरधर-बन्दरमें घुस करती जहाजोंपर तारपेटों जला; वापर थाई । जापानियोंकी ओरसे इस रातके आक्रमणका फलप्रतिफल प्रकाशित नहीं हुआ; कुरियोंकी ओरसे कहा गया, कि जापानी

नावोंने आक्रमण किया सही ; किन्तु उनका कोई फल नहीं हुआ ।

१३वीं फरवरीकी रातको जापानी जड़ी नाव आशागिरि और हयासरीको तरह एक जापानी जड़ी नाव बड़ी ही फुरतीसे अरघर-बन्दरमें घुसने चली ; किन्तु बन्दरकी तोपों और बन्दरस्थ रूसी जहाजोंकी तोपोंने गोले बरसा उसे राह छोड़े लौटनेपर बाध्य किया । इसी रात एक जापानी जड़ी नावने एक रूसी नाव गिरफ्तार की, जो रूसी डाकके चुपके चुपके अरघर-बन्दरसे बुद्धस्थलकी नीमासे बाहर चीफूकी और जा रही थी । रूसी डाक देखा जापानियोंको अरघर-बन्दरकी जल तथा स्थल-सैन्यका बहुत-तया हाल मालूम हुआ ।

२४वीं जुलाईको रूसी डिप्टीचेर नाव 'लफ्टनरेंट बुरुकफ' अरघर-बन्दरसे निकल गिरदावरी करके लगी । ऐसे समय समुद्र-पर झुपरा छा गया ; हाथकी हाथ रक्तता कठिन हो गया । उस झुपरेमें 'बुरुकफ'को कुछ जड़ी नावें दिखाई दीं । दुर्भाग्यवश यह नावें जापानी निकलीं । जापानी जड़ी नावोंने बुरुकफपर आक्रमण किया । बुरुकफ भागी ; किन्तु आगार पा लहाँ सकती थी ? एक जापानी तारपेटीने बुरुकफके प्रायः दो टुकड़े किये और वह क्षणभरमें अपने विपादियों और बाक-सामानके साथ समुद्र-गर्भमें समा गईं ।

२६वीं जुलाईको रूसकी जड़ी जहाज पवाना, अस्कोक, पलादा और नाविक कितने ही गननोटोंकी नाव ले जापान-पश्चिमत आगरतटपर आक्रमण करनेके लिये निकले । जापानके पुराने जड़ी जहाज शिनमेगने तीन दूधरे दरनेके जड़ी जहाजोंके

बाघ हठी जहाजोंका सामना किया; जल्द ही देखी लड़ाईके बाद खूबी जङ्गी जहाज बरघर-बन्दर वापस गये। दूसरे दिन यही खूबी जहाज एकदम फिर बन्दरसे बाहर निकले और जायगी, जङ्गी जहाजोंको मारने काय्दिर ही बरघर-बन्दर लौट गये।

इसके उपरान्त जल्पर और दो एक खूब-बुद्ध हुए। इनमें एक उल्लेखयोग्य इस्तरह है,—एक दिन प्रातःकाल कोई चार दजे जापानी डिब्रायरे-नावे जोधोरी और अलिबोनी यह दोनों बरघर-बन्दरके समीप गिरदावरी कर रही थीं। ऐसे समय बरघर-बन्दरसे चौदह खूबी डिब्रायरे-नावोंने निकल तीन भागोंमें विभक्त हो इन दोनों जापानी नावोंको घेर लिया। दोनों नावोंने घिर जानेपर जित साहसिकताके साथ युद्ध किया, उसकी प्रशंसा विदेशी सन्वाहदाताओंके तृहते भी मिलान गई है। जापानी नावे इस वेगसे चारो ओर गोले बरखाने लगीं, कि खूबी नावे कोई पांच हजार गजके फाखिलेपर रह गईं; इनसे अधिक जापानी नावोंकी ओर अग्रसर हो न सकीं। दो ओरका आक्रमण संभाल जापानी नावोंने तीसरी ओरकी खूबी नावोंपर भीतवेगसे आक्रमण किया। इस आक्रमणका वेग संभालनेमें अक्षम हो उठ ओरकी नावे छलमहु हो बरघर-बन्दरकी ओर भागीं। इस अवसरमें जापानियोंकी डिब्रायरे-नाव इरादहकी अपनी दोनों नावोंके पास पहुँची। अब एक ओर जायानकी यह तीन नावे थीं और दूसरी ओर खूबी चारह डिब्रायरे नावे। जापानी नावोंकी अपनी खूबी नावे प्रायः चौ-गुनी थीं, किन्तु तमाशा ऐलिये, कि यह तीनों नावे छह

आत्मरक्षा परित्यागकर रूसी नावोंपर आक्रमण करनेके लिये दौड़ें। रूसी नावें इंग पापानी नावोंको अपूर्व साहसिकता देख स्थिर रह न सकीं; घबराकर अरधर-बन्दरकी ओर भागीं। इससे प्रमाणित हुआ, कि आत्मोत्सर्गका साहाय्य बड़ा ही घबरदस्त होता है; जान हथेलीपर रखनेकी वजह ही; मृत्युको लयवत् तुच्छ समझनेकी वजह ही पूर्वोक्त तीन नावें चौदह रूसी नावोंसे सामनाकर अन्तमें उन्हें भगानेमें सक्षम हुईं। जुलाईके अन्ततकका अरधर-बन्दरके जल-युद्धका ऐसा ही संक्षिप्त विवरण है। अब यह देखिये, कि इस अवसरमें अरधर-बन्दरके समीप स्थलमें रूसियों और जापानियोंके बीच क्या हुआ।

पहले ही सिखा चुके हैं, कि अरधर-बन्दरके घेरेके चार-भिन्न कालमें जापान-सरकारने बन्दरके समीपके स्थल-युद्धका कोई वर्णन निकलने नहीं दिया; ऐसी अवस्थामें उन दिनों वहां जो युद्ध हुआ, उसका प्रकृत विवरण लिखना कठिन है। हां समय समयपर जो सुनी-सुनाई या कही-कहाई बातें—या रूस-सरकारकी ओरसे निकली एक-रुखी रिपोर्टसे जो कुछ निकला है, उन्हीको हम नीचे संक्षेपमें लिखे देते हैं। अधूरा वर्णन होनेपर भी यह पढ़ने लायक है; क्योंकि इसे समझकर पढ़ लेनेसे आगेका युद्धवर्णन पढ़ समझनेमें सुविधा होगी।

गत परिच्छेदमें अरधर-बन्दर घेरनेवाली जापानी फौजको हमने जिस अवस्थामें छोड़ा था, वह स्पष्टता वाद है? वाद है, कि अरधर-बन्दर घेरनेवाली जापानी फौज ही भागोंमें विभक्त हो आगे बढ़े थी? और क्या यह भी वाद है, कि एक भागने बन्दरसे सागरतटकी राहसे आगसर हो रूसियोंसे जुकर

उनके भिन्नोत्सर्ग विधिपर अधिकार किया था और दूसरा भाग-
रेख-लाइनके किनारे किनारे चागे वड़ अरपर-बन्दरकी किताब-
न्दोके मध्यभाग शुद्धिपिङ्गके सामने पहुँच गया था? यह;
इसके वादपूरे समाचारोंका मिलना बन्द हो गया ।

जापानके प्रधान सेनापति मारशल जोयामाने युद्धस्थलमें यों
तो प्रयोजनानुसार अपनी फौजमें हरेक भागमें जाना और
उसको स्थिति खचचुसे देखना आरम्भ किया था; किन्तु अपने
हेडक्वार्टर या बन्दरके लिये अरपर-बन्दरके समीपता डालनी-
बन्दर पसन्द किया । डालनीके एक खूबसूरत बाजारमें खुदियोंका
एक मनोहर रङ्गालय था; इसी रङ्गालयमें सफलतः प्रधान
सेनापतिने ठेरा किया था । अरपर-बन्दरकी दुर्भेद्य दिशाबन्धि-
योंकी खचचुसे देख उनपर अधिकार करनेकी युक्ति बतानेके लिये
हो शायद जोयामा मञ्जरियाके युद्धस्थलसे दिखी बन्दर दूर
इस डालनी-बन्दरमें ठहरे थे । वहाँ ठहरकर आपने पहला शाम
शायद यही किया, कि कुछ दिनोंके लिये युद्धका समाचार
प्रकाशित करना बन्द कर दिया । प्रधान सेनापतिने नाद प्रकट
न करनेपर भी पाठकोंको यह समझ रखना होगा, कि अर-
पर-बन्दरके आरम्भिक प्रायः प्रत्येक युद्धमें मारशल जोयामा
मौजूद रहते थे और उनकी आंखोंके सामने जापानी फौजें
अरपर-बन्दरपर चढ़ाई करती थीं । किन्तु हमारे इस बातसे यह
समझना न चाहिये, कि अरपर-बन्दर घेरनेवाली रैम्पके प्रधान
सेनापति नोगो कुछ करते ही नहीं थे या उनके तत्त्वावधानमें
इस अज्ञानका कोई दुह्वकार्य होता ही नहीं था । हमारा लक्ष्य
सिर्फ यह है, कि इस अज्ञानके आरम्भिक युद्धमें मारशल जो-

याका प्रधान अफसर थे और नोगी उनके अधीन अफसर । मार-
शज ओयामा घड़ीकी कमानी थे और नोगी घड़ीके नीचेके
प्रधान पट्टिया ।

अरधर-बन्दरकी किलावन्दीकी मध्यभागकी शुद्धिपिण्ड वन
तीसे कोई ब्राधन्नीय दक्षिण दो चौ छुट लंघी एक पहाड़ी
है । इस पहाड़ीपर किसी चीना देवताका एक सुविशाल म-
न्दिर है । चीनाओंके इन्हीं देवताका नाम पर्वतके नामके साथ
सिद्धा दिया था ; किन्तु रूसियोंने वह नाम खातिरने न ला इन
पर्वतकी 'बूल्फ हिण्ड' या मेड़िया-पहाड़ी नाम प्रदान किया था ।
जिस समयका हाल हम लिखते हैं, उस समय वह पहाड़ी
रूसियोंकी थी ; इसलिये इस पहाड़ीका उन्हींका रखा नाम
उम भो स्वीकार करते हैं । इस बूल्फ पहाड़ीपर अरधर-बन्दरकी
किलावन्दीके मध्यभागका खिनारा था । रूसो इस जगह दृढ़-
तापूर्वक जमे बैठे थे ; उन्होंने स्थिर कर लिया था, कि या तो
इस जगहकी रक्षा होगी, या इस जगहसे हमारी जाश
उठेगी ।

जापानी सौजोंके बल्फ पहाड़ीके खाने पहुँचनेके
उपरान्त इनो सौजों जापानेखामने रहकर भी
एताएत युद्धमें प्रवृत्त न हुईं । ४ घंटे जुलाईसे
६ वीं जुलाईतक सिद्ध हलकी हलकी लड़ाइयां हुईं ;
किन्तु उहो खयोग्य एत भी लड़ाई न हुई । ६वीं जुलाईके उप-
रान्त उस अक्षकमें घोर वृष्टि हुई ; नीचेकी जापानी सौजोंको
वृष्टि-जलसे भांति भांतिकी अज्ञ वधाये हुईं ; सबसे बड़ो असु-
बह हुई, कि वृष्टि-जल खरखने या बहकर और नीचे निकल

जापान जापानियों को कुछ दिनोंके लिये अपना परममूल्य सम-
मित रखना पड़ा ।

१६वीं जुलाईको एकएक ऊबकी जोरसे हमारा सिना,—
‘जापानो फौजने आगे बढ़ कर पर-बन्दरसे लौट लौट जा ही
कोब दूरको एक टिकेपर अधिकार कर लिया । जापानो फौज
अपने इस नवाधिगत कियेमें अभी अच्छी तरह जमरर बैठने
न पाई थी ; ऐसे समय उन्पर खुली फौजने आक्रमण किया ।
जापानो फौज सिना परिव्यागकर पीछे हटी ; उन्को पीछे
हटते समय उसे अन्यूरूपसे खुली फौजने टुकड़े टुकड़े
उड़ा दिया ।’ नहीं जानते, कि यह कौनसी जापानो फौज थी
और किट कियेपर इने अधिकार किया था ? फिर भी ;
अनुमानसे मान पड़ता है, कि वृक्ष हिन्दके कामनेवाली नहीं थीं :
वल्कि समुद्रतटकी जापानो फौजने शायद आगे बढ़नेको चेष्टा
की थी और उह चेष्टामें या तो यह अज्ञतसाथ्य हुई ; या
कल्पियोंके वल-विक्रमकी घाट से तुरन्त पीछे हट गई ।

इसके उपरान्त समुद्रतटकी जापानो सैन्यकी गतिविधिज
हमारा होने औरसे प्रकाशित नहीं हुआ । हमारा प्रका-
शित न होनेपर भी उह औरकी खबरें हुई तोपोंको आवाजेँ सुर
दूरतक पहुँच और बृह होनेकी सत्यता देती थीं । इह चीना-
जोने अपना ही पो,—“इह जोर १७वीं और १८वीं जुलाईको
घोर बृह हुआ ; लौट चार ही आहत खुली सिपारी सद्य
पारा खींशी जनिवाली सिनाता तथा अन्य गार्डियों द्वारा
परपर-बन्दर पहुँचये गये ।” विषे नहीं लोगों दिनों ही नहीं ;
जो छोड कर पड़ती नसीक ही और तोप-बन्दरकी आवाजेँ

याका प्रधान अफसर थे और नोगो उनके अधीन अफसर । मार्शल ओयामा घड़ीकी लगानी थे और नोगो घड़ीके बीचके प्रधान पहिया ।

अरधर-यन्दरकी किलावन्दीकी मध्यभागकी शुद्धशिपिङ्ग वन सीसे लोहे काष्ठकोम दक्षिण हो सौ फुट लंबी एक पहाड़ी है । इस पहाड़ीपर किसी चीना देवताका एक सुविशाल मन्दिर है । चीनाओंने इन्हीं देवताका नाम पर्वतके नामके साथ मिला दिया था ; किन्तु रूसियोंने वह नाम छातिरनें न का इल पर्वतकी 'वूल्फ हिब' या मेड़िया-पहाड़ी नाम प्रदान किया था । जिस समयका हाथ हम लिखते हैं, उस समय यह पहाड़ी रूसियोंकी थी ; इसलिये इस पहाड़ीका उन्होंनेका रखा नाम हम भी स्वीकार करते हैं । इस वूल्फ पहाड़ीपर अरधर- वन्दरकी किलावन्दीके मध्यभागका दिनारा था । रूसो इन जगह दृष्टापूर्वक जमे बैठे थे ; उन्होंने स्थिर कर लिया था, कि या तो इस जगहकी रक्षा होगी, या इस जगहसे हमारी जाश उठेगी ।

जापानी फौजोंके वल्फ पहाड़ीके चारने पहुँचनेके उपरान्त इनो फौजें प्यामनेसामने रहकर भी एकाएक युद्धमें प्रवृत्त न हुईं । ४ घण्टे जुलाईसे ६ वीं जुलाईतक सिर्फ हलकी हथकी लड़ाइयां हुईं ; किन्तु उन्हे खयोग्य एक भी लड़ाई न हुई । ६वीं जुलाईके उपरान्त उस अक्षममें घोर दृष्टि हुई ; नीचेकी जापानी फौजोंकी दृष्टि-बलसे भांति भांतिकी अज्ञ वधाये हुईं ; सबसे बड़ी अज्ञ-यह हुई, कि दृष्टि-बल रखने या बहकर और नीचे निकल

जातिवा जापानियोंको हक दिनेके किये अथवा अक्रान्त स-
मित रखना पड़ा ।

१२वीं जुलाईको एकाएक कसकी पीरसे अनाचार सिजा,—
'जापानो फौजने आगे बढ़ अरधर-अधरसे लोई जाई जा दो
लोइ दूरको एक छिन्नेपर अधिकार कर लिया । जापानो फौज
अपने इस नवाधिगत कियेसे अभी अच्छी तरह जम्पर बैठने
न पाई थी; ऐसे समय उम्पर रखी फौजने आक्रमण किया ।
जापानो फौज सिजा परिवारादर पीछे हटी; उन्को पीछे
हटते समय उसे सम्पूर्णरूपसे रानी फौजने टुकड़े टुकड़े
उड़ा दिया ।' नहीं जानते, कि यह लौंगरी जापानो फौज थी
और फिर किलेपर अपने अधिकार किया पा ? फिर भी;
अनुमानसे जान पड़ता है, कि वृत्त सिजाके आसनेवाली नहीं थीं;
बल्कि समुद्रतटकी जापानो फौजने एापर आगे बढ़नेको चेष्टा
की थी और उस चेष्टाने जा गो यह अज्ञतकार्य हुई; या
किसियोंके बल-विक्रमकी थाह है तुरन्त मोड़ि हट गई ।

इसके उपरान्त उहकतटकी जापानो सैन्यके कतिविधिया
असाधारणो पीरसे प्रस्ताशिश नहीं हुआ । अनाचार प्रदा-
शित न होनेपर भी उस कोरकी सतही हुई तोपोंको आवाजे' पूर
पूरतक पहुंचे पीर यह होनेकी संख्या हैतो थीं । इस हीना-
खोने उद्योग ही थी,—“इस कोर १७वीं और १८वीं जुलाईको
घोर हक हुआ; कोई चार नौ जाहज रखी सिजाकी सहज
दारा लीं थीं जागैवागी सिजाके अथा अक्रान्त कसियों द्वारा
अरधर-अधर पहुंचाये गये ।” किसे इन्हीं रानी कियों ही नहीं;
जो हीम इस एादरके नतीज है लीं तोप-बंदूकोंको आवाजे'

सुन सकते थे, उनका कहना है, कि जुलाई मासभर इस व्यवहार में घोर युद्ध होता रहा। ४वीं जुलाईसे ३२वीं जुलाईतक इस ओरकी जापानी फौजने जो काररवाईकी, बहिर्जगतकी इससे अधिक उसका और कोई समाचार न मिला।

वूलूफ हिलके सामनेकी जापानी फौजकी काररवाईका समाचार इतना तिमिराच्छन्न नहीं; क्योंकि स्वार्थमें व्याघात उपस्थित होनेके भयसे उस ओरकी काररवाईका, एकतरफा विवरण रूसियोंने प्रकाशित कर दिया था। वृष्टि-जलसे त्राय पाते ही उस ओरकी जापानी फौजने कमर कल आगे बढ़नेकी तयारी की। २५वींको तीसरेपहर एकाएक जापानी तोपोंने वूलूफ पहाड़ीकी कोई पन्द्रह मील लम्बी झिलावन्दीपर गोला-वृष्टि आरम्भ की। यह गोला-वृष्टि बड़ी ही भयङ्कर थी। शायद घेरेकी बड़ी बड़ी तोपें मोरचावन्दीके सामने पहुँच गई थीं और उन्होंने यह गोला-वृष्टि आरम्भ की थी। हमारी बात नहीं; रूसके सुसप्त स्वयं 'गवक्रय'ने प्रकाशित किया था,—“जापानी गोलावृष्टि बड़ी ही खूब थी; रूसी तोपखाने जापानी तोपोंके लक्ष्यस्थल थे और उनपर जापानी गोले बोलिबोली तरह बरसते थे। रूसी तोपखानोंके सामनेकी धुस सुरमा वनपर उड़ गई थी; रूसी तोपखानेके सिपाहियोंकी घञ्जियां उड़ गई थीं।”

शायद इसी दिन सन्ध्या समय जापानी फौजने वूलूफ पहाड़ीपर दो एक बार चढ़ाई की; किन्तु उसका कोई फल न हुआ। रातको फिर चढ़ाई होनेकी आशङ्कासे ही रूसियोंके कथनानुसार उनकी फौज मोरचोंमें रातभर युद्धके लिये तय्यार बैठी रही। कोई युद्ध नहीं हुआ। दूसरे दिन २६वींको जापानी

फौजने फिर चढ़ाई की। इस आक्रमणका भी कोई फल नहीं हुआ। २६वीं की रातको जिस जगह जापानी फौज महुंघ चुकी थी, उस जगह खुले मैदानमें रातभर पड़ी रही।

२७वीं जुलाईको प्रातःकाल हीसे घोर युद्ध आरम्भ हुआ। स्वयोंदसे पहले ही जापानी तोपोंके सुंघ खुल गये। समग्र रूसी मोरचेपर; विशेषतः रूसी मोरचेके दाहने भागपर विषम गोला-वृष्टि हुई। पहाड़ोंके पीछे रूसको रक्षित फौज थी; जापानी गोले पहाड़ी पारकर उस रक्षित फौजपर गिरने और उसे ध्वंस करने लगे। रूसियों कीकी ओरसे रत्नाचार प्रकाशित हुआ है,—“जापानकी भयङ्कर गोला-वृष्टिने रूसी तोपोंके सुंघ बन्द कर दिये; फिर भी, दितनी ही रूसी पलटनें छोटी छोटी फलदार तोपें के मोरचामें क्षिपी पड़ी रहीं; जापानी गोलोंसे उनकी उतनी क्षति नहीं हुई।”

दिन कोई नौ बजे जापानी गोलन्दाशी धीमी हुई और जापानी तोपोंके अपनो पूरी टम्बाईनें—यानी कोई पन्द्रह मोलका लम्बाईमें—हर्षध्वनि डारती आने लगीं। रूसी मोरचोंके समीप बन्दूक-तपखेकी भयङ्कर लड़ाई हुई। बन्दूकी घरीर कुल्ल-मेवाली धूपनें वह आग्नेय-अस्त्रका बृह निर्याय ही दोगी ही पहचने लिये अत्यन्त भयङ्कर प्रमाथित हुआ होगा। किन्तु इस विरुद्ध आक्रमणकारी और आक्रान्त दोगो ही तगिद भी विरलित नहीं हुए। एक ओरसे रूसी मोरचोंके आग्नि-वृष्टि ही रही थी; दूसरी ओरसे जापानी फौज बागदर-झक् रूसी मोरचोंकी ओर बढ़ रही थी। रूसियोंके लिहा है, कि उस बन्द बड़ा ही भीषण प्रत्यक्ष ही रहा था; लिहासे ही सोनें और बरत बरत

गन्दूके' लगातार हम रही थीं। बढ़ती हुई, जापानी फौजे' धन टहर जाती थी, तब समय अच्छी सिपाही समझसे हर्षध्वनि करते थे; मानो आपानियोंके पक्षिक विद्यास हीको वह अपनी विजयप्राप्ति' समझते थे। विद्यासलाभके उपरान्त ही जापानी फौज फिर घागे बढ़ती थी। रूसियोंको ओरसे प्रकाशित हुआ है,— "बढ़ती हुई जापानी; फौजने अन्तमें रूसी मोरचके किन्ने ही भागपर अधिकार कर लिया; ऐसे समय रचित रूसी फौजने आपानियोंपर टूट उन्हें उनके नवाधिकृत मोरचोंसे मार भगाया। १०वींको दिनभर घोर युद्धमें प्रवृत्त रहकर भी आपानो फौज रूसी मोरचोंपर अधिकार कर न सके। इस दिन दोई उत्तर द्वाणार जापानी सिपाही इस युद्धमें प्रतीक हुए थे।"

२२वीं और २३वीं जुलाईको जापानी फौजने वूलफ पहाड़ीपर चढ़ाई नहीं की; दोनो दिन पहाड़ीपर सिर्फ गोले बरखते रहे और इस गोलाबटिके फलसे रूसी सिपाहियोंका गचावसाया आश्रयस्थल भी सुरमा बन गया। २०वीं जुलाईको प्रातःकाल दोई चार बजेसे जापानी फौजने एकवार फिर वूलफ पहाड़ीपर घावा किया। रूसी तय्यार बैठे थे; जैसे ही आपानो रूसी मोरचोंके समीप पहुँच तीन भागोंमें विभक्त हो उनकी ओर झपटे, वैसे ही रूसी तय्यारें खींच और वन्दूकोंपर सङ्गमें चढ़ा आपानियोंको रोकनेके लिये घागे बढ़े। घोर युद्ध हुआ; सभी जापानी रूसियोंको पीछे हटाते थे और सभी रूसी आपानियोंको। बुद्धिमान इताहतोंसे भर उठा। रूसियों और विदेशी तनाशाइयोंने आकाश रूसी फौजकी वीरत्वकी कड़ी ही प्रशंसा की है। कहा है, सि वल्लभ पहाड़के रूसो

शिपाही घखपरिचालनमें बड़े ही पटु थे; उन्होंने अपनी
 इस पटुताकी वजह अशुभ जापानियोंको मार डाला; हमी
 रिपोर्टके अनुसार जापानी शिपाही और भी कितनी ही तर-
 हसे मारे गये। रूसियोंने कहा था,—“मोरपोसे आगे जगह
 मारनें गड़ी थीं; जापानी शिपाहियोंके इन माइनोंपर पहुंचने
 ही पर रूसियों द्वारा फौद दी जाती थी। माइनोंके एटनेके
 समयपर इस उपस्थिति होती थी। माइन बग फटती थी,
 मानी आगे प गिरि व्हाइल पटना था और अपने साथ
 बहुत बड़े भूखण्ड तथा उस भूखण्डपरके पत्थर, मनुष्य व्हा-
 दिकी आवाज़की धीरे उड़ा ले जाता था। आकाश बाल ही
 जाता था और बस मार्बल धूमि पर पर बांपने लगती थी।”
 रूसियोंकी ओरसे प्रकाशित हुआ है,—“इस दिनकी लड़ाईमें
 आधी बटालियन जापानी फौज मारी गई।” किन्तु इतनी
 बातें बनाकर भी अन्तमें रूसियोंकी खोकार करना पड़ा है,—
 “जापानी फौजका यह टुकड़ा बकर बाट हमी मौरपोसे वास-
 भागके पीछे पहुंच गया लड़ने यह भागपर आगे और पीछे
 होनी ओरसे आज्ञासंकर अन्तमें अप्रियार कर लिया। यह
 भागपर जापानियोंका अप्रियार होते ही हमी फौज पीछे हटने
 लगी। जापानियोंने हमसे हमी मौरपोसे खायल कर लिया।”
 रूसियोंने यह भी कहा है, कि हमारे शिपाही तुम्हारे लिये
 पीछे हटे; अपनी तीरें अपने नाथ लाने; जगह जगह तैमै स्त-
 पितवर उन्होंने पीछा करने वाली जापानी फौजपर मीटि रखा है।
 १९ वीं, २० वीं और २६ वीं के हुहनें रूसियोंने प्रकाशित
 किया,—“हमारी ओरसे एम्बर ही शिपाही और आगे

अफसर हताहत हुए।" ३० वीं जुलाईके युद्ध के सम्बन्धमें विफ्रं इतना ही लिखा,—“हमारी फौजको उतनी क्षति नहीं हुई।” इस युद्धके उपरान्त जापान-सरकारका मौन भी टूटा; उसने प्रकाशित किया,—“बूल्फ पहाड़ीकी लड़ाईमें हमारी फौरके पाँच अफसर मारे गये और इकतालीस जखमी हुए।” हताहत सिपाहियोंका कोई समाचार प्रकाशित किया नहीं गया।

यह कहनेका प्रयोजन नहीं, कि इस युद्धके फलसे जापानियोंने अर्द्धचन्द्राकार अरधर-वन्दरको किलावन्दीके मध्य भाग या ठीक ह्वातापर अधिकार कर लिया। इस अधिकार-प्राप्तिसे जापानियोंको जो हर्ष हुआ होगा, उसका वर्णन कौन कर सकता है ?

नवम परिच्छेद ।



हीनो जापानो पौजोंकी । समवेत अत्रागमन—दूधुलि-
 ड्डल और यङ्गुलिङ्गला पतन—तोन्दाशानपर अधि-
 कार, कैलर-वध लिया बयाङ्गकी ओर ।

तालिङ्ग एरिख आगे दृष्ट १६ वीं जुलाईकी दूराकीकी सैन्यके
 बाधे भाग दारा तराईके उम सिटीयेन नगरपर अधिदार होने-
 की बात हम अन्ते पहले लिख चुके हैं । इस अधिका-
 रप्रतिके उपरान्त कई दिनोंतक सेनापति दूरोकीकी सैन्यके उल्ह-
 खयोग्य कोर काररवाई नहीं की ; वह अपनी जगह मुटु रो
 बैठ रुखियोंके होते हुए छोटे-मोटे आक्रमणोंकी रोक अपने
 गिरदावरीके खारोंको खुले गिरदावरीकी खारोंके साथ सदाती
 रही । दूरोकी मानो अपने बाधेकी नोछ और उनके भी
 बाधेकी ओक्की सैन्यकी गति-विधिके फलफलकी प्रतीक्षा
 करते रहे ।

जापानके दारो सेनापतियोंके मातहत दारो पौजोंके दूरो-
 कीकी पौज सर्वप्रधान पौज समझी जाती थी—जापानके
 हितके हुए सैन्यसमूहकी सम्मिलित शक्तिका दृश्यशाली
 मुकुट । शान्तिके समय भी एहके हिरे दरा प्रस्तुत रहनेवाली
 जापानो गार्ड पौज दूरोकी कीकी अधीनमाने थी । सिवा इसके
 दूरोकीके अधीन और भी जो पौजों की, वह सङ्घ सिद्धि की ;

उन फौजोंके सिपाही पुराने सिपाही थे। कुरोकीकी फौजका वह बल विक्रम जानकर ही रूस-सेनापति कुरोपाठकिनने इस सैन्यके सामने रूसकी एक जबरदस्त फौज नियुक्त कर दी थी। जो रूसी फौज कुरोकीके सामने थी, वह भरती या रूसके सुदूर-थापी साम्राज्य मध्य एशिया प्रभृति स्थानोंकी नहीं; बल्कि ग्वास युरोपकी पुरानी फौज थी। कुरोकीके सुकाविलेके प्रायः कुल रूसी सिपाही युरोपियन थे और एक उच्चदंशिय सुप्रसिद्ध सुविज्ञ बहु-दर्शी राजपुरुष सेनापति केजर इस रूसी फौजके प्रधान आह्वार। इसतरह कुरोकीकी जबरदस्त फौजके सामने सेनापति केजरकी जबरदस्त फौज लोहेकी दीवार बनकर खड़ी थी; खड़ी क्या थी कभी कभी आगे बढ़ विपक्षको कुचल डालनेकी चेष्टा करती थी। चाहते हैं, कि उस समय इस रूसी फौजमें कोई साठ हजार रूसी सिपाही थे और ऐसे ऐसे युरोपसे रूसी फौजकी मदद मिल रही थी, वैसे वैसे इन युरोपीय सैन्यकी पुष्टि और बल-वृद्धिकी जा रही थी। सेनापति कुरोकी इस रूसी फौजकी क्रमोन्नत देख डरते थे, कि किसी दिन उनकी फौजपर टूट उसे विषम क्षतिग्रस्त न करे। वह चाहते थे, कि यथासम्भव शीघ्र आगे बढ़ रूसी सैन्यपर आक्रमणकर उसकी मिलितशक्तिको ध्वंस कर डालना चाँहिये। किन्तु उनके चाँह-नेसे क्या होता है,—प्रधान सेनापति ओयामाकी आज्ञा यही थी, कि कुरोकीकी सैन्य तबतक कोई काररवाई न करे, जबतक उसकी बगलके मोजू और ओजूकी सैन्य आगे बढ़ न चुके।

अन्तमें मोजू और कुरोकी दोगोकी सैन्य आगे बढ़ीं। पाठ-कोंको मालूम है, कि ओजूकी सैन्यने आगे बढ़ ताशीमान

और उसको बगलके निडच्छाङ्ग-दन्तरपर अधिकार कर लिया और नौजूको सैन्यके आगे बढ़ ताशीचावसे कुछ मोड़ पीछेके एक स्थानपर विजय-निशान ज'चा दिया। दोनों फौजोंके आगे बढ़नेसे तीनों फौजों बहुत कुछ मैदानमें उतर आः और क्षाममें एक दूसरेके समीप हो गईं। इस सैन्यके बीच जो अङ्ग-बन्धनकार भूभाग था, वह मानो और नन्दोर्ण हुआ; उस भूभागमें अवस्थित खुसी सैन्यको अपने सामने तीनों ओर क्रम क्रमसे घिरती हुई जापानी सैन्यको दुर्भेद दीवार दिखाई दी।

जापानी तीनों बड़ी फौजोंके बहुत कुछ शक्त हो जानेपर अथ प्रयोजन इस बातका उपस्थित हुआ, कि यह तीनों सैन्य एक साथ बाररबार्द करें; जबकि तीनों फौजोंके बीच फासिटा था, तब-तकही बात जुदा थी; अब तीनों सैन्य मिल एक हो गई थीं और इसीलिये तीनों एक साथ एक सामने प्रयत्न होनेके लिये भाव्य थीं। तीनों फौजोंके एक साथ एक ही सामने प्रयत्न होनेका फल बढ़ा हो अद्भुत था और उद मल-प्राप्तिकी व्याशाने ही प्रधान सेनापति ओयामा तीनों फौजोंको क्रम क्रमसे जगें बढ़ा उन्हे इस अवस्थानमें ला खड़ा दिया था। इसलिये तीनों फौजोंका समिलित काम जापानके लिये अत्यन्त लाभदायक था और इतने दिनोंके उपरान्त यह मुख्यकर या प्रधान सेनापति ओयामाने अत्यन्त हृषपूर्वक तीनों फौजोंको एक साथ बाररबार्द करनेकी आज्ञा दी।

यूरोपीयों फौजमें ३० वों हजारों सैन्यो लड़ाईया तथा-रिदां जगें लगीं। इस लड़ाईके पञ्चम-बारि इरापारदिकी ईरकार्दर निशाना और ही जगें लड़ाई करे गई थीं फौजों

चल बहुत कुछ समीप ही गई थीं। मेनापनि कुरोकीने इन्हीं दोनो राहोंसे अपनी फौजको आगे बढ़ानेकी तयारी की। एक राह सुदूर वामभागके उसी सिहोयेन नगरके आगे गई थी, वहांकी जापानी सैन्यको आगे बढ़नेकी आज्ञा मिली। सिहोयेनसे कई कोस आगे दूषु लुङ्गू नामक स्थान है। रूसी फौज सिहोयेनसे भाग इसी स्थानमें एकत्र हुई थी और यहां दुर्भेद्य किलाबन्दी बना सिहोयेनकी जापानी फौजके आगे बढ़नेको प्रतीक्षा कर रही थी। ३० वीं जुलाईकी सन्धाको सिहोयेनकी जापानी फौज आगे बढ़ दूषु लुङ्गू पर आक्रमण करनेके लिये तयार होने लगी। इस मोतीनलिङ्ग दर्रे से कुछ आगे लियावयाङ्गकी राहके किनारे रूस-अधिकृत याङ्गजुलिङ्ग नामक दुर्भेद्य स्थान था; इसी रात मोतीनलिङ्गकी भी जापानी फौज याङ्गजुलिङ्गको ओर अग्रसर होनेके लिये प्रस्तुत हुई। कुरोकीने खयाल किया, कि इन दोनो स्थानोंपर अधिकार होते ही इनके बीच और मोतीनलिङ्गके बायेंको जापानी सैन्य-पंक्ति, रूसी सैन्य-पंक्तिको सहज ही मार भगा आगे बढ़नेमें समर्थ होगी।

रात हीको कुरोकीकी अग्रगामी सैन्यने रूस-अधिकृत स्थानोंके सामने पहुँच पर्वतों या पहाड़ियोंपर तोपें लगा दीं। ३१ वीं जुलाईको प्रातःकाल हीसे दूषु लुङ्गू और याङ्गजुलिङ्गके सामने घोर समरानल प्रज्वलित हुआ। पहले सिहोयेनसे आगे बढ़ रूसियोंके दूषु लुङ्गू पर आक्रमण करनेवाली जापानी सैन्यका हाल सुनिये। इस ओर विदेशी संवाददाता नहीं थे; इसलिये इस ओरके शुद्ध-विवरणकी उत्कण्ठा संवरणकर दोनो ओरकी भिन्न-भिन्न संश्लेष परकारी रिपोर्टोंके सारसंक्षेप पर संक्षेप करना

होगा। मिस्त्रीवेनकी जापानी फौजोंने दिन कोड़े छाउ वजे वृशु-
 लिङ्गूके सामने पहुँच रूसी फौजपर आक्रमण आरम्भ किया।
 पहले तोपों द्वारा आक्रमण किया, इसके बाद फौजों द्वारा। जापानी
 फौजे वृशुलिङ्गूके सामने न बढ़ अपने दाहनेसे आगे बढ़ वृशु-
 लिङ्गूके किसी बंदर पीछे पहुँच गईं। जापानी फौजोंके इस
 आक्रमणने रूसियोंने घोर बाधा उपस्थित की; घोर युद्ध हुआ;
 इस जगह पाँच सौसे अधिक रूसी सिपाही मारे गये। तीसरेपहर
 एकाएक रूसी मोरचीपर लाल ध्वजा उड़ने लगी; इसका मत-
 लब यह था, कि युद्ध कुछ देरके लिये स्थगित हो, रूसी अपने
 हताहतोंको युद्धभूमते उठाना चाहते हैं। लाल ध्वजा देखते ही
 जापानी तोपों-बन्दूकोंके सुँद एकाएक मानी मन्त-बलसे बन्द हो
 गये; जो जापानी फौज जिस जगह पहुँची थी, वहाँ वहीं ठहर
 गईं। जापानी सिपाहियोंके सामने प्या रूसी सिपाही अपने हता-
 हतोंको उठा ले गये; जापानियोंने रूसियोंसे किसी तरहकी
 हेरफेर नहीं की। कुछ देर बाद रूसी मोरचीकी लाल ध्वजा
 एकाएक उतार दी गई; युद्ध चक्र पहल। सन्ध्यावक घोर युद्ध
 होता रहा।

इस दिनके युद्धने यद्यपि जापानी फौजे पूर्णरूपसे विजयी
 नहीं हुईं, तथापि उन्होंने अपनी विजय-प्राप्ति का पद प्रशस्त
 कर लिया। निम्नरके युद्धके फलते रूसी फौजे परेशान हो
 गई थीं; उनकी बुरी हूट गये थे। दूसरे दिन प्रातःकाल हीसे
 फिर युद्ध आरम्भ हुआ। आठ रूसियोंने उतारा इस नहीं
 था। जिस घोर जापानी फौज कुछ बढ़ती थी, उस घोरकी
 रूसी फौज सामान्य भावा है पन्तने शान होकर पीछे हटती

थी। दीपहरसे पहले ही समग्र रूसी फौजकी जड़ हिल गई और दो पहरकी जिन समय समग्र जापानी फौजने मिलकर रूसी फौजपर धावा किया, उस समय समग्र रूसी फौजके पैर उखड़ गये और वह बड़ी ही घबराहट और विस्फुल्लके साथ लियावदाङ्गकी ओर जानेवाली राहसे भागे। जापान-सरकारकी ओरसे प्रकाशित हुआ,—“कोई चार मोलतक रूसी सिपाही आगे आगे भागते और जापानी सिपाही पीछे पीछे मारते गये।” अन्तमें रूसी फौजे' लियावदाङ्गकी राहके खान-पिङ्ग नगरकी ओर भागीं जापानी फौजे' अपने नवाघिकत स्थानोंमें ठहर विषयका स्वर्गीय आनन्द उपभोग करने लगीं।

युगुलिङ्गजूके युद्धका संचित्र विवरण ऐसा ही है। अब मोतीनलिङ्गसे आगे याङ्गजुलिङ्गका युद्ध-विवरण देखिये। युगु-लिङ्गजूके युद्धकी अपेक्षा वह युद्ध भयङ्कर था। इसमें दोनो ओरके सिपाहियोंकी संख्या भी अधिक थी और दोनो ओरके सेनापति युद्धस्थलमें अवस्थानकर अपनी फौजे' लड़ा रहे थे। रूसकी ओरके सेनापति वाउगट कैलर वहीं थे,—जापानकी ओरके सेनापति कुरोकी यहाँ थे। ३०वींकी रातको जो जापानी तोपें याङ्गजुलिङ्गके सामने लगाई गई थीं, वह बहुत ही छोटी छोटी थीं; पहलाड़ोंके उस दुर्गम्य चढ़ाव-उतारमें जापानी बड़ी बड़ी तोपें रूसी मोरचोंके सामने पहुँचाई जा नहीं सकी थीं, दो छोटी छोटी तोपें पहुँचाई गई थीं उनसे लिये भी प्रचुर परिमाणसे गोले पहुँचाये जा नहीं सके थे; गोलोंसे भरी गाड़ियां उस राहसे जा नहीं सकती थीं; छायाँ द्वारा जितने गोले पहुँचाये जा सके, उतने ही पहुँचाये गये। दूसरी ओर

रुखी मोरचोंमें बहुत बड़ी बड़ी कलदार तीपें थीं और सामान्य गोलोंकी लीन कहे,—भीषण आपनल गोलोंसे रुखी मेगजीन टमा-
ठस भर था । ३२वीं जुलाईको प्रातःकाल लौंडे मात बजेसे युवा-
रत्न हुआ । जापानी फौजोंको आज्ञा मिली,—“फौजका दायना
और मध्यभाग सुविध तुम्हार क्रम क्रमसे आगे बढ़े ; बायां
भाग रुखी मोरचोंको तीखे बाहुजुलिङ्गके पीछे पहुँच जानेका
यत्न करे ।” दोपहरतक तीपोंको लड़ाई हुई । जापानी तीपें
कलदार नहीं थीं ; फिर भी, जापानी गोलन्द्राज अपनी छिप्र-
हस्तताकी वजह बड़ी ही फुातीके साथ गोलन्द्राजी करते थे ।
प्रातःकालसे दोपहरतक रुखी मोरचोंपर जापानी तीपोंके एक
एकारसे अधिक गोले बरसे । रुखियोंकी ओरसे आपनल गोले
चलते थे ; जापानियोंकी ओरसे साठली गोले चलते थे ; सभी
सभी आपनल गोले भी चल जाते थे । दोपहर जल कुदनेपर
जापानी गोलन्द्राजी शिथिल पड़ी ; जापानी फौजोंकी रुखी
मोरचोंपर आक्रमण करनेका आज्ञा मिली । आक्रमणके समय
विदेशी संवाददाता युद्धस्थलमें उपस्थित रहे स्वच्छसे कुछ देख
रहे थे । अन्तान्द संवाददाताओंके साथ बिलावती कलवार
'हाण्ड'के संवाददाता भी इरीकोकी फौजमें थे । आपने आपने
एक-एक देख एक-एक बहवा जो विवरण प्रकाशित किया है, उसका
मर्मोपदेश इसतरफ है,—

“तीनदोपहरसे कुछ पहले हमारी दायीं जापानी फौजकी
आक्रमण करनेकी आज्ञा मिली । रुखियोंके मोरचे इन्हीं
शनिपर भी जापानी फौजोंको आज्ञा मिली थी उल्लाहखानेके साथ
गयीं । भागने ली एक इरीकोकी पहाड़ी थी, जिसका रुखी

तोपें लगी हुई थीं। कितनी ही तोपें इस्तरह छिपा रखी गई थीं, कि उन्हें जापानी फौजोंके आगे बढ़नेसे पहले देख न सकी थीं। जापानी फौजोंके आगे बढ़ते ही पहाड़ीकी गुप्त-प्रकट सभी तोपें गोले बरसाने लगीं। तोपोंके इंद्रगिर्द रूसी फलटने बैठी थीं, वह सब जापानी फौजोंपर गो लयां बरसाने लगीं।

“बड़ी ही गर्मी पड़ रही थी। एक तो मौसमकी गर्मी ; दूसरे गोले-गोली और श्रमकी गर्मी ; जापानी सिपाही पसीने पसीने हो गये। जिस समय जापानी सिपाही धावा मारते पहाड़ीके तलदेशमें पहुँचे, उस समय वह सब नितान्त क्लान्त हो गये थे। पहाड़ीपरसे गोले और गोलीका प्रचल तूफान वह रहा था ; उस तूफानमें पड़ मनुष्य तो मनुष्य बड़े बड़े वृक्ष भी खण्ड खण्ड हो जहाँतहाँ गिर रहे थे। बड़ा ही भयङ्कर स्थान था, फिर भी, जापानी सिपाही पहाड़ीके तलदेशमें आश्रय छूट लेट गये ; जिस जगह पहुँचे थे, उस जगहपर अधिकारकर बैठ गये। जिस जगह जापानी सिपाही बैठे, उस जगह खुले मैदानमें एक सुनिर्मल जलस्रोत बह रहा था। एक ओर भीषण युद्ध चल रहा था अगणित मनुष्य मर रहे थे ; दूसरी ओर वह जलस्रोत अपने हृदय किनारोंके बीच चला जाता, हँसता बह रहा था। खुले मैदानके इस जलस्रोतके समीप जानेमें शत्रु सुनिश्चित जानकर भी टघासे विचित्र कितने ही जापानी सिपाही लोभ संवरण करनेमें अक्षम हो दौड़ कर जलसांतकिनारे पहुँचे। रूसियाकी गोशियां बरसाने लगीं। कितने ही जापानी सिपाही जाते समय मारे गये ; कितने ही वह सुशीतल अथवा घातक जल पीते पीते मारे गये ; फिर कितने ही जल पी निर्विघ्न लौट

भी आये । सेनापति क्रोधीसे अपने सिपाहियोंकी इतनी दुर्दशा देखी न गई ; उन्हें अपने पताड़ीयों तकदेशसे वापस बुला लिया । इस आवागमनसे कां० तां का जापानी सिपाही हताहत हुए । सैन्यके लफटनएट शिशाभाव मारे गये । दूसरे लफटनएट कियोका भी मारे गये । कियोकाको एक और कातिज गोली लगी ; दूसरा और उनके तुं हंस निकला,—‘जय ! जापान-सम्राट् सिखाहीको जय ।’ वन ; कियोकाकी निजी देह जमीन-पर छेर दी गई ।

“हमारी फौजके बायेंका सेना ही हाल हुआ । मध्यभाग बायाँका तहाँ टहर अपने हीनो बाजुओंके सार्मिक फडाफली प्रतीक्षा कर रहा था । बायाँ भाग प्रातःकाल हीसे धीरे धीरे छागे बढ़ खसी याङ्गुलिङ्गके पीछे पहुँचनेका यत्न कर रहा था । इस घोरके खसी तोपखाने बड़े ही जबरदस्त थे ; जापानी तोपखानोंपर गोले बरखानेके साथ साथ उस यथाच्छादित भूभागपर परिणाम गोलाघटि कर रहे थे, जिससे हीकर जापानी पीछे छागे बढ़ रही थीं । खसी गोलोंकी चोटसे बड़े बड़े कण्डू लयवत् टूट टूटकर वन-भूमिपर बिखर रहे थे । वनसे छागे एक घाटी थी ; इस घाटी द्वारा ही जापानी फौजका बायाँ भाग याङ्गुलिङ्गके पीछे पहुँच सकता था । किन्तु इस घाटीसे निर-लगा छायाव नहीं था ; घाटीके सामने एक ऊँचे पर्वतपर खडियोंकी तोपें लगी थीं । दूसरा उद्योग न रहनेके हवावा कोई प्रायः रहे जापानी फौजका बायाँ भाग इस घाटीमें धुल पड़ा । खसी गोले जापानी सिपाहियोंकी उड़ाने लगे ; इधर जापानी सिपाही अपने कापिशीकी इतरखाती दीई मरवा न कर करार

आगे बढ़ते गये। अन्तमें जापानी सिपाही घाटीके सामनेके पर्वतके नीचे पहुँच गये। रूसी तोपखनोंकी बगलके बैठे रूसी सिपाही पर्वतसे उतर जापानी सिपाहियोंसे युद्ध करने लगे; भयङ्कर मार-काट आरम्भ हुई।

“जापान-सेनापति कुरोकीने अपने बायें भागके किसी कदर हातकार्य होनेका समाचार पाते ही अपने दाहने भाग और मध्य भागको आगे बढ़ने को आज्ञा दी। ऊपर ऊपर जापानी तोपोंके गोले चले; उन गोलोंके नीचे नीचे जापानी फौजे चली। अब रूसी मारचोंकी जड़ हिलती दिखाई दी। रूसी बन्दूकोंकी बाढ़ शिथिल पड़ती दिखाई दी; रूसी तोपोंके गोले ठूँडे पड़ते दिखाई दिये। बात यह हुई, कि रूसियोंने जब सुना, कि उनके पश्चात्भागमें जापानी फौज पहुँच गई, तब उनके कूके छूट गये। रूसी अफसर धरे; कि कहीं रूसी फौजोंकी पीछे हटनेकी राह रुक न जाये। रूसी मारचोंको तोपें शीघ्र शीघ्र हटाई जाने लगीं। मध्यभागके एक पर्वतके तोपखानेसे रूसी तोपें हटाई जा रही थीं; ऐसे समय एक जापानी गोलेने एक रूसी तोप खींच ले जानेवाले गोलन्दाजोंको उड़ा दिया; उनके हाथसे छूट वह तोप सैकड़ों फुटकी उंचाईसे लुढ़क-पुढ़क नीचे आ गिरी। इतनी उंचाईसे गिरनेकी वजह इस तोपका मुँह सुमिने घुस गया। मैंने झपटकर इस तोपके समीप पहुँच देखा, कि इसके पैदमें एक गोला भरा हुआ था; रूसी तोपें इतनी घबराहटसे हटाई गईं, कि उनमें भरे हुए गोले भी निकाले नहीं गये। इसके उपरान्त ही और एक तोप इसीतरह पर्वतसे लुढ़कती-ली आ जमीनपर गिर टूट-टूट गई। जैसे जैसे जापानी फौजे

आगे वफ़ी, उसे कैसे खुली पौजे' प्रीछे हटो' । खुली तोये' इस घबराहटसे हटाई गई', कि उनमें भरे हुए गोले भी गिरावे जा नहीं सके । इसके उपरान्त ही और एक तैप इखीतरह पर्वतम लुप्तकृती-पृष्ठकृती आ बसीनपर गिर टूटपूट गई । ऐसे जैसे जापानी पौजे' आगे वफ़ी, ऐसे जैसे खुली पौजे' प्रीछे हटीं । खुली पौजे' एक घबराहटसे पीछे हटीं, कि अगंतव गोली-गोली ओहि-एहोपश्य अपनं छोरि मोरचोनि छोड़ गईं ।"

अन्धान्य स्थानोंकी खुली पौजे' प्रीछे हट गईं ; किर्क पीले-से मोरचोंके खुली लिपाही लज्जे-रहे ; अन्तमें वर खर भी था तो टुकड़े टुकड़े उड़ा दिये गये या किली करह भान गये । रन्ध्राके धुं-धककमें जापानी पौजे'के सारने भागने हुए खुली मोरचोंपर अधिकार कर लिया । मध्यभागने खुले मोरचोंके आगे वर थाङ्गकुलिङ्ग नाक चुत्र पार्ष्वत्य नगरपर अधिकार कर लिया और साथे' भागने छटीके सारनेकी खुली पहारोपर अधिकारकर भागते हुए खुलियोंका कुछ दूरतक पीछा किया । खुले पौजे' थाङ्गकुलिङ्गसं भाग रातौरात लियावपाङ्गरीं सरले ताङ्गहोवेन नगर पहुंचीं ।

एणुलिङ्गसे भागी खुली पौजे' आगपिङ्ग पहुंचीं और वाङ्ग-कुलिङ्गसे भागी खुली पौजे' ताङ्गहोवेन । इन दोनों ही नगरोंके विनाशदाहणों और राह गईं थी । इन दोनों नगरोंके बीच बहुत बस पाटिका थी ; एक नगरके दूसरे नगरतक हमसस आसराए थी । दोनों पक्षकितन खुली पौजे'के अन्तों सारने अन्त पहुंचे एक इतरेथीं सारने मुर्तीनदया शर सुगया

होगा। इन दोनों जगहोंकी रूसी फौजके पीछे हटते ही दूरतक फौजी रूसी सैन्य-पंक्ति आप ही आप पीछे हट गई।

युगुलिङ्ग और याङ्गजुलिङ्गके युद्धमें दोनों ओरके बहूतरे सिपाही काम आये। सेनापति कुगेकीकी फौजके चालीस अफसर और नौ सौ सिपाही हताहत हुए। रूसकी ओरके हताहतोंकी ठीक संख्या प्रकाशित नहीं हुई; फिर भी, कितने ही लोगोंका ख्याल है, कि इन दोनों लड़ाइयोंमें रूसके दो हजार से अधिक सिपाही हताहत हुए। सिवा इसके साथ रूसके अफसर और एक सौ उनचास रूसी सिपाही जापानियोंके हाथ कैद हुए; दो तोपें और पांच सौ बन्दूकें जापानियोंके मोरचोंमें मिलीं। सिवा इन बर्तू चतियोंके रूसकी और एक बड़ी क्षति हुई। हम पहले ही लिख चुके हैं, कि इस अञ्चलमें रूसकी युरोपीय फौज थी और इस फौजके प्रधान अफसर सेनापतिसे काउण्ट कैलर थे। काउण्ट कैलर सन् १८५० ई. में जर्मनीके एक ऊँच घरानेमें उत्पन्न हुए थे; अष्ट्रिया, फ्रान्स और रूस आदि देशोंके कितने ही उच्चवर्गोंसे व्यापका सम्बन्ध था। सिवा इसके आप कितनी ही लड़ाइयोंमें शरीक हुए थे। रूस-रूस युद्धमें शरीक ही आपने अपनी रण-कौशल दिखा बड़ी सुख्याति पाई थी। रूस-सेनापति यही काउण्ट कैलर इस याङ्गजुलिङ्गकी लड़ाईमें मारे गये। इनकी मृत्यु का वर्णन इस प्रकार है,—कुरोकीकी फौजका बायां भाग छिन्न समय पूर्वोक्त घाटीमें घुस रूसी मोरचोंके पीछे पहुँच जानेका यत्न कर रहा था, उस समय कैलर घाटीके सामनेके पर्वतपर थे। घाटीमें घुसनेवाली जापानी फौजोंके साथ जो लकड़ीकी तोपें थीं, वह घाटीके दूसरे छोरसे घाटीके साम-

नेके रूसी पर्वतपर गोले उतार रही थीं। सेनापति कैलर इस पर्वतपर लगे रूसी तोपखानेको देख रहे थे और गोलन्दाजोंको तोपें मारपर जगानेका आदेश दे रहे थे। समद समद पर जापानी गोले इस पर्वतके रूसी तोपखानेपर आ पड़ते थे। कैलरके साथी अफसरोंने कैलरको समझाया, कि इस पगह जापानी गोले आते हैं; आप यहाँसे शीघ्र हट जाइये; किन्तु भावीजी प्रबलतासे कैलरने अपने साथी अफसरोंके इस सद्बुद्धिपर कार्यपाद नहीं किया। कैलर दो तोपोंके बीच खड़े हो गोलन्दाजोंको कुछ समय भा रहे थे; ऐसे समय जापानी तोपका चलाया हुआ एक आपनल गोला उनसे तीन दसमक्री पाश्चिमेपर गिर भयङ्कर शब्दके साथ पड़ा। गोलेके एक टुकड़ेने कैलरको दूर फेंक दिया। गोलेके दो टुकड़े उनके शिरपर लगे और तीन टुकड़े उनकी छातीपर। सिवा इनके गोलेमें भरो इतनीस गोलीयाँ कैलरको देहके भिन्न भिन्न अंगमें भिद गईं। कैलरके गिरते ही उनके हाथका एक अफसर भावटकर उन्हें भूमिमें उठाने लगा। कैलरने अफसरको रोक बिधु इतना ही कहा,— “मेरे दृष्टिके लिये अस करनेको आवश्यकता नहीं; मेरा सब बलबलाव है।” यह कह कुछ मिनट जीवित रह चान्तनें देकरने इच्छलोक परित्याग किया। कैलरके मरते ही उनके अर्धीन अफसरने उनका चामन यदरकर इह-परिहारका भार ग्रहण किया। कैलरकी मृत्युसे ज्ञान नहीं रहा रहता, किन्तु उनका मृत्यु-समाहार तुम रूसी फौज और भी दक्षीलाह हो गईं। कैलरकी मृत्यु पर समग्र यूरोपमें शोक प्रकाश किया गया।

वन ; इस समय सेनापति झुरोकीकी सैन्यका निष्पत्तना ही हाल लिखना वयेष्ट हैं । पाठकोंको अब हमारे साथ झुरोकीकी वगलके सेनापति नोजूकी सैन्यको और सुझकर देखना चाहिये, कि जिस समय झुरोकीकी सैन्य पूर्वोक्त दोनों स्थानोंमें युद्ध कर रही थी ; उस समय नोजूकी सैन्य क्या कर रही थी ।

पाठकोंको स्मरण होगा, कि ओजूको सैन्यके ताप्राचावकी ओर बढ़नेसे पहले नोजूकी सैन्यने आगे बढ़ तोम्ब्रानपर अधिकार कर लिया था । तोम्ब्रानसे पीछे दृष्ट रूसी फौजन तोम्ब्रानसे कोई डेढ़ कोस उत्तर तोम्ब्रान और हैचिङ्गवे बीच कोई डेढ़ कोस लम्बी हुङ्गयावलिङ्ग नाम्नी एक पहाड़ीपर मोरचे बांध अपनी छावनी डाल दी थी । ३० वीं जुलाईको नोजूकी सैन्यको आगे बढ़ इस रूसी मोरचेपर अधिकार कर देनेकी आज्ञा मिली और इसी दिन वह आगे बढ़ रूसी मोरचेके सामने फौल गई ; बल्कि रूसी मोरचेके दाहनेसे चक्रर काट किसी कंदर रूसी फौजके पीछे पहुँच गई ।

३१ वीं जुलाईको प्रातःकालसे युद्धारम्भ हुआ । इस युद्धके प्रारंभसे ध्यान पड़ता है, कि युद्ध बड़ा ही भयङ्कर हुआ होगा ; किन्तु दुःखकी बात है, कि टाइम्सके संवाददाता और केसेल दोनोंने इसका यथोचित वर्णन प्रकाशित नहीं किया । हमारा दोष नहीं ; हमको जो कुछ मिला, जोड़-बटोर उसे ही हम लिखे देते हैं ।

इस रूसी फौजके प्रधान आफसर हमारे पूर्वपरिचित बन्दरवाले वही अलकसिफ आपने जब देखा,

कि जापानी फौज, पर्वतके सामने पहुँच गई और लड़का एक भाग चकार बाट खड़ी मोरचेके दाहने लिसी करर थोड़े पहुँच गया, तब आपने खान्यान्व खागोंको खूप सुदृढ़ पदार्थके पात्र अपने दाहने इक्कीस तोपें लगा दीं। प्रातःवाक छय जापानी फौजे आगे बढ़ीं, तब खुशियोंने घोर दावा उपस्थित की। जापानियोंने जब खड़ी मोरचेके दाहने तोपोंका आधिक्य देखा, तब लश् और अपनी भी बहूतसी तोपें लाए पचासोंपर लगा दीं। दोनो घोरकी तोपोंसे गोले चकने लगे। लखियोंने जापानकी यह गोकान्दाजो अत्यन्त दृष्टप्रद बोध हुई; अपना एक बड़ा एक पहाड़ीकी जापानो तीर्थोंपर अधिकार करनी चला। क्यादा दूर आगे जा सकता; राह हीसे लख जापानी फौजोंसे मारकाट बाधक कौटा दिया। इसके उपरान्त एक घोर लखियोंकी घोरसे ऐसी कोई चेष्टा नहीं हुई; जापानी गोले बार-बार खड़ी तोपखानोंपर पड़ गोकान्दाजो और तीर्थोंकी घबराहट उड़ाते रहे। खड़ी मोरचोंके सामनेकी जापानी फौज खड़ी गोलीकी परवा न कर छोटे छोटे टीलोंकी आद पबड़ खड़ी पहाड़ीकी घोर बढ़ती ही गई और हिंदु होंद एक क्वेटक र खड़ी मोरचोंके अत्यन्त समीप पहुँच अपने मोरचे बांध लिये। सिवा इसके जापानी फौजका दाहना भाग चकर बाट खड़ी फौजके बाधे पहुँच गया। इस घोरके भी लखियोंने दृष्टकार जापानी फौजपर अपकीर्ण चलाई की। एक घोर लखियोंकी बड़ी ही क्षति उठा प्रीति प्रकटना पड़ा। इधर दूर हील रहा और लखर ताँकरे पहर कोई तीन बजे जापानी फौजके बाधे सामने खड़ी फौजके (दाहने) सामने खड़ी लखियोंके हुँद

बन्दपर आगे बढ़ रूसी मोरचेकी पीछे एक जंजे स्यानपर कद-
चा कर लिया। इस दिन वन इतनी ही काररवाई हुई। सन्ध्या-
परान्त रूसी और जापानी दोनों फौजों रात्रिके विश्रामके लिये
अपने अपने मोरचोंमें ठहर गईं ।

जापानियोंने खयाल किया था, कि प्रातःकाल फिर युद्ध होगा ;
किन्तु रूसी प्रातःकाल युद्ध करनेके लिये तय्यार नहीं थे । उनके
मोरचेके सामने तो जापानो फौज थी ही ; हाहने-बाये भी पहुँच
गई थी। रूसियोंको भय हुआ, कि रातोरात जापानो फौजे
रूसी मोरचेको चारों ओरसे घेर लेगी ; ऐसी अवस्थामें रूसी
फौज हैचिङ्गकी ओर भाग न सकेगी। इस आशङ्कासे विफल
हो रूसी फौज रात हीको मोरचे छोड़ हैचिङ्गकी ओर भागी।
प्रातःकाल जापानो फौजने खाली रूसी मोरचेपर सङ्घर्ष ही अघि-
कार कर लिया। इस युद्धमें जापानियोंकी ओरके १६४ सिपाही
मारे गये और ६६ घख्मो हुए। रूसियोंको बड़ी क्षति हुई।
इस क्षतिको अन्दाजा एक इसी बातसे हो सकता है, कि
रूसी सिपाहियोंकी कोई सात घौं लागे जापानियोंने युद्धस्थलसे
उठा कन्नमें तोपीं। सिवा इसके जापानियोंके हाथ छः रूसी
प तोपें और बहूतेरी बन्दूकें लगीं। जो गोला-गोली और रसद
मिसा, उसका ठीक हिसाब नहीं। शर-रह हुङ्गयायलिङ्गपर
अधिकारकर नोजूकी सेन्यने अपनी अग्रगामिनो सेन्य आगे
बहुत दूरतक फेला दी।

कुरोकी, और नोजूकी फौजकी काररवाई देख चुके ; अब नोजूकी
बगलके ओजूकी फौजकी काररवाई देखिये। जिस समय कुरोकी
नोजूकी आगे बढ़नेकी आज्ञा मिली थी, उसी समय ओजू-

की पौष्टिकी भी । चीकूकी सैन्य-शक्ति बढ़ी ही लगी थी ; इसी-
 लिये आगे बढ़नेमें कुछ देर हुई । इसी अगस्तको चीकूकी
 पौष्टिक पांच कालमेंमें विभक्त हो हैचिङ्गकी ओर रवाना हुई ।
 लोगोंने खयाल किया था, कि स्वतन्त्र-सेनापति यूरोपाटिकिनके नगर
 लियावयाङ्ग नगरके आगे यही एक नगर रूढ़ गया है ; लिया-
 वयाङ्ग नगरको रक्षाके लिये यूरोपाटिकिन एक हैचिङ्ग नगरकी
 रक्षामें कोई बात उठा न रखेगे । किन्तु समय उपस्थित होने-
 पर पष्ट खयाल निर्मूल बख्पना प्रमाणित हुआ । सेनापति ची-
 कूकी अधीनतामें १ जी अगस्तको जो पौष्टिक हैचिङ्गकी ओर रवाना
 हुई थी, वह एरो अगस्तको निर्विघ्न हैचिङ्गमें साखिल हो गई ।
 इतना ही नहीं ;—एक नगरके बाह्य दूर पुराना गिलच्चाङ्ग नामक
 नगर है । चीकूकी पौष्टिकी अग्रगामी दुसरेने एक पुराने
 गिलच्चाङ्ग नगरपर भी अधिकार कर लिया ।

इसतरह यूरोपाटिकिनके सरर खण्डो सैन्यके प्रधान प्रदाह
 लियावयाङ्ग नगरपर हीन चोरके क्षाणकी पीठे वास्तव कदम
 उमर छाई । यूरोकी क्षाणके, नौक मध्यके और चीकू वादेके
 लियावयाङ्गपर टूटूटूने की घसटने देने लगे । लाख लाख
 सन्धी सिपाही लिये लियावयाङ्ग नगरकी रक्षाके लिये और लाख
 ही लाख क्षाणकी सिपाही लिये लियावयाङ्गकी हीन देनेके
 लिये तय्यार हुए थे, इन लियावयाङ्ग नगरके भावी भीष्म
 चीकूकी बख्पना शान्ति इन्होंने और शान्तस्था उद्दीप्त होता है ।

इसी नगरके भिन्न भिन्न स्थानोंकी लड़ाइयाँ लिये लिये
 स्वयंकर एक स्थानकी लड़ाइयाँ लगाने लया ; इन्होंने यह
 कहें, तो इन्होंने यह कहें इन्होंने यह कहें भागबा इह और इह



द्वितीय परिच्छेद ।

अरधर-अन्तरका रूपा देहा—वृत्तीरुपकी और—

राहने और जल-गृह—पलापक—रूपो

देह का परियास ।

अरधर-अन्तरके काल-गृहका वर्गीक निरुपनेमें हम यह रिक्त
 पूके हैं, कि एक और आकृतिके योगे जापानी पौषमें एक अर्ध-
 तपर अधिहार कर लिया या और दूसरी और एक दूसरी जापानी
 पौषमें देहपण्डे भट्टरका योगे बड़े वृक्ष शिखर कवका असा रिक्त
 पा । इन्होंने कहे हैं, वहाँ कि भाषा-अधिकृत प्रम होनी खानीके
 अरधर-अन्तर बहुत दूर था—पर भी, आकृतिरूपी परादिभूत
 भयदूर तीनों द्वारा पूर्वोक्त हो । खानीके जापानी तीनों अरधर-
 अन्तरपर गोलै करवा करनी थीं । जापानी भाषित या हृद्यरपर
 परियास करकेवाको ~~ह~~ नहीं ; अन्तमें पूर्वोक्त हीमें खानीपर
 अधिहार करते ही वहाँ वही वही तीनों तथा अरधर-अन्तरपर
 गोलै करवानेको व्यवसा हो । जापानी गोलैवाकीरूपी अरधर-
 अन्तर दिखाई नहीं देता या पत्तों ; किन्तु वह जापानी तीनोंके
 अरधरकी और गोलै केवल इन्हीं अरधर-अन्तरमें एकसापूर्वक
 रिक्त लगे । अरधर-अन्तरपर अतःखालके अन्त्यातक अन्तरान
 गोलै पड़ने लगे । रूमी जड़ों अरधरकी अन्तरमें रक्षण करिक
 हो गया । रूमी अरधरकी अरधरकी प्रधान गौ-रिक्तानि अरधरपर



विटोफ्टने सूचना दी, कि उस दिन रेटविजां जहाजके कप्तान प्रोन्सोविच एक जापानी गोलेकी चोटसे घायत हुए और बन्दरमें जापानी गोलोंकी जैसी अविराम वृष्टि हो रही है, उससे हम यहाँ कुशलपूर्वक रह न सकेगे ।

जान पड़ता है, कि जापानी गोलोंकी चोटसे घबराकर ही अरधर-बन्दरके रूसी जङ्गी जहाजोंने बन्दर छोड़ बलडीवचक भागना स्थिर किया । ६ वीं जुलाईकी रातको भागनेकी कुल तय्यारियां हुईं । १० वीं जुलाईको दिन कोई साढ़े आठ बजे अरधरबन्दरके सुहानेसे रूसी जङ्गी जहाजोंका वेड़ा बाहर निकलता दिखाई दिया । सबसे आगे सागर-गर्भमें पड़ी माईनोंको छटाने-वाली नावोंका वेड़ा था । अरधर-बन्दरके सुहानेपर रूसी और जापानी अल अल माइनें पड़ी थीं ; इनमें हर एक माइन एक विशाल जङ्गी जहाज उड़ानेके लिये यथेष्ट थी ; इसीलिये रूसी वेड़ेके आगे आगे माइन बाक कर आली नावोंका वेड़ा चला । इस वेड़ेके पीछे पलाछा, डायना और नाविक यह तीन अञ्चल दरजेके छोटे जङ्गी जहाज थे ; रियर एडमिरल रेटजेगसोन इन जहाजोंके अधिनायक थे । इस वेड़ेके सिवस्तपोल, पोल्टावा और अस्कोल्ड दूसरे दरजेके छोटे जङ्गी जहाज थे ; रियर एडमिरल उखटोस्की इन जहाजोंके अफसर थे । इसके भी पीछे चारविच, रेटविजां, पवशा और परसवोट यह चारो अञ्चल दरजेके जङ्गी जहाज थे । चारविच जहाजपर नौ-सेनापति विटोफ्टका निशान उड़ रहा था ; आप ही इस समूचे रूसी वेड़ेके अग्रवर्ती नौ-सेनापति थे । इन जहाजोंकी बगलमें 'मङ्गोलिया' जहाज था ; इसपर लाल सलीब चिह्नित ध्वजा उड़

रही थी; य वल्लभ दरजे के एक वातकी सूचना दे रही थी, कि यह जहाज में एक पीछे हीज है; इसके लड़ाई-भिड़ाने में ईं वास्ता नहीं है। देहे को बगलमें कितनी ही जद्दी गावं थीं, जो भाइन साफ बरनेवाले वेहे को निजिन्न बन्दरमें वापस जानेके लिये आगे बढ़ रही थीं। इस जद्दीमें अरपर-बन्दरके सभी जद्दी जहाज थे, सिर्फ वह जहाज और गावं बन्दरमें रह गई थीं, जो बहुत ही टूटफूटवार खुले समुद्रमें जाने लायक नहीं थीं।

अरपर-बन्दरके सुधानं पर जापानी जद्दी नावोया पहरा था। इन नावोंने बेतारके तार द्वारा अरपर-बन्दरमें इन्हें पारितोके 'एलियट ग्रुप' नामक दीपण्डुमें ठहरा जापानी देहे की खबर दी,—“खुशी देहा अरपर-बन्दरसे बाहर भिवाल रहा है।” जापान-नों-सेवापति टोगोको यह समाचार एक अत्यन्त बड़ा हुआ। उन्होंने खयाल किया, कि दिनके प्रयाणमें खुशी देहा लक्षप्रकार सुदके लिये निकला है और छात्र सुद हो जानेसे रीज रोकके हाये बादल बरस जायेंगे। टोगोने शीघ्र शीघ्र अपने देहे को सुदके लिये तय्यार किया और वह अपनी पहरादार जद्दी नावोंपर खुशी देहे की गतिविधिका समाचार देनेवा भाग नालकर अपने देहे की साथ ही एलियट दीपण्डु परित्यागकर खुले समुद्रमें निकल गये। यह जाहते थे, कि खुशी देहा, एक खुले समुद्रमें पहुँच जाये, तब सुद थी; नहीं तो बन्दरके समीप सुद होनेके सम्भाव्य रह जायगी तरह इस बात भी खुशी देहा हम इस अरपर-बन्दरमें

जङ्गी नावोंके पहरेमें वन्दर वापस वेड़े के कुछ
 आगेवढ़ते ही प्रधान सेनापति विटोफ का नाम ज कारविच-
 पर क्रम क्रमसे कई तरहकी आखियां उड़ीं, जिन्हीं का अर्थ था—
 "ब्लडीवटक चलो।" यह सङ्केत देख रूसी जहाजों सिपाइयोंके
 मनमें जो आनन्द उत्पन्न हुआ होगा, वह बरज ही अनुमेय है।
 अरघर-वन्दरमें रूसी पहानी सिपाही कहमेजो खलल रहकर
 भी असलमें कैद थे। ब्लडीवटक चलनेकी सूचना पा उन्होंने
 अनुमान किया होगा, कि लैटसे छुटकारा मिला,—राइने वच
 गये, जो ब्लडीवटक पहुँच प्रकृत खतघ्नताका आनन्द
 उपभोग करेंगे।

रूसी वेड़ा चला ; सागर-वक्ष विदीर्ण करता—विचित्र उर्मि-
 मालाके तुमुल रवसे दिशायें परिपूर्ण करता रूसी वेड़ा ब्लडी-
 वटककी ओर चला। पहले वेड़ेकी चाल धीमी थी ; दोपहरकी
 बहुत तेज हो गई। रूसी वेड़ा अरघर-वन्दरके दक्षिण कोड़े
 पचीस मीलके फासिलेपर पहुँचा होगा ; ऐसे समय उसे दक्षिण-
 पश्चिम ओर वेड़ा दिखाई दिया। शिब और रूसी वेड़ा जा
 रहा था ; उधी और जापानी वेड़ा भी जा रहा था ; मगो जापानी
 वेड़ा बहुत फासिलेपर रूसी वेड़ेकी समान्तराल रेखामें दौड़
 रहा था। जापानी वेड़ा रूसी वेड़े के बराबर दौड़ भी रहा था और
 क्रम क्रमसे रूसी वेड़े के समीप भी होता जाता था। दिन कोई
 साढ़े बारह बजे जब जापानी वेड़ा रूसी वेड़े के और भी समीप
 हुआ, तब रूसी वेड़ेने देखा, कि इस वेड़ेमें सिपाया, व्यापारी,
 शिक्षिणिमा, फुजी गौर याशिमा नामक पाँच अलग दरजेके
 अहाय हैं और इनके साथ साथ निशी और कासुमा

जगहसे दूर भागने लगे । सही ! स्वार्थपरवश मानव जीवके संघर्षका क्या ही भयङ्कर फल होता है ?

दोनों वेड़े अपनी पूरी शक्तिके साथ आगे दौड़ रहे थे साथ साथ एक दूसरेपर गोल-वृष्टि भी कर रहे थे । दौड़ते हुए जहाजसे ठीक निशानेपर गोलें मारना आसान काम नहीं ; इसके लिये अच्छी शिक्षा और अच्छे अभ्यासका प्रयोजन है । रूसी गोलन्दाजोंको चलते तो चलते ; स्थिर जहाजपर भी गोलें उतारनेका अभ्यास नहीं था । रूस-सम्राट्की नोकरों को ; जिस ओर कदम जाते थे, उसी ओर कमरे भुक्तो थीं ; गरदनें अवनत होती थीं ; धाक बंधी हुई थी,—जानके जहाजी गोलन्दाजोंको अम साथ समय सापेक्ष उस बिह्विको वश करनेकी जरूरत हो क्या थी ? दूसरी ओर इसका ठीक उलटा हाल था । जापानी जहाजी गोलन्दाजोंके शिरपर न तो रूस-सम्राट् जैसा कोई सम्राट् ही था—न तो जगतमें उतना आदर-सम्मान ही था—न तो बंधी हुई धाक ही थी,—उनकी चारों ओर अन्वकार था,—उन्हें अपने उज्ज्वल पथकी इमारत अपने हाथों तय्यार करना थी ; इसीलिये वह शिरका पसीना पैरों वहा आहार-निद्रा परित्यागकर अच्छी गोलन्दाजी सीखनेके लिये वाश्र्य हुए थे । पददलनेके महाकष्टसे न - देके लिये एशियाकी एक क्षुद्र शक्तिके जहाजी सिपाहियोंको अपने काममें सुदृढ़ बननेके लिये जितने अमका प्रयोजन है, जापानी सिपाहियोंने वह अम स्वीकार किया था । इसीलिये वह आश उसका सुन्दर सुमिष्ट फल भोगनेमें सक्षम हुए थे ।

दोनों वेड़ोंकी जहाजी शक्ति प्रायः समान थी । या वह कद-भी अत्युक्ति न होगी, कि रूसी वेड़े की शक्ति कुछ अधिक

धी ; क्योंकि प्रायः कुल लक्ष्मी जड़ों जहाज अत्यन्त बहुल
 और अत्यन्त सुदृढ़ है । जहाजी शक्तिमें दोनों वैदिकी समान रह-
 नेपर भी एक दानमें दोनोंके बीच बड़ा ही अन्तर था । लक्ष्मी
 गोलन्दार्जोंके गोंके ठोस ठोस विमानपर प्रकृत नहीं थे और जहर
 जापानी गोंके बराबर नि, निपर वेद रह थे । एक ही गण ह्यः
 यानके कियेमें जल-युद्धमें गोलन्दार्जोंकी दानेकी बराबर जापानी गों-
 न्दार्जोंके घाप संज गये थे ; दूसरे गोलन्दार्जोंकी वैज्ञानिक विद्या
 पानेकी बराबर जापानी गोलन्दार्ज समी जहाजोंके भाविते का प्रति-
 साध नाप इस हिमादस गोंके अन्तर्गत थे, कि बह ठोस विमान पर
 बैठते थे । सोई लार्ड प्रस्टेनका ऐसा ही गोलन्दार्जोंकी समी ;
 जिससे जापानी बड़े की जतनी शक्ति नहीं हुई ; समी के ही
 किये ही जहाजोंके लोह आवरणकी जगह जगहसे परसे

दरजेके जङ्गी जहाजोंकी बगलमें चले गये; यानी एक ओर जापानी वेड़ा हुआ; बीचमें रूसी बड़े जङ्गी जहाज और उसकी दूसरी बगल उसके छोटे जङ्गी जहाज हो लिये।

कोई छेड़ दृष्ट तब ऐसी ही रूपमें रूसी और जापानी वेड़े समुद्र-पथपर हीड़ते रहे। सन्ध्या कोई पाँच बजे जापानी वेड़ा ही-उता हीउता एकबार फिर रूसी वेड़े के समीप खिसकने लगा। अबके रूसी वेड़े की ओरसे श्रीमन्नेत्र हुआ। जैसे ही जापानी वेड़ा समीप आया, वैसे ही रूसी वेड़ेकी तोपोंके तुंह खुल गये; धनि और उबकी प्रतिधनि और उब प्रतिधनिकी भी कितनी ही प्रतिधनियोंसे आकाश गूँज उठा। अबके रूसी तोपोंके अङ्गु तमज्जा जापान-नी-सेनापति टोगोके निशानकी जहाज विशाखादार निशानखाने ताक लिया था; इतल रूसी तोपोंके तुंह निशानखाने की ओर थे और उबपर और उमझी चारों ओर रूसी गोले फोड़ने लगे और फिर रहे थे। शायद और कोई नी-सेनापति होता, तो पथरापर अपने जहाजको स्थिति बदलता; किन्तु टोगो अङ्गु पथराजहाजी चौड़ा थे; उन्होंने इस गोलेकी ओर निशान ली म फेर जानना मान आरम्भ किया। अपने अगवान्य जहाजोंकी गोले बरसानेकी आशा दे भिन्नाशा द्वारा भी गोले बरसाने लगे। हीड़ते हुए रूसी जहाजोंके बख फिर गये; एकतरफ दक्षिणकी ओर थे; बख दक्षिण-पूर्व हो गये। जापानी वेड़े की रूसी ओर अपना बख फेर लिया। इस बार जापानी वेड़े की रूसी वेड़ेपर अत्यन्त भीषण गोला-वृष्टि होने लगी। निशान नहीं था,—विशान नहीं था—सिर्फ ठीक निशानपर गोले गये थे और उनका अत्यन्त गज्ज न था। रूसी

जहाजोंपर और भी भयङ्कर गोला-वृष्टि करनेकी आज्ञा दी। जापानी जहाजोंने दौड़ते दौड़ते, दौड़ते हुए रूसी जहाजोंके और भी समीप पहुँच करके कोई साढ़े तीन हजार गजके फासिलेसे रूसी जहाजोंपर अत्यन्त भयङ्कर गोला-वृष्टि की। कोई आध घण्टे-तक यह गोला-वृष्टि हुई। खबर है, कि यह कई घण्टोंकी गोला-वृष्टिका वैसा फल नहीं हुआ, जैसा इस आध घण्टेको गोला-वृष्टिका फल हुआ। एकके बाद दूसरा, रूसका हर एक बड़ा जड़ो जहाज क्षतिग्रस्त हुआ ; उसकी हर एक तोपका मुँह बन्द हो गया। अन्यान्य जड़ो जहाजोंकी अपेक्षा रूसी जहाजो रेटविजां बड़ा ही हठी था। खूब क्षतिग्रस्त होनेपर भी उसकी तो बराबर गोले बरसाती रहनीं। यह देख टोगोने अपने जहाजोंको इशारा किया, कि रेटविजांपर ममवेत-भावसे गोला-वृष्टि की जावे। ऐसा ही हुआ। रेटविजांपर षष्ठी गोला-वृष्टि हो गई। इस गोला-वृष्टिके फलसे रेटविजांकी प्रायः समस्त तोपोंके मुँह बन्द हो गये ; सिर्फ दो तोपें रह गईं, जो धीरे धीरे गोला-वृष्टिकर मानो अपने दुर्भाग्यका रोना रोने लगीं।

अब रूसी बेड़ेका ब्लाडीवष्टककी ओर बढ़ना रुक गया। प्रधान सेनापति विटोफ़को मृत्यु हो जानेपर रिपर एडमिरल उख-टोस्कीने बड़े जड़ो जहाजोंका परिचालना-भार अपने ऊपर लिया और छोटो जड़ो जहाजोंकी परिचालनाका भार रिपर एडमिरल रोडेनसोनपर पड़ा। यह दोनों ही नौ-सेनापति ब्लाडीवष्टककी ओर अग्रसर होमा असम्भव नमस्त अरधर-बन्दरकी ओर भागने-पर तय्यार हुए। इस भागड़का फल क्रम क्रमसे लिखते हैं।

पहले नौ-सेनापति रीजेनमीनकी अश्रीनम्य जहाजोंकी भागदका
 घाल सुनिये । खुम्बी बड़े जङ्गी जहाजोंकी तोपोंका हुंछ बन्द
 होते ही नौ-सेनापति रीजेनमीन कूक छोटे जङ्गी जहाजोंकी अरब
 साप ले पुरतीसे अरघर-बन्दरकी ओर लौटे । रीजेनमीन अम्बो-
 लू नामक छोटे जङ्गी जहाजपर थे और वहाँ जहाज छोटे जङ्गी
 जहाजोंकी बड़े का मिशानका जहाज बन अन्याय छोटे जङ्गी जहाज-
 जोंकीआगे आगेचला । नाविसा, प्रलाज, रायना प्रभृति जहाज बाह्य
 प्रोहे थे । इन जहाजोंका अरघर-बन्दरको पीर भागना देना
 इनकी ओर जापानी छोटे जङ्गी जहाजका बड़ा भाषण । नौ-
 छोटे जहाजोंपर जापानी छोटे जहाजोंकी गोले परसने लगे । एक
 अंधेरी रातमें जापानी छोटे जहाजों द्वारा आक्रान्त ही नौ-
 छोटे जहाजोंकी पंक्ति टूट गई । खुम्बी जिन हति अलापनी
 जिधर, राघ मिली, वह उपर ही भागा । एक छोटे जहाजोंकी
 इस भागदका फल इस दूसरे परिच्छेदमें लिखेंगे । इस समय
 पाठक इतना ही सुन लेंगे, कि खुम्बी छोटे जङ्गी जहाजोंका
 अरघर-बन्दर वापस पहँचने सका : इतना ही भाषण

उतनी सुविधा नहीं थी। फिर भी, उस टूटे-फूटे मस्तूलपर किसी तरह झुल्ले चढ़ा इतना प्रकट कर दिया गया,—“मेरे पीछे पीछे आओ।” वह रचना ऐ परसवीट आश्रय-गन्दरवी और भागा; उसके पीछे पीछे अन्यान्य जहाज चले। उस समय रात्रिका अन्धकार चारों ओर फैल रहा था। उस फीलते हुए अन्धकारका आश्रय ले जापानी जड़ो नावें हल्की वड़े जहाजोंपर टूटों। चारों ओर ताश्पेछो चलने लगे; हल्की जहाज और भी चतियस्य तथा अधीर हो इधर उधर भगने लगे। कौई शृङ्खला या नियम स्थिर न रहा; विसे जिधरसे राह मिली, वर उधर हीसे आश्रय-गन्दरवी और भागा। कुछ जहाज दूजरे दिन प्रातः-कालतक आश्रय-गन्दर पड़ुंके; कुछ जहाज अन्यान्य स्थानोंमें पहुँचे।

इस दिनके इस अल-शुद्धता प्रजापत दूजरे परिच्छेदमें प्रकट दिया आयेगा।

कमीसुराके लिये इससे बढ़कर लज्जाका विषय क्या और भी कोई हो सकता था ; देशमें—विदेशमें कमीसुरा कलङ्कित हुए थे ; सभी ओरसे लोगोंने कहा था,—“कमीसुरा जिन पदपर बैठे गये हैं, उस पदके उपयुक्त नहीं ।” स्वात्माभिमानी मर्यादा-प्रिय कमीसुरा अपनी यह निन्दा और अपनी इतनी बड़ी भूल इहजिवनमें क्या कभी भूल सकते थे ? खबर है, कि दुःखसे रोषसे चोभसे कमीसुराने पहचये आत्मशुद्धा करना स्थिर किया था ; मोझे आत्मनाशके बदले शत्रुनाश करना ही स्थिर किया । जिस तरह साधक सिद्धिके लिये साधनामें तत्पर होते हैं ; भगवद्भक्त साधुगण भवतागर उतरनेके लिये तपस्यामें तत्पर होते हैं ; बलडोवचक बन्दरके सामने अपना पहरा खड़ाकर कमीसुरा उनी-तरह शत्रु, रूसके वेड़ेके बलडोवचकसे निकलनेकी प्रतीक्षा करने लगे । मनको बलवती कामनाके प्रभावसे जैसे जैसे समय बीतता गया, वैसे वैसे कमीसुराका प्रतीक्षा करनेका हासला बढ़ता गया ।

पगतमें ऐसी कोई बात नहीं, जिसकी समाप्ति न हो ; कोई धैर्यघर उस समाप्तिकी प्रतीक्षा करनेवाला चाहिये । प्रतीक्षा करनेसे एक दिन जब इतने बड़े इस विश्व-ब्रह्माखकी समाप्ति हो सकती है, तब रूसी वेड़ेके वारंवार शिकार खेल निकल भागनेके शौभाग्यकी समाप्ति कैसे नहीं हो सकती ? कमीसुराको तरह कोई प्रतीक्षा करनेवाला चाहिये ।

१०वीं अगस्तके जल-युद्धका समाचार कमीसुराको मिल चुका था । उन्हें यह समाचार भी मिल चुका था, कि इस युद्धमें जापान ही बहुतेरे रूसी जहाज चरधर-बन्दर पहुँच

जापानी नारो जहाज क्वी जहाजोंकी अवेजा अतिक्रम दुब-
गामी थे। अतएव अति-साधनोंमें क्वी वेड़ा जापानी जेड़ की
जमेजा छोटा जेड़ भी यदुजदुकर था।

क्वी वेड़ा जहाज ही घेरे घेरे कतक भावते आगे बढ़ रहा
था। उसे विचार था, कि क्वीसरा जहाजकी गति-विधि देख
नहीं रहे हैं और वह प्रातःप्रातः घुंघुंकारमें क्वीसराकी दिगाह
वचा प्रातःप्रातः पूर्ण प्रकाश फैलते फैलते खुले पक्षुधमें निरख
जायेगा। इस क्रमसे प्रत्यूषण घुंघुंकार दूर हुआ ; क्रम क्रमसे
दूरकी वायु उल्लस आष्ट दिखाई देने लगे। ऐसे समय क्वी
जहाजोंकी अफसरोंने धव बलहीदृष्टकी ओर निगाहकी, तब
उन्हें दूर खितने ही जहाज दिखाई दिये। घीघ्र घीघ्र दूरवीनें
लागाई गईं। दूरवीनेंके जो उल्ल दिखाई दिया, उधते क्वी अफ-
सरोंका एतेना तुंशकी सा गया। उन्होंने देखा, कि क्वीसराका
वेड़ा बलहीदृष्ट और क्वी जहाजोंकी बीचमें रहे क्वी जहा-
जोंकी ओर अगसर ही रहा था। अब क्या किया जाये ? एक
और अगसर सागर-एल जहरे मार रहा है ; दूबरी ओर साघात
हलाका बफर जापानी वेड़ा चला सा रहा था ; रात भी नहीं
थी ; दिन था,—क्वी वेड़ा प्रायःजाका कब औरका उपाय करे ?

क्वी वेड़ेमें यदि साधक होता, तो वह इस अगसरको सु-
अवर समझा साहाईके विधि तयार होता। किन्तु जो वेड़ा सदा
निरख जाताओंको सतने हीमें अगसा बल-पिक्रम प्रकाश किया
करता था, उसमें साधक का ऐसे करता था ? एसा दुर्भव हीको
सतनेवाँमें बल-पिक्रम जेसा ? जापानी वेड़ेको नासने या क्वी
जिअतरह सदा सागा करता था, अमीतरह इस बार भी

पीछे रह प्रायः एक हीधी पंक्तिमें अग्रसर हो रहे थे । नवयुद्ध-विद्यामें असीम यश कमानेके दृष्टान्त कमीसुरा अपनी युद्ध-शिक्षाके साथ साथ अपने बुद्धिगलसे भी काम ले रहे थे । उन्होंने अपने वेड़ेको रूसी वेड़ेके उन पाखंडमें रखा, जिस पाखंडमें इन्होंने उद्योन्मुखी रूसी जापानी वेड़ेके पीछे पड़ते थे और रूसी वेड़ेके सम्मुख । जापानी वेड़ा अपनी इस स्थितिकी वजह रूसी वेड़ेको अच्छी तरह देख सकता था और रूसी वेड़ा अपनी आंखोंके सामने ही बाल-रविकी रक्तम रश्मियोंकी चकाचौंधकी वजह जापानी वेड़ेको अच्छी तरह देख नहीं सकता था ; या इसी बातको यों कहिये, कि जापानी वेड़ेके ऊंचे शिखरोंपर उड़ती हुई रक्तम तरुण-भास्कर-चिह्नित राजपताकाओंकी ज्योतिने अपने सामनेके उदय होते हुए उन दिनसरकी सुनहरी प्रभामें तुल एक ऐसा मधुर अथच शत्रु-कुलके लिये घोर अशुभ प्रभा फैला दिया था, जिसे देख रूसियोंकी आंखें भुक भुक जाती थीं ।

तीन मिनटमें जापानी वेड़ेने अपनी नई अद्वैत-रचनाकर ठीक पांच बजके तेईस मिनटपर युद्धका श्रीगणेश किया,—एक जापानी बड़ी तोपकी कल घुमाई गई ; तोपमें रखे कारतूसनुसा गोलेकी वहुत बड़ी टोपीपर व्याघात हुआ ; विजलोकी चमक गई ; एक और तोपके मुंहसे सफेद धुंधियां उड़ा ; दूसरी ओर दो या ढाई मनका गोला रूसी वेड़े पर पड़ा ; जागर-जल डोला—दिशा-वेधं कांपों—आवाज हुई,—घना ना ना ना । युद्ध आरम्भ हुआ । दोनों ओरकी तोपोंके मुंह खुल गये । जापानी गोलन्दाज अपना दिखाने लगे । एक गोलन्दाजने निशाना ताक तोप छोड़ी ;

वह देख रूसी जहाज प्रकारक किसी कदर अपने दाहने मुड़े और हवाके दर लगा भागे । किन्तु भागकर जा कहां सकते थे ? बरसते हुए जापानी गोले और तेजीसे बरसने लगे रूसी जहाजोंको ध्वजियां उड़ने लगीं । एक गोलेने । चिमनी उड़ा दी ; दूसरेने तोप तोड़ दी , तीसरेने डेक तोड़ दिया ; चौथेने डेकके किनारेका सुतका तोड़ दिया ; इसीतरह छितने गोले गये, उतनी क्षति हुई ; जहाजके पार्श्वमें जड़ो फौलादो चादरे तो गोलोंसे छिद् छिद्कर निरो धलने वग गईं थीं । ऐसी दृश्यामें रूसी वेड़ा जा कहां सकता था ? रूसी वेड़ा एक और मुड़कर अभी कोई पांच मिनट भागा होगा ; ऐसे समय रूसी जहाज रुरिकको चाल धीमी हुई ; उसने सद्धे त दारा प्रकट किया ;— “चलागेवाली चरसी ठीक काम नहीं करती ।” रूस-नौसेनापति जेसेने सद्धे त दारा आज्ञा दी,—“तब अपने ध्वजियोंके सहारे जहाज चला हमारे साथ रहो ।” रुरिकने इस बातका कोई उत्तर नहीं दिया ; कुछ तो जापानी गोलोंको मार और कुछ अपनी आसन्न विपदसे वह बिलकुल ही घबराया हुआ था । अपनी विशड़ीको शीघ्र शीघ्र बना और जापानियोंपर धलू धलू गोले मार रहा था ।

जापानी वेड़ा रूसी वेड़े को निगाहपर चढ़ाये था और उसके प्रत्येक जहाजकी गति-विधिको बड़े गौरसे देख रहा था । रुरिककी दुरवस्था देखते ही जापानी वेड़ेके धर्मका टिठाना न रहा । उसने धीमी चालसे आगे बढ़ते रुरिकसे साढ़े चार और साढ़े पांच हजार गजके फाशिलेपर पहुंच उसपर भीषण गोला-धर आरम्भ की । आगे आगे भागते हुए रूसी जहाज र जया

आग लग गई। रुरिकसे पहले एताएक धुंआं उठा; इसके उप-
रान्त ज्वाला निकलने लगी; रुरिक धांध धांध चलने लगा। अब
रुरिकका आगे बढ़ना रुका; विमतरह कोई आहत हिंस जन्तु
अपनी अगली टांगोंपर उठ अपनी चारों ओर घूमता है,इसी तरह
रुरिक अग्रगमन परित्यागपूर्वक घोड़े से जलमें चक्कर खाने
लगा; इससे प्रमाणित हुआ,कि रुरिकके कक-पुरजे विलज्जल ही
खराब हो गये। उसने मङ्केतसे कहा,—“मैं आगे बढ़ नहीं
सकता।” बाकी दोनो रुरो जहाज रोनिवा और गोमोवाय
जापानी गोलोंको मारसे धरारा उटे थे; श्रीप्र ही वहांसे भागना
चाहते थे। रुरिकका यह अन्तिम वाक्य देख रुरिकाकी आशा
परित्यागकर रुरिकके दोनो जहाज चक्कर काट बलडीवष्टककी ओर
बेतहाशा भागे। यह दोनो जहाज यदि उस समय न भागते, तो
कुछ ही देर बाद रुरिकके साथ जहांके वहां रह जाते। फिर भी
इन दोनो जहाजोंकी भी धक्कियां उड़ गई थीं और इनमें भी
आग लग गई थी। भागनेके समय वायुके झोंकोसे दोनो जहा-
जोंकी लगी आग भड़क उठी; दोनोसे धुंएके बादल उठते दि-
खाई दिये; उस धुंएके बादलसे लपलपाती हुई लाल लाल अग्नि-
शिखा दिखाई दी।

रोनिवा और गोमोवाय जा भागना देख कसोसुराने नवागत
जापानी जहाज नागिवा और तकाचिहोके हाथ रुरिकको सौंप
अपने बड़े को पूर्वोक्त रुरो जहाजोंका पीछा करनेको आज्ञा दी।
रुरिकको ५ मिनट विग्र ल जहाजोंकी शौड़ आरम्भ हुई। आगे
साढ़े पांच हजार गज की अग्रसरवाले तांबे अपनी पूरी तेजीसे भाग
रुधि आरम्भ की।

दौड़ एकको भी हाथसे गंवाना युक्तिमङ्गल न समझ हमारा बेड़ा
रूसी जहाजोंका पीछा न कर खौट पड़ा ।

अब यह देखिये, कि इस व्यवसरमें रूसिकोंका क्या दृशा हुई ।
कामीसुराके चले जानेपर जापानी जहाज नावा और तकाविही
रूसिकपर बराबर गोले बरसाते रहे ; रूसिक भी अपनी तोपों द्वारा
उन दोनों जापानी जहाजोंको जवाब देता रहा । ध्वजमें रूसिक-
की प्रौचनीय अवस्था देख जापानी जहाजोंने अपनी तोपोंके मुंह
बन्द कर दिये । रूसिककी व्याग तेज हो भीतरसे बाहर पहुँचो ।
रूसिकके छिद्रोंसे, रूसिकके डेकसे अग्नि-शिखा निकलने लगी
और रूसिक धीरे धीरे सागर-वल्लिकमें सजाने लगा । जहाजके रूसी
शिपाही उतावले हो इधर-उधर दौड़ने लगे । उन्होंने तखतोंके
छोड़-भटोर बड़े बड़े वेड़े तयार किये ; उनपर अपने आह-
तोंको उनमें बंठा डूबा हुआ जहाजसे उतार उन्हें समुद्रपर तैरा
दिया । इसके उपरान्त रूसी शिपाही नावोंमें सवार हो डूबते
हुए जहाजसे दूर नागने लगे । क्रम क्रमसे रूसिक नीचे चला ।
एकएक रूसिकके अगले भागने पानीमें गिर छिपाया ; साथ
साथ पिछला भाग पानीसे उठ शून्यमें खड़ा हो गया । एक क्षण-
तक रूसिक मानो इसी अवस्थामें रहा ; इसके उपरान्त रूसिकका
अगला भाग शीघ्र शीघ्र जलमें घसने लगा ; देखते देखते मध्यभाग
घुसा ; अन्तमें पिछला, यागो पतवारवाला भाग भी जलमें समा
गया । चलती व्यागके जलमें पड़नेसे जैना शब्द होता है, उस
ग्यारह हजार टनके विराट् जहाजके जलमें घुसनेसे वैसा
ही शब्द हुआ । जहाज डूब गया ; सब समाप्त हुआ ।
पर धुँआँ का गया ; वह भी बायुके भोंकोंसे दूर हो गया ।

छाकट जख्मी थे ; सिवा इनके एक पादरी और तीन वारण्ट अफसर थे । रूसिकके कप्तान तथा कितने ही सिपाही युद्धमें मर चुके थे ; उनकी रक्षाका कोई उपाय नहीं था । देखा, पाठक ! एक ओरकी वृद्ध निर्दयता और दूसरी ओरकी वृद्ध मनुष्यता,—एक ओरका वृद्ध क्रूर वृष्णस भाव और दूसरी ओरका वृद्ध दयापूर्ण प्रशंसनीय व्यवहार ।

एक ओर जिस समय वृद्ध हो रहा था, दूसरो ओर उसी समय रूसके वाकी वचे दोनो जहाज रोजिया और ग्रोमोवाय बड़ीवृद्ध-बन्दरमें दाखिल हो रहे थे । दोनो जहाजोंकी बड़ी ही दुर्दशा हो चुकी थी । दोनो जहाजोंके प्रायः आधे अफसर और एक चौथाई सिपाही हताहत हो चुके थे । सिवा इसके रोजियाके पेटेमें चलके भीतर ग्यारह छिद्र और ग्रोमोवायमें छः छिद्र हो चुके थे । जापानी वेड़े के लौट जानेपर दोनो जहाजोंने अपने इन छिद्रोंको मरम्मत करली थी ; मरम्मत को न जाती, तो दोनो जहाज बन्दर लौट न सकते ।

दोनो जहाज जिस समय बन्दर लौटे, उस समय बन्दरमें कितने ही तमाशाई एकत्र हुए । तमाशाइयोंको तोनके वड़े दो ही जहाज दिखाई दिये और वृद्ध दो जहाज भी बड़ी ही होनावस्थामें । दर्शकोंमें एकने दोनो जहाजोंके सम्बन्धमें लिखा था,—“दोनो जहाजोंकी चिमनियां, मस्तूल, ऊपरी मञ्जिल, किनारे इत्यादि गोलोंसे विगड़ गये थे । फौलादी चादरोंके टूफड़े उड़ गये थे । दोनो जहाजोंने राहमें अपनी अपनी मरम्मत कर ली थी ; बड़ी बड़ी चिमनियां साफ दिखाई देती थीं ।

उनके ऊपरी भागमें कहीं कहीं इतने बड़े छिद्र बन गये थे,

द्वादश परिच्छेद ।



१० वीं अगस्तके जल-युद्धका परिणाम—रूसी
जहाजोंका आत्म-समर्पण ।

गतपूर्व परिच्छेदमें हम १० वीं अगस्तका जल-युद्ध और
अरथर-बन्दरके रूसी वेड़ेके विध्वस्त हो भागनेका समाचार दे
चुके हैं । इन जहाजोंकी भागड़का फलाफल एक लम्बी कहानी है ;
इसीलिये उसके लिये हमें इस एक खतन्न परिच्छेदकी अव-
तारणा करना पड़ी ।

हमने लिखा था, कि कितने ही रूसी जहाज भागकर
११ वीं अगस्तको अरथर-बन्दर वापस पहुँचे । इन
जहाजोंके नाम यह हैं,—प्रसवीट, पवेदा, सिवस्तपोल, रेट-
विजां, पोखटावा और पलादा । इनमें पूर्वोक्त कुल जहाज
अर्धस दर्जेके जङ्गी जहाज थे ; सिर्फ़ श्रेष्ठोक्त एक दूसरे दर्जेका
जङ्गी जहाज था । कितना बड़ा रूसी वेड़ा बलहीवृत्त जानेके
लिये अरथर-बन्दरसे निकला था और कितना छोटा होकर अर-
थर-बन्दर वापस आया । कितने छोटे जङ्गी जहाज बन्दरसे बाहर
निकले थे, उनमें सिर्फ़ एक बन्दर वापस आया ।

बाकी जहाज कहाँ गये ? अरथर-बन्दरके समीप युद्ध-सीमासे
बाहर चीफू, कियावचौ, शङ्गाई और नैगोचे नामक चीनके राज्यमें
थी-अभिहत हो चार बन्दर हैं ; युद्धपिमुख हो रूसी जहाज

द्वादश परिच्छेद ।



१० वीं अगस्तके जल-युद्धका परिणाम—रूसी
जहाजोंका आत्म-समर्पण ।

गतपूर्व परिच्छेदमें हम १० वीं अगस्तका जल-युद्ध और
अरधर-बन्दरके रूसी वेष्टेके विध्वस्त हो भागनेका समाचार दे
चुके हैं । इन जहाजोंकी भागड़का फलाफल एक लम्बी कहानी है ;
इसीलिये उसके लिये हमें इस एक खतन्न परिच्छेदकी अ-
तारणा करना पड़ी ।

हमने लिखा था, कि कितने ही रूसी जहाज भागकर
११ वीं अगस्तको अरधर-बन्दर वापस पहुँचे । इन
जहाजोंके नाम यह हैं,—परसवीट, पवेदा, सिक्सपोल, रेट-
विजां, पोलटावा और पलादा । इनमें पूर्वोक्त कुल जहाज
अर्धल दरजेके जड़ी जहाज थे ; सिर्फ़ श्रेष्ठोक्त एक दूसरे दरजेका
जड़ी जहाज था । कितना बड़ा रूसी वेष्टा बलहीवष्टक जानेके
लिये अरधर-बन्दरसे निकला था और कितना छोटा होकर अ-
धर-बन्दर वापस आया । कितने छोटे जड़ी जहाज बन्दरसे बाहर
निकले थे, उनमें सिर्फ़ एक बन्दर वापस आया ।

बाकी जहाज कहाँ गये ? अरधर-बन्दरके समीप युद्ध-सीमासे
बाहर चीफू, कियवचौ, श्रद्धार्द्र और सैगोले नामक चीनके राज्यमें
भी-अधिकृत जो चार बन्दर हैं ; युद्धविमुख हो रूसी जहाज

उन्हीं चारों बन्दरोंमें पहुँचे । बहुतेरे लोग किनी कामको लघु-
रूपमें आरम्भ करना ही श्रेय; बताते हैं; इसलिये भागे हुए
रुही जहाजोंका परित्याग यदि हम लघुरूपमें दिखाना
आरम्भ करें तो हर्ज क्या है ?

अरपर-बन्दरसे कोई चालीस मील दक्षिण पेशिलो खाड़ीमें
चीनका चीफू बन्दर है । बन्दरमें कोई पचास छजार चीना नर-
नारियोंका निवास है ; सिवा चीना अधिवासियोंके चीफू में,—रुसी
है, जापानी है, अङ्गरेज है, जर्मन है, भिन्न भिन्न जातियां हैं ।
कहनेको चीफू चीनके अधीन है, किन्तु जिस जगह इतनी वैदेशिक
शक्तियोंका डेरा है, उत जगह चीन बेचारेका उतना अधिकार
नहीं; मसख है,—जिसकी लाठी, उसको भेंस । अन्यान्य बन्द-
रोंकी अपेक्षा यह चीफू-बन्दर अरपर-बन्दरके बहुत समीप है;
इसीलिये समय समयपर रुसी नावें अरपर-बन्दरसे चीफू और
चीफू से अरपर-बन्दर पहुँच जाया करती थीं । चीफू में जिस-
तरह अन्यान्य वैदेशिक शक्तियोंके वागमल है, उसीतरह रुसका
भी कदमल है । अरपर-बन्दरका घेरा आरम्भ होते ही इन अन-
सख प्रकारके अपने मदानमें बेतारके तारका एक बन्द खड़ा
कर लिया और मौसम ठाढ़ होनेपर इस बेतारके तारके बन्द
द्वारा अरपर-बन्दरके रुही अफसरोंसे बातचीत करना आरम्भ
किया । चीफूके रुसी कदमलके मदानमें बेतारके तारका बन्द खड़ा
होनेसे जापान-सरकारने शिकायत की थी,—“इस बात अन्तर्-
तीय नियमके विरुद्ध है ।” किन्तु जापानको विरोधा विरोधकी बात
किसीने न सुनी; दौग सुनता है ?

खैर ; गत १०वीं अगस्तके जल-युद्धमें परास्त हो जब रूसी वेड़ा घबराकर भागा, तब रूसी वेड़े के नावकी एक डिब्रायेर नाव 'रेशिटेलनी' भागती-भटकती इसी चीफू-बन्दरकी ओर भागी। राहमें इस नावको असाहियो और कुसुमी नाम्नी जापानी डिब्रायेर नावोंने देख पीछा किया। रेशिटेलनी शीघ्रतापूर्वक भाग चीफू-बन्दरमें घुस गई। युद्ध-मन्वत्वीय आन्तर्जातीय नियम यह है, कि जो जङ्गी जहाज या नाव युद्ध-सीमासे बाहरके किसी बन्दर या स्थानमें पहुँच जायेगी, उस बन्दर या स्थानका अधिकारी उस जङ्गी नाव या जहाजको उसी समय निरस्त कर देगा। किन्तु युद्ध-सीमासे बाहरके चीफू-बन्दरमें घुसकर भी रेशिटेलनीने युद्ध-नियमका पालन नहीं किया ; उसने अपना निशान भी नहीं उतारा ; अपनी तोपें भी नहीं उतारों ; उसने सिपाही, खाँदिने अपने हथियार परित्याग नहीं किये। दोनी जापानी डिब्रायेर नावें बन्दरके मुहानेपर ठहर रूसी नावको देखती रहीं। दोनी नावोंके अफसरोंने देखा, कि रूसी जहाज निरस्त की नहीं गई ; उसे निरस्त करनेका भार चीन-सरकारपर था ; किन्तु चीन-सरकार जोर-जबरदस्ती दिखा रूस-सरकारको क्रेडनेको हिम्मत कर नहीं सकता थी। यह सब देख और सम्भ्र ११ वीं अगस्तको अर्द्धनिशासे कुछ पहले बन्दरमें चारों ओर खन्नाटा फेल थानेपर जापानी नावोंसे एक नाव बन्दरके भीतर भेजी गई। इस नावमें जापानी लफटनन्ट तिराशिमाके अधीन कितने ही सशस्त्र जापानी सिपाही और एक डूभाषिभा था। चुपके चुपके जापानी लफटनन्ट रेशिटेलनीके समीप पहुँच सशस्त्र उसपर चढ़ गये। रूसी नावके लफटनन्ट रुष्टचकुस्की

जापानी लफटनएटके सामने आये। दुभाषिदाककी तारफत सेनेने वातघीत हुई।

रूसी लफ० । आप यहाँ किस जिये प्राये हैं ?

जापानी लफ० । यह सड़नेके जिये, कि आप या तो आत्म-समर्पण करीजिये या बन्दरका आश्रय छोड़ खूबे वसुधने गिवालिजिये ।

रूसी लफ० । मैं इस समय आपका सामना करनेने असमर्थ हूँ ; किन्तु यह बात याद रहिये, कि इस नावने धुब आपने अन्तर्जातीय नियम भङ्ग किया ; सम्भजनोचित व्यवहारकी मर्मादा भङ्ग की।

ऐसे समय रूसी लफटनएटके अपने अधीनस्थ अफसरकी विस्तारक द्रव्य द्वारा जहाज उड़ा देनेकी आज्ञा दी। यह आज्ञा गुप्तभावसे ही गई ; जापानी लफटनएट इस आज्ञाका समस्त लमका न सके। अपने उन अधीनस्थ वार्मचारियोंकी अवरर देनेके लिये रूसी लफटनएटने जापानी लफटनएटसे अन्तर्जातीय नियमकी बात छेड़ भागड़ना आरम्भ किया। जापानी लफटनएटने भागड़ा समाप्त करनेके लिये ; रूसी लफटनएटके प्रश्नका उत्तर देनेसे साफ इनकार कर दिया और कहा,—“इस भागड़े से क्या बाला,—आप यदि आत्मसमर्पण कर देंगे, तो आपकी प्रायश्चा की जायेगी।”

रूसी लफटनएटने इस बातका प्रत्युत्तर देनेके बरह जापानी लफटनएटको नावसे उतार दिया। जापानी लफटनएट इस आत्म-समर्पणके लिये तयार नहीं है ; हीने तो खूनखराबी चाँती। प्रका खा यह नावके नीचे गये ; किन्तु समस्त जहाज उतरीके रूसी

लफटगटकी गरदन प्रकड़ ली और उन्हें भी अपने साथ साथ ले गये। दोनों सतुद्र-फलमें गिरे। जापानी लफटगट रूसी लफटगटको छोड़ जापानी नावमें जा चढ़े; रूसी लफटगट पैरते हुए अपनी नावकी और गले; किन्तु उस समय नावमें घोर उपद्रव हो रहा था। दोनों लफटगटोंके घलमें गिरते ही दोनों ओरके सिपाही व्यस्त-ग्रस्त संभाल एक दूसरेसे भिड़ गये थे। तलवार, तपत्रे, बन्दूक, सङ्गीनकी लड़ाई चल रही थी और बड़ा शोर हो रहा था। बन्दरके बाहर और भीतर दोनों जापानी जहाजों नावों अपना लक्ष्य प्रकाश रेडिटेल्नीपर डाल रही थीं, जिससे अर्धनिशाके घोर अन्धकारके बदले रूसी जहाजों नावपर दिन जैसा प्रकाश फैला हुआ था। शोर सुन बन्दरके सहस्र सहस्र लोग वृद्ध युद्ध देख रहे थे। ऐसे समय रूसी लफटगट जब अपने नावके समीप पहुँच उसपर चढ़ने लगे, तब एक गोली का उनके पैरमें लगी; वह फिर पानीमें गिर गये। आपने फिर नावपर चढ़नेकी हिम्मत न की; पैरते हुए किनारे गले; राहमें चीनकी एक सरकारी नावने आपकी रक्षा की।

इधर रूसी नावपर मारकाटका बाजार खूब गर्म हुआ। रूसी मारे और दबाये जाने लगे। आपनेको विद्वश पा अन्तमें रूसियोंने विस्फोरक पदार्थमें आग लगा दी; उद्देश्य यह था कि घोड़े से बचेवचाये रूसियोंके साथ कुछ विजयो जापानी उड़ जाये; नाव भी उड़ जाये। किन्तु जगदीश्वरकी ऐसी इच्छा नहीं थी। विस्फोरक पदार्थ उतना जोरदार नहीं था; उससे जापानी सिपाही भी नहीं उड़े; नाव भी नहीं उड़ी; नावमें सिर्फ आग लग गई, जो बाल्य कालमें बुझा दी गई। यह बार भी

खाली गया। जापानी लिपाहियोंने खुशियोंको माद-काट नावपर
अधिकार कर लिया और उनपर अपनी ध्वजा चढ़ा उसे बन्द-
रसे बाहर निकाल अपनी शोके नावोंके साथ निजा दिया। जापानी
गर्व इस खुली नावको साप ही अपने बेटे को खीर चली गई ।

इस घटनापर बड़ा शोर हुआ। खुदने यूरोपकी खुदाय
शक्तियोंसे शिक्षावत् की,—“जापानने अन्तर्जातीय नियम पद-
एकित किया; युद्ध-सीमासे बाहरके चीनू-बन्दरसे हमारे पङ्गी
नाव पकड़ ले गया।” खुदकी शिक्षावत् थी; तुनी जैसे न जातो ?
समस्त यूरोपने जापान-सरकारपर घृणा प्रकाश की जाने लगी।
फ्रान्स, जर्मनी, अष्ट्रिया प्रभृति यूरोपकी शक्तिवा जापानकी
साम्मुख एत्यादि बताने लगीं। कर्हातक रहें,—जापानके परम
मित्र हमारे राजा एड्वारेड भी जापानके इस कार्यसे असन्तुष्ट
हुए; चाप साफ तो नहीं; किसी कहर घुमा-गिराएर जे बट्ट नमे
भौ दाहा,—“हां अपने इस एक कामसे जापानने अन्तर्जातीय
नियमको मर्यादा भङ्ग की है।” जापानके मिलीसी धारणा हुई,
कि यूरोपकी शक्तियोंके कोपने पड़ बहों यह खिन्नता हुआ
पूत सुरमा न आवे। ऐसे समय जापान बोला। अत्यन्त गम्भी-
रतापूर्वक निजमुँहपर भरौदाकर जापान बोला,—‘चीनूमें जिस
चीन-सरकारका अधिकार है, वह चीन-सरकार अदोसा है;
अपने खुलियोंकी रक्षा कर नहीं रखती; अन्तर्जातीय शक्तियोंका
ठीक ठीक प्रतिपालन कर नहीं रखती। चीनकी बग़ान्द है-
शिव शक्तियाँ भी चीनको अन्तर्जातीय नियम अङ्गुष्ठ रखनेके
समझमें किसी तरहका एधारा नहीं देतीं। चीनूके खुली शर-
सखने अन्तर्जातीय नियमके सिद्ध अपनं राजाओं देवारा का

जागा रखा है; अबतक किसीने उस नारकी और ध्यान नहीं दिया। इसीतरह रूसी जड़ों नाव रेजिस्टलनी जब बन्दरमें गई, तब अन्तर्जातीय नियमके अनुसार उन किसीने निरस्त्र नहीं किया। ऐसी अवस्थामें जापानी सिपाहियोंने बन्दरमें घुस आन्तर्जातीय नियम भङ्ग करनेवाली रूसी नाव रेजिस्टलनीको यदि गिरफ्तार कर लिया, तो क्या बुरा काम किया ? ऐसी ही जापान-सरकारको विज्ञप्ति प्रकाशित होनेपर युरोपकी शक्तियां चुप हुईं; भागड़ा तय हुआ।

पाठकोंको स्मरण होगा, कि १० वीं अगस्तवाले जल-युद्धमें रूसका जारविच निश्चानका जहाज था और अविराम गोला-घटके फलसे जारविचपर नौ-सेनापति विटोफ्रु मारे गये थे और जारविचको चलानेवाला चरखी बिगड़ गई थी। रात्रिके अन्तकारमें जारविच युद्ध-विसुख हो भागा; उसके साथ साथ तीन डिब्रायर जापानी नावोंने इन जहाजोंको पीछा किया। रूसी जहाज और नावें सब बचते-भागते ११ वीं अगस्तको कियावचौ-बन्दर पहुँच गये। यह कियावचौ-बन्दर उर्फ सिङ्गताउ-बन्दर चीनके शानटुङ्ग-प्रदेश और कियावचौ-खाड़ीमें है। निर्बल चीनके अनेक बन्दरोंपर अनेक विदेशियोंका अधिकार है। इस कियावचौ-बन्दरपर जर्मनीका अधिकार है। अङ्गरेजोंके अधिकार-भक्त चीनके वीहैबोमें जिसतरह सदा जङ्गो सहास रहते हैं, उसीतरह जर्मनीके कियावचौ-बन्दरमें जर्मनीके भी जङ्गी जहाज आदि रहते हैं। कियावचौमें जर्मनीके एक गवर्नर भी रहते हैं, जो वड़े दुबदबके साथ अपने अधीनस्थ चीनका शासन-कार्य करते हैं;

ऐसे ही क्रियावचो-बन्दरमें लोग डिब्बोंके नावोंके बाप खुलका
 जारविच जहाज पहुंचा । जर्मनो चोनको तरह निर्जल नहीं ;
 जर्मन अफसरोंने जारविचके अफसरोंको सूचना दी, कि तुम
 लोगोंको अपने जहाजोंको बाजिव सरसत कर लेनेके उपरान्त
 चौबोन घण्टोंमें या तो बन्दर परित्याग करना चाहिये या निरख
 होना चाहिये । जापानी नावें बन्दके बाहर खड़ी थीं ; मानी
 खुसी जहाजोंके बाहर निकलनेकी राह देख रहीं थीं । खुसी
 जहाजोंने बाहर निकलना विषदसङ्कुल देख जर्मन अफसरोंको
 दूसरी बात खीकार ली ; अपने जहाजोंको निरख करना मञ्जूर
 किया । बड़ी-छोटी सब तरहकी तोपें खुसी जहाजोंसे उतार
 ली गईं ; गोला आदि उतार किये गये ; यह सब सामान
 जर्मनोकी मेगजीनमें जमा कर दिया गया । बाकी रहे लण्ड
 बिपाही और उनके अफसर ; इन सबसे हृदियार ले किये गये
 और यह सब वर्तमान युद्धकी समाप्तिरूप उस बन्दरमें नजरबन्द
 किये गये । एक ओर जर्मन अफसरोंने यह बिपा और दूसरी
 ओर जर्मनोका एक छोटा जहाज बन्दरके तुहानेपर ला
 खड़ा हुआ । इस जहाजके अफसरने दूर खड़े जापानी ना-
 वोंके अफसरोंको सूचना दी, कि चीफकी तरह इस बन्दरमें भी
 शक्तिमें यदि जापानी घुसेंगे, तो उनपर गोला-बारि ली जावेगी ।
 जापानी अफसरोंको यह सूचना भी दी गई, कि बन्दरमें धादे
 खुसी जहाज निरख बना दिये गये हैं । जापानियोंकी शायद इस
 सूचनासे सन्तोष नहीं हुआ ; उनको एक गावाँ बन्दरमें जा अपनी
 बाँकी निरख खुसी जहाजोंके दंड धाई । इन्हें उनगावाँ
 बन्दरके बाहर खड़ी नावें अपने बड़े बड़े और खली गईं ।

चीफू और कैप्टीका हाल देखलिया एव बाकी दो बन्दरोंका हाल देखिये। इन दोनों बन्दरोंका हाल लिखनेसे पहले इतना और सुन लीजिये कि १० वीं अगस्तके युद्धसे भागे रूसी डिप्टायेर नाव 'वरनी' अङ्गरेज-अधिष्ठित बन्दर वोहैवोकी ओर चली। राहमें समुद्रतटकी चट्टानोंमें फंस गई। यह देख नावके लफट-नगटने विस्फोरक द्रव्य द्वारा नाव उड़ा दी और आपने बाधियों सहित पैदल वोहैवी पहुँच अङ्गरेजोंके हाथ आत्म-समर्पण किया।

एक ओर यह हुआ; दूसरी ओर रूसका दूसरे दर्जेका जहाज अस्कोल्ड डिप्टायेर नाव गोखोवायके साथ १२वीं अगस्तको अङ्गरेज-रक्षित बन्दर शङ्गाई पहुँचा। जापानी जहाज भी उसी पीछे पीछे पहुँचे और उन्होंने बन्दरके सुहानेपर ठहर लङ्गर डाल दिया। इन दोनों जहाजोंके सम्बन्धमें बड़ा झगड़ा चला। दोनों जहाज एक अङ्गरेजी डकमें छुव अपनी मरम्मत कराने लगे। अङ्गरेज चुप थे। जापानने चीनसे कहा, कि इन दोनों जहाजोंको शीघ्र ही या तो निरस्त्र करो या बन्दरसे निकालो। चीनके यह कहनेपर रूसने जवाब दिया,—“हमारे जहाज निरस्त्र न होंगे; अठ्ठाईस दिनोंमें अस्कोल्डकी मरम्मत हो जाधेगी और अठ्ठारह दिनोंमें गोखोवायकी। इसके उपरान्त यह दोनों बन्दर परित्यागकर खुले समुद्रमें चले जावेगें।” रूसका यह उत्तर सुन जापानने चीनसे कहा,—“इतने दिनोंतक दोनोंका बन्दरमें रहना अन्तर्जातीय नियमके विरुद्ध है; अन्तर्जातीय नियम यह है, कि जहाज बिना आपनी बाजिन मरम्मत करा लें; आपनी अङ्गरेजी शक्ति किसी बन्दर न बढ़ावे; यहाँ-

तक, कि अपनी टूटो-फूटी धुंध्यां निकलनेकी चिमनीतक दृष्टत
 न कराये । खुसी जहाज भीत ही था तो निरख ही या बन्दरये
 निकले ।” खुद अपने जहाजोंकी गिरफ्त भी करगा नहीं
 चाहता था ; निकलना भी नहीं चाहता था ; जापान इन्हीं
 बालोंपर जोर देता था ; बेचारा चीन हीनो पचली मन्तान-
 रताका यत्न कर रहा था । अन्तमें रात बहुत बढ़ गई । जापान
 बन्दरनें कुछ हीनो जहाजोंकी गिरफ्तार कर देनेके किशे तय्यार
 हुआ । जापानकी यह तय्यारी देख खुद-ब-खुद
 जाने अपने हीनो जहाजोंकी निरख होने और जहाजी मिया-
 हियोंकी चीनके भिन्न भिन्न बन्दरोंमें नजरबन्द हो जानेकी आशा
 ही । ऐसा ही हुआ ; भागदा मिटा ।

इसी जल-युद्धमें भागा हुआ खुलता छोटा जहाज जापान
 सेगोन-बन्दर पहुँचा । सेगोन-बन्दरनें प्राक्खीटियोंकी अधिपत्यमें
 है । जापान जहाज बहुत कुछ टूटफूट गया था और उलटवे तीव्र
 दिशाही तथा एक अफसर सारे या चुके थे । जापान जहाजके
 पीछे पीछे दितनी ही जापानी दिव्यादेर नावें जा सेगोन-बन्दरके
 मुहानेपर खड़ी हुईं । लोगोंने शक दिया था, कि इस जहाज-
 के सम्बन्धमें भी भागदा खड़ा होगा ; किन्तु ऐसा नहीं हुआ ।
 जापानकी आशासे सेगोनमें जापान निरख कर दिया गया । सेगो-
 नमें जापानी कन्डलने लक्षमें जा अपनी बाँधों निरख जापानकी
 इस जापान-राजधानी टोकियो हवा ही । यह जहाजे जापान-
 बरताकी उल्लेख हुआ ; लक्षने सेगोन-बन्दरके मुहानेके अपनी
 बाँधोंका पररा टटा दिया ।

उनमें अब सिर्फ एक जहाजकी कहानी बाकी रह गई है। इस जहाजका नाम नाविक था। नाविक आकार और भारमें सिर्फ तीन हजार तीस सौ टनका होनेपर भी याममें रहसके कुछ थड़ी जहाजोंमें अगल था। उसमें छठारह हजार घोंड़ेकी शक्तिसे एञ्जिन थे; भगटे मोढ़े कोई साढ़े बारह सौस चलता था और एकबार कोयला भर लेनेसे कोई साढ़े चार सौ सौमकी यात्रा निर्विघ्न तय किया करता था। यही नाविक १०वीं अगस्तको जापानी जहाजोंके सामनेसे भाग बलडीवष्टककी ओर जला।

बलडीवष्टककी ओर जानेकी दो राहें थीं; एक तो वही, जिससे रूसी वेड़ा जा रहा था और जापानी वेड़े द्वारा बाधा पा आगे जा न सका। दूसरी राह चकरदार थी; जापान दीपपुञ्जके पश्चाद्भागसे। नाविकने अपने द्रुतगति और कोयलेके भाण्डारपर भरोसाकर बलडीवष्टक जानेके लिये यह दूसरी राह ग्रहण की। बलडीवष्टक जानेसे पहले एकबार यह जर्मनीकी क्रियावचौ-बन्दर गया; वहां कोयलाभर तीर-धिगसे बलडीवष्टककी ओर रवाना हुआ। इस राहसे बलडीवष्टक बहुत दूर था। समग्र जापान दीपपुञ्जकी परिक्रमा करनेके उपरान्त जहाज बलडीवष्टक पहुँच सकता था। जापान दीप-पुञ्जकी परिक्रमा करनेमें नाविकका कोयला प्रायः समाप्त हो गया। अब क्या किया जाये? जापान दीपपुञ्जके छोरपर बलडीवष्टकके किसी कदर आगे उजाड़ रखेदियन दीप है। दीपपर रूसका अधिकार है। दीपमें घोंड़ेके मञ्जोल आदि वे हैं; १ सिवा इनके उस समय कोई पाँच हजार

दोपान्तर्गत रूसी कैदी थे । दोपनें कोयलेकी खानि है ; यह सब रूसी कैदी उही खानिमें मजदूरी दिया करते थे । दोपकी बीचमें जापान दोपपुञ्जकी चौर रखेलियनका दोरनापोस्क-नामक बन्दर है । नाविकने स्थिर लिखा, कि इस बन्दरमें कोयला काए रखेलियन टापू चौर जापान दोपपुञ्जकी बीचकी रोमा उर्फ कापेरोज-प्रयाणसे निकल बूझीवस्त फलना चाहिये । १०वीं अगस्तकी नाविक उजाड़ कोरसाकोस्क-बन्दर पहुँचा चौर उही दिन तीसरे पहरतक प्रचुर कोयला काए तीसरे पहर कोई चार बजे बन्दरसे निकलनेपर तय्यार हुआ । नाविक बन्दरसे निकलनेकी तय्यारी कर रहा था ; उन्की रक्षियोंको वाष्प तय्यार हो चुकी थी ; ऐसे समय उस बन्दरकी बाहर एक जहाज दिखाई दिया ; यह जहाज जापानका था ।

टीगो रूसी बंदे की कुल जहाजोंकी जानते थे । १०वीं अगस्तके सुबहके उपरान्त रूसी बंदे की बाह्र जहाजोंका पता पाकर भी जब उन्को नाविकका पता नहीं लगा, तब उन्को अनुमान किया, कि नाविक जापान दोपपुञ्जकी परिक्रमा करता हुआ बूझीवस्तकी चौर जा रहा है । यह विचार थापने अपने तीसरे दरजेके दो जह्जी जहाज शुषिना और चिटोवकी नाविककी ओर रवाना किया । दोनो जहाज दूरमें नाविकसे छूटते हीनेपर भी बहुरंखर तौपोंसे तलबिखत थे । हीनोपर बेकारके तारके बन्दर लगे थे । हीनो जैसे जैसे जाने बढ़ते गये, जैसे जैसे उन्को नाविकका पता मिलता गया । हीनो जहाज सब दूरसे बहुत फासिलोंसे जागे बढ़ते थे । उरीज दूर था,

कि नाविक किसी छोरसे भागने न पाये। २०वीं अगस्तको छोरसे पहरे शुशिमामा सखेवियगके कोरसाकोरु-बन्दरसे सामने पहुँचा; वहाँ उसे उनका एभीष्ट जहाज दिखा दिया। उसने देखा, कि नाविक कोरसाकोरु-बन्दरसे निकल भागनेकी छयारी कर रहा है। ऐसे समय नाविककी भी निगाह शुशिमामुझ पड़ी।

उधर शुशिमामा नाविकको देख बन्दरके मुहानेपर इसतरह उटकर खड़ा हुआ, कि नाविकको बाहर निकलनेको राह न मिले; इसीके साथ साथ अपने बेटारके तार द्वारा अपने साथी जहाज चिटोजकी शीघ्र अपने पास बुलाया; इधर शुशिमामाको देखकर भी नाविक उतना भौत नहीं हुआ; वह अपनी द्रुतगतिपर भरोसाकर बन्दरसे निकल भागनेके लिये तय्यार हुआ। नाविक बड़ा था, शुशिमामा छोटा। नाविकमें बड़ी बड़ी तोपें थीं, शुशिमामें छोटी छोटी। सिवा इसके नाविक कई लड़ाइयाँ लड़ चुका था; शुशिमामा सिर्फ पहरेके काममें नियुक्त था। ऐसे ही शुशिमामासे नाविकके भीत होनेका कारण क्या था ?

लड़ाईका निशान उड़ाता तोपोंमें गोले भर बड़े दम्भके साथ नाविक शुशिमामाकी ओर चला। शुशिमामा भी राइफेलके लिये तय्यार हुआ। जैसे ही नाविक समीप आया, जैसे ही शुशिमामाकी तोपें नाविकपर गोले बरसाने लगीं। नाविकने भी गोला-बर्षि धारम्भ तो। दोनों ओरसे गोला-बर्षि धारम्भ होनेपर भी नाविक आगे बढ़ता ही गया। उसे

था, कि शुशिमामाकी अतिगुरुतर पहरे वाली बंदरकी ओर

निकल जायेगा । नाविकाने क्वोटा होनेपर भी शुश्रिमा इतना नहीं चाहता था । उसके अफसरोंने खयाल किया, कि इतने दिनों बाद यह शुद्धका अवसर प्राप्त हुआ है ; इसमें येना वीरान् प्रकाश करना चाहिये, जिससे स्वदेशका सुखोच्चल हो और शत्रुकी ह्वातीपर चोट लगे । शुश्रिमाके अफसर पछले, तो उदर-स्वसे अपने मातहत कर्मचारियोंको शुद्धको आश्रय देते रहे ; अन्तमें अत्युत्साहसे अधिक चिल्लागेकी वजह उनका गला ब्रेक गया और वह बोल न सकनेकी वजह खड़िया मझीसे बघाजदें तकतेपर अपनी आश्रयें छिड़ने लगे । शुश्रिमाने बिदल मूर्ति धारण की और उसको वह भयङ्कर मूर्ति देख नाविकको पर्यायि स्मरित हुई ; वह जहाँ था, वहीं ठहर शुश्रिमापर गोघे दरपाने लगा । जापानी शीलोंकी चोट बहुत ही जबरदस्त थी । नाविकके पेटमें जलके भीतर तीन हिद्र हुए और बलके बाहर ही हिद्र । बिना इसके नाविकके कितने ही अङ्गिन टूट गये ; नाविककी बघाज चलानेको चरखी निकली ही गई । दोई पाँच घण्टे के इन्हें नाविककी ऐसी ही दुर्हंशा हुई । अन्धा दोई पाँच बजे नाविक भागकर दन्दरके भीतर लिनारे चला गया । इस शुद्धमे शुश्रिमा भी क्षतिग्रस्त हुआ था सही ; किन्तु उसकी क्षति अतीव क्षमास्पद थी ; यह समझ होते ही बहाजकी मरम्मत हो गई । इस शुद्धको उत्सा-प्रिये उपरान्त शुश्रिमा फिर अपनी बगह यानी दन्दरके ह्वाते-पर लफ्फर हाक खड़ा हुआ और वेतारके तार द्वारा उदने एद-वार फिर चितौजकी प्रीति आनेके लिये कर ।

२० वाँकी रात बीत गई । रात हीको चितौज शुश्रिमाके पु-
 शन पहुँच गया । दानो बघाज, दन्दरके ह्वातेपर ठहर नाविक-

कड़ी निकलनेकी प्रतीक्षा करते रहे। किन्तु नाविक निकलनेको
 था न निकला। प्रातःकाल सुप्रिमा अपनी जगह उठरा रहा ;
 चित्तोष वन्दरके भीतर बुना। चारो ओर सन्नाटा छाया हुआ
 था। उस सुदूरके वन्दरमें जहाज नहीं था ; आदमी नहीं थे ;
 चपचाप नहीं था ; पापार नहीं थे। वन्दरके किनारे दो चार सौ
 मंजान थे, जिनके अविभासी कल सन्धाको युद्धरत्न होते ही अपने
 आगने राक्षान वन्दरके आग गये थे। वन्दरमें किनारेसे लगा नाविक
 था। अविभासी नाविकको अस्मत् नहीं की थी; इस किवे रात हीको
 वह छिह्ने घलमें डूब गया था। उसका एक अंग अक्षके भीतर था
 और दूसरा अंग बाहर। उसमें अविभासी अहासी विभासी अपना
 माल-अस्त्रवाप के किनारे पहुँच गये थे, जो पाकी थे, वह चित्तो-
 षका वन्दर-प्रवेश देखते ही नाविकको छोड़ किनारे पहुँच गये।
 चित्तोषके अक्षरके स्थिरदृष्टिसे यह सब बातें देख विचार किया,—
 “अविभासी आयाही की है। छिह्नेमें जहाज डूबा घने घोंडा
 देनेकी चेष्टा की है; जैसे ही घल बहाहि, चले जायेंगे, वैसे ही
 लकी, अहासी अक्ष निकाल उसे पैरा बखडोवटके निकाल के
 जायेंगे।” वह विचारकर दूधे हुए नाविकपर मोलादृष्टि होनेकी
 आशा ही। उसपर दुरे पड़ने लगे ; दूधे हुए नाविकपर चित्तो-
 षके मोलोंको मार पड़ने लगी। मोलोंकी मारसे नाविकका जो
 भाग जलसे बाहर था ; उसका सचूमर निकल गया। नाविकके
 अक्ष अक्ष टुकड़े जलमें गिर लहरोंपर गाने लगे। चित्तोषके
 अक्षरको अब नाविकके पूर्यतया नष्ट ही हुकनेका विश्वास ही
 गया, सब अक्षोंने चित्तोषको; वन्दरसे बाहर निकलनेकी आशा
 ही। चित्तोष वन्दरसे बाहर निकला और अपने अक्षो अहास

शुश्रूषाको साथ दे अपनी कारखानेकी तरह दीर्घकालीन
प्रधान वेडे को धोर ।

इस तरह इस नाविक काण्डको समाप्ति हुई ।

तयोदश परिच्छेद ।

लियावयाङ्ग महत्समर—तयारियां ।

कई अङ्गरेजी उपन्यासोंमें एक लौह-निर्मित यन्त्रया-गृहका बाल पड़ा है। इस यन्त्रया-गृहका वर्णन इस तरह है,—छोटोसी एक कोठरी है, जिसकी दीवारें गन्ध और फर्श सब लोहेके हैं और जिसके बाहर एक कल है। कल चलानेसे यह कोठरी हर तरफसे घटने लगती है; घटती घटती एक आदमीके मुश्किलसे पड़े रहने लायक एक सन्दूक या जनाजेका रूप धारण करती है। कोठरीमें जो कैदो कैद किया जाता है, वह उसी छोटेके सन्दूकमें रुड़ा रहता है और वायुके अभावसे, आहारके अभावसे, उठने-बैठनेमें बिल्कुल असमर्थ हो तड़प तड़पकर मर जाता है। कितना विकट यन्त्रया-गृह है।

लियावयाङ्गमें बैठे रूह-सेनापतिके लिये उनके इर्द-गिर्दकी आपानी फौजोंकी पंक्ति उपन्यास-वर्णित मानो वही यन्त्रया-गृह बन गई थी। धीरे धीरे सिमटती जाती और अपने बीचके जुरोपाटिकनकी गति-विधिका स्थान दिन दिन सङ्कीर्णसे सङ्कीर्ण-तर करती जाती थी। नकशेमें देखिये। कहां वह सुदूरका आरम-बन्दर, ताजुशान और फेङ्गज़ाङ्गचेङ्ग और कहां यह मध्य-सञ्चरियाका लियावयाङ्ग? लियावयाङ्ग और चोङ्ग, नोङ्ग और जुरोखीकी सैन्यके पहले पड़ावके पूर्वोक्त तीनों स्थानोंके बीच कितना फ़ासिका है? इस समय चोङ्गकी सैन्य लियावयाङ्ग नगरके

दाहने बोजूकी वामने और कुरीकीकी बाये' थी । बोजूकी सैन्यका मध्यभाग हैचिङ्गसे आगे पुराने निउचवाङ्ग नगरकी दरकार लियावयाङ्ग नगरकी और बढ़ गया था । पुराने निउचवाङ्ग नगरसे लियावयाङ्ग कोई छःकोस पश्चिम था । इस फौजके दोनो बाजू दूर दूरतक फैले हुए थे ; बायाँ बाज निउचवाङ्ग-धन्वरसे बोजूपर था और दाहना तोन्द्रग्रामकी बगलमें । तोन्द्रग्राममें सेनापति बोजूकी सैन्यका मध्यभाग था । इस सैन्यका बायाँ बाजू बोजूकी सैन्यके दाहने बाजूसे मिला था और दाहना बाजू दाहने कुरीकीकी सैन्यके बाये' बाजूसे । कुरीकीकी सैन्यकी स्थिति शायद प्राठकोपी क्षयी न होगी । उनको सैन्यका दाहना बाजू उन्नी रघुजिङ्गपू त्सारमें और मध्य उन्नी यङ्गजुलिङ्गमें था । मध्यभागका बायाँ बाजू अपनी बगलसे पार्वत-धन्वरमें बोजूकी सैन्यके दाहने बाजूसे मिला हुआ था ।

शोर होता नहीं था ; पहले ही समाचारमें बड़े बड़े वामोंके सब्दके प्रयोग किये जाते यहाँ थे ; फिर भी, सामान्य चुपचाप जो ध्यान पर रहा था, वह प्रसिद्धिके कारण था और बहुत ही ऊँचे दरजेका था । निउचवाङ्ग-धन्वरसे पुराने निउचवाङ्ग नगरतक लियाव गद्दीका भी शोर है, परन्तु सामान्य पूर्ण अश्रितार दर लिया था और छोटे छोटे शौतर रखरई वहाँ बायीकी संज्ञा खींखर पुराने निउचवाङ्ग पहुँचा दिया करते थे ; बोजूको सैन्य-संज्ञिकमें हाथो हाथ रखर बट पायाँ ही । बिना इसके बोजूकी सैन्यका मध्यभाग बिना दरदर-बन्धर-हन्धर रखरपके पाप पाप वामे बढ़ रहा था, परन्तु वह बिना अश्रितार ही चलता नहीं जाता था ; सन्धि उठे ~~...~~ के

लिये विगाड़ता और अपने लिये तय्यार करता आता था। यानी
 रेल की चौड़ी पटरियों की थी; जापान उसे उठा अपनी छोटी
 पटरियों को लाइन विच्छाता आता था। अरधर-बन्दरसे हैचिङ्गतक का
 रेल-पथ जापानके अधिकारमें था,—अरधर-बन्दरसे हैचिङ्गतक
 जापानने चौड़ी पटरियों की बदले छोटी पटरियों की लाइन विच्छा
 ली थी। इस छोटी लाइनको गाड़ियां, एंजिन, पलटाफारम
 आदि सभी छोटे थे। जापानसे मंगाये और काममें लाये गये
 थे। इससे दो लाभ थे,—प्रथमतः, जापान यदि परास्त हो पीछे
 हटता, तो रूसी उस लाइनसे एकाएक कोई काम ले न सकते;
 द्वितीयतः, युद्धके उपरान्त जापान उस छोटी लाइनको अपनी
 काना लक्षपर हर तरहका दावा कर सकता था। खैर; इस समय
 इस लाइनका जिक्र इस लिये किये गया, कि जापान अपनी इसी
 लाइन द्वारा ओजूकी सैन्यके मध्यभागमें रसद पहुंचाता था;
 अतः रसद हाथोहाथ ओजूकी सैन्यके हाथने वाजू और उससे
 भी आगे नोजूकी सैन्यके बायें वाजूतक पहुंचा दी जाती थी।
 नोजूकी सैन्यकी रसद समुद्रतटके ताकुरागान स्थानसे भी आती थी।
 कुरोकीकी सैन्यकी रसद बहुत घूमफिरकर आती थी। फिर भी,
 रसद पहुंचानेकी सुव्यवस्था बिना किये कुरोकीको आगे बढ़े नहीं
 दे। कुरोकीने अपने पीछे एक तो कोरिया-राजधानी सिडलसे
 यालू नदीके किनारेवाले उस वीजू नगरतक रेल विछवा दी थी;
 दूसरे वीजू नगरके खामने यालू नदीके दूसरे किनारेके पोन्न
 बन्दरसे अपनी पौषके पोहितक रेल तय्यार करा दी थी।
 दो राहें खुल गई थीं। सिडलसे भी आती थी और
 भा। ऐसी ही सुव्यवस्थाके फलसे दरतक मैकी

जापानी सैन्य-पंक्तिको रक्षादिना तनिक भी अभाव होता नहीं था ।

इस दार झुल्ल कान्ने-सुननेली जगह नहीं थी । कुछ आरम्भ हुआ छ, महीनेसे अधिक वीत चुके थे । इस अवसरमें खनी सिपाहियों और रक्षादिसे भरी सहस्र सहस्र ट्रेनें खससे मञ्चूरिया पहुँच चुकी थीं । खसकी सिपाहियोंकी कमी नहीं थी ; गोली-गोलादि युद्धोपकरणकी कमी नहीं थी ; रक्षाकी कमी नहीं थी । मित्रा इसके अवसर पर कड़ा जाता था, कि यूरोपाटकिन्तवो अपनी सैन्य एकत्र करनेका अवसर नहीं मिला ; इसीलिये वह पीछे हटनेपर बाध्य हुए । लिये यह लियावथाङ्गलें कहनेके लिये यह बात भी न रही ; यूरोपाटकिन्तवो प्रायः सब सैन्य चारो ओरसे घिरेकर एकत्र हो गई थी । लियावथाङ्गल और एककी चारो ओर मोरचे ही मोरचे चारो ओर खनी सिपाहियोंकी हानियाँ ही हानियाँ दिखाई देती थीं । लियावथाङ्गलें आगे जापानी सैन्य-पंक्तिके सामने खनी सैन्य-पंक्ति कोई बीस बीसकी लाइनेमें फैली हुई थी । खनी सैन्यके दो दरजे थे ; एक बाहरी, दूसरा भीतरी । बाहरी दरजा ही जापानी सैन्यके सामने था । इस दरजेमें यों तो बहुतरे छोटे-बड़े मोरचे थे ; किन्तु प्रधान मोरचे तीन थे । खसियोंके यह तीनों मोरचे बलवन्त सुदृढ़ थे । खनी पौजके दाहिनेसे देहिदे । इसके दाहिने ओरपर पोजूकीही पौजके बायें बाजूके ठीक सामने 'जापान-दाह' नामक पहला मोरचा था । इस जगह दर्शितकी बलवन्त जूमिनें एक सत्ता और ऊँचा प्रबन्ध था, जिसपर खसियोंकी बलवन्त सैन्य और भयङ्कर तोपें थीं । दूसरा बलवन्त

मोरचा जापानी सैन्य-पंक्तिही अर्द्धचन्द्राकार रेखाके टोक मध्य-स्थलके सामने कौफेइशू स्थानमें था; इसके नामने जापानी सैन्य-पंक्तिही रेखामें जो स्थल था, वह नोषू और कुरोकीकी सैन्यका सन्धि-स्थल था। तीसरा सुदृढ़ मोरचा रूसी फौजके बाबे' छोरके सामने जापानी सैन्य-पंक्तिके दाहने छोर यानो कुरोकीकी फौजके सामने आगपिछमें था। विश्वविख्यात कुरोकीकी सैन्यका प्रसार रोकनेके लिये रूसियोंने अपने इस मोरचोंको अधिक सुदृढ़ बनाया था। इस मोरचेमें एक सौ बीस तोपें थीं और रूसकी युरोपियन शीर्ष-स्थानीय फौजोंके कोई सत्तर या पच्चीस हजार चुने हुए सिपाही। जियावयाङ्गके गिर्दके पहले या बाहरी दरजेके रूसी मोरचोंकी ऐसी ही व्यवस्था थी।

रूसी मोरचेका दूसरा दरजा पहले दरजेके पीछे लियावयाङ्ग नगरके अत्यन्त समीप था। इस दूसरे दरजेमें वैज्ञानिक ढङ्गसे बने हुए बहुसंख्यक तोपोंके मोरचे और किले थे। अन्तर्वर्ती भारतवर्षमें आपलोग जैसे किले देखते हैं, रूसियोंके यह वैज्ञानिक ढङ्गसे बने किले वैसे नहीं थे। आप जो किले देखते हैं, उनको ऊंची ऊँची दीवारें और उन दीवारोंमें निकले वह विशालाकार बुजं बहुत फासिलेसे दिखाई देते हैं; यह वैज्ञानिक किले यहाँतक नीचे थे, कि दूर तो दूर, गजरीकसे भी साफ दिखाई देते नहीं थे। समझनेके लिये इनमें एक किलेकी स्वरत लिखते हैं; किसी ऊंची जगहसे देखिये, तो आपको नीचेका यह किला इस रूपमें दिखाई देगा,—सहस्र सहस्र फुट गर्भस्त्रके एक गोड

१५ किनारे चन्द्राकार मोटीसी एक रेखा है। यह रेखा का

है ? यह रेखा चौद ब्रह्म नहीं,—असंख्य छोटे छोटे कुंभों
 एक माला है । इन कुंभोंमें फल नहीं है ; मृत्यु है । इन कुंभोंको
 गहराई चार-पाँच हाथसे अधिक नहीं । हर एक कुंभका सुंघ
 गोल है और वह जैसे जैसे गहरा होता गया है, वैसे सङ्कीर्ण
 होता गया है ; अर्थात्कि, कि जिम्ह जगह इन कुंभोंकी समाप्ति
 होती है, उम जगह कुंभोंमें सिर्फ एक छोटासा छिद्र रह जाता
 है । इस छिद्रमें कोई चार फुट लम्बी तीक्ष्णधार बरह्नी ऊपर
 सुंघ किये गड़ी है । कुंभोंकी यह गावदुम वा अङ्गरेणी वर्षा V
 जैसी बनावट इसलिये है कि जब व्याप्तो कुंभोंमें गिरे, यव
 उसका अङ्गुल और निम्नङ्ग दोनो कुंभोंके गावदुम पार्श्वसे पग-
 कर ऊपर रो जाये ; देहका मध्यभाग धानी बसर नोचे जाये,
 जो दरह्नी द्वारा व्यायानोसे विघ्र जाये ऐसे ही कुंभोंको चार छिद्र-
 योंकी विशाल गोल मालासे यह रेखा तय्यार चुई है । यानी एक
 लम्बी पंक्तिमें ऐसे चार कुंभ खोद, उनकी दगलमें वैसे ही चार
 चार कुंभ खोद,—इसीतरह बराबर चार चार कुंभ बना इन
 ब्रह्मसे यह माला बजाई और पूरी की गई है । इन कुंभोंकी बीच
 पहले तो उतनी जगह नहीं और जो जगह है, भी उतने टाहने
 गाड़ खारदार तारोंके आस तगा दिये गये हैं । कुंभोंकी इस माला
 से आगे घोड़ीकी खुली भूमि है, उतसे आगे बढ़े बढ़े लोहके
 खूंटोंके सहारे खारदार तारोंका आस है ; उत आलते आगे
 फिर ऐसी ही चार चार कुंभोंकी दमो एक माला है । इस मालासे
 आगे चौड़ी खन्दक है और खन्दकके बीच बड़ी बड़ी बहु-
 संख्यक तोपीसे सुदृढ़ दिला । दिला इन तरह बना है, कि
 किन्हे मध्य भागकी भूमि खोद दितेहा आंगन तय्यार दिये इन

है, जिसके बीचमें गोलियोंको बेच्यमर करनेवाजी माँद जखी भूगंल्ल
 सिपाहियोंके रहनेकी कोठरिया आंगणकी चारो ओर और-
 पर विना खुद हुई जमीनकी दीवार ; जिसमें मारे वनी और
 तोपे लगी है । जमीनके भीतर ही भीतर किलेका आंगण भी है,
 उसकी चारो ओरकी दीवारे भी भीतर ही हैं ; बाहर कुछ भी नहीं ;
 फिर भी, यह किल्ला आगले समयके उन ऊँचे किलोंसे अतगुण
 अधिक दुर्भेद्य है । रूसी ओरकेका दूसरा दरजा ऐसे ही ऐसे बहु-
 संख्यक किलों द्वारा संगठित हुआ था । इन दोनो दरजोंके बीचकी
 भूमि रूसी सिपाहियोंसे ठसाठस भरी थी । इन दोनो दरजोंके बीच
 आगणित सिपाहियोंसे परिवेष्टित और परिरक्षित रूस-सैन्यके
 विधाता सर्वप्रधान सेनापतिका सदर लियावयाङ्ग नगर था ।

दोनो ओरकी यथार्थ सैन्य-संख्याका हिसाब मालूम होने-
 पर भी फौजी संवाददाताओंने खचचुसे देख एक व्यानुमानिक
 हिसाब प्रकाशित किया है । कैसेल तथा और भी कितने ही
 संवाददाताओंकी बताई इस ख्यासे पक्षपातकी बूझाती है ।
 इन सबने रूसियोंकी सैन्य-संख्या कम और जापानियोंकी अधिक
 बताई है । कैसेलने जापानियोंकी सैन्य-संख्या अधिक बता मानी
 आँसू पोंकनेके लिये अन्तमें कहा है,—“जापानियोंको सैन्यसंख्या
 अधिक थी सही ; किन्तु उसके मुकाबिल रूसियोंके अपने पुने
 लड़ने मोरचोंको देखते हुए जापानियोंकी सैन्य-सम्बन्धीय यह
 अक्षता निम्तीमें लार्डे जा नहीं सकती ।” इसतरह अन्त भी
 हुआ ; मरहम भी हुआ । किन्तु लियावयाङ्ग यह युद्ध ख-
 चचुसे देखनेवाले सभी संवाददाता रूसके पक्षपाती नहीं थे ।
 कितने ही संवाददाता ऐसे भी थे, जिन्होंने रूसियोंका पक्ष

चतुर्दश परिच्छेद ।

लियावयाङ्ग महायुद्ध,—आदि-पर्व ।

पिछले परिच्छेदोंमें हम जापानी फौजोंको जिन जगहों द्रोड़
 व्यायं हैं ; आशा है, कि पाठकोंको वह जागरे भूली न होंगी ।
 सेनापति कुरोकीको सैन्यको हमने यूगुलिङ्गजू और याङ्गजुलिङ्गमें
 छोड़ा था, नोजकी सैन्यको तोम्बुशानमें और ओकूकी सैन्यको
 हैचिङ्ग तथा नये निउच्चाङ्गमें । गत अन्तिम बार इन तीनों सेना-
 पतियोंको सैन्य जब सम्मिलितभावसे आगे बढ़े थी, तब कुरोकी
 और नोजकी सैन्य-पंक्तिके अग्रगमनके उपरान्त सबके अन्तमें
 ओकूकी सैन्य-पंक्तिने ३ री अगस्तको आगे बढ़ हैचिङ्ग और
 पुराने निउच्चाङ्ग नगरपर अधिकार किया था ।

इस ३ री अगस्तके बादसे कोई दो सप्ताहतक जापानी और
 उसके सामनेकी रूसी,—इन दोनों फौजोंमें घोर युद्धकी तय्यारियां
 हुईं, किन्तु कोई युद्ध नहीं हुआ ; घटाये घिरों, किन्तु टुट
 नहीं हुईं । टुट न होनेके कई कारण थे । एक कारण यह था,
 कि किसी घोर युद्धसे पहिले सैन्यसमावेष्ट-सम्बन्धिय जिन अवश्य-
 प्रयोजनीय उपकरणोंके संग्रहका प्रयोजन होता है, उभयपक्ष उन
 उपकरणोंका संग्रह करनेके लिये बाध्य हुए थे । दूसरा कारण
 यह था, कि इस अगस्त मासके दूसरे सप्ताहके अन्त और तीसरे सप्ता-
 हके आरम्भसे रणस्थलपर एक एक काली काली घटाये घिर आइं



जापान-सेनापति ।



युद्धविशारद श्रीकृ ।
२५ भाग १८३ पृष्ठ ।

और लगातार कोई चार दिनों तक बराबर बरसती रहती । नदी-नाले भर गये ; तराइयोंमें जल ही जल दिग्गङ्गा देने लगा । कुण्डोंकी सैन्यमें घंटे विलायतके 'टाइमून'के संवाददातागे इसी दृष्टिके सम्बन्धमें १८वीं अगस्तको अपने कम्पसे तार द्वारा समाचार दिया था.—“लगातार चार दिनोंको दृष्टिने नदी-नाले ३२ अथर्व विग्राम दिया है ; फिर भी, मौसम अभी साफ नहीं हुआ ; काली काली घटाये आसमानमें उड़ती फिरती हैं ।” इस दृष्टि-जल आवित दृष्टि-संज्ञके उच्चभूमिमें रहनेकी वजह रूमी जलके कष्टसे बहुत दुःख संरक्षित थे और जापानी निम्नभूमिमें रहनेको बलवत् शक्ति ही विपद्में । जापानी ही आगे बढ़नेको थे ; जलशायनको बलवत् बढ़ न सके । रूसी बढ़े थे ; या बढ़नेका शौक पूरा करने पर थे ; किन्तु कर न सके । उसी १८ वीं अगस्तको टाइमूनके संवाददातागे लिखा था,—“उस दिन पहलेसे लहराते जाते हुए-दृष्टियोंमें घुम घुपके घुपके आगे बढ़ रूसी एक जापानी चौकोरे सामने पहुंच गये । जापानी कुछ चौंके सही ; किन्तु उन्होंने चटपट इन्कूके उठा रुबियोंको मार भगाया ।” इसमें एन्डर नहीं, कि वह फसलसे भरे क्षेत्र या श्रमोद्योग सुदृष्ट मेदान दृष्टि-जलसे भरकर जापानी सैन्यके लिये नितान्त दुर्गम्य हो गये होंगे । ऐसे ही किन्तु ही कारणोंसे जापानी सैन्य-प्रतिष्ठा आगे बढ़ दिया-व्याज्जका वह ऐतिहासिक महायुद्ध आरम्भ कर नहीं सकी । क्रम क्रमसे कमजोर सही और जैसे ही रियासा-तोपखाना आदिदि दिग्गङ्गाके लायक हुई, ऐसे ही जापानकी पारसे यह युद्ध आरम्भ हुआ । महायुद्ध है ; इसलिये हम एक-सांतने यानी एक परिच्छेदमें इसका एक लिखनेमें सम्मर्ष है । इसमें लिखे हम यह ही कि

भागोंमें विभक्त किये दिये हैं,—पहला भाग २३ वीं अगस्तसे २८ वीं अगस्ततक ; दूसरा भाग २९ वींसे ३१ वीं अगस्ततक और तीसरा भाग १ तो से ३ ही अगस्ततक समझिये ।

पहले ही लिख चुके हैं ; कि जुरोकीकी सैन्यके सामने रूसकी कुनी हुई युरोपियन सैन्य थी। इस सैन्यके सेनापति कैलरके निहृत होनेपर रूस-रूस युद्धमें अपूर्व पराक्रम प्रकाश करनेवाले प्रथितयशाः वयोवृद्ध रूस-सेनापति इवनाफपर इस सैन्यको परिचालनाका भार रखा गया था। आप खियाव्याङ्गकी शाहराङ्गके उस आनपिङ्ग नगरको अपनी केन्द्रस्थल बना कोई पैंसठ हजार सिपाहियों और एक सौ बीस तोपोंके साथ जमे बैठे थे। आनपिङ्गके सामने रूसी मोरचेकी लम्बाई कोई पांच कोसकी थी। इनमें तीन मोरचे तीन ओरके केन्द्र थे। हुनशा लिङ्गका मोरचा रूसी फौजके बायें किनारेका केन्द्र था, आनपिङ्गसे कुछ आगेका कङ्गनलिङ्गका मोरचा रूसी फौजके मध्य भागका केन्द्र था और ताशीकीका मोरचा रूसी फौजके दाहिने किनारेको केन्द्र। रूसके इन तीनों केन्द्रोंके सामने जापान-सेनापति जुरोकीकी तीन सैन्य थीं। जुरोकीकी सैन्यका दाहिना बाजू हुनशालिङ्गके सामने था, मध्यभाग कङ्गनलिङ्गके सामने और बायां बाजू ताशीकीके सामने ।

२३ वीं अगस्तको प्रायःकाल जापानकी वृष्ट तीनों फौजें धीरे धीरे आगे बढ़ीं। रूसके गिरदावरीके खारों और चौकियोंने बाधा देनेकी चेष्टा की ; किन्तु उत्तम गजेन्द्र क्या तटस्थकी बाधा मान्न सकता है ? वायुके झोंकेसे निस्ततरह खाक उड़ती है ; बढ़ती हुई जापानो सैन्यके सामने पड़ उसीतरह

रुही गिरदावरोके मन्वर और चौकियां उड़ गईं । जो दुरोपियन
दिपाही श्वनक जापानियोंको 'पीला बन्दर' आदि समझते थे ;
वह जापानियोंका प्रघणप्रनाप देख जापानियोंसे भीत हुए ।
मन्वर रुही मोरचेमें खबर फैल गई, कि भावधान,—जापानो
लणकारने चढ़ाई आरम्भ की है ।

इसतरह रुहियोंको पीछे घटा कुरोकीकी गैलके तीनों
टुकड़े रुही मोरचोंके सामने पहुँचे । कोई टुकड़ा रुही मोर-
चेके सामने २४ वींको पहुँचा, कोई २५ वींको और कोई
२६ वींको । इससे पहले उक्त खशोम्य कोई युद्ध नहीं हुआ ।
रुही मोरचोंके सामने पहुँच सबसे पहले कुरोकीकी सेनाके
मध्यभागने कल्लगलिङ्गपर आक्रमण किया । कुरोकीकी सेनाका
मध्यभाग २५ वीं वीं रात को कल्लगलिङ्गके सामने पहुँच गया ।
प्रातः हीको रण-सङ्घातोंके प्रकाशने कल्लगलिङ्गके रुही तोप-
खानोंके सामने जापानी तोपखाने लगा दिये गये । जगह जगह
आक्रमण-कारनेवाली जापानी फौजे' बेटा री गईं । २६ वीं
प्रातःका प्रातःका ही तीन बजे, रातिकी निस्तब्धता एकाएक
भङ्ग हुई ; एक जापानी तोप हगी ; रुही मोरचेपर गोला प्रड़ा ;
कल्लगलिङ्ग पर्वतकी शान्ति भङ्ग हुई ; कल्लगलिङ्गके रक्षितके
पार्ष्वेय अङ्गल प्रतिध्वनित हुआ । इसतरह लिमावशाह महा-
बल आरम्भ हुआ ।

पहला गोला चलनेके बाद ही रुही मोरके तोपखानेकी सुँद
खल गये । आवाजसे जैसे उल्लासत होता है, ऐसे ही रातिकी
उध धीरे आन्धकारमें तीक्ष्णवृद्ध वड़े वड़े भयङ्कर गोलोंके रुही
और जापानी मोरचोंपर डराने लगे । घनाभावा - घनाभावा-

ना—घनानाना,—विराम नहीं था; विश्राम नहीं था; अवि-
राम गोला-वृष्टि होने लगी थी; अविराम तोपोंका विकट
गर्जन होने लगा था। इस महाध्वनिके उत्थानसे सर्पादि जीव
भागकर विलोमें धुस गये; हिंस जन्तु रणस्थलसे दूर भागे, पत्नी
भववश अपने रातभरके वस्त्रोंकी जाड़ भी रद्द न सके और
प्रातःकालका अन्वकार रहनेको बगह उड़कर धुंधला भाग भी
नहीं सके। रणभूमिमें युद्धारम्भकर दोनो शक्तियोंने प्रकृति
देवीकी प्रत्युषकी स्वर्गाय शान्तिमें घोर विवृद्धला उप-
स्थित की।

क्रम क्रमसे रात्रि बीती प्रभात उपस्थित हुआ। पूर्वगगनमें
रक्ताभ सूर्यके सम्मानार्थ रङ्गीन बादलोंका सिंहासन विद्याया।
बाल सूर्य सुस्फुटते हुए ऊपर चढ़ उस सिंहासनपर आसीन
हुए। उनकी लाल ज्योतिसे पर्वत खाल हुए, वन लाल हुए,
नदी-नाल खाल हुए;—उनके रक्ताभ किरण-जालसे तोंपं लाल
हुईं, पन्धके लाल हुईं, तलवारें लालहुईं, सङ्गीने लाल हुईं;
सूर्यकी लालिमाने टणान्हादित हरिद्वर्ण रणभूमिकी लाल बना
दिया; युद्धके लिये प्रस्तुत सिपाहियोंके मुखमखल लाल बना
दिये। इस लालिमाकी देख रणपट्टीके मनमें कितना हर्ष उत्पन्न
हुआ होगा?

सूर्योदयके साथ साथ रक्षाशक जापानी तोपोंके सुंह बर-
हुए। अफसरोंके घोड़े इधर-उधर दौड़े; विगुल बजे; अफ-
सरोंकी तलवारें स्थानसे बाहर निकल पड़ीं। वेरु बाजा बज-
लगा; रणोत्सु द्यौहा वेरुकी आवाज सुन रणके लिये और भ-
रपुत्र हुए। ऐसे समस्त जापानी सैनिकोंके मध्यमागकी आ

वृद्धको व्याघ्र मिली। कञ्जलिङ्ग पर्वतमाशाने सामने एक
 बहुत बड़ा मैदान था; मैदानके द्यौरपर वन था। अथतक जापानी
 सैन्य इसी वनमें थी; जैसे ही उसे आगे बढ़नेकी आज्ञा मिली,
 वैसे ही वह एक विशाल अर्द्धचन्द्र पंक्तिमें वनसे बाहर मैदानमें
 निकली और कञ्जलिङ्ग पर्वतमाशाने और डबल मार्च करती
 यानो फिरी करर दौड़ती चली। इस बढ़ती हुई जापानी सैन्य-
 पंक्तिके लिये खूबी गोले तुच्छ थे; गोलियां कङ्कड़-पत्थर थीं;
 कितने ही जापानी सिपाहों मैदानमें टेर हो गये; किन्तु उस
 आगे बढ़ती हुई सैन्य-पंक्तिकी अग्रगतिमें कोई बाधा उपस्थित नहीं
 हुई; वह बराबर आगे बढ़ती ही गई। जैसे जैसे कञ्जलिङ्गकी
 तराई समीप होती गई, वैसे वैसे जापानी सैन्य-पंक्ति उसको घोर
 अधिकसे अधिकतर वेगसे बढ़ती गई। अन्तमें जापानी सैन्य-
 पंक्ति पर्वतमालके तलदेशमें पहुँच गई। वहाँ पहुँच उस
 सैन्य-पंक्तिकी प्रत्येक सिपाहीने कण्ठसे कण्ठ मिला हर्षध्वनिकी।
 वह गगनभेरी हर्षध्वनि आलौकिक थी; उससे दिशावे ध्वनित
 हुई; खुशियोंके हृदय आप ही आप हिल गये।
 ऐसे समय घोड़ोंकी टापोंका आवाज आई और वजनी
 गारियोंके दौड़नेके श्रविकी छिड़ी। जापानी तोपखाने एकाएक
 फटते निकल मैदानमें आये। पहले छीमे की जगह तोपखानोंके
 शिष्टे विहिंस को गई थी, उन जगहानें जापानी तोपखाने लगा
 शिष्टे गये। कहते हैं, कि एक समय जापानी तोपखानोंने
 एक बहुत ही बमोप जापानी तोपखाने लगा गये। एक
 और किम समय जापानी तोपखाने लगा गये।

देशमें पहुँच रही गोलोंकी मारसे रक्षा या आगे बढ़नेके लिये दम ले रही थीं; दूसरी ओर उन्ही समय जापानी तोपखानोंने अपने नये मोर्चोंमें लग रही तोपखानोंपर गोलान्दाजी आरम्भ की। इस अवसरमें रूसी तोपखाने निरस्त या निकम्मे नहीं थे; पहले बढ़ती हुई जापानी नैन्द-पंक्तिपर; इसके बाद बढ़ते हुए जापानी तोपखानोंपर अपने गोले बरसा रहे थे। अबतक जापानी तोपोंका मुँह बन्द था; इसलिये रूसी तोपखानोंको और भी पराक्रम प्रकाश करनेका अवसर मिला था; किन्तु जैसे ही जापानी तोपखानोंने समीप पहुँच रूसी तोपखानोंपर गोला-वृष्टि आरम्भ की, वैसे ही रूसी तोपखानोंकी आवाज धीमी पड़ गई। जापानी गोले बड़े ही भयङ्कर थे; विशेषतः इस समय जापानी तोपों द्वारा चलते हुए आपनल गोले और भी भयङ्कर थे। उनकी चोटसे रूसी गोलान्दाज उड़ने लगे; रूसी तोपोंके सामनेकी घुस उड़ने लगी; कज्जनलिङ्ग पर्वतमालाकी छाती फटने लगी। कई घण्टेतक ऐसी ही भीषण गोलान्दाजी हुई। इस गोलान्दाजीके फलसे कज्जनलिङ्गकी देहपर लगे कितने ही रूसी तोपखानोंके मुँह बन्द हो गये; कितने ही रूसी तोपखानोंका गर्जन बहुत कुछ घट गया।

अब दिन चढ़ गया था। सूर्यदेव; वह प्रातःकालके सूर्यदेव नहीं थे। इस समय उनकी रश्मियाँ अत्यन्त तोच्छा हो गई थीं; उनका तेज नितान्त अस्थिर हो गया था। ऐसे समय एकाएक फिर कज्जनलिङ्गके तलदेशमें बैठी जापानी फौजकी आगे बढ़नेकी आज्ञा मिली। कज्जनलिङ्ग पर्वतमालाके पादमूलसे अत्यन्त सुविधातुल्य जगह पर रूसी फौजे बैठी थीं।

यह नव मौजें युद्धके लिये तय्यार बैठी थीं। जापानी सिपाहियोंके आगे बढ़नेको आज्ञा प.ते ही सबसे पहले अपनी बरदियां उतार पेंकीं; जयन्तापको बजह जापानी सिपाही पछीने दखीने हो गये थे; बरदियोंको भी गर्मी उनसे सह्ये जाती नहीं थी। दिवा इसके इस बार सम तल भूमिपर आगे बढ़नेका काम नहीं; एक खुदे पर्वतपर चढ़नेका काम था। बरदियोंके साथ सिपाहियोंके बितने ही प्रयोजनीय साज-सामान होते हैं; उन सामानोंका बोझ होता है; पर्वतपर चढ़नेके लिये तय्यार जापानी सिपाही अपनी बरदोंके साथ साथ यह साज-सामान भी पक बचत युद्ध चलते हो गये। खासो बरदोंके जापानी सिपाही अब खीनकर-छारी हो गये।

बरी उतार शुरू होयते ही जापानी सिपाहियोंके घोर जणधरिपूर्वक पर्वतपर चढ़ना आरम्भ किया। जैसे ही जापानी सिपाही पर्वतपर चढ़े, वैसे ही पर्वतपर बैठे रहनी मौजने जाणनियोंपर गोली-हाथ आरम्भ की। सहस्र सहस्र खण्डियोंकी बन्दूकें एक साथ दगने लगीं। खण्डियोंकी यह भीषण गोला-हाथ जैसे जापानियोंके दौड़ते-गाते साथ आगे बढ़ना आरम्भ किया। जहानारों चोटते, झोटी छोटी भाइयोंको पीटते यह सब आगे बढ़ने लगे। जापानी सिपाहियोंका ही एक स्थली मोरचोंकी समीप पहुँच गया; उधर सिन्धी सुरक्षित स्थानों आर प्रकट रहने सिपाहियों पर मोटी बरदान आरम्भ किया। कुछ दूरतक ऐसा ही रह गया। कम कमसे कम जापानी मौजें रहने मोरचोंकी समीप पहुँच गयीं।

इस जगह कुछ देर विश्राम लेनेके उपरान्त जापानी सिपाहियोंने मिलकर एकवार फिर वही गानभेदी रणङ्कार किया । इसके उपरान्त जिसतरह घोर शिकारपर भाग्यता है, उसी-तरह जापानी फौजे रूसी मोरचोंपर टूटीं । पलक भ्रष्टते रूसी और जापानी सिपाही भिड़ गये ; तलार, सङ्गीन, छुरे, तपचे आदिकी लड़ाई आरम्भ हुई । हताहतोंकी देहसे रूसी पद्वारे छूटने लगे ; मार मार और हाथ हाथकी दिक्काहटसे बड़ा शोर हुआ । जापानी सिपाही मानो पीछे हटना या रुकना घातते ही नहीं थे । एक जापानी सिपाहीके गिरनेपर अनेक जापानी सिपाही आगे बढ़ते थे । रूसी सिपाही आज प्रथित 'पोले बन्दर' को सामने पा उसका पराक्रम देख स्तम्भित हुए थे । जापानियोंकी मार देख जापानियोंके प्रतिकार प्रत्याभाव भयमें परिणत हो गया था । जापानियोंको रोकना आसान नहीं था ; उन्हें जो रोकनेके लिये आगे बढ़ता, वही मारा जाता । अथवा रूसियोंको आगे बढ़नेकी जरूरत ही नहीं थी ; जापानी स्वयं ही आगे बढ़ रहे थे । कुछ देरतक इसीतरह लड़ाई चली ।

सड़ते सड़ते एकाएक जापानी सिपाहियोंने एकवार फिर हर्षनाद किया और प्रसन्न उठा रूसी सिपाहियोंमें जोरशोरके साथ घुस पड़े । विकट युद्ध आरम्भ हुआ । जिनो जापानीने किचो रूसीके सङ्गीन भोंक दी ; रूसीने भी पलते चलाते जापानी सिपाहीकी छार्वापर तपचे की गोली सर की ; दोनों एक साथ सरकर घराघायी हुए । युद्धमें सब कुछ होता है । किसी रूसीने भ्रष्टकर जापानी सिपाहीपर तलवारका नार किया ; जापानी

सिपाहीने वार बचा रूसी सिपाहीकी गरदन पकड़ समीपपर गिरा उनकी छातीमें तीज्जाधार घुरा घुसेड़ दिया । किन्तो जापानीने आगे बढ़ तलवारकी एक ही चोटसे किसी रूसीका फिर उड़ा दिया ; उस रूसी सिपाहीकी वैशिरकी लाश एक क्षणतक जर्हाकी तर्हा खड़ी रही ; इसके बाद एकाएक सम-सगाकर गिरी । किसी जापानी अपसरने रूसी अपसरकी टोका,—खड़ा रह ! कहां जाता है ? रूसी अपसरने वार किया ; जापानी अपसरने वार खाड़ी दिया और तपस्के एक ही वारसे रूसी अपसरकी खोपटो चकनाचूर कर दो । इसतरह कदम बदसपर और आगे-पीछे दाहने-बाये नृत्यकी विद्वट कीला देख सिपाही ज्ञानशून्य हो गये । वह चौख चौखकर सुंघसे मार मार करते ; किन्तु अपने सुंघकी निकली उस चौखकी चाप ही सुन न सकते । किन्तु ही सिपाही युद्धकी ज्वालासे कातर हो उठे ; उनकी जीभ सूख उनकी तालूसे रुग गई ; उनकी आंखें गाचने लगीं । कुछ देरतक इसतरह भी युद्ध चला ।

अन्तमें इस युद्धानलकी समाप्ति हुई । जापानी सिपाहियोंने दताहत रूसी सिपाहियोंसे उनके मोरचे भर दिये । बहुसंख्यक रूसी सिपाही मारे गये । कहीं कहीं दताहत रूसी सिपाहियोंकी देखके छोटे छोटे टीले तय्यार हो गये । नृत्य सामने भा बड़े बड़े वीरोंकी छाती दहलती है ; जापानियोंकी सामने पा दताहत होनेसे बचे खदियोंकी छाती दहलने लगी । बन्दूक छूट गई ; निशाण छूट गया ; कारतूस छूट गये ; टोपी छूट गई ;—सब छोड़ एकमात्र प्रिय प्राण से रूसी जापानियोंकी भासने भागनेसे लगे । पहले दश पांच भागे ; फिर पचीस पचास

भाग; फिर सौ दो सौ भागे;—फिर तो भागड़ रान्त जापानो सिपा-
 नहस रूसी भागे; ऐसे समय जापानिही रण इङ्कार किया ।
 हुङ्कार हुआ; रूसी और भी फुरतीसे पर भापटता है, उसी-
 जापानियोंके सामने भागते हुए रूसि- टट्टीं । पलक भपकते
 देने लगी ।

जिसके पैर उठ पाते हैं, उसके पैर फिर नहीं च. नके
 रूसियोंके एक मोरचेसे उठे पैर क्रम क्रमसे. हरेज मोरचे
 उठते ही गये । सिव इनके जापानी रूसियोंके पीछे ही पीछे
 थे; वर रूसियोंको तनिक भी ठहरने देते नहीं थे । जो रूसी
 तनिक भी ठहर पाते थे; जापानी उन्हें तुरन्त मार-काट धर
 प्रायी बना देते थे । जैसे शीघ्र शीघ्र चढ़ता समुद्र जल शालीक
 शतम पर चढ़ता है, उसीतरह जापानी सैन्य पर्वत-शिखरपर
 चढ़ती गईं । पर्वत-शिखरपर जगह जगह रूसकी राजपता-
 कावे सदमम गिर उठाये वायुमें फर फर प्रहरा रही थीं । एक
 दल जापानी सिपाही शीघ्र शीघ्र पर्वतपर चढ़ ऐसी ही एक
 रूसी पताकाके समीप पहुँच गये । जापानो सिपाहियों और
 उड़ती हुई उस पताकाके बीच बहुत ही छोड़े रूसी थे ।
 जापानो सिपाही अधीर हुए; जो रूसी सिपाही उनके सामने
 थे, उनपर बाजकी तरह भपटते । कितने ही रूसी काट गये ।
 कितने ही प्रायः वे भागे । जापानो सिपाहियोंने कोई बाधा
 सामने न पा भपटकर उभ उड़ती हुई रूसी पताकाको गिरा
 की जगह अपनी राज-पताका स्थापित की । राजपताका
 उतर उन सुद्वीभरे जापानियोंने मिलितकाण्ड और अपनी
 शक्ति और आन्तरिक उत्साहसे ध्वनि की,—“वेनजई—

सिपाहीने वार वचा गिरा छीनेपर भी रुड़ा छी तीछर घी । नमग्र गिरा उसकी छातीमें ते दुस उनको नम नमने दुस गई । रुड़वार जापानीने आगे बढ़ तलदेचने दृष्टि की ; जान पड़ा मानो धिर उड़ा दिया ; उस न चिन्ताकर कोई बात कही । इस दृष्टक के उपरान्त नमग्र जापानी मैचने रूपट कदमलिङ्ग मगधतमाजाके शिखरदेशपर औरने छोरतक अद्विचार कर लिया । ते रुके उपरान्तवा हाल विलायतके 'हेली मैच'के संवादज्ञानने अपने तारने लिहा था,—“मानो मगध-वहमी उवाचक दण्डलिङ्ग पर्वत-शिखरकी व्याप रुनी धजाये उतर नई छोर उगदी जगद जापानी धजाये उरने लगे ।”

जिह पुरतीसे जापानी सिपाही पर्वत-शिखरपर चढ़े ; उसकी अपेक्षा कही अद्विच पुरतीसे रुनी सिपाही दण्डलिङ्ग पर्वतमाजाके नीचे उतरने लगे । एत जापानी सिपाहियोंके रुनी सिपाहियोंका पीछा छोड़ पर्वतशिखरपर ठहर उतरने हुए रुनी सिपाहियोंपर गोलियोंकी दौवार आरम्भ की ; जापानी सिपाही पर्वतके एक पार्श्वमें जो कुछ गंवा हुये थे ; एव हुकरे पार्श्वमें बढ़ उसकी पूर्ति करने लगे । एत जादर रुदियोंके वही क्षति हुई । आतपिङ्ग नगरके हनीम कितती ही लंसी पहाड़ियोंपर रुनी तोपखाने लगे थे ; रुदियोंके पर्वत-शिखर परित्यागकर भागनेपर एत तोपखाने पर्वत-शिखरपर बैठे जागदियोंपर गोलि बरसाने लगे । इतके रुदियोंके भागनेने बहुत कुछ रुदिया हुई । अगमित रुनी सिपाही प्राय वचा उरने तीर-खार्कें पीछे आतपिङ्ग नगर निर्विघ्न पहुँच गये ।

जापानी मैचके मगधमाजा जाये रेली ही हुवा एत

हाहने और वाये वाजूके कामका हाल सुनिये । जापानके वाये वाजूने इसी २६ वीं अगस्तको अपने नामके नुसी मोरचेके केन्द्र-स्थल ताशीकी या कौफेङ्ग्यूपर आक्रमण किया । प्रातःकांठ पहुँचे कौई ही घण्टे तक होगे औरसे खूब गोचे चले । जापानी सैन्यका मध्यभाग जिस जगह था, उस जगहसे कौफेङ्ग्यू बहुत फासिलेपर था ; फिर भी, कौफेङ्ग्यूकी गोलन्दाजीकी आवाज उस जगहसे साफ साफ सुनाई देती थी । इतना ही नहीं ; जापानी सैन्यके मध्यभागमें अवस्थित विनायत के अखबार टाइम्सके संवाददाताने लिखा है,—“कौफेङ्ग्यूसे बहुत फासिलेपर रहनेपर भी वहाँकी भीषण गोलन्दाजीके फलसे वायु-मण्डलमें विषम चलचल पड़ गई थी ; वैद्युतिक प्रवाहकी तरह वायुकी थर्रातो हुई लहरें प्ररीरकी जाती थीं ।” दो घण्टेकी ऐसी ही भीषण गोलन्दाजी के उपरान्त जापानी फौजे कौफेङ्ग्यूकी ओर बढ़ीं । रुच्चगलिङ्गवाये युद्धकी तरह यहाँ धावा नहीं हुआ । यहाँ आगे बढ़नेकी आज्ञा पा वड़े ही सतर्क भावसे छोटे छोटे दलोंमें विभक्त हो जापानी सैन्य आगे बढ़ी । निरी पार्वत्य भूमि थी ; इस भूमिने सिपाहियोंका प्रतिक बांध आगे बढ़ना कठिन था । रूसी निपाही हरेक पहाड़ी, टोले आदिके पीछे छिपे बैठे थे ; जापानी निपाही आड़से उनपर पहने गोलियों वरसाते और जब उनके बल ही था इ पा घाते, तब एकाएक धावाकर उन्हें न्याय्य न करके । बहुत धीरे धीरे युद्ध हुआ ; इसलिये जापानी फौज सम्मानक वद्यपि कौफेङ्ग्यूके समीप पहुँच गई, तथापि उस नम्रवतत उसपर अधिकार कर नहीं सकी । सम्झा होनेपर जापानी फौज जिस जगह चो थी ; शक्ति विश्रामके लिये उनी जगह ठहर गई ।

जापानी सैन्यने मर्यादा बिना, कि रात्रिको यहाँ विनामन्त्र प्रातःकाल इहारमन करना छोडा ; किन्तु जागे लन्कर पाठक प्राय ही देख लेंगे, कि जापानियोंको यह कामना बड़ातरक मरण हुई ।

जापानके बायें बाजूने इस दिन इतना ही काम किया । जब यह देखिये, कि इस व्यवहारमें कुरीकीको सैन्यके बाहरके बाजूने कितना काम किया । २६ वीं अगस्तको प्रातःकाल जिसपरक लनको सैन्यका बायें बाजू चौपे झूमने और बड़ा, उमीकरक दाएना बाजू रहने सैन्यके बायें बाजूके बन्दरगाह दुनडागिरकी और बड़ा । इस और सन्धिवाली पौजे काम मर्यादा ही : गिरि-शिखरपर लगे कितने ही तोपखाने थे । जापानी सैन्यके वन-पर्वतका प्राथम्य के इन तोपखानोको और बड़की ही और यह तोपखाने जपनी पूरी शक्तिके साथ जापानी पौजापर भी बरकते थे । दिनभर रेंगा ही रह गया । जापानी पौजे दिनभर और

जापानी अफसरोंने खयाल किया था, कि रात कोड़े घास न होगा; किन्तु ऐसा, नहीं हुआ। चाँदनी रात थी; वन-पर्वतमें खूब प्रकाश फैला हुआ था। रूसियोंने खयाल किया, कि जापानी सैन्य इस समय खुले मैदानमें पड़ी है; उसपर एकाएक टूट उसे मार भगाना चाहिये। ऐसा ही स्थिरकर कौफेज़्मू और हुमशाक्तिङ्ग दोनों वाजुओंको रूसी फौजे अपनी अपनी जगहसे निकल आगे बढ़ीं। दोनों वाजुकी जापानी फौजे अरचित रहनेकी वजह युद्धके लिये पूर्णरूपसे प्रस्तुत थीं। जगह जगह सन्तरी थे और सिपाही भरी बन्दूके अपनी बगलमें रख पूरी बरदोमें घासके फर्शपर सोये थे। वन्द-प्रकाशमें जापानी सन्तरियोंको रूसी फौजे दूर होसे आती दिखाई दीं। सन्तरियोंने तुरन्त जापानी फौजको सावधान किया। जापानी सिपाही बन्दूके ले उठ बैठे और आगे बढ़ रूसियोंके समीप पहुँचनेकी प्रतीक्षा करने लगे। रूसी बहुत ही धीरे धीरे आगे बढ़ रहे थे; उन्हें खबर गड़ी थी, कि जापानी फौजे उनके बहुत ही समीप पहुँच गई है। रूसी फौजे जैसे ही और कुछ कदम आगे बढ़ीं, वैसे ही उनपर जापानी सिपाहियोंकी गोलियाँ बरसने लगीं। गोलियोंकी इस दृष्टिसे आकुल हो चार बाढ़ हाग रूसी भागे। जापानी फौजके रूसी दाय दाय सुव्यवसर लगा; वह पयध्वनि बरती भागती हुई फौजके पीछे पीछे चली। पहले जापानी सैन्यके बाधे वाजुका कार्य सुनिये। यह वाजु भागते हुए रूसियोंके पीछे पीछे चला। रूसी तोपखाने अपनी भागी आती सैन्यको जति पहुँ-
 की आशङ्कसे विजङ्गल ही चुप थे। जापानी सैन्यकी अग्र-

मतिमें बाधा देनेवाला कोई नहीं था। खुसी मौज थी, वर
 वेतप्राणा भाग रही थी। खुसी मौज भागकर अपने मोरचामें
 पहुँची; वहाँ ठहरकर वह अपने पीछे जादेवाने जाणतियोंसे
 कुछ करमेके लिये खकी; किन्तु जापानी फौजने उसे चलने न
 दिया। जापानी फौजके व्यवहार जयध्वनिकर थावा करते ही
 खुसी पाण अपने मोरचें छोड़ फिर भागी। जापानी फौजने फिर
 पीछा किया। इसके उपरान्त किसी भी मोरचेंमें खुसी फौजने
 पैर न टवरे। कुछ तोपखाने भागे--खुसी फौजें भागी; खुसी
 चले थे जापानियोंको भगाने; किन्तु इनके पक्षमें प्रत्या ही
 सुदृढ़ मोरचा खो बैठे। रात हीकी कौपेद्वयपर जापानी तोपका
 अधिवार ही गया। जिस जगह खुसी धजायें उड़ने लीं,
 उस जगह जापानी धजायें उड़ने लगीं; शीघ्र ही पूरा पूरा
 जापानी धजायोंपर सुधा-हरि बरने लगे।

एक प्योर पर हुआ; दूसरी प्योर यानी चुम्बानिष्ठके सैन्यमें
 विपलासनोरप ही भागती हुई खुसी फौजका और भी बुरा हाल
 हुआ। एक प्योर खुसी फौज जब जापाने लगी, तब जापानी सैन्य
 जयध्वनिकर लगपर टूट पड़ी। कुछ हिनके लिये बखरी लड़ाई
 हुई। बहुतरे खुसी मारे गये। इनके जापानियोंके गले से
 किसी तरह निकल खुसी बड़ी ही वेतरतीको और घबराहटके
 साथ भागे। खुसी तोपखाने नसभतें थे, कि उरके सिगरी
 उरकी रक्षा करेंगे; किन्तु थोड़े थोड़े विपारी एक बन्दर धन्ती
 ही रक्षा करनेमें असमर्थ थे, पर अपने तोपखानोंको रक्षा रोके
 बर सवतें थे। एतनेमें खुसी सिगरीमेंही इतित भागइ
 कुछ खुसी मोरचालोंकी लानिं सुली; पर एक बन्दर बन्दर

मोरचोंसे अपनी तोपें हटाने लगे। कुछ तोपखाने हटा दिये गये; कुछ बाकी थे; ऐसे समय जापानी सिपाही तोपखानोंपर टूट पड़े। एक रूसी तोपखानेमें आठ तोपें थीं। जापानी सिपाहियोंने इसे सामने पा भीमवेगसे इसीपर आक्रमण किया। तोपोंके रक्षक और गोलन्दाज काट डाले गये; समूची बेटरी, यानी आठो तोपोंपर जापानियोंका अधिकार हो गया। बाकी तोपें रूसी निकाल ले गये। इसके उपरान्त जापानी सिपाहियोंने हुनशालिङ्गके रूसी मोरचोंपर अधिकार कर लिया। जिसतरह कौफेङ्ग्यूमें उबीतरह इस हुनशालिङ्गमें भी रूसी ध्वजाओंकी बदले जापानी ध्वजायेँ चन्द्रप्रकाशमें फर फर फहराईं। इसतरह जो बात सभ्यताक नहीँ हुई, वही बात २६ वीं की रातको हो गई। २७ वीं अगस्तको प्रातःकालसे पहले जापानने रूसके दाहने बायेँ और मध्य तीनों भागोंपर अधिकार कर लिया। कुरोदीको सैन्य-पंक्तिने रूसी सैन्य-पंक्तिको एक कदम और पीछे हटा दिया।

२७ वीं अगस्तको सूर्यदेवने उदित होकर देखा, कि युद्ध-स्थलमें बहुत बड़ा परिवर्तन संघटित हुआ था। कल जिस जगह रूसी मोरचे थे, आज उस जगह जापानी जमे बैठे थे। पराजित रूसी फौज पीछे हट रही थी। जापानी फौजके मध्यभागके सामने दूरसे लियावयाङ्ग नगर भलकता था। वही नगरमें इस रूसी सैन्यका खदर था। इस नगरकी बगलसे कोरिया और लियावयाङ्गके बीचकी शाहराह थी। यह नगर एक घाटीमें अवस्थित था; रूसीलिये इसकी एका ओर बड़ी कचनलिङ्ग गिरिमाला थी और दूसरी ओर गिरिमालाकी उपान्तराज्यमें गहरी लकड़ी

नदी घाटी, जो मध्य मध्यूरियाली और कुछ दूर बह गियाव्याङ्ग नगरके समीप बहुत बड़ी नदी तल्लिचोने मिल गई थी। बहुत-लिङ्ग गिरिशिखरपर चढ़नेसे इस बाड़ीका दृश्य दिवङ्ग दिखलाई देता था। खुसी मौज बन्दनलिङ्ग पर्वतमाथे भाग गियाव्याङ्ग ही बगलकी पहाड़ियोंके सिद्धिचोपर लोपकाने लगाये बैठे थी। जापानी मौजका मध्यभाग खुसी मौजकी समीप इस दूसरे मोरसे भी घटानेके लिये छ्यार हुई। तीसरे कुरोकीने शायद अपने अधीनाए अपनोंको छाया दे दी थी, कि आज २० वीं अगस्तकी दूसरा बहुत बड़ा बाम आनन्द नगरपर बबजा होना चाहिये।

पिछली रातसे बङ्गलिङ्ग पर्वतपर और लखे भी जागरी एक छोटी पहाड़ीपर जापानी तापखाने लगा दिये गये थे। लखे ही सिद्धा प्रकाश बढ़ा, देखे ही जापानी तोपोंके सुँद सुँद; खुसियोने भी आपने तोपोंसे जबाब देना छारकर दिया। जापानी गोलन्दाको बहुत ही खस्त था; खुसी बूक आशाने छेड़ आनन्द नगर खालीकर तह ही पार ही जागरी थापोजे करके लगे।

बिस्व समय यह बातें हो रही थीं, लख समझ गियावली बख्तार टारमूके संवाददाता जापानी गियाखियोंके बीच एक गिरि-शिखरपर बैठ बृहस्पलकी और पूरवत जागरी बन्दन दिशा बकरदिये सुह देहनेकी चेष्टा कर रहे थे। इस चेष्टाका भी भय हुआ, आपने उसे इतरर लिखा है;—

“तीसरे छेड़पर एकएक नरे बाननेया इत्या आन
रुणा; बाटी थाप दिखलाई देते जागे। जापानी तोपोंके तोपे

दूरकी उन राहोंपर बरस रहे थे, जिनसे पराजित रूसी सिपाही खौट रहे थे। कहीं कहीं अबतक धुंधलका छाया हुआ था। ध्वज एकाएक तेज वायु-प्रवाह आरम्भ होनेसे वायुके झोंकेने धुंधलकेको धके दे वहाँसे दूर कर दिया; धुंधलका क्या मिटा,—एक परदा हटा। सामनेकी सुविस्तीर्ण घाटीमें एक बह दृश्य दिखाई दिया, जो आजकलके किसी बड़े युद्धके लिये उपयुक्त था। घाटीमें आनपिङ्ग नगरकी बगलसे तङ्ग हो नदी बह रही थी; इसके किनारेका लम्बा-चौड़ा मैदान अगणित सफेद खीमोंसे सजे-हूँ रहा था। इन खीमोंके बीच बीचकी राहोंमें बार-बारदारीकी गाड़ियोंकी कतारें खड़ी थीं और शीघ्र शीघ्र डेरे-खीमे उखाड़े और गाड़ियोंमें खादे जाते थे। लियावचा झकी घोर जानेवाली आह-राह भरी हुई थी। इस राहसे बार-बारदारीकी गाड़ियोंके तांसे जा रहे थे; रिखाले जा रहे थे; तोपखाने जा रहे थे; सिपाही जा रहे थे। आनपिङ्ग नगरसे आगे तङ्गहो नदी चमक रही थी। आह-राह पार करनेके लिये इस नदीपर एक बड़ा पुल था, जिससे चौर-चौर हौरपर रूसियोंकी बड़ी भीड़ थी। इस पुलसे आगे रूसी सैन्य कई भागोंमें बंट उसपारकी पहलुओंके बीच-बीच निगाहोंकी छोट हो रही थी।

“कोई साठ हजार रूसी घप्टीमें लौट रहे थे। जापानी तोपखाने नदीके इस पारकी रूसी झौंजोंपर नियमितरूपसे गोले बरसा रहे थे। सन्धा समय एकाएक दाहने चौर बाँधेसे आगे सैन्यने आगे बढ़ना आरम्भ किया। जापानी सिपाहियोंकी बन्दूकोंकी आहूँकी लकी धूम-पंक्ति दिखाई दी; इसके बाद

घी तड़ तड़ तड़ तड़ दाढ़ द्यगि की आवाज आई । नीचे नीचे जापानी पाँच दफ़ती घी ; ऊपर ऊपर जापानी आपना गीते दफ़ते थे । रुखी भी जापानी पाँचपर आपना गीते गाने लगे । जापानी गोलोंका धुंआं स्पेद घा ; रुखी गोलोंका बाबा । घन्तरी सैन्यके बायें भागने रुखियोंकी सूद दशाया । रुखी आगे आगे भागने लगे ; जापानी पीछे पीछे मारने लगे । इन भागलो जापानी पाँजे रुखियोंकी तड़घटी नदीके पृथकी ओर भगा गये थीं । पृथ खतरेमें पड़ा । जापानी पाँच यदि फ़ापर बरका कर लेती, तो रुखियोंके भागनेकी राह बन्द जाती । फ़ापर जमीनकी एक पचाड़ीपर बड़े लोपं कमा और जर्मने में बरका रुखियोंने जापानियोंकी द्रुत गति मगर थी । रुखी पाँच भी पुरतीके खाप नदी पार करने लगे । यह पुरती यहाँपर पड़े, कि रुखियोंने अपने रिवाजेकी धोड़े पैरा नदी पार करनेकी आशा दी । नदीमें मानो अत अत हाथी पैरे । नदीकी धारा बहुत ही प्रहर थी और फल महरा ; कितने ही धोड़े कुड़-कियां खा गये और कितने ही बह गये । रिवाजेने कितने मानेके पुल पार करनेवालोंकी भीड़ बहुत कुछ घट गई । खली सैन्य शीघ्र शीघ्र पार उतरने लगी । एक रातक बादकर इतने भूत हुआ ; रातने मानो लौटते हुए रुखियोंपर खाप परदा जाला ।”

परदा पड़ गया ; किन्तु इती परदेमें बड़े बड़े काम हुए । जापानी सैन्यके दाएने-बायें बाजूके बहनेकी सूचना टाइमनेके घंटे-घांके पूर्वोद्दे ह सुह-बिबरने हीका हुआ है ; रुखीने उतराने जापानी सैन्यका मध्य भागनी खाप बहने लगा । रुखी भाग ही रहे

थे ; और भी फुरतीसे भागने लगे । क्रम क्रमसे जापानी फौजें आगे बढ़ीं । क्रम क्रमसे आनपिङ्ग और उनके पीछेकी तङ्गहो नदी जापानो सैन्यके समीप हुईं । जापानी सैन्य और आगे बढ़ी, रूसियोंके सहर आनपिङ्गमें जापानी सिपाही बसे । आनपिङ्ग नगरके दिशे यह स्मरणीय सन्ध्या थी । नगर मानो प्रसन्नान बन गया था । न कहीं नगरवासी थे ; न कहीं रोशनी थी । मकानोंके अन्दर भी प्रदीप जलते नहीं थे । राहोंमें पलटने और रिखावे चक-फिर रहे थे । नगरके एक फाटकसे रूसी सिपाही निकल रहे थे ; दूसरे फाटकसे जापानी सिपाही नगर-प्रवेश कर रहे थे । अन्तमें रूसी नगर छोड़ गये ; जापानियोंने उसपर अधिकार कर लिया । इसके उपरान्त भी जापानी सैन्यका आगे बढ़ना स्थगित नहीं हुआ । रात होको रूसी फौजें तङ्गहो नदी पार कर गईं ; जापानियोंको रोकनेके लिये नदीका पुल उड़ाती गईं ; जापानी फौजोंके आगे बढ़ नदीतटपर अधिकार किया । इसतरह उस २७ वीं की रातको ही यह पूरी घाटी जापानियोंके हाथ आ गई ।

२८ वीं की प्रातःकाल जापानी फौजका मध्य भाग लजबजकर आनपिङ्गके समीप तङ्गहो नदीके किनारे खड़ा हुआ । जापानी सैन्यके सामने खरसोता तङ्गहो कोई दो सौ गजकी चौड़ाईमें बह रही थी । उसके दूसरा किनारा जलके समीप किसी कदर कांचा रहनेपर भी जैसे जैसे आगे बढ़ा था, वैसे वैसे लंचा होता गया था ; अन्तमें उसने पहाड़ियोंका रूप धारण किया

। इन पहाड़ियोंपर और इनके पीछेके मैदानमें रूसी फौज रात की रात रूसियोंने पहाड़ियों और नदी-जलके बीचके

लगीं; अपने साथ साथ रूसियोंको भी उड़ाने लगीं। रूसी-
 अस्थिर हुए। दूसरा जापानी गोला आनेसे पहले ही एक रूसी
 धुसवन्दीसे निकल भागा। उसके पीछे दूसरा भागा। फिर तो
 तांता लग गया। दलके दल रूसी भागे; जलके समीप मोरचों-
 में जितनी रूसी पलटनें थीं, वही सब धुसवन्दियोंसे निकल भागीं।
 रूसी अपने पीछेके वनाच्छादित उच्च भूभाग या श्यामल पहा-
 डियोंकी घोर भागे। दूर दीवार जैसी खड़ी अब घोर नीलाम
 पर्वतमाशाकी घोर भागधे हुए भूरे रङ्गकी घरदियां डाटे सिपाही-
 जापानियोंको साफ साफ दिखाई देते थे। ऐसे समय नदीतटपर
 यदि अधिकांश जापानी तोपें होतीं, तो रूसियोंकी बड़ी क्षति
 होती। एक ही तोप थी। फिर भी, वही एक ही तोप जिस
 जिस जगह रूसी सिपाहियोंका दल सत्रन देखती, उस उस जगह
 गोले मारती थी। तोपोंकी बड़ी जल्दत देख जापानियोंने कल
 रातके अधिकांश आनपिङ्ग नगरकी बगलकी एक पहाड़ीपर
 अपने तीन तोपखाने लगवा दिये; कुछ फ्रांसिलेपर रहनेपर तीनों
 तोपखाने भागते हुए रूसियोंपर विषम गोलार्पण करने लगे।
 किसी कदर उच्च भूभागकी धुसवन्दीमें बैठी रूसी फौजकी कोई
 ही क्षमनियं अपने लौटती हुई फौजको मदद देनेके लिये अपने
 धुसवन्दीसे निकलीं; किन्तु जापानी गोलोंकी मार खा तुरन्त वापस
 भागीं। नये लगे तोपखानोंके गोलोंने भागतो हुई रूसी फौजको
 बहुत ही क्षतिग्रस्त किया।

दोपहरतक जापानी गोलोंको मारकी वजह नदीतटके रूसी
 मोरचे बिलकुल खासा हो गये; नदीतटके कुछ फ्रांसिलेके मोरचों
 में उनके पीछेकी पहाडियोंपर रूसियोंका अधिकार बाकी

ध्वनि करती आगे बढ़ी । राह खुल गई । अन्योन्य जापानी फौज भी क्रम क्रमसे नदी पारकर ऐसी ही पंक्ति तय्यारकर आगे बढ़ने लगीं । उच्चस्थानमें बैठे रूसियोंको दिखाई दिया, कि अगणित अर्द्धचन्द्राकार पंक्तियोंमें बंटकर जापानी फौज उनकी ओर घटाकी तरह उमड़ी चली आती है । इस घनवटासे बचना कठिन समझ उसके पहुँचनेसे पहले ही रूसी फौजों अपनी जगह छोड़ पीछे खिसकने लगीं :

पाठकोंको सस्रेण रखना चाहिये, कि यह वर्णन कुरोकीकी सैन्यके सिर्फ मध्य या प्रधान अंगका है । जिसतरह यह भाग आगे बढ़ रहा था, उसीतरह इस फौजका दाहना और बायाँ बाजू भी आगे बढ़ रहा था । २८ वीं अगस्तको जिसतरह इस मध्य भागने नदी-जल पार किया ; उसीतरह दाहने और बायेँ बाजूने भी पार किया । इसके बाद उसी २८ वीं अगस्तको जिसतरह जापानियोंका मध्य-भाग अर्द्धचन्द्राकार बूँद बना रूसियोंको पीछे हटाता आगे बढ़ने लगा, उसीतरह जापानियोंके दाहने और बायेँ बाजूने भी आगे बढ़ना आरम्भ किया । रूसी पूर्णरूपसे विध्वस्त हो लियावयाङ्गणी और भाग रहे थे ।

उस सुविशाल जापानी सैन्य-पंक्तिके दाहनेके सेनापति कुरोकीकी कार्यावली लिखी गई ; अब यह देखिये, कि इस क्रममें कुरोकीकी बालके सेनापति नोछू और उनकी भी बालके सेनापति ओजूकी सैन्यने क्या काररवाई की । सेनापति कुरोकीकी सैन्यके आगे बढ़नेके दो दिन बाद यानी २५ वीं अगस्तको ओजू और नोछूकी सैन्य-पंक्तियाँ आगे बढ़ीं । ओजूकी सैन्य-पंक्ति किसी कदर अपने बायेँ यानी कुरोकीकी सैन्य-पंक्ति

वन रूखियोंको भयङ्कर प्रतीत होने लगा ; इसीमें अतः अत—बहुस
 सहस्र—श्रावण लक्ष लक्ष जापानो हुसे हुए हैं ; रूखियोंकी क्या
 दृशा होगी ? आसनेके मैदानमें जहां जहां जापानियोंको वन भी
 भयङ्क दिखाई देतो था, वहां वहां रूखो लीमें गोले चलाने लगतीं
 थीं । फ्रान्स्-राजधानी पेरिस्के अखबार 'जर्नल'के संपादकता
 लुछोविन साहब उस समय रूखियोंकी फौजमें थे । आपने वह
 वटना देख इसी दिन यानी २५वां अगस्तको अपने अखबारको
 समाचार भेजा था,—“सामनेके सुविस्तीर्ण भूभागकी पनाइट
 ऐसी थी, जिससे वह सगका सब पूर्णतया दिखाई देता था ।
 रूखी गोले अपने तोपखानोंसे निकलते और सामनेके घामान-
 अधिष्ठत वनपर पहुँच फटते साफ साफ दिखाई देते थे ।
 जैसे जैसे सन्ध्या सन्धीप होती गई, जैसे जैसे जापानी फौजे
 वनके भीतर भीतर रूखी मोरचोंके लक्ष्मीप होती गई ;
 रूखी भी वैसे ही जैसे घोर बुद्धकी लिये तयार होते गये ।
 घामानघानघन पहाड़ीकी चोटीपर रूखी तोपखाने थे ; तोपखा-
 नेसे नीचे रहा लम्बी पंक्तिमें तुने हुए गुलचले थे ; उनके
 कुछ नीचे और उनकी ऊँची जैसी आनी पंक्तिमें रूखी
 पकटने थीं । दोनों ओरसे घोर बुद्धकी तय्यारियां हो रही
 थीं ; ऐसे संशय ह्राये हुए वादल सदासदा सघन हो
 गये और स्रग्भयप्रार वादिर्वाष्ट करने लगे ।”

श्रावण रात होको बुद्ध होता ; किन्तु उस होती हुई
 विषम दृष्ट और उसको फलसे उत्तम उस प्रगाढ़ अन्धाकारमें
 रक्षनीने त्रिकट-दृष्टान वन उन बुद्धस्थलमें अवस्थित खूनकी
 गहरी मानव-जातिको अपना भीषण कार्य आरम्भ करने

घरंघर-नन्दर-सुखदन रेल गई थी; वतनेमें उनके नामका रेल-स्टेशन था। पचाड़ी छोड़नेके उपरान्त रेली फौज जब यह नगर छोड़ने लगी, तब इसके रेल-स्टेशन और मुख्य मुख्य इमारतोंको व्याग लगाती गईं। नगरमें जगह जगहसे धूमपटल उत्थित हो आकाशमें विस्तृत होने लगे। जगह जगह बाल बाल लमलपाती सुविशाल अग्निशिखा निकलती दिखाई दी; ज्ञानज्ञानज्ञान नगर मानो किसी मद्य-भोगज्ञानमें परिणत हुआ।

ज्ञानज्ञानज्ञानके मोरचेपर अधिकार करते ही सेनापति योकोने अपना सैन्यको रुई ओरसे, लौटते हुए रूसियोंको दगानेके लिये रवाना करना आरम्भ किया। ज्ञानज्ञानज्ञान पचाड़ीकी एक ओरसे जापानी सैन्य चढ़ने और दूसरी ओरसे उत्तर रुई ओरसे रूसियोंकी ओर बढ़ने लगे। देखते देखते ज्ञानज्ञानज्ञान नगर जापानी फौजोंसे भर उठा; देखते देखते वह कलकी दूरकी उमड़ती जापानी सैन्यही घनघटा पीछे हटते हुए रूसियोंके समीप पहुंच गईं। बाढ़ दगाने लगीं; बाढ़पर बाढ़ दगाने लगीं। रेल-घाटनके राष्ट्रगे-वायेसे हटकर रूसी कवाइके साथ लौटना छोड़ वेतहाशा भागने लगे। वर्षास्तुका अन्त था; कल रातको घोर वृष्टि हुई थी; अपना सघमता और पूर्णवार्द्धक्यको प्राप्त हुई काली हरियालीके तलदेशमें जगह जगह जल भरा था; कीचड़ भरा था। भागते हुए रूसी सिपाहियोंने उस जलला भी खयाल नहीं किया; कीचड़का भी खयाल नहीं किया; जापानी सिपाहियोंके

गऊ, बहुत बड़ा तोपखाना था, जिसमें बीस तोपें और पचास या सट गाड़ी गोले थे : दोनो ओरसे इत्राव पड़नेपर रूसी यह तोपखाना एक तीसरी ओरसे ले चले । उस ओर कीचड़ अघिन्न था ; बड़ी बड़ी कलदार तोपोंके पहिंचे भूमिमें धंस गये । जापानी बटे चले आते थे ; उनकी गोलियां तोपोंके इर्दगिर्द बरस रही थीं ; तोपोंकी रक्षा कैसे हो ? करनल रावेनने आज्ञा दी, हरेक तोपमें चौबीस चौबीस घोड़े जोते जायें ; सिवा इसके तोपसे लखी लखी रस्सि बांध और उन्हें पकड़ सिपाही खींचें । कुछ दूरतक तोपें इसीतरह खिंचीं ; किन्तु अब उनका आगे खिंचना कठिन हो गया । जापानी फौजें तोपोंके बहुत समीप पहुँच गईं ; तोपोंके गिर्द जापानी फौजोंकी गोलियोंकी घोर वृष्टि होने लगी, उस वृष्टिमें बहुतेरे रूसी मरने लगे । रूसी करनल रावेन अपने सिपाहियोंका उत्साह बढ़ा रहे थे ; ऐसे समय अगणित गोलियां आ उनकी देहमें लगीं ; रावेन मारे गये ; वीरवर मरकर अपनी तोपोंके समीपसे छटे । करनलके मरते ही रूसी सिपाहियोंके घेर उठे ; बीस-तोपें और उनके गोलोंसे मरी हुईं झूल गाड़ियां जापानी फौजके हाथ लगीं । सिवा इसके दोनो जापानी फौजोंके बीचमें फंस बहुतेरे रूसी सिपाही मारे गये । दूसरे दिन २८ वीं अगस्तको ओजू और नोजूकी फौजें रूसियोंकी दूसरे दरजेकी सुदृढ़ किला-बन्दीके सामने पहुँच गईं ।

इसतरह इस लियामयाङ्ग युद्धका पहला पक्ष समाप्त हुआ । जापानी सैन्यने रूसी सैन्यको उसकी खिलावस्तीके बाहरी दर-

पञ्चदश परिच्छेद



लियावयाङ्ग महायुद्ध—मध्य-पर्व—बोक्क और
नौकूका अग्रगमन—भीषण युद्ध ।

इस युद्धके प्रथम पर्वमें जापानकी जय हुई सही; किन्तु कोई दाह नहीं सकता था, कि दूसरे पर्वमें क्या होगा। और तो क्या,—इतने बड़े सेनापति ओयामा और कुरोपाटकिन भी यह बता नहीं सकते थे, कि अन्तमें क्या होगा। असलमें युद्ध शतरंजका खेल है। स्याह मुहरोंने सफेद मुहरोंको विलकुल दबा लिया है; सफेद बाजी विलकुल ही बिगड़ चुकी है; ऐसे समय स्याह बाजीकी एक चाल बाहियात होती है और सफेद बाजी स्याह बाजीकी दबाने लगती है; अन्तमें वह बड़ी-बड़ी स्याह बाजी विलकुल दब जाती है; दबी हुई सफेद बाजीके शिर विजयका मुकुट बंधता है। युद्धका भी वही हाल है; कभी कभी दबी हुई फौज एकाएक जोर पकड़ आगे बढ़ती और शत्रुकी विजयवाहिनीको परास्त करती है। इसीलिये रूहा, कि लियावयाङ्ग युद्धके इस द्वितीय पर्वका फलाफल पहलेसे कोई सोच नहीं सकता था।

रूसी मोरचेके इस दूसरे दरजेकी दृढ़ताका परिचय पाठक अक्ससे पहले पा चुके हैं। इसी मोरचेमें वह भूगर्भस्थ भयङ्कर कुंघोपी मालाओंसे घिरे दुर्भेद्य बहुसंख्यक किले थे। इन किलोंका मिसखिला लियावयाङ्ग नगरसे आगे आपानी सैन्य-पंक्ति

पञ्चदश परिच्छेद

लियावयाङ्ग महायुद्ध—मध्य-पर्व—ओजू और
नोजूका अग्रगमन—भीषण युद्ध ।

इस युद्धके प्रथम पर्वमें जापानकी जय हुई सही; किन्तु कोई दाह नहीं सकता था, कि दूसरे पर्वमें क्या होगा। और तो क्या,—इतने बड़े सेनापति ओयामा और कुरोपाटकिन भी यह बता नहीं सकते थे, कि अन्तमें क्या होगा। असलमें युद्ध अंतरङ्गका खेल है। स्याह मुहरोंने सफेद मुहरोंको बिलकुल दबा लिया है; सफेद बाजी बिलकुल ही विगड़ चुकी है; ऐसे समय स्याह बाजीकी एक चाल बाहियात होती है और सफेद बाजी स्याह बाजीकी दबाने लगती है; अन्तमें वह बड़ी-बड़ी स्याह बाजी बिलकुल दब जाती है; दबी हुई सफेद बाजीके फिर विजयका मुझट बंधता है। युद्धका भी यही हाल है; कभी कभी दबी हुई फौज एकाएक जोर पकड़ आगे बढ़ती और शत्रुकी विजयवाहिनीको परास्त करती है। इसीलिये रुहा, कि लियावयाङ्ग युद्धके इस द्वितीय पर्वका फलाफल पहलेसे कोई सोच नहीं सकता था।

रुसी मोरचेके इस दूसरे दरजेकी दृढ़ताका परिचय पाठक चावसे पहले पा चुके हैं। इसी मोरचेमें वह भूगर्भस्य भयङ्कर कुंआकी मालाओंसे घिरे दुर्भेद्य बहुसंख्यक किले थे। इन किलोंका मिससिला लियावयाङ्ग नगरसे आगे आपानी सैन्य-पंक्ति

सामने अर्ध-चन्द्राकारमें फेला था। इन किलोंकी अर्धचन्द्रकार पंक्तिके दाहने छोरपर यानो ओजूकी सैन्य-पंक्तिके बाये वाजूके ठीक सामने शुशान नाम्नी पर्वतमाला थी; पर्वतमाला उतनी ऊंची नहीं थी; फिर भी, इदगिर्देके दिगन्तयापी मैदानमें यही एक पर्वतमाला थी; इसलिये अत्यन्त प्रयोजनीय थी। रूसी भूगर्भस्य किलोंमें जो तोपें थीं, वही तो थीं ही; सिवा उनके इस शुशान पर्वतपर रूसके बड़े ही जबरदस्त कितने ही तोप-खाने लगे हुए थे। शुशान पर्वतमालाकी ढांगी रूसकी लम्बी लम्बी तोपें अपनी बगलके अपने किलोंकी रक्षा करनेके साथ साथ सामनेके मैदानमें भरी जापानी फौजोंपर गोले बरसा सकती थीं। इन भीषण तोपखानोंको देख ओजूने विचार किया था, कि रूसी किलोंपर धावा होनेसे पहले इस शुशान पर्वतपर धावा होना चाहिये। शुशान ही रूसियोंकी किलाबन्दीके इस दूसरे दरजेकी खोलनेकी कुञ्जी है।

२८ वीं अगस्तको प्रातःकाल लियावयाङ्ग महायुद्धका द्वितीय पर्व आरम्भ हुआ। इस युद्धके पहले पर्वमें जापानी सैन्य-पंक्तिका दाहना भाग यानी सेनापति कुरोकीकी फौज आगे बढ़ी थी; इस द्वितीय पर्वमें जापानी सैन्य-पंक्तिका बायां और मध्य भाग यानी ओजू और नोजूकी फौज आगे बढ़ी। इस दिन दिनभर घोर युद्ध नहीं; हलकी हथको कई-लड़ाइयां हुईं। रूसी फौज अपने किलोंके आगेके मैदानमें छोटे छोटे मोरचे बांध पड़ी थीं; जापानी फौजोंने आगे बढ़ इन छोटे छोटे मोरचोंपर अधिभारकर उनसे रूसियोंको निकाल उन्हें उनके पीछेके किलोंमें टकेल दिया। जापानी फौजोंको क्षतिग्रस्त करनेके लिये

आज दिनभर शुशान पर्वतके तोपखाने-गोलि बरसाते रहे; किन्तु उससे जापानियोंकी उतनी क्षति नहीं हुई। रूसियोंको पीछे हटा और उनके तोपखानोंकी स्थिति मालूमकर जापानियोंने अपने तोपखानोंके लिये जगहे चुन उसमें तोपें लगाईं। आज दिनभर इतना ही काम हुआ। मन्त्र्या समय जापानी फौजोंने मैदानमें विश्राम किया।

३० वीं अगस्तको रात्रि समाप्तिके समीप पहुँची; प्रातःकालकी हलकी हलकी सफेदी रणस्थलपर फैली। जापानी सिपाही बरसातकी उस तर और दृश्य-लतासे टंकी जमीनपर दिनभर खूब धकनेकी वजह रातकी सन्तरियोंके पक्षमें किसी तरह सोये भी; किन्तु जापानी अफसर और इञ्जीनियर बिलकुल सो नहीं सोये; रातभर जागे और फौजोंके आगे बढ़ानेकी राहें और लगते हुए तोपखानोंके मौके जनवाते रहे; रातोंरात रूसी हुई-पंक्ति और शुशान पर्वतमालाके सामने कोई तीन कोसकी अर्द्धचन्द्राकार रेखामें ओजूकी कोई दो सौ तोपें लगीं। ओजूकी बगलमें नोचूकी नव्य-पंक्ति थी, उसके सामने भी रूसी मोरचे थे; उस नव्य-पंक्तिने भी रात ही रात तोपें आदि लगा प्रातःकालके घोर युद्धकी तयारी की। इसतरह यत्र घेनेपर जिस समय पूर्वोक्त गगन क्रमोज्ज्वल होने लगा, उस समयतक जापानी फौजे ३०वीं अगस्तके युद्धके लिये पूर्णरूपसे प्रस्तुत हो गईं। सिपाही सज्जधककर अस्त-शस्त्रसे सुसज्जित हो युद्धके लिये तयार हो गये। उस प्रातःकालमें बढ़ते हुए आकाशमें साथी अपने बगलके सिपाहियोंके मुख देख जापानी सिपाहियोंके मनमें जो भाव उदित

हुष्या होगा, वरुणा गम्भीर और कक्षा अद्वितीय
होगा ?

प्रातःकाल पांच बजे जापानी फौजे आकाश में आगे बढ़ने
लगीं। रूसी मोरचों और जापानी फौजोंके बीचकी जमीन
जगह जगह फसल तथा ल्यादिसे विलक्षण ही छिपी हुई
थी। ल्या तथा शस्यको उंचाई कोई छाठ या दश फुटकी थी,
जिसमें मनुष्य पूर्णतया छिप जा सकता था। जापानी फौजें इसी
हरियालीसे रूसी मोरचोंकी ओर बढ़ीं। रूसी दुर्ग-पंक्तिके
सामनेकी जापानी फौजे शीघ्र ही हरियालीसे बाहर न निकलीं।
शुशान पर्वतमालाके समीपकी फौजें हरियाली पार करते ही
एक घौड़ी पंक्ति बांध शुशान पर्वतमालाकी ओर बढ़ीं। शुशान
पर्वतके अक्षर दूरबीनें लगाये जापानी फौजोंके मैदानमें घानेकी
प्रतीक्षा कर रहे थे; जैसे ही जापानी फौजे मैदानमें आईं,
जैसे ही पर्वतके रूसी तोपखाने गोले चलाने लगे। रूसी
तोपोंके सुंह खुलते ही जापानी तोपोंके भी सुंह खुले। एक
ओर रूसी गोले जापानी फौजोंको ओर आने लगे; दूसरी ओर
जापानी गोले शुशान पर्वतमालाकी ओर जाने लगे। इसतरह
युद्ध आरम्भ हुआ। इसके बाद ओजूको पूरी सैन्य-पंक्ति अपने
स्थानसे निकल रूसी मोरचोंकी ओर धीरे धीरे आगे बढ़ने लगी;
नोबूकी सैन्य-पंक्तिने भी ऐसा ही किया; रूसी दुर्ग-पंक्तिमें लगी
तं.पे जापान ही बढ़ती हुई सैन्य-पंक्तिपर गोले बरसाने लगीं। कोई
चार कोसकी लम्बाईमें आग य-ग्रहोंको भयङ्कर अग्निनी
आरम्भ हुई।

दोपहरतक यह जापानी सैन्य-पंक्ति तिल तिल बराबर

बढ़ती ही गई। रूसी सैन्य-पंक्ति और जापानी सैन्य-पंक्तिके बीच अपेक्षाकृत कुछ ऊंचे भू-भागका एक लम्बा सिंघमिला था। दोपहर तक आगे बढ़ जापानी सैन्य पंक्तिका एक पड़त बड़ा भाग इन टीनेके पीछे तक व्यवहारकर टहर गया। शुभान पर्वतपर रूसको कोई एक सौ तोपें थीं। इन तोपोंको विषम गोला-वृष्टिके फलसे जापानी फंजे रूसियोंकी दुर्ग-पंक्ति-पर खच्छन्दसे आक्रमण कर नहीं सकती थीं। सिवा उनके रूसी दुर्ग-पंक्तिमें लगी तोपें भी जापानी सैन्य पंक्तिकी अग्रगतिमें बड़ी बाधा उपस्थित करती थीं। इसलिये दोपहरको स्थिर हुआ, कि जापानी फौजें बादको बढ़ें; पहले रूसी तोपोंकी खबर लेना चाहिये। कार्य आरम्भ हुआ। यूरोको और नोबू दोनोकी सैन्य-पंक्तिसे शत शत जापानी तोपें एक साथ हमने लगीं; रूसकी ओरकी भी शत शत तोपें एक साथ गर्जन करने लगीं; पर्वत धर धर कांपने लगे; पृथ्वी उग उग हिलने लगी; दिशाये श्रुतभयङ्कर विकट ध्वनिसे परिपूर्ण हुईं; कौसोंके लम्बे युद्धक्षेत्रपर विषम अग्नि-वृष्टि होने लगी।

कुछ घण्टोंतक ऐसी ही विकट गोला-वृष्टि हुई। अन्तमें जापानियोंकी तोपें कुछ धीमी हुईं; नोबू और नोबू दोनोकी सैन्य-पंक्तिको धावा करनेकी आज्ञा मिली। जापानी सैन्य पंक्ति ने मद्धम सहम नहीं; लक्षाधिक सिपाहियोंने मिलितकाष्ठसे दृढ़ध्वनि की; शत शत मेघोंके मस्मिलित गर्जन जैसा शब्द हुआ; उम शब्दसे दूर दूरतककी दिशाये परिव्याप्त हुईं। कहीं कहींकी जापानी फौजें रूसी दुर्ग-पंक्तिके समीप पहुंच गईं; शुभान पर्वतके सामनेकी जापानी सैन्य-पंक्ति पर्वतके तलदेहतक

पहुँच गईं। रूसियोंकी दृष्टि देख एक समय इससे आगे अपनी फौजोंको आगे बढ़ाना उचित न समझ उन्हें पलटकर सुरक्षित स्थानमें ठहरनेकी आज्ञा मिली। जापानी फौजे पलटों सही; किन्तु पलटकर जिस जगहसे चली थीं, उस जगह नहीं गईं; राह होमें टीलों या झरु भी उत्र भूभागको आड़ पकड़ ठहर गईं। इन फौजोंमें और फौजें मिलाई जाने लगीं; दूसरे घावकी तयारियां होने लगीं। तीसरेपहर यह तयारियां आरम्भ हुईं; ऐसे समय आकाश मेघाच्छन्न हुआ और घोर वृष्टि होने लगी। देखते देखते उस त्रयाच्छादित भूभागपर जल ही जल दिखाई देने लगा। जापानी बिपाही जिस जगह थे, उसी जगह ठहर वृष्टि-जलसे भीगने लगे; उनकी बरही भीगी; पीठपर टंगा साज-सामान भीगा; देह और हाथके अस्त्र-शस्त्र भीगे। फिर भी; जापानी बिपाहियोंका उत्साह तनिक भी ठंढा नहीं हुआ; वह अपनी जगह ठहर वृष्टि थमनेकी प्रतीक्षा करने लगे।

वृष्टि बगसे हुई सही; किन्तु शीघ्र ही रुक गईं। जापानी फौजे एकवार फिर धावा करनेके लिये तयार हुईं। ऐसे समय जापानी फौजोंकी रूसी सौरजोंकी दीवसे एक विशालाकार चोख वायु-मण्डलमें चढ़ती दिखाई दी। यह चोख क्या थी? यह चोख और झुंक नहीं,—बहुत बड़ा एक फौजी गुंवारा थी; गुंवारेके खटोलेसे एक रस्सी बंधी थी और टेलीफोनका एक तार भी लगा था। उहे श्रु यह था, कि वायुके घर्कोंसे गुंवारा उड़ न जाये; एक जगह बंधा रहे और गुंवारेमें बैठे रूसी अफसर जापानियोंकी गतिविधि देख उसका समाचार टेलीफोन द्वारा

गोचेके अफसरोंको दें । जापानी अफसरोंने इस गुवारेकी आश-
ङ्का की नहीं थी ; करते तो प्रायद अपनी फौजके लिये भी गुवारे
तय्यार कराते । एकाश्क रूसियोंका गुवारा देख जापानी अफ-
सरोंने अपनी फौजके दूसरे धावेको कुछ देरके लिये स्थगित कर
दिया । आज्ञा दी,—“अभी नहीं ; जब सान्ध्य अन्धकार फैलने
लगे, तब धावा किया जाये ।” यह आज्ञा देनेके उपरान्त
जापानी अफसरोंने अपनी फौजोंको स्थिति बदल दी । उद्देश्य
यह था, कि रूसियोंके पास गुवारा रहनेपर भी वह जापानी
फौजकी यथार्थ स्थिति जान न सके ।

३०वीं अगस्तकी सन्ध्या होनेके उपरान्त जापानी फौजोंने
अपनी जगहें बदल दीं । जिस जगह एक भी जापानी सिपाही
नहीं था, उस जगह बहुसंख्यक जापानी सिपाही एकत्र हुए ;
जिस जगह जापानी सिपाहियोंकी भीड़ लगी थी, उस जगह
रूसी सिपाही रह गये । सन्ध्यातक गुवारेमें बैठे रूसी अफ-
सरोंने जापानी फौजोंको जो स्थिति देखी थी, सन्ध्याके उपरान्त
वह स्थिति बिलकुल बदल गई । स्थिति बदलनेमें बड़ा समय
लगा ; इसलिये जापानी फौज अर्द्धनिशासे पहले दूसरा धावा कर
नहीं सकी । रूसियोंने खयाल किया था, कि आज दिन भरके
युद्धमें अत्यन्तकार्य हो जापानी फौजे अत्यन्त हृद्य-भंग हुई हैं ;
दूसरे दिन प्रातःकालसे पहले उनके द्वारा आक्रान्त होनेकी
आशङ्का नहीं । किन्तु जापानी फौजे और ही मन्त्रसे दीक्षित
हुई थीं ; वह बिना काम सम्पूर्ण किये विश्राम करनेको घोर पाप
समझती थीं ।

रात्रिकी निरुत्थता भङ्गकर रात कोई एक बज जापान-सैन्य-

पंक्तिमें एकाएक विगुल बनने लगा ; जापानी सैन्य-पंक्ति हर्षनादसे दिखावे परिपूर्ण करती रहसियोंकी ओर झपटी । रूसी एका-एकका यह चाक्रमण देख व्याकुल हुए । फिर भी ; रहसियोंकी सैन्य-संख्या जापानियोंकी सैन्य-संख्यासे अधिक थी ; सिवा इसके जापानी सैन्य-पंक्ति जल-सोचड़से भरे मैदानसे फटपूर्वक आगे बढ़ रही थी ; रूसो सैन्य सुखपूर्वक अपनी सुखी दुर्गश्रेणीकी भीतर बैठी थी । रूसी अपनी दुर्गश्रेणीकी भीतरसे जापानी सैन्य-पंक्तिपर गोले और गोलियोंकी टाँट करने लगे । रातिका समय था ; छिपे हुए बहुसंख्यक रहसियोंकी बीच फंस चतियस्त होनेकी भयसे जापानी सैन्य-पंक्ति वेध-डक आगे बढ़नेका साहस करती नहीं थी । फिर भी, इस सैन्य-पंक्तिके दो भाग क्रम क्रमसे आगे बढ़ रहसियोंकी बहुत समीप पहुँच गये । एक भाग पुश्तान पर्वतकी बगलके एक लम्बे टीलेके नीचे पहुँच गया ; दूसरा भाग रूसी दुर्गश्रेणीके समीप अवस्थित हुआ । उस समय यह दोनों भाग वहाँसे आगे बढ़ न सके । उनकी दोनों ओरसे गोली और गोलोंका तूफान बह रहा था ; प्रथमोक्त भाग पूर्वोक्त टीलेका आश्रय ले लेट गया ; शेषोक्त भाग एक उच्च भूभागको आड़में धराशायी हुआ । इस तरह यह दोनों भाग अपने अपने आश्रयस्थलमें लेट प्रातःकालकी प्रतीक्षा करने लगे । जापानी सैन्य-पंक्तिवाली भाग कुछ ही दूर आगे बढ़ ठहर गया और बारंबार रूसी ओरचोंपर गोलियोंकी बरखाने लगा । इसीतरह रात बीत गई ।

२१ वीं अगस्तका प्रातःकाल उपस्थित हुआ । सूर्योदयसे पहले टीलेके नीचे पड़ी जापानी फौजको मदद पहुँची । वह

अपनी जगहसे उठी और अपने रणद्वारसे दिशाये कंपाती टेलीपर भपटी । टेलीके कंटीले तार तोड़, टेलीकी धुस पारकर रूसी मोरचेमें जा कूड़ी । कुछ देरतक तलवार-मञ्जीनकी लड़ाई चली । अन्तमें जापानी सिपाहियोंने टेलीके रूसियोंको मार-काट उन्हें टेलीसे भगा उसपर अधिकार कर लिया । प्रातः-समीरकमें नव-प्रतिष्ठित जापानी ध्वजा मन्द मन्द लहराने लगी । इस टेलीकी बगलमें शुशान पर्वतमाजा थी ; इसके पीछे अग-स्थित रूसी सिपाहों थे ; इसकी बगलसे बड़ी भयङ्कर भूगर्भस्थ दुर्गम्रयी आरम्भ हुई थी , इसतरह इस टेलीकी तीनों चोर रूसियोंका बड़ा जोर था । टेलीपर जापानो फौज देखते ही उसपर तीन ओरसे रूसी गोले-गोलियोंकी वृष्टि होने लगी । शुशान पर्वतमाजापर लगी तोपोंके भयङ्कर गोलोंसे जापानो फौज से जापानो फौज ; वह विशाखाकार लम्बा टीला भो क्रम क्रमसे चड़ने लगा । यह देख जापानी फौजको टेलीपर टहरना युक्ति-सङ्गत जान न पड़ा ; वह शीघ्र शीघ्र टीला छोड़ लौट अपनी सेन्य-पंक्तिमें आ मिली । जापानो सेन्यके एक भागका कार्य इसतरह समाप्त हुआ ।

जापानी सेन्यके दूसरे भागको शीघ्र मदद नहीं मिली ; देरसे मदद पानेपर प्रातःकाल कोई ग्नात बजे यह अपने सामनेके भूगर्भस्थ रूसी किल्लोंकी ओर बढ़ा । उस समय एक ओरसे कुछ रूसी तोपों गोलें बरसा रही थीं ; दूसरी ओरसे कुछ जापानी तोपोंके मुँह खुले हुए थे । उभय भयङ्कर अग्नि-वृष्टिमें आगे बढ़ना तो आगे बढ़ना ; एक चरणके लिये टहरना भी बड़े-बड़े अर्थका काम था । फिर भी ; जापानो फौजे बराबर आगे

बढ़ती ही गईं । इन भयङ्कर किलोंका सविस्तार वर्णन हम
 पीछे यथास्थान कर आये हैं । पाठक सहज ही समझ सकते
 हैं, कि इन रूसी किलोंमें घुसना कितना कठिन काम था । किलेके
 सामने ही कंटीले तार थे और उन तारोंके जालोंके नीचे
 द्विपी हुईं उन भयङ्कर झुब्बोंकी माला । जापानी सैन्य जैसे ही
 किलोंके समीप पहुँचो, वैसे ही उससे कितने ही दुर्लभ सिपा-
 हियोंका एक दल निकला इस दलके प्रत्येक सिपाहीके
 हाथमें सिपा बन्दूकके लोहेकी बड़ी बड़ी कैचियाँ थीं । इस
 दलने झपटकर झुब्बोंपर लगा तारका जाल काट अपना फौ-
 जके आगे बढ़नेकी राह तय्यार करना आरम्भ किया । क्या ही
 भीषण काम था ! क्या ही अमानुषिक बल-विक्रम-प्रकाश था !
 मोचिये, तो रूस खड़े होते हैं । उस समय दोनो ओरसे
 कोई चार सौ तोपें दग रही थीं । नये टङ्गकी चय चयभरमें
 दगनेवालो चार सौ बड़े बड़ी तोपोंका सम्मिलित गर्जन जेबा
 विघोर ही सकता है, वैसा ही हो रहा था । वह विकट गर्जन-
 ध्वनि सिपाहियोंके ब्रह्माण्डमें समा गई थी ; उनके
 शिरमें एक तरहकी खगसनी फैली हुई थी ; उन्हें तोपोंकी ध्वनि
 छल सुनाई नहीं देती थी ; उनकी अवरोन्द्रियाँ अपना खाभा-
 दिक धर्म भूल गई थीं । सिपा इसके इस विकट ध्वनिसे पात्रिय
 विकट उन चार सौ तोपोंको गोला-वृष्टि थी । प्रायः समय युद्ध-
 क्षालमें बड़े बड़े आपनल गोलि गिरते और सहस्र सहस्र टुक-
 होंमें विदीर्य हो दूर दूरसक जाते थे । सिपाही दूर हीसे देखते
 थे, कि वह गोला व्याधा ज्योतिर्मयस्त्रिये त-रक्त-प्रभाशुक्त
 गोला राहमें विकट शब्दके साथ फटता, गोलियाँ बरखाता, व्याका-

श्रमों ध्वनि करता वह आया। गोलेका आगमन देख लोग
 उसको भावी गिरनेकी जगहसे दूर छटनेके लिये भागे; बहुतेरे
 भागनेवालोंमें कुछ निकल गये; कुछ निकल आनेकी चेष्टा कर
 रहे हैं; ऐसे समय वह आनेवाला गोला आ गिरा। जान पड़ा
 पत्र गिरा; प्रायः उसकी ही जैसा शब्द हुआ; प्रायः उसकी ही
 जैसी चमक उत्पन्न हुई। जिस जगह गोला गिरा, उस जगह उसने
 पड़ा गड़गा बना दिया; गड़गेकी कई गज लम्बी चौड़ी भूमिका
 अधिकांश धूमिली तरह वायुमें उड़ गया; सिवा इसके इसतरह
 भूमिसे टकरा गोला फटा, उससे अगणित बड़े बड़े लौह-
 खण्ड और गोखियां प्रकट हुईं; लौहखण्डने जिसको सामने
 पाया, उसको उड़ा दिया; गोखियोंने भूमिपर गिरा दिया। ऐसे
 गोले एक ही नहीं, शत शत—सहस्र सहस्र संख्यक वास रहे थे।
 शिवा गोलोंके मेक्सिम प्रभृति छोटो छटी तोपें तथा रूस-आप्रा-
 ची लक्ष लक्ष सिपाहियोंके हाथोंकी बन्दूकें चल रही थीं। लक्ष
 लक्ष गोखियोंके एक साथ इधर उधर आनेजानेसे युद्धस्थलमें ऐसा
 शब्द हो रहा था, मानो कोटि कोटि मधुमक्खियां कानोंके
 समीप पहुँच गइंसा गंडाकार भगभगा रही हों। गोलोंके
 पटने, गोखियोंकी चलने, मेक्सिम तोपोंके लगातार छटनेसे युद्ध-
 स्थल बाधातु बरक बन गया था। जगह जगह लाशोंके टेर
 थे; दितनी ही लाशोंकी खरतें विगड़ गई थीं; किसी किसीके
 धड़-प्रयत्न भयङ्कर रूपसे उड़कर जगह जगह पड़े थे। लाशोंके
 साथ साथ पख्तियोंके टेर थे; जिन जखमियोंमें बोलनेकी
 शक्ति थी, उनमें क्षिणमे पूरी धीरे धीरे और क्षिणमे ही उच्चस्वरसे
 बोल रहे थे; किन्तु उस भयङ्कर युद्धके क्रोधाहलनें उन वेषा-

शौकी चित्ताहत उन्हींको सुनाई गहीं देती थी। ऐसे ही भीषण समयमें—विपादियोंको भी प्रागश बना देनेवाले ऐसे ही विकट समयमें—शुभान पर्वतमाल और सामनेकी दूर्गश्रेणीकी तीर्थों और दूर्गस्य विपादियोंकी तथा मेखिम तीर्थोंकी गोला-गोलो-दृष्टिमें जापानो विपादियोंका बुद्धि स्थिर रख अगे बढ़ लोहेकी बड़ी बड़ी कैंचियोंसे लोहेका खारदार जाश काटनेका काम समाप्त अलौकिक नहीं, तो और क्या था ?

तार काटनेवाले एक दलके अपने काममें प्रवृत्त होते ही, जापानी सेन्पसे वैसे ही और दो चार दल निकले ; वह दूसरी जगहोंमें पहुँच तार काटने लगे। तार काटनेवालोंपर लुखी गोलों और गोलियोंकी अविराम वर्षा होने लगी ; क्षण क्षणमें अपने-क तार काटनेवाले उड़ने लगे ; फिर भी, तार काटनेका काम चलता ही रहा,—गोलोंकी घोटसे जितनी देरतक जो तार काटनेवाला बचा, वह तार काटता ही रहा। जान जाती थी ; तार काटनेका काम जाता नहीं था। उन शत शत तार काटनेवालोंमें एक भी तार काटनेवाला कर्मविभूत ही प्राणोंकी ममतासे पीछे नहीं हटा। ऐसे साहस—रेखो अहिष्णुता—ऐसे व्यक्तित्वगंसे पर्वत कट जा सकते हैं—सागर पट जा सकते हैं ; उस तुच्छ सामान्य नगर्य कंटीले तारकी इकोकत ही क्या थी ? तार कट गये ; एक दूर्गम लार्ने प्रवेश करनेकी राह खुली ; तार काटनेवाले अपना काम समाप्त कर अपना सैन्य-पंक्तिमें वापस लौटे ; जिस रेजिमेण्टके विपादही इस कामके लिये गये थे, उनमें सैकड़ों पीछे पचीस वचे ; बाकी सब तारके भँट चढ़ गये ; उनकी काशोंसे ऊँच भर

गये ; तार-जालके बीचसे जापानी फौजोंके निकलनेके लिये साधनोंको राह तय्यार हुई !

अपने तार काटनेवाले सिपाहियोंका पराक्रम देख दुर्ग-श्रेणियोंके सामनेकी समय जापानी फौजमें मानो किमो वैद्युतिक प्रक्रिया द्वारा अतीव शक्ति-मांडलिका सञ्चार हुआ। आगे बढ़नेकी आज्ञा पाते ही जापानी बोरवाहिनियां उन्नतकी तरफ विह्वल करती भूमध्यस्थ रूसी किलोंकी ओर झपटां। पहले कुंघोंकी माला सङ्घष ही तयकर तारोंके जाल काट दूसरी मालाके समोप पहुँचीं। इस मालाके तार बड़ी ही फुरतीके साथ काटे गये ; एक ओर तार कटता गया, दूसरी ओर कितने ही जापानी सिपाही कुंघोंमें कूद अपनी देहोंसे कुंघों पाट अपनी फौजोंके निकलनेके लिये राह तय्यार करते गये ; देखते देखते उम कूपमालामें कई राहें तय्यार हो गईं। इसतरह बनी इन कई राहोंसे जापानी फौजें भीतर घुस तारोंका जाल तोड़ खन्दक पारकर किलोंमें घुस रूसी सिपाहियोंसे भिड़ गईं। बड़ा ही भयङ्कर युद्ध हुआ ; दो परस्पर-विरोधी दिसं जन्तु-दलके एक दूसरेपर टूट पड़नेपर जैसा होता है, वैसा ही ज्ञान लगा। सङ्गनोंसे पेट फटने लगे ; हलबारासे हाथ, पैर और शिर लुटा होने लगे ; कोई कोई उन्नत सिपाही अपने शत्रुको अत्यन्त समीप पाई धियार चलाता भूख उद्धतकर उसके गलेसे मुँह लगा उसका खून पीनेकी चेष्टा करने लगा ; बड़ा ही विकट युद्ध हुआ। उभय पक्षके शत्रु शत्रु सिपाही हताहत हो भूमिपर लोट गये।

भूगर्भस्थ दुर्गके भूगर्भस्थ सुविशाल प्राङ्गणकी एक ओर

जिस समय यह लोमहर्षण युद्ध चल रहा था, उस समय उसकी दूसरी ओरसे हर्षनाद करते रहनी सिपाहियोंके अख्य दल घुसे। रूसियोंको मरदको ताजा फौज पहुँची। पहले ही लिख चुके हैं, कि जापानियोंकी संख्या कम थी; इसीलिये जापानी अफसर अपनी किलेमें पहुँची फौजको देखी मरद पहुँचाने लगे; उन्होंने उसे किता छोड़ लौटनेकी आज्ञा दी। भाटेके समय सागर-जल जिसतरह लहरें मारता आगे बढ़ता और फिर पीछे हटता है; उसीतरह जापानी फौज उस दुर्गकी दीवारें तोड़ती, कुंएँ पाटती और तारके जाल बिगड़ करती पीछे हटी और अन्तमें किलेसे निकल अपनी सैन्य-पंक्तिमें आ मिली; इस सैन्यके वापस लौट आतेपर जापानी सैन्य-पंक्ति अपनी जगहसे पीछे हट अपनी तोपोंकी बगलके सुरक्षित स्थानमें जा ठहरो; इसतरह जापानी सैन्य-पंक्तिके इस दूसरे आक्रमणती समाप्ति हुई।

सेनापति ओजूके शोभकी नीमा नहीं रही। उनकी सैन्यने दो बार आक्रमण किया; दोनों बार अद्यतकार्य ही उसे पीछे हटना पड़ा। अब क्या किया जाये? ओजूने आज्ञा दी, कि उनकी कुत्र तोपें अपने पूरे शक्ति-सामर्थ्यके साथ रूसी तोपखानोंपर गोलि बरमायेँ। आज्ञाको देर थी; भीषण गोलि-वृष्टि आरम्भ हुई। रूसी मोरचोंपर; विशेषतः रूस-अधिकृत उस शुभान पर्वतमोलापर अतीव भयङ्कर रूपसे गोले बरन्दने लगे। एक युरोपीय संवाददाताने लिखा है,—
“उस समय शुभान पर्वतपर आयेय-गिरिका घोका होता था; अगणित जापानी आपनल गोलोंके गिरने और फटनेसे

शुशान पर्वतमाता अग्निसे आच्छादित दिखाई देती थी। प्रबलधराक्रान्त होनेपर भी रूसी इस भीषण गोला-वृष्टिसे फलसे घबरा गये। उनके कितने ही तोपखानोंका वज्र घट गया; कितने ही तोपखानोंके सामनेकी धूम उड़ गई; कितने ही तोपखानोंके गोलन्दाज उड़ गये। जापानी गोलोंका तेज असह्य था,—अदम्य था। रूसियोंको स्वप्नमें भी खयाल हुआ नहीं था, कि रशियाको भी किसी शक्तिके तोपखाने यथांतक जबरदस्त हो सकते हैं। इससे पहले रूसी, तोपखानोंकी अपने ही घरकी चीज समझे हुए थे; रूसियोंके समझ रखा था, कि जैसी गोलन्दाजी युरोपीय शक्तियोंके तोपखाने कर सकते हैं, वैसी गोलन्दाजी जागतका और कोई तोपखाना कर नहीं सकता; विशेषतःपतित रशियाकी कोई लाञ्छित शक्ति तो कर हो नहीं सकती; किन्तु लियावयाङ्ग माहायुद्धकी यह गोलन्दाजी देख रूसियोंके मनसे—अगणित युरोपीय देशोंके मनमें यह धारण बिलङ्गल ही दूर हो गई। आज रशियाकी ओरसे युरोपकी मनमें भय हुआ। युरोपके 'होली रशिया' या पवित्र रूसके गोलन्दाज साहसिकर अपने मोरचोंके आश्रयस्थलसे बाहर निकल अपनी तोप सीधी करते और गोले चलाते थे; ऐसे समय जिस जगह वह खड़े रहते, उस जगह एकके बाद दूसरे अगणित जापानी गोले आ गिरते; कितने ही रूसी गोलन्दाज उड़ जाते, जो बचते वह तोपके समीपसे छूट अपने आश्रयस्थलमें जा चुकते। जापानियोंकी उस विकट अग्नि-वृष्टिमें उचरना आसान नहीं था। एक ओर दम था, क्रूरता थी,

दृष्टा थी,—धन-मद—ऐश्वर्य-मद था ; दूसरी ओर नम्रता थी, दया थी, स्वदेशभक्ति थी, बुद्धि थी, साहसिकता थी और भगवान्पर पूर्ण निर्भरता थी ।

दिन कोई पौने वारह बजे शुशान पर्वतक्षी गलके टीलेपर जो अग्नि-दृष्टि हो रही थी, वह एकाएक रुक गई । और कितनी ही जापानी फौजे कई ओरसे बहुत ही धीरे धीरे इस टीलेको ओर बढ़ीं । इस वार इस आगे बढ़नेवाली हरेक जापानी फौजके साथ कितनी ही छोटी छोटी तोपें भी थीं । यह तोपें बहुत नहीं । सिर्फ हाथ दो हाथ लम्बी थीं ; उनके मुँह बहुत ही बड़े थे ; इनके चलाये गये बहुत दूर न जानेपर भी जहाँ गिरते, वहाँ भीषण काण्ड उपस्थित करते थे । 'होविजर' नाम्नी यह तोप उतनी वजनी नहीं थी ; एक या दो सिपाहो आसानीसे उसे उठा ले जा सकते थे । ऐसी ही तोपें ले जापानी फौजे बहुत ही धीरे धीरे आगे बढ़ती थीं । उनके आगे बढ़नेका ढङ्ग बड़ा ही कौशलपूर्ण था । यह सब सौ पचास कदम दौड़कर आगे बढ़ती और फिर जमीनपर लेट जाती थीं ; टीलेके रूसी सिपाहियोंकी बाढ़के जवाबमें एक भी बाढ़ न दागती ; उस बाढ़का जवाब बढ़ती हुई जापानी फौजोंके पीछेकी जापानो-सैन्य-पंक्ति द्वारा दिया जाता था । कुछ देरतक जापानी फौजे अपनी जगह पड़ी रहतीं ; इसके बाद फिर पचीस पचास कदम आगे दौड़ जमीनपर लेट जाती थीं । इसीतरह यह फौजे आगे बढ़कर रूसी टीलेके समीप पहुँच गईं । वहाँ पहुँचते ही इन फौजोंने अपनी बन्दूकों और तोपोंसे काम लिखा । टीलेकी रूसी फौजपर गोला-गोलियोंका तूफान बहने

लगा । टीलेकी रूसी फौजोंका ठहरना कठिन हो गया ; कुछ देर-तक गोलियाँ चलानेके उपरान्त अन्तमें रूसी फौज अपने मोरचे छोड़ भागी और एक बार फिर जापानियोंने उस टीलेपर अधिकार किया । इस बारकी अधिकार-प्राप्तिके उपरान्त ही जापानी फौजोंने टीलेको चारों ओरसे सुरक्षित करवा आरम्भ किया ; मानो टीलेकी जापानी फौजोंने दृढ़ प्रयत्न कर लिया था, कि अबके जीवन रहते टीलेसे पीछे हटना न होगा ।

जिस समय एक ओर जापानी फौजें टीलेपर अधिकार कर रही थीं, उस समय दूसरी ओर जापानियोंके तोपखाने उसी ओर शोरके साथ रूसी तोपखानोंपर गोले बरसाते रहे । रूसी तोपखाने यदि जापानी तोपखानोंका जवाब देनेमें फंसे न रहते, तो जापानियोंका टीलेपर ठहरना कठिन हो जाता । जापानी तोपखाने रूसी तोपखानोंको हम नहीं लेने देते थे । टीलेका आश्रय पा कितने ही जापानी तोपखाने अपनी जगहसे आगे बढ़ रूसी मोरचोंके और भी समीप खिसक गोला-वृष्टि करने लगे । आज जापानी तोपोंके लिये विराम नहीं था, विश्राम नहीं था ; प्रातःकाल आठ बजेसे उन सबने ही गोला-वृष्टि आरम्भ की थी, वह दिनभर चली ; सूर्यास्तके उपरान्त रातको भी चली । इधर दूसरे आक्रमणमें विफल हो जापानी सैन्य-पंक्ति पलटकर जिस जगह पहुँची थी, उसी जगह ठहरी रही । दोपहरको टीलेपर जापानी फौजोंका अधिकार हो चुकनेपर दिन चलनेके साथ साथ जापानी सैन्य-पंक्ति क्रम क्रमसे आगे बढ़ी सही ; किन्तु उसका वह आगे बढ़ना सिर्फ नामके लिये था ; कोई फौज दृढ़ कदम आगे बढ़ लेट गई ; कोई पचास

कश्म। कहते हैं, कि प्रत्येक जापानी सिपाहीको पृथक् पृथक् जगह जगह लेटकर आगे बढ़नेकी शिक्षा दी गई थी। गोस्त्रियोंसे बचानेवाले छोटे छोटे मट्टीके तोपोंके पीछे जापानी सिपाही लेट जाते थे; इसके बाद उनके पीछेसे उनके पास पूर्वोक्त तोपे जैसा तोप बगाने लायक मट्टीसे भरा टोकरा पहुँचता था; यह टोकरा ले जापानी सिपाही आगे दौड़ते और अपनी पहली जगहसे दश बीह लक्ष आगे दौड़ फिर वेशा ही तोप स्थापनकर उसके पीछे लेट जाते थे। इस तरह लेटे लेटे आगे बढ़ते बढ़ते महाशयानवत् उस भीषण रणक्षेत्रमें बहुत दूर आगे बढ़ जाते थे।

सन् १६०४ ई०की ३१वीं अगस्तकी जिन समय अगत् अपने अपने घन्टोंमें फँसा था, उह समय लक्षाधिक सिपाहियों और लोई दो सौ तोपोंके अधिनायक ओजू खहस खहस मनुष्योंके जीवन-मरणसे क्रोड़ा कर रहे थे; उनके इशारेपर दोनों बन्दगी बजाते थे। अपने गुरु-गम्भीर दाशित्वपूर्ण भारकी दृष्टिगतसे ओजू वाच्यज्ञानशून्यसे जान पड़ते थे। इस युद्धमें दो बार उनकी खैचने धावा किया; दोनों ही बार वह धावा व्यर्थ ठहरा; समूची जापानी खैच-पंक्तिके तीवरे धावेकी तयारी थी; इससे ओजूको घोर दुश्चिन्ता इस बातकी थी, कि कहीं यह धावा भी विफल न हो जाये। इन धावोंके सफल बनानेकी कोई तयारी; कोई बात वह उठा रखना नहीं चाहते थे; बुद्धिमान् दूरदर्शी निपन-क्षेत्री खूब समझते थे, कि वह उस दिन जो काम कर रहे थे, वह उज्जलाचर द्वारा जगतके इतिहासमें चिरकालके लिये लिखा जानैको था। ऐसे ही महागुरुत्वपूर्ण कामको बामने पा उसके फलफलकी चिन्तासे दुरीकी वारंवार

मन ही मन अपने इष्ट देवके सामने अवनत हो जाते थे । विजय-लक्ष्मीकी मनोहारिणी मूर्ति देख उसे पानेके लिये माथा-जीव बहुत ही अघोर हो पड़े थे ।

३१वीं की सन्ध्या आ पहुँची । निष्प्रभ अथवा रक्तपीताभ सूर्यदेव अस्ताचलके सिंहासनपर आसोन होने चले । दोनो ओरकी फौजे अपनी अपनी जगह पर थीं ; किन्तु दोनो ओरके तोपखानोंके गोले अपनी अपनी जगह नहीं थे ; विशेषतः जापानी तोपखानोंके गोले तो अपनी जगह चण चण भरके बाढ़ ही नहीं थे । प्रातःकाल कोड़े आठ बजेसे जापानी कोड़े दो सौ तोपोंकी जो भीषण गोलन्दाजी आरम्भ हुई थी वह अवतक चल रही थी । कहते हैं, कि लियावयाङ्ग अपने सहरमें अपनी सोशल ट्रेनके समीप बैठे कुरोपाटकिन इस अविश्राम गोलन्दाजीकी ध्वनिसे सुगभोर मानसिक यन्त्रणा अनुभव कर रहे थे । सवेरा बीत गया ; दोपहर बीत गई तीसरा पहर बीत गया ; सन्ध्या समीप पहुँची ; इतना समय समाप्त हो गया ; किन्तु जापानी तोपोंका वह गगनभेदी गर्जन समाप्त नहीं हुआ । कुरोपाटकिन मानो मन ही मन कहते थे,—“क्या यह गर्जन कभी समाप्त न होगा ?”

एक ओर जापानी तोपोंका ऐसा ही गर्जन चल रहा था ; दूसरी ओर सन्ध्या कोड़े पाँच बजे सुब्यवसर देख वीरपुत्र योकोने जापानी सैन्य-पंक्तिको युक्तिपूर्वक आगे बढ़नेकी आज्ञा दी । जापानी सैन्य-पंक्ति उभी पूर्वोक्त ढङ्गसे अपने सामने मट्टीके तोड़े तय्यार करती जापानी क्रम क्रमसे आगे ने लगी ।

सन्ध्या कोई पांच बजे सेनापति ओकूको एकाएक समाचार मिला, कि उनकी फौजके बाये कितनी ही तोपें साथ ले एक रूसी फौज आगे बढ़ रही है। ओकूको यह अच्छा अवसर मिला; उन्होंने अपना रक्षित फौजसे एक बड़ा टुकड़ा निकाल इस फौजके सुकावजेके लिये भेजा और उससे सेनापतिको चेता दिया, कि रूसी फौजको मार-काट पीछे हटा उसीके पीछे पीछे रूसी मोरचेमें घुसनेकी चेष्टा करना। इस जापानी फौजके साथ जापानी रिखाला भी था। जापानी रिखाला एक भयङ्कर चीज समझा जाता था। जिस समय युद्ध आरम्भ हुआ था, उस समय लोगोंको रूसी रिखालेपर; विशेषतः कजाक-रिखालेपर बड़ा भरोसा था। युद्धस्थलके युरोपीय संवाददाता-ओंने रूसी कजाक-रिखालेसे तुलनाकर प्रमाणित करनेकी चेष्टा की थी, कि उसके सामने जापानी रिखाला कोई चीज नहीं। कजाक-रिखालेके सामने जापानी रिखालेके छोड़े बाहियात, सवार अनाड़ी, रिखालेका युद्धोपकरण उतना टुकड़ा नहीं; उसकी कोई हस्तो ही नहीं। यह सब मुन रूसको भी अपने रिखालेपर बड़ा घमण्ड हो गया था। असलमें रूसका कजाक-रिखाला घमण्ड करने हो लायक है। किन्तु काम पढ़नेपर प्रमाणित हुआ, कि जिसतरह रूसके बहुत दूर पूर्वका बड़े जाट अलक-सिफने जापानकी यथार्थ शक्तिका अन्दाजा नहीं पाया था उसी-तरह युरोपीय संवाददाता जापानी रिखालेका प्रकृत सामर्थ्य जान नहीं सके थे। यह दोनों ही बड़े भ्रम थे; और दोनों हीकी वजह रूस-सरकारको क्षतिग्रस्त होना पड़ा था। आगे बढ़ती हुई रूसी फौजको रोकनेके लिये खाना की गई ओकूकी फौजके साथके

उस जापानी रिशालेने आंधीकी तरह आगे बढ़, आगे बढ़ती रूसी फौजका संह मोड़ दिया ।

ओजू चिन्तित थे, उद्विग्न थे, विजय-प्राप्तिके लिये बावले हो रहे थे । आपकी आज्ञासे सन्ध्या कोड़े सात बजे बह दिन भरकी होती हुई गोलन्दाजी और भी भयङ्कर हुई । शत शत जापानी तोपें एक मिनटमें अनेक बार रूसी मोरचों और तोपखानोंपर गोले बरसाने लगीं । इस विषम गोलन्दाजीने रूसी मोरचेमें प्रलय उपस्थित किया । पहाड़ उड़ने लगे, टीले उड़ने लगे, रूसी तोपें उड़ने लगीं, रूसी गोलन्दाज उड़ने लगे ; जापानी गोलोंके सामने स्यावर-जङ्गम, लघु-गुरु, पशु-मनुष्य जो पड़े, वह सब उड़ने लगे । उस मेघाच्छन्न आकाशके नीचे की रजनी-में उस विकट, अग्नि-वृष्टिसे रूसियोंके हृदयमें बड़ा ही भय उत्पन्न हुआ, वह देखते थे, कि इस अग्नि-वृष्टिसे कहीं रक्षा ही नहीं । सकान, पहाड़ी मोरचे, किले, सभी,—इन गोलोंके सामने व्यर्थ थे । रूसी अपने जिस मोरचेके जिस भागमें रक्षा पानेकी आशासे भागते, उसी मोरचेका वही भाग जापानी गोलोंकी धोतसे उड़ जाता । इस विकट गोला-वृष्टिके कालसे रूसी यदि त्राहि त्राहि प्रकार उठे हों, तो व्याश्चर्य ही क्या है ? नहीं जानते, कि अपने सदर लियावयाङ्गमें बैठ दिनभर ओजूकी तोपोंका गर्जन सुननेवाले रूसके प्रधान सेनापति कुरोपाटकनने जब सन्ध्योपरान्त यह विकट तोपगर्जन सुना होगा, तब उनके मनकी क्या दशा हुई होगी ? उन्होंने अपनी आंखोंके सामने जगत्में उपस्थित होनेवाले भावी महान् परिवर्तन-सुसप्त चित्र देखा होगा और इच्छा न रहनेपर

भी खोजूके सामनेकी अपनी फौजकी रक्षाकी आज्ञा दी होगी ।

सन्ध्या सात बजेसे रात शायद नौ बजेतक जापानकी यह विकट गोला-वृष्टि हुई ; इसके फलसे रूसी मोरचे डग डग हिल गये । इसके उपरान्त यह गोलन्दाजी मानो मन्त्रबलसे एकाएक बन्द हो गई । इससे बन्द होते हो घरयो हिलो, पर्वत झिले, समीप तो समीप दूरके भी प्राण्यी चौंके, -उस कोसोंकी लम्बाईमें अवस्थित जापानी सैन्यने जयध्वनि की और अपने पदभारसे पृथ्वी कंपाती रूसी दुर्गश्रेणी और मोरचोंकी ओर चली । जापानकी जो फौज मैदानमें बिम्ब जगह पहुँच गई थी, वह उसी जगहसे आगे चली । आगे आगे जापानकी एक ही सैन्य-पंक्ति थी ; किन्तु उसके पाँचे पंक्ति बरहीं ; एक, दो, दस, बीस बरहीं ;—अग्रगणित पंक्तियाँ थीं ; जहाँतक दृष्टि जाती थी, वहाँतक पंक्तियाँ ही 'क्तियाँ दिखाई देती थीं । इससे कई घण्टे पहले, उस दिन रूसियोंकी, एक उच्च भागकी एक ओरसे आ दूसरी ओर उतरती हुई प्रातःकालसे सन्ध्याका अन्तकार प्रैक्षनेतक जापानी सैन्य-पंक्तिकी जो काली काली रखाये आती दिखाई दी थीं, वह सभी इस धावेमें शरीक हुईं । इतने घण्टों बाद आज वह फौजे' रूसियोंके सामने आईं । उस समयकी वह चढ़ी हुई घटा अब मागी बरबनेपर तय्यार हुई । कुछ देरतक कोसोंकी लम्बाईमें दोनों आरसे बन्दूकोंकी बाढ़ दगती बरहीं ; किन्तु यह तभीतक होगी, जबतक जापानी फौजे' रूसी मोरचोंसे कुछ दूर थीं । यह दूरी शीघ्र ही समाप्त हुई । जापानी सैन्य बरहीं ; सैन्य-सागर आगे बढ़ रहा था ; ताजाइम रूसी फौजे' भी इस सैन्य-सागरकी रोक

नहीं सकती थीं ; दिनभरकी ; विशेषतः इस व्याक्रमणसे पहिलेकी जापानी गोल-बट्टियोंसे विजय रूसी फौजे भला उस सैन्य-सागरको कैसे रोक सकती थीं ?

किसीकी वह कुशियोंकी मालाये, उनके बीचका लगा वह कंटोले तारोंका जाण, शताधिक तोपोंसे संरक्षित शुशान पर्वतके वह सुदृढ़ रूसी मोरचे दावानलमें पतित सुवस्तृत वनकी तरह नष्ट होने लगे। कुछ विघ्न-बाधाओंकी अतिक्रमकर जापानी फौजे रूसी मोरचोंमें ठसाठस भरी रूसी फौजोंके सामने पहुंच गईं।

जापानी सैन्य यदि सागरवतु थो, तो रूसी फौजे महासागर जैसी थीं। जिस समय दोनों ओरके इन लाख लाख सिपाहियोंके बीच टक्कर हुई, उस समय अतीव भोषण युद्ध-कोलाहलका उत्थान हुआ और क्षण क्षणमें अगणित सिपाही हताहत होने लगे। कोटि कोटि बगलके 'मार मार' रवसे युद्धस्थल गूँजन लगा ; लोहेसे लोहा भिड़ने लगा। सुख लुट्कने लगे, रूढ़ उच्छ्वलने लगे, हाथ-पैर कट कट कर गिरने लगे ; बन्दूकोंके कुन्टोंके आघातसे खोपड़ियां चूर चूर होने लगीं ; तपस्वीकी गोलियोंकी चोटसे बड़े बड़े जवान घराशायी हो अपने अस्त्रसे बहते उत्तम रक्तसे धरणी सिक्त करने लगे। विकट युद्ध आरम्भ हुआ। एक रूसी सिपाहाने सुंह खोल घोर गज्जंन आरम्भ किया ; दूसरे ही क्षण किसी जापानी सिपाहीकी गोली उसके सुंहमें घुस उसकी गरदनसे निकल गई। किसी रूसीने भोंकनेके लिये सङ्गीनहार बन्दूक उठाई ; दूसरे ही क्षण उस रूसीकी पहुंचे जापानीने तड़से रूसीके पेटमें तलवारभोंक दी ; उ-

सकी आंति निकल पड़ीं, वह गिरकर टेर हो गया। एक जापानी और एक रूसी परस्पर अत्यन्त समीप होनेकी वजह छथियार चखानेका अक्षर न पा गुंथ गये, जापानीने रूसीके सुंघमें हाथ डाल उस ही जुवान पकड़ खींच ली; रूसीना हाथ बड़ा जापानीकी आंख फोड़ दी। किसीकी गरदनसे रक्त बहने लगा, किसीकी, जांघसे रक्तधारा बहने लगी, किसीकी छातीसे रक्त टपकने लगा, किसीके शिरसे टप टप रक्त टपकने लगा। युद्धकी गर्मीमें आहत सिपाहियोंको कुछ देरतक अपने जख्मकी खबर नहीं होती थी; अन्तमें रक्तकी गर्म गर्म धारा या प्रसवण देख उन्हें जान पड़ता था, कि वह जखमो हुए हैं। कितने ही सिपाहियोंकी भुजा कन्धके पाससे जुदा हो गईं; किसी सिपाहीका पैर घुटनेके पाससे उड़ गया, किसी सिपाहीका कान उड़ गया, किसी सिपाहीका जखड़ा पूर चूर हो गया। इसतरहके घोररूपसे आहत अधिकांश रूसी सिपाहियोंके चीत्कारसे रणस्थलमें अत्यन्त लोमहर्षण ध्वनिका उत्थान हुआ।

शेना सैन्योंके बीच टक्कर होनेका ऐसा ही फल हुआ। भूमि क्षाणोंसे ढंकी दिखाई देने लगी। कुछ देरतक जय-पराजय प्रकट नहीं हुई। जापानियोंका सैन्य-सागर रूसियोंके सैन्य-महासागरसे भिड़ा हुआ था; सागर उस महासागरको विनष्ट करना चाहता था; दालक लड़न्तिया पट्टेको पकड़ उसकी छातीपर चढ़ना चाहता था। यह असम्भव सम्भव कैसे बने? विना भगवत्कृपा हुए चींटी टेरारतको पददलित कैसे करे? भगवत्कृपा हीसे असम्भव सम्भव होता है; भगवत्कृपा हीसे अचिन्तनीय बातें प्रत्यक्ष होती हैं। कुछ देरतक युद्धका फला-

फल अनिर्धारित रहा सही ; किन्तु अन्तमें वह स्पष्ट दिखाई देने लगा। यह कहनेसे बाहुल्य न होगा, कि उस समय समग्र एशिया—समग्र युरोप,—समग्र जगत् रूस-जापानका यह युद्ध देख रहा था। समग्र जगत्के सुप्रसिद्ध समाचारपत्रोंके प्रतिनिधि उस समय उस युद्धस्थलमें उपस्थित रह निमेषशून्य नज़रसे इस युद्धका फलाफल देख रहे थे। युद्धका उल्लास देख उनके हृदयमें नाना प्रकारकी भावनाये उत्पन्न हो रही थीं। इन अल्प-कालीन अस्थायी उल्लासके अन्तमें एकएक रूसियोंकी सैन्य-पंक्तिका झिलना देख कबजियोंके उस प्रतिनिधिदलके जापानियोंके यत्न, मित्रके हृदयमें जो भिन्न भिन्न परस्पर-विरोधी भाव उत्पन्न हुए होंगे, उनका वर्णन कैसे किया जा सकता है ?

अन्तमें तिलिस टूटा। जापानके उस सैन्य-लागरका असह्य दबाव रूसियोंकी सैन्य-पंक्ति सह न सका। कुछ देरतक वह लहराती रही ; इसके उपरान्त चार कदम पीछे हटनेके साथ ही दो कदम आगे बढ़ने लगे। थोड़ीसी ऐसी रूसी फौजें भी थीं, जो पीछे हटनेके बदले अपनी जगह रह प्राण देना पसन्द करती थीं। रूस-सरकारके युद्ध-संवाददाता नेमिरोविच साहबने लिखा है,—“हमकी फ्रिंटियर गांठें नाम्नी फौज अपनी जगह रही और आत्मबलिदान करना अस्वीकार कर मारी गईं। इसी दिन यानो ११वीं अगस्तकी यह फौज रंगटित हुई थी ; इसलिये आज उसकी वर्ध-गांठ थी ; इस फौजने अपनी वर्ध-गांठके उप-सह्यमें इस दिनसे पहले यानो ६०वीं अगस्तकी रातकी भोज, पान और गान द्वारा खूब आनन्द मनाया था ; आज इस युद्धमें इसकी यः समाप्ति हुई।” इमतरहकी कितनी ही फौज और

कितने ही फौजके टुकड़े मारे गये। रूसियोंकी-जाणोंसे गड्ढे भर गये; समतल भूमिपर टिले बन गये। जो रूसी ठहरा, वह पढ़ते हुए जापान सैन्य-सागरमें डूब गया; कोई भी तैरकर किनारा पा न सका।

कुछ रूसी फौजोंके आत्मवलि देनेके फलसे रूसी सैन्य-पंक्ति स्यागच्युत होकर भी जापानियोंके सामनेसे भागकर नहीं; मचल मचलकर पीछे हटो; किन्तु अन्तमें वैसे ही आत्मवलि देनेवालोंकी समाप्ति हुई; वैसे ही जापानी सैन्य सागरने एकवार फिर वही दिगन्तवापी हर्ष-ध्वनि की और उस हर्षध्वनिसे कांप रूसी सैन्य-पंक्ति शीघ्र शीघ्र पीछे हटने लगी। शुशान पर्वतमाला रूसियों द्वारा परित्याग की जाने लगी; दुर्भेद्य किलोंको वह लम्बी श्रेणी रूसियों द्वारा खाली की जान लगी। शुशान पर्वतमालाकी एक ओरसे जापानी सैन्य-सागर पढ़ने; दूसरी ओरसे रूसी सैन्य-सागर उतरने लगा; उस विकट दुर्गश्रेणियोंकी एक ओरसे अखण्ड जापानी घुसने और दूसरी ओरसे सहस्र सहस्र रूसी सिपाही निकलकर लियावयाङ्ग नगरको ओर भागने लगे। अब जापानी सैन्य-सागरको अक्षर मिला; तब उसने भागते हुए रूसियोंको गोलियों और मेक्सिम प्रभृति छोटी छोटी तोपोंकी बाढ़से क्षतिग्रस्त करना आरम्भ किया। एक ओर जापानी सैन्य-पंक्तिके छोटे छोटे हल भागते हुए रूसियोंके पीछे पीछे चले; दूसरी ओर जापान-सैन्य-सागरने रूसियोंके छोड़े हुए मोरचोंपर अधिकारकर उसमें अमकर बैठना आरम्भ किया। २६ वीं अगस्तसे जो युद्ध आरम्भ हुआ था; इसतरह वह समाप्त हुआ। गत कोई साठ घण्टोंसे जापानी सैन्यने अक्षर नहीं खोली थी; क्षिप्र रूपसे आहार-

निद्राका सुख प्राप्त कर नहीं सकी थी ; ३१वींकी अहंनिशाके उप-
रान्त जापानी सैन्यके अधिकांश भागने रुन्नी मोरचों और
हताहतोंसे भरी रथभूमिमें लेट विश्राम किया। इन मोरचोंके
सामने ही मच्चू रियाका वह प्रसिद्ध लियावयाङ्ग नगर था ; शुयान
पर्वतके छोरसे छोरतक वह साफ साफ दिखाई देता था।
इस नगरको इस तरह अपने सामने देख जापानकी विजय-
वाहिनीको जो आनन्द प्राप्त हुआ होगा, उसका वर्णन क्या
किसी तरह भी किया जा सकता है ?

ओजूकी सैन्य-पंक्तिको अपने नवाधिकृत मोरचोंमें छोड़
अब हम सेनापति नोजूकी ओर मुड़ते हैं। उनकी सैन्य-पंक्तिके
एक भागने ओजूकी सैन्य-पंक्तिके साथ आगे बढ़े रुसको पूर्वोक्त
दुर्गमें गोकुके एकभागपर अधिकार कर लिया था ; इसलिये
इस भागके कामका हाल इतना ही है। दूसरा भाग नोजूके
अधीनस्थ सेनापति देवके अधीन था। देवको आज्ञा मिली थी,
कि जिस-समय कुरोकीकी सैन्य-पंक्ति आगे बढ़े उस समय
तुम भी सश्लवल खतल पथसे आगे बढ़ो और जिस
जगह कुरोकीकी सैन्य-पंक्ति ठहरे, उस जगह ठहर
उससे अपनी सैन्य-पंक्ति मिला दो। कुरोकीकी सैन्यकी अग्र-
गतिका समाचार पा २८ वीं अगस्तको सेनापति देवने सश्लवल
आगे बढ़ना आरम्भ किया। उनके पथमें सघन-वनाच्छिदित
पार्वत्य प्रदेश था ; उसे अतिक्रमकर ३० वीं अगस्तको वह लिया-
वयाङ्गके मैदानमें पहुँचे। देवकी सैन्य-पंक्ति और लियावयाङ्ग
नगरके बीच छोटोसी एक पर्वतमाला थी। प्रातःकाल कोई
दिवने विचार किया, कि सामनेकी उस पर्वतमालापर

अधिकार कर लेना चाहिये । आपने अपनी सैन्य-पंक्ति को उस पर्वतमाला की ओर बढ़ने की आज्ञा दी । सैन्य-पंक्ति बढ़ी ; उससे आगे आगे फौजी जामूस धड़े । कुछ ही आगे बढ़ने पर जापानी जासूसों को रूसी जासूस दिखाई दिये ; रूसी जासूसों के पीछे गिरदावरी के सवार दिखाई दिये ; यह सब देख जापानी जासूसों ने अपने सेनापति को समाचार दिया, कि सामने को पहाड़ी खाली नहीं ; उसपर रूसी फौज का कवज है । यह समाचार पाते ही देवकी सैन्य-पंक्ति ठहर गई ; उसके तोपखाने जल्द जल्द लग गये । दिन कोई सात बजे देवकी तोपों ने रूस-अधिकृत पर्वतमाला पर गोला-वृष्टि आरम्भ की । एक घण्टे की गोला-वृष्टि के उपरान्त जापानी सैन्य-पंक्ति ने फिर आगे बढ़ना आरम्भ किया । पर्वतमाला पर बैठे रूसियों ने देवकी सैन्य-पंक्ति को रोकने को चेष्टा की ; किन्तु उसका कोई फल नहीं हुआ । एक ही धावे में जापानी फौजे रूसियों को मारकाट भगा पर्वत-माला के शिखरदेश पर पहुँच बैठ गई और पर्वत-माला से उतरते हुए रूसी बिपाहियों को गोली की बाढ़ से घराशायी बनाने लगी । रूसियों को भगा पर्वतमाला के शिखरदेश पर ठहर जापानियों ने जब सामने निगाह की, सब उन्हें अपने सामने एक हराभरा मैदान और उसमें दूर लियावयाङ्ग नगर अवस्थित दिखाई दिया । लियावयाङ्ग देख नोजू को इस सैन्य-पंक्ति ने हर्षध्वनि की ।

नोजू की सैन्य-पंक्ति अभी अपने नवाधिकृत पर्वतमाला पर अच्छी तरह जमने भी न पाई थी ; ऐसे समय छोटे छोटे टीलों और बनों के बीचसे एक जवरदस्त रूसी फौज लियावयाङ्ग की

छोरसे निकल पर्वतमालाकी ओर बढ़ती दिखाई दी। इस फौजके साथ कोई पचास या साठ बड़ी बड़ी तोपें थीं। वनसे निकल पर्वतके ढामने पहुँच जब रूसी फौजने अपना आकार विस्तृत किया, तब जान पड़ा, कि दो डिविजन फौज है,—यानी कोई चालीस हजार। एक ओर रूसी फौजोंके तोपखाने लगने लगे; रूसी फौज धावेके लिये तय्यार होने लगे; दूसरी ओर देवने पर्वतमालाके ढालने-बाधे अपनी फौज फैंसाईं और पर्वतके गात्रमें जगह जगह तोपखाने लगा, उनकी बगलमें शीघ्र शीघ्र बने मोरचोंमें बाकी फौजे बैठा दीं; पर्वतके पीछे जापानी रक्षित सिपाही बंठे। इसतरह सेनापति देव दो डिविजन रूसी सैन्यका आक्रमण रोकनेके लिये तय्यार हुए।

रूसियोंने पहले खूब गोखन्दाजी की; इसके उपरान्त अपनी फौजोंको धावेकी आज्ञा दी। आज रूसी फौजे आक्रमण करने चलीं; जापानी फौजे आक्रान्त हुईं। रूसियोंको बड़ी आशा थी, कि इतने दिनोंसे सदा आक्रमणकारी जापानको अपने आक्रमणके फलसे जो विषयलक्ष्मी मिला करती थीं, वह आज जापानियोंको छोड़ उनको अङ्कशायिनी होंगी। रूसियोंने पर्वतमालाकी ओर हर्षनादकर भीमवेगसे धावा किया। तार नहीं थे; मारने नहीं थीं; कुंव्योंकी वह विकट माला भी नहीं थी; फिर भी, जापान-अधिकृत पर्वतमालातक पहुँचना कठिन था। जापानी फौजकी अच्छी बाढ़ें और जापानी तोपोंके समीप गोलें बढ़ते हुए रूसियोंके परेके परे साफ करने लगे। वह मार पड़ी, कि रूसियोंका उत्साह बहुत कुछ टूला पड़ ; वह अपनी पहली फुरती छोड़ सावधान हो आगे बढ़ने

लगे। किन्तु आगे बढ़कर जा कहाँ सकते थे; सुशकिलसे झूठ ही दूर आगे बढ़नेके बाद और आगे बढ़ना दुष्कर हो गया। यह धावा व्यर्थ हुआ; रूखी लौटे। इस दिन तीसरेपहरतक रूखियोंने ऐसे ही कितने ही धावे दिये और हर धावेमें अकत-कार्य हुआ। आपानी फौजे अपने मोरचोंमें अटल-अचल हो बैठी रहीं। दिन कोई तीन बजे—शायद तोपोंका गर्जन सुन--कुरोडीकी सैन्यके वामभागने उस और आ अपनी पं-क्तिको देवकी पंक्तिके साथ मिला दिया। इतना साहारा पा देवकी फौजेने पर्वतसे उतर रूखियोंपर धावा किया; रूखियोंके धावेकी तरफ आपानियोंका यह धावा व्यर्थ नहीं हुआ; रूखियोंके पैर उखड़ गये, वह जिस लियावयाङ्ग नगरकी ओरसे आये थे, उसी लियावयाङ्ग नगरको ओर वापस गये।

प्रधान सेनापति मारुप्रभ ओयासाने कुरोडीकी आज्ञा दी थी,—“तुम अपनी सैन्यके वाम और मध्य-भागको लियावयाङ्गकी ओर बढ़ाओ और दाहने भागको जिस तस्तिहो नदीमें जा तङ्गहो नदी मिल गई है, वह तस्तिहो नदी पार करा आगे बढ़ा लियाव-याङ्गकी बगलसे उसके पीछे पहुँचा लियावयाङ्ग-सुकदन रेलपथ-पर अधिकार कर लो, जिसमें रूखी फौज लियावयाङ्गसे भाग न सके।” यह भी आज्ञा थी,—“ऐसे जैसे लियावयाङ्गके समीप पहुँचना, वैसे वैसे अपनी सैन्यके तीनों भागोंको समवेत करते जाना, जिनमें जिस समय तुम्हारा सैन्यका दाहना भाग रेल-पथके समीप पहुँचे, उस समय तुम्हारी सैन्यके तीनों भाग परस्पर मिल एक सुदृढ़ सैन्य पंक्ति तयार कर सके।”

कुरोडीने इस आज्ञाके अनुसार काररवाई आरम्भ की।

बहुत बड़ा काम था; बहुत बड़ी तय्यारी आरम्भ की। २६वीं हीसे तय्यारी आरम्भ हुई, जो ३०वीं की अर्द्धनिशातक चली। अर्द्धनिशातके उपरान्त जापानी इज्जीनियर तत्सुहो नदीपर कितने ही पुल बांधवाने लगे; पार्वत्य पक्षमें घोर वृष्टि होनेकी वजह तत्सुहो खूब बढ़ी थी; उसका जल दोनों किनारोंतक लजालज भर बढ़ी ही तेजीसे बह रहा था; उस अर्द्धनिशामें बढ़ी तत्सुहो-पर पुल बांधनेमें जापानी इज्जीनियरोंको बड़ी शक्ति हुई। फिर भी, समयपर काम तय्यार हो गया; सूर्योदयसे पहले ही कितने ही सुदृढ़ पौजी पुल बनकर तय्यार हो गये; कुरोकीकी सैन्यका दाहना बाजू उन पुलों द्वारा नदी पार करने लगा। मध्य-भागका भी कुछ अंश इस दाहने भागमें मिला दिया गया, जिससे उसकी शक्ति और भी बढ़ गई। कुरोकीकी सैन्यका यह दाहना बाजू बहुत बड़ा बाजू बन गया; ३०वीं अगस्तको प्रातःकालसे इस बाजूकी पंक्ति नदी पार करने लगीं; ३१वीं अगस्तको सन्ध्यातक पार चतरती रहीं; अन्तमें इसी तारीखकी रातको दाहने बाजूकी लोपे भी जब नदी पार कर चुकीं, तब सम्बन्ध दाहना बाजू तत्सुहोके इस पारसे उस पार पहुँचा। उस पार पहुँच वह एक बड़ी ही लम्बी पंक्ति तय्यार कर अपने निर्दिष्ट स्थानकी ओर बढ़ने लगा।

कुरोकीकी पौजके बाये बाजूके सेनापति देवकी सैन्य-पंक्तिके बाध लियावयाङ्गके सामने व्यवस्थान करनेका हाल हम लिख चुके हैं; अब इस सैन्यके मध्यभागका हाल सुनिये। ३०वीं अगस्तको एक ओर जिस समय वह दाहना बाजू नदी पार रहा था, उस दिन उसी समय मध्य-भाग लियावयाङ्गकी ओर

यद्ग रहा था । इस दिग्गच्छे पर्वतमात्राये तयकर अन्तमें इस भा-
 गने जिस पर्वतमात्राके समीप पहुँच अवस्थान किया, उस पर्वत
 मात्राके शिखरदेशपर चढ़नेवाले जापानी अप्सरों और विदेशी
 संवाददाताओंकी बहुत दिगोंकी एक मनोकामना पूर्ण हुई । इन
 लोगोंने देखा, कि रूढ़को फौजी राजधानी लियावयाङ्ग नगर अपने
 पूरे सौन्दर्य और प्रभाके साथ सामने चमकता दिखाई देता है ।
 विलायती अखबार छाफर्डके संवाददाताने यह दृश्य देख लिखा
 था,—“एक अत्युच्च पर्वतशिखरसे मैं नीचे देख रहा हूँ ।
 इस पर्वतके पादमूलसे आगेकी ओर जहाँतक दृष्टि जाती है,
 वहाँतक एक सुविशाल हरामरा मैदान फैला हुआ है । इस
 मैदानमें जगह जगह भूरे भूरे धब्बे दिखाई देते हैं, जो नई
 धनी अगणित कबरे हैं । हमारी बगलसे तस्लिहोकी चौड़ी
 घाटा सशब्द बहकर आगे निकल गई है । कुछ दूर आगे जा
 यह नदी एकाएक बाये मुड़ गई और अपने क्रोड़में लियावयाङ्ग
 नगरकी ओर उलके पीछेसे समुद्रकी ओर निकल गई है ।
 नदीके क्रोड़में लियावयाङ्ग नगरकी इमारतें चमक रही हैं ;
 नगरकी कुल इमारतोंसे जंचा एक सुविशाल मन्दिरका अत्युच्च
 चूड़ा शानो गगनस्पर्श कर रहा है । जिस मन्दिरका यह चूड़ा
 है ; चीनाओंमें उसका बड़ा आधार है । कारण, इस मन्दिरमें
 सिवा बहुदेवकी मूर्तियोंके उनसे पूर्ववर्ती अन्यान्य आठ अवतारों
 कृष्ण, राम, वामन, वराह प्रभृतिकी मूर्तियाँ भी हैं । नगरकी किनारे
 भुङ्कके भुङ्क वृक्ष हैं, जिनकी हरी हरी टहनियोंके बीचसे
 लियावयाङ्ग नगरके किनारेकी सफेद सफेद इमारतें साफ दिखाई
 देती हैं । नगरकी बगलके मैदानोंमें रसदादिके बड़े बड़े टेर

लगे हुए हैं। नगरकी बगलसे नदी पारकर दूरतक फैली रेलकी सफेद लाइन दिखाई देती है। नगरके दाहने शुशान पर्वतमाला है, जिसपर अबतक रूसी फौजोंका अधिकार है ; नगरके सामनेकी बहुसंख्यक पर्वतमालाओंके छोरपर एक पहाड़ी है, जिसपर जापानी सैन्य-पंक्तिकी ध्वजा लहरा रही है।

“लियावयाङ्ग नगर मानो उस भावी युद्धको प्रतीक्षा कर रहा है ; जिसके फ़ैसलेपर प्राच्य और प्रतीच्यके बीचमें होनेवाले युद्धके प्रथम अंशका फ़ैसला होनेको है। चारो ओरकी छाई हुई शान्तिकी भेदकर समय समयपर जो एक अविश्राम घोर-गभीर गर्जन सुनाई दे रहा है, वह दूर चलते हुए किसी घोर युद्धकी सूचना दे रहा है। नगर और नगरके सामनेके उच्च भूभागपर रूसियोंका अधिकार है। इससे आगे मैदान है। मैदानके छोरपर वन, उपवन आदि जापानियोंकी छाया है। जिन पर्वतपर मैं खड़ा हूँ, उसके नीचेके मैदानमें जापानी रेजिमेण्टें, बटालियन और डिविजन आगे बढ़ रहे हैं। उनके बढ़नेके ढ़ङ्गसे जान पड़ता है, मानो उन्हें विजय-प्राप्तिका पूर्ण विश्वास है। जापानी फौजोंका बाइसल लियावयाङ्ग नगरको घेर रहा है ; लियावयाङ्गको क्या दशा होगी ?”

इसतरह क्रम क्रमसे आगे बढ़कर ३१वीं अगस्ततक कुरो-कीकी सैन्यका बायां बाजू और मध्य-भाग लियावयाङ्ग नगरके सामने पहुँच गया ; दाहना बाजू जवरदस्त तोपखानेके साथ लखिहो नदी पारकर लियावयाङ्ग नगरकी बगलसे चक्कर काट कर पश्चाद्भागके रेल-पथपर अधिकार करने चला। लियाव-महासमरका द्वितीय पर्व यहीं समाप्त हुआ।

षोडश परिच्छेद ।

लियावयाङ्ग-महासमर—परिशिष्ट ।

आदि पर्व हो गया ; मध्य पर्व भी हो गया,—व्यव लियाव-याङ्ग महासमरका परिशिष्ट है । इतने दिनोंतक जो युद्ध चल रहा था, अब उसका फल प्रकट होनेको है ।

१ली सितम्बरको प्रातःकाल लियावयाङ्ग नगरकी वही स्थिति थी, जो फ्रान्स-इम्प्राट् तृतीय नेपोलियनके समय फ्रान्स-जर्मन-युद्धमें फ्रान्सीसी नगर सेडानकी थी । जिन पाठकोंने इस युद्धका वर्णन पढ़ा है, उन्हें स्मरण होगा, कि इस १ली सितम्बरको ही सद्यः सहस्र सिपाहियों और कोई पांच सौ तोपोंसे सेडान घेर सेडानमें बैठी फ्रान्सीसी फौजपर जर्मनोंने गोसन्दाजी आरम्भ की थी । सेडानमें फ्रान्सीसी सैन्यकी जो दुर्दशा हुई थी, उसका वर्णन यहाँ असङ्गत होगा ; हां इतना कहना उचित है, कि इस युद्धके फलसे सहस्र सहस्र फ्रान्सीसी सिपाहियोंको आत्मसमर्पण करना पड़ा था और इस युद्धके उपरान्त जर्मन-सैन्य आखानीके साथ फ्रान्स-राजधानी पेरिसके दरवाजेतक पहुँच सकी थी । जिस मासकी जिस तारीखको सेडानपर गोला-वृष्टि आरम्भ हुई थी, उसी मासकी उसी तारीखको लियावयाङ्ग नगरपर गोला-वृष्टि आरम्भ हुई । सेडान युद्धमें जर्मन जोते, फ्रान्सीसी हारे ; लियाव-याङ्ग-युद्धमें कौन जीतेगा और कौन हारेगा ?

कुछ देरके लिये जापानी फौज छोड़ रूसी फौजकी ओर चलिने ; कुरोपाटकिनके सहर लियावयाङ्ग नगरमें चलिने ।

लियावयाङ्ग रेल-एशनके समीप बड़ी हलचल है। एशनकी एक अतिरिक्त लाइनपर कुरोपाटकिनको स्पेशल ट्रेन खड़ी है। ट्रेनमें एंजिन लगा है, जिसका बायब हर समय तय्यार रहता है; कल घुमाते ही ट्रेनको भगा ले जा सकता है। इस ट्रेनके इंजिन और रेलवे एशनमें कहीं अफसरोंकी भौड़ है। सभी कूसो अफसर व्यस्त हैं; कोई घासा है; कोई घाता है; कोई खड़ा ही अपने अधीनस्थ अफसरोंकी आज्ञायें देता है। कोई घोड़े पर है; कोई पैदल है; कोई साइकिलपर है। ३१वीं अगस्तकी सन्ध्यासे कुरोपाटकिनको स्पेशल ट्रेनके गिर्दकी हलचल और भी बढ़ी। गत कई दिनोंसे कुरोपाटकिन समयपर खा नहीं सकते हैं, समयपर सो नहीं सकते हैं, समयपर कोई काम कर नहीं सकते हैं। चारों ओरसे उन्हें तोपोंके गर्जनकी आवाजें सुनाई दे रही हैं; चारों ओरसे उनके पास युद्धस्थलसे भंजे हुए तार धा रहे हैं। किसी तारको देख कुरोपाटकिन विह्वल हो उठ खड़े होते हैं; किसी तारको देख कुरोपाटकिन चिन्ताभाराक्रान्त बड़ी ही बेचैनीके साथ अपनी स्पेशल ट्रेनमें टहलने लगते हैं। फिर भी; उन्हें झुटकारा नहीं; चिन्ता कर कोई सुयुक्ति छूट निकालनेका अवसर नहीं; तार पाते ही तारका प्रत्युत्तर देनेके लिये बाध्य होते हैं; तार द्वारा कोई शिकायत सुनकर उसी समय उसके प्रतिकारकी व्यवस्था करनेके लिये बाध्य होते हैं। उनकी आज्ञा ले अफसर दौड़ते हैं, सवार दौड़ते हैं, पैदल दौड़ते हैं; जैसी आज्ञा होती है, वैसे मगुष्य दौड़ते हैं।

लियावयाङ्ग एशनके समीप ही लियावयाङ्गके राजा रूसियोंकी थी। रूसियोंकी बसतीमें उत्तमोत्तम राहें थीं; राहोंके

गिरं साफ-सुपरी पटरियां या फूटपाथ थे । छोटे छोटे उद्यानोंमें आलीशान इमारतें थीं । लम्बे-चौड़े बाजार थे ; बाजारोंमें करीनेसे लगी रङ्ग-वरङ्गी और बड़ी-छोटी बहूतसी चीजोंसे भरी बड़ी बड़ी दुकानें थीं । गेस-विजलीकी रोशनी थी ; सुपेय जलकी सुयवस्था थी । सिवा इसके इसी बसतीमें 'पगोडा-गरडन'या मन्दिरो-द्यान नामक सुरम्य बाग था, जिसमें दिनमें कई वार पानीका छिड़काव होता था, जिसकी सफाईके लिये कितने ही कुली नियुक्त थे । सन्ध्या समय इस बागमें बेखड बाजा बजता था । नित्य सान्प्र-समीरण सेवन करनेके लिये अगणित रूसी नर-नारी इस वाटिकामें एकत्र होते थे । दृष्टांतसे, कुञ्जभवनोंमें, जलाशयोंके तटपर खान-पान और आमोद-प्रमोद चलता था । बड़ी बहारे होती थीं ; बड़े मजे लूटे जाते थे । सिवा इस उद्यानके इसी बसतीमें डाकखानेकी, अदालतकी, बङ्ककी, बीमेकी,—कितने ही व्यवसायकी कितनी ही सुदृश्य व्यङ्गलिकायें थीं, जिनमें दिनको आनेजानेवालोंकी भीड़ लगी रहती थी । लियावयाङ्ग नगर बड़ी रौनकपर था ; किन्तु जबसे लियावयाङ्ग-महासमर आरम्भ हुआ था, तबसे इस नगरकी रौनक क्रम क्रमसे फीकी पड़ने लगी थी । इतना ही नहीं ; जैसे जैसे युद्ध आगे बढ़ा, वैसे वैसे कितने ही दूरदर्शी रूसी और चीना अपनी-अपनी हर-दुकानपर ताले लगा करपरिवार भागने लगे थे ; भागनेवाले यात्रियोंसे खचाखच भरी कितनी ही ट्रेनें नित्य लियावयाङ्ग नगरसे कूटती थीं । इस-तरह युद्धके साथ साथ नगरका सन्नाटा बढ़ा और ३१वीं अगस्तकी सन्ध्यातक बहुत ही बढ़ गया । सन्नाटा इसलिये नहीं बढ़ा, कि नगरमें आश्मियोंकी कमी थी ; नगरके निर्द्धन और मध्यश्रेणीके

अधिवासी—कितने ही धनी अधिवासी भी ; अड्डपर निर्भर हो नगर हीमें थे ; सिवा इसके बहुतेरी रूसी फौजों भी नगरमें और नगरके पड़ोसमें थीं ; मनुष्योंकी कमी नहीं थी और मनुष्योंके अभावसे लियावयाङ्ग नगरमें सन्नाटा छाया नहीं था । सन्नाटा छाया था,—वाजारोंके बन्द होनेसे—अवसायके बन्द होनेसे—अधिवासियोंके मकानोंके द्वार बन्दकर भीतर बैठनेसे । फिर, सन्नाटा छाया था—युद्धके भीषण हो उठनेसे—चारों ओरसे जापानी सैन्यके चढ़ आनेसे ।

३१वीं अगस्तकी रातको सन्नाटा और भी बढ़ा । सुसमाचार कुछ देरके लिये दबा रहे, तो दबाराह सक्रमता है ; किन्तु सुसमाचार कभी दबा रह नहीं सकता ; वायुके किसी प्रचण्ड झोंकेकी तरह अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक बहुत बड़े भूभागमें फेंक जाता है । ३१वीं अगस्तको अन्धराको जैसे जैसे घोंकू और नोजूकी सैन्य-पंक्ति रूसी मोरचोंके समीप होने लगी, वैसे वैसे लियावयाङ्ग नगरमें रूसियोंके दबनेका समाचार पहुँचने लगा । इससे पहिले ही चारों ओरसे रूसी हताहतोंसे भरी अखंड गाड़ियां लियावयाङ्ग नगर पहुँच चुकी थीं और उन्हें ही देखकर नगरके चीना तथा रूसी अधिवासियोंको युद्धके भावी परिणामका पूर्व-चिह्न दिखाई दे चुका था । लियावयाङ्गके बाहर जगह जगह शत शत बड़े बड़े गड्ढे खोदे और रूसियोंकी लाशोंसे भरे जाकर तोपे गये थे । कितने ही मकान खाली किये जाकर अस्पतालमें परिणत किये गये थे । इन अस्पतालोंमें जगह जगह नितान्त बीभत्स दृश्य दिखाई देते थे । कहीं किसी अचेत रूसीका घेर काटा जाता था ; कहीं हाथ काटा जाता था ; कहीं जखमोंकी पीड़ासे

विज्ञाता रूसी 'कोरोफार्म' वैद्योपेक्षीकी बूसे अचेत किया जाता था; कहीं कहीं रूसी चैतन्यताभन्तर और अपनेको पैर धा हाथसे शून्य पा शीघ्र शीघ्र मर रहा पा। अस्पतालमें जगह जगह कटे हुए पैर आदिसे ढर लगे थे। अस्पतालमें आहतोंकी संख्या क्रमशः बढ़ती जाती थी, विशेषतः ३१ वीं अगस्तकी सन्ध्याके उपरान्तसे वह और भी शीघ्र शीघ्र बढ़ने लगी।

इस तारीखको प्रायः अर्धनिशाके समीप समग्र लियावयाङ्ग नगरमें एकांक यह समाचार फंला, कि ओजू और नोजूकी सम्मिलित सैन्य-पंक्ति द्वारा रूसी सैन्य परास्त हुई। राहमें मझाटा था; किन्तु मकानोंके भीतर धौतर खूब आवादी थी। एक मकानसे दूसरे मकान; दूसरेसे तीसरे मकान,—खिड़की, छत और बरामदेकी दाहसे शहरभरमें खबर फैल गई। कितने ही लोगोंने इस समाचारपर विश्वास किया; कितने ही प्रमाणाकी प्रतीक्षा करने लगे। प्रमाण मिलनेमें अधिक विश्वास नहीं हुआ। दिनभरके तोपोंकी गर्जनके अन्तमें सन्ध्याके उपरान्तसे वह जो बाढ़की आवाजे और युद्ध-कोलाहल सुनाई दे रहा था, वह क्रम क्रमसे नगरके समीप होने लगा। इसके बाद ही रूसी सैन्य-सागर ओजू और नोजूकी सैन्यके सामनेसे पीछे हट नगरके बाहरकी बाटिकाओं और उच्च भूभागका आश्रय लेने लगा। इतना ही नहीं; और भी प्रत्यक्ष प्रमाण मिला। अगस्तमें रूसी फौजे युद्धस्थलसे लौट लियावयाङ्ग नगरके बीच या किनारेसे कुरोपाटकिनके सदर लियावयाङ्ग रेल-स्टेशनकी ओर जा रही थीं। जो फौजे लियावयाङ्ग नगरके बीचसे लौट रही थीं, नगर-बाहियोंने भारोकोसे उदपर निगाह की। उन्हें रूसी फौज

नितान्त दुर्दशाग्रस्त दिखाई दी। किसी फौजके साथ दश
 अफसर थे; किसीके साथ पांच। किसी फौजमें पांच
 सात सौ सिपाही थे, किसी फौजमें सौ ही दो सौ।
 हरेक सिपाहीका चेहरा सूखा हुआ था; आंखें धंसी हुई थीं;
 गण्डस्थल जवड़ेकी हड्डीसे चिपके हुए थे। चुघासे, प्याससे,
 गत कई दिनोंकी युद्ध-कान्तिसे सिपाही नितान्त निर्जल हो गये
 थे। उनके हृदयमें उत्साह नहीं था, उनकी छातीमें बल नहीं
 था, उनके चित्तको धैर्य दिखानेवाली भविष्यत्की कोई आशा
 नहीं थी। किसी सिपाहीके शिरपर टोपी नहीं थी, किसीकी
 वरदी फट गई थी, किसीके जूता नहीं था,—नङ्गे पैर जा रहा
 था। किसी सिपाहीके हाथमें बन्दूक नहीं थी, किसी सिपाहीकी
 कमरमें कमरबन्द नहीं था, किसीका परतला टुकड़े टुकड़े हो
 गया था। वेणु बाजा नहीं था, शृङ्गला नहीं थी, क्रम नहीं था;
 भेड़ोंके झुण्डकी तरह रूसी सिपाही एक ओरसे दूसरी ओर जा
 रहे थे। उनके पैरोंका शब्द होता था; उनके मुंहसे आवाज
 निकलती नहीं थी।

सिवा इसके इन फौजोंके बीचसे, आगेसे, पीछेसे जिधरसे राह
 मिलती थी, उधरसे अगणित गाड़ियां जा रही थीं। कोई अल-
 गाव नहीं था; रसदकी गाड़ियां, तोपोंकी गाड़ियां, जखमियोंकी
 गाड़ियां, लाशोंकी गाड़ियां,—सब तरहको गाड़ियां एक ही
 पंक्तिमें या एक साथ एक ओरसे दूसरी ओर भागी चली जा
 रही थीं। किसी तोपखानेके दश ही गोलन्दाज बचे थे, किसीके
 पचीस पचास बचे थे; किसी तोपका पहिया टूटा हुआ था,
 धुरी टूटी हुई थी,—तोपों और गोलन्दाजोंकी अवस्था

और भी शोचनीय थी। जो गोलन्दाज या सिपाही सामान्यरूपसे
 आहत हुए थे, उनको गाड़ियोंमें जगह दी नहीं गई थी। उनके
 जखमोंसे रुधिर बह रहा था और वह चलते चलते क्लान्त हो
 दम लेनेके लिये राहकिनारे बैठ जाते थे। इतने प्रमाण मिल-
 नेपर सन्दिग्ध नगरवासियोंके मनका सन्देह मिटा; जापानकी
 क्षय हुई; रूसी सैन्य पराजित हुई; नगरवासी मन ही मन
 गभीर चिन्तामें निमग्न हुए; प्रातःकाल उन सबके भाग्यमें
 क्या लिखा है ?

इसी समय आश्वे एकवार फिर स्पेशल ट्रेनमें अधिष्ठित
 कुरोपाटकिनके समीप चले। एक ओर कुरोपाटकिनकी ट्रेनके
 गिर्दके सुदूरवापी मैदानमें परास्त रूसी फौजे एकत्र हो रही
 थीं; दूसरी ओर एकाएक उन्हें तार द्वारा समाचार मिला,—
 “कुरोकीकी सैन्यका साहना वाञ्छू तस्त्रिहो नदी पारकर लियाव-
 याङ्गकी बगलसे आगे बढ़ रहा है; जान पड़ता है यह वाञ्छू
 लियावयाङ्गके पीछेके रेल-पथपर अधिकारकर रूसी-सैन्यसे भरे
 लियावयाङ्ग नगरको पश्चाद्भागसे घेर लेना चाहता है; इस प्रबल
 वाञ्छूके रोकनेमें रूसी सैन्य असमर्थ है।” पाठक जानते हैं,
 कि कुरोकीकी सामने रूसकी युरोपीय सैन्य थी; वही युरोपीय
 सैन्य समसंख्यक जापानी सैन्यकी रोकनेमें असमर्थ थी; उसे
 मदद चाहिये। मदद भी यथासम्भव शीघ्र चाहिये; नहीं तो
 एकवारं यदि जापानी सैन्य रेल-पथपर अधिकार कर लेगी, तो
 प्रधान सेनापति कुरोपाटकिनके साथ साथ लक्ष लक्ष रूसी
 सिपाहो लियावयाङ्गमें अवरुद्ध हो अन्तमें या तो मारे जायेंगे
 या आत्मसमर्पणकर जापानियोंके कैदी बननेपर बाध्य होंगे।

प्रचक्र प्रताप ओजू और नोजूको सैन्यकी विजयप्राप्तिके समाचारके उपरान्त ही कुरोकीकी सैन्यकी इन भयङ्कर घमकीका समाचार पा व्याकुल कुरोपाटकिन और भी व्याकुल हो गये। इस आसन्न विषम विपद्से रक्षा कैसे होगी ?

एक ही उपाय था। ओजूकी सैन्यके सामनेसे लौटी जो अगणित फौजे कुरोपाटकिनके इर्दगिर्द जमा हो रही थीं, वह ट्रेनों द्वारा दूरतक रेल-पथ किनारे उतार दी जाये और उन्हें आज्ञा दी जाये, कि जबतक लियावयाङ्ग खाकी किया न जाये, तबतक वह जापानी सैन्यको रेल-पथके समीप आने न दें। सिवा इसके कुरोकीके सामनेको युरोपीय सैन्यको कहा जाये, कि वह इस रेल-पथकिनारेकी सैन्यसे पूर्ण रूपसे साहाय्य ले। ऐसी ही आज्ञा दो गई और इसीके अनुसार कार्य आरम्भ हुआ। कितने ही समझदारोंने कहा है, कि कुरोपाटकिन यदि यह काररवाई करनेमें तनिक भी विलम्ब करते, तो जापानी सैन्य-पाशमें फंस खसै न्य उसका सर्वनाश हो जाता। अङ्ग-निशाके उपरान्त ही शुभान पर्वत तथा उसकी बगलकी दुर्ग-मालासे भागीरुधी फौजे ट्रेनमें सवार कराई जाकर निर्दिष्ट स्थानकी ओर रवाना की जाने लगीं। एक हलचल मिटने न पाई थी, कि यह दूनरी हलचल आरम्भ हुई। रातोंरात कितने ही पुलों द्वारा तस्सिही नदी पार करा लियावयाङ्ग नगरके प्रोहि रेल-पथ और कुरोकीकी सैन्यके आगे बढ़ते हुए दाहने बाजूके बीच रूसी सैन्यकी एक सुदृढ़ पंक्ति तय्यार कर दी गई। कैसे-खने जापान-सेनापतियोंकी बैनी कोई आघा न करके भी इस गतिके ये कुरोपाटकिनकी खूब प्रशंसा की है। कहा है,—“जापा-

निघोने ससैन्य रूस-सेनापति कुरोपाटकिनकी चाणाकीके साथ जिह्र जालने फंझानेकी चेष्टा की थी, वीरवरने उस जालसे ससैन्य अपनेको निकाल अपने रण-पाण्डित्यका पूर्ण परिचय प्रदान किया ।”

अब रूसी सैन्यकी आंखें अच्छी तरह खुल गई थीं । प्रमाण पहचाने भी मिल चुका था ; किन्तु इस लिवावयाङ्ग महा-दुहने और भी प्रमाण मिल गया, कि एशियाके चूर्ति-पूषक जापानी लिखी तरह भी घृणापात्र नहीं ; और एक जापानी सिपाही एक ही नहीं ; दो बल्कि समय उपस्थित होनेपर तीन रूसी सिपाहियोंको पदक्षित कर सकता है । अबतक रूसी सिपाहियोंको उनके अफसर तरह तरहसे गाल बजा मुलावेमें छालते आते थे । कभी उनसे कहते थे, कि अभी तुम्हारी संख्या कम है ; इसीलिये तुम जापानियोंके सामनेसे पीछे हटाये गये हो ; कभी कहते थे, कि रूसी अफसर इस जगहको अप्र-योजनीय नगण्य समझते हैं ; इसीलिये तुम यह जगह परित्याग-कर पीछे हटनेके लिये आदिष्ट हुए हो ; अन्तमें कहते थे,— जैसे ही यथेष्ट रूसी फौजें दुहस्यलमें खमवेत हो जायेंगी, वैसे ही पवित्र रूसकी वीरवाहिनियां रणहुङ्गारसे दिशाये प्रतिध्वनित करती, तुच्छ जापानियोंपर टूट उन्हें मञ्चूरिया और कोरियासे निकाल अन्तमें सागर पारकर जापान पहुँच जापान-राजधानी टोकियोपर अपनी विजय-बैजयन्त्रो उड़ावेँगी ।” रूसी सिपाही उन्नत्तप्रज्ञापङ्क्तु इन आशापूर्ण बातोंकी सुन नितान्त आल्छादिन ही जयध्वनि किया करते थे । किन्तु इस बार लिवावयाङ्ग महासमरमें परास्त होनेपर रूसी अफसर रूसी कोई बात बना

नहीं सके। वना कैसे सकते थे? रूसी सिपाही अपनी आंखों देख रहे थे, कि यह नगर यूरोपाटकिनका मद्र या रूसी फौजकी राजधानी था; इसकी रक्षाके लिये चारों ओरसे बहुसंख्यक रूसी फौजे एकत्र की गई थीं; आक्रान्त रूसियोंकी अपेक्षा आक्रमणकारी जापानी सिपाहियोंकी संख्या बहुत कम थी,—इतनी तय्यारी, इतनी सुविधा होनेपर भी रूसी फौजे जापानी फौजोंके सामनेसे भाग रही थीं। इन प्रत्यक्ष प्रमाणोंपर धूल भोंक जापानी फौजोंकी श्रेयता छिपाई कैसे जा सकती थी? इसीलिये इस महायुद्धमें रूसके प्रत्येक सिपाहीके मनमें ध्रुव विश्वास हो गया, कि एशियाके जापानी उनसे प्रबल हैं और अपनी शक्तिकी वजह ही वह रूसियोंको परास्त करनेमें सक्षम हुए हैं। खबर है, कि इसी युद्धके बादसे रूसियों तथा युरोपकी अन्यान्य जातियोंने जापानियोंको सभ्य जापानो कहना आरम्भ किया था, जिसपर किसी समझदार जापानीने हंसते हंसते कहा था,—“जो ‘सभ्यता’ इतने रक्तपातके बाद प्राप्त की जा सकती है, उस सभ्यताको दूर हीसे प्रणाम।”

बालाईं वाते' बहुत हुईं; अब हमें युद्धकी ओर ध्यान देना चाहिये। आरम्भ हीमें लिख चुके हैं, कि यह युद्ध लियेवयाङ्ग महासमरका परिशिष्ट है। इस अंशमें सबसे पहले हम ओजू और नोजूकी सम्मिलित सैन्य-पंक्तिका कार्य वर्णन करते हैं। शी सितम्बरको प्रातःकाल इन दोनों सेनापतियोंको सैन्य-पंक्ति शुशान पर्वत तथा उसकी वास्तको दुर्भेद्य दुर्ग-पंक्तिमें सुदृढ़ रूपसे बैठी दिखाई दी। इन मोरचोंसे भागनेपर रूसी सैन्य-पंक्तिका कुछ अंश तो यूरोपाटकिनके आज्ञानुसार सेनापति

कुरोकोके आगे बढ़ते दाहने बाजूके सामने पहुँचा और ऊँच
 अंश लियावयाङ्ग नगरसे बाहरके बागों तथा उच्च-भूभागमें
 सुदृढ़ मोरचे बना बैठ गया । लियावयाङ्ग नगरके दाहने—शुशान
 पर्वतके सामने कितने ही रूसी किले थे ; इन किलोंमें रूसी
 फौजे ठहाठस भर गईं । शत शत रूसी तोपे इन किलों और
 लियावयाङ्ग नगरसे सटे हुए रूसी मोरचोंमें लगा दी गईं ।
 इस तय्यारीके साथ बैठ रूसी जापानी सैन्य-पंक्तिके आगे बढ़नेकी
 प्रतीक्षा कर रहे थे ।

इधर ओजू और नोडूकी सैन्यने जबसे विजय प्राप्त की थी,
 तबसे आगे एक कदम-भी बढ़ना भूल वह कितने ही प्रयोजनीय
 कामोंमें लगी हुई थी । इस समय रसद-विभाग, बारबरदारी-
 विभाग, अस्पताल-विभाग प्रभृति कितने ही विभागोंके आद-
 मियोंके उस गवविजित रणस्थलमें एकत्र ही जानेकी वजह उनकी
 संख्या बढ़कर दो लाखसे भी ऊपर हो गई थी । एक तो इतने
 आदमियोंका उसतरह वहाँ एकत्र रहना ही उतना स्वास्थ्य-
 नियमानुकूल नहीं था ; दूसरे रणस्थलने जैसी विकट स्थिति
 धारण की थी ; वह जिसतरह असंख्य लाशोंकी विकट विभी-
 धिकासे लोमहर्षण बनी थी, उससे उतने मनुष्योंका वहाँ रहना
 ऐसे एक नहीं, अनेक विधियोंके प्रतिकूल था । ऐसी अवस्थामें
 इतने आदमियोंको वहाँ स्वस्थ रखनेके लिये सबसे पहले रण-
 क्षेत्रके उस महाशुशानको अपसारित करनेकी बड़ी जरूरत
 थी । इसलिये सबसे पहले आगे बढ़ना छोड़, लियावयाङ्ग
 नगरपर अधिकार करनेका खयाल छोड़ जापानी फौजे उस
 रणस्थलकी विभीधिका मिटानेमें प्रवृत्त हुईं ।

रात्रिका अन्धकार बीतने और प्रातःकालकी खफेदी फैलनेपर जापानियोंकी अपनी गत रातकी जीती युद्ध-भूमिमें बड़े ही विकट दृश्य दिखाई दिये। कोसोंकी लम्बाईमें रूसियों और जापानियोंकी अगणित लाशें पड़ी थीं। सभी ठंडी हो अकड़ गई थीं। किसीका हाथ उठा था, किसीका पैर सिझड़ा था, किसीकी गरदन उठी थी, किसीकी कमर नीची होनेकी वजह लाश बैठ गई थी। किसीकी आंखें खुली थीं; बन्द होंट बैठे हुए थे—किसीकी आंखें भी खुली थीं और मुंह भी खुला था और उस खुले हुए मुंहके भीतरसे दांतोंकी पंक्ति दिखाई देनेको वजह लाश अट्ट अट्ट विकट हास्यध्वनि करनेपर उदत्त प्रतीत होता था। फिर, कितनी ही लाशें एक या दो दिन नहीं; तीन तीन दिनोंसे पड़ी थीं; तपनके आधिक्यसे सड़ने लगी थीं; उनके अङ्गप्रत्यङ्ग बहुत फूल आये थे; उनका आकार इतना भयङ्कर हो गया था, कि उस देख उस ओरसे आंखें मोड़ ली जाती थीं। मड़े हुए मांस और बहकर सूखते हुए रक्तके दुर्गन्धसे युद्धस्थलमें एक अनुपमेय गन्ध फैल रहा था; मांसके स्रोमसे मक्खियोंके अगणित झुण्ड अपनी कालिमासे रक्तस्थलको काला बना रहे थे। फिर, तोपखानोंके घोड़े, सवारोंके घोड़े अफसरोंके घोड़े—कितने ही दलोंके घोड़े अपने सवारोंसे जुदा हो दल बांध भूखंड, घाससे अधीर हो और कई दिनोंसे विश्राम न पानेकी वजह अत्यन्त विज्वल हो वायुवेगसे कोसों लम्बे युद्ध-स्थलमें कोसोंका चक्रर लगाते फिरते थे। २१वीं सितम्बरको प्रातःकाल जापानकी विजयवादिनीने अपने पीछे सुड़ जव निगाह की, तब रक्तस्थलको ऐसे ही दृश्योंसे परिपूर्ण देखा।

अफसरोंने शीघ्र शीघ्र इस विकट-दर्शन महास्मशानकी वहांसे अपसारित करनेकी व्यवस्था की। लाख लाख जापानी अपने अपने अफसरोंकी अधीनतामें युद्धस्थल त्राफ करनेमें प्रवृत्त हुए। रूसियोंकी लाशोंके लिये एक ओर बहुत ही गहरे और लम्बे-चौड़े गड्ढे खोदे जाने लगे; जापानियोंकी लाशोंके लिये दूसरी ओर पर्वतप्रमाद्य जंघी जंघी चिताये तय्यार की जाने लगीं। बहुतेरे गड्ढे खोदे गये; बहुतेरी चिताये तय्यार की गईं। रूसियोंकी लाशें गड्ढोंमें भर ऊपरसे मट्टी दी गईं; गड्ढा बराबर हुआ; मट्टी बचनेसे बराबर गड्ढेके ऊपर बीचमें एक जंघा थोड़ा तय्यार किया गया; उसपर खलीब या ईसाइयोंके प्रभु ख्रीष्टका आत्मोत्सर्ग-निदर्शन क्रॉस गाड़ दिया गया। जापानियोंकी लाशोंकी उन पर्वत जैसी चिताओंमें अग्नि-संयोग किया गया; जापानी धर्मयाजकोंने मृत-संस्कार सम्बन्धीय मन्त्रोच्चारण किये; प्रधूमित अग्निने शीघ्र शीघ्र जागे बढ़ समग्र चिताका ग्रास किया; अग्निशिखाये दूर दूरसे दिखाई देने लगीं; कोई दहन-शील पर्वत जलकर खूबक होता जान पड़ा; कोई बहुत बड़ी बाजीगरी लोप होती हुई जान पड़ी। रणस्थलके समीप ही इस तरहकी एक नहीं, अनेक चितायें जलीं। अपने विजयी जाति-भाइयों द्वारा अपनी अन्तरेष्टिक्रियाका सम्यादन देख मृत जापानियोंकी आत्माओंकी जिस सुखदा अनुभव हुआ होगा, उसका दर्शन किमसे हो सकता है ?

१ली मितम्बरकी प्रातःकाल एक ओर जिस समय यह मव होने लगा, दूसरी ओर उसी समय जापानी फौजी व्यसपताओंमें रूसी और जापानी घताहतोंकी शिक्षिता होने लगी। उनको

चारपाखियोंके समीप फूलोंके गुलदल सजाये जाने लगे ; उनको बगलमें बैठ जापान-महिलाये अपनी आशापूर्ण दृष्टि और हर्षप्रद उज्ज्वल चन्द्राननसे आहत सिपाहियोंका शोक-ताप मिटाती हुई उनकी सेवा-शुश्रूषा करने लगीं । लम्बे या घोररूपसे आहत होनेपर भी ऐसे दृश्योंसे परिवेष्टित अपने सैन्यका विषय-समाचार-प्राप्त जापानी सिपाहियोंके वदन-मण्डलसे अलौकिक कान्ति प्रस्फुटित हो रही थी । उस समय टारम्बके संवाद-दाता घूमते-घामते उस ओर जा निकले थे ; उन्होंने लिखा है,— “मैं ऐसे कितने ही अस्पतालोंने गया ; प्रसन्न जखमी अपने जखमोंका गौरव करते दिखाई देते थे । अस्पतालका प्रवन्ध प्रशंसनीय था ; किन्तु विजय बड़े दामों खरीदी गई थी ।” ऐसे बड़े महासमरकी विजय कहां और कब कौड़ियोंके मोल खरीदी गई है ?

एक ओर यह सब हो रहा था , अल्पकालमें युद्धस्थलके परिष्कार-परिच्छन्न होनेका आयोजन हो रहा था ; दूसरी ओर नवविजित उस भयङ्कर शुशान पर्वतके मोरचोंमें कोभोंतक मार करनेवाली बड़ी बड़ी तोपें चढ़ाई जा रही थीं । कल इसी समय जिस जगह रूसी तोपें चढ़ी थीं, आज उसी जगह जापानो तोपें चढ़ाई गईं । शुशान पर्वतके सामने ही सुविस्तृत लियाव-याङ्ग नगर था ; विशेषतः लियावयाङ्ग नगरके पीछेका वह रूसियोंका महङ्गा और उसके एक किनारेका कुरोपाटकिबकी स्पेशल ट्रेनवाला वह लियावयाङ्ग रेल-स्टेशन शुशान पर्वतके ठीक सामने था । शुशान पर्वतपर लगी जापानी तोपें सुख-यादानकर मानो उस नगर, रूसी बसती और रेल-स्टेशनकी ग्राह

करनेके लिये तय्यार हुईं । इसीके साथ साथ नगरके सामनेकी
रूसी मोरचा-बन्दियोंके सामने भी जापानी तोपें लगाई
जाने लगीं ।

दोपहरके जियावयाङ्ग नगरके सामने शत शत जापानी
तोपें लग गईं । कुछ ही घण्टोंके विश्रामके उपरान्त एकवार
फिर जापानी गोलन्दाज गोलन्दाजी करनेके लिये अपनी तोपोंकी
बगलमें खड़े हुए । दिन बारह बजेके बाद शुशान पर्वतको
एक सुदीर्घ जापानी तोपके सुंघसे एकाएक ज्वाला निकल पड़ी—
कई मनका आपनल गोला एकाएक रेल-स्टेशनके जनाकीर्य
पलाटफारमपर जा गिरा ; आवाज आई,—धनानानानाना । जिस
जगह गोला गिरा, उस जगह बहुत बड़ा गड्ढा बन गया ।
कितने ही आदमी उड़ गये ; कितने ही लघु-घोररूपसे आहत
हुए । रूसियोंको खबर नहीं थी, कि जापानियोंके पास भी
वहाँ इतनी जबरदस्त तोपें थीं । इसीलिये शुशान पर्वतकी लगी
तोपोंके सामने रेल-स्टेशनपर ठहर रूसो धीरे धीरे नगर परित्याग
करनेकी तय्यारियां कर रहे थे । रेल-स्टेशनमें कहीं असबाबके
ट्रे लगे थे ; कहीं टेबुल बिछा खान-पान चलाया जा रहा था ;
कहीं समय बितानेके लिये बातचीत की जा रही थी ; रूसियोंको
यह खबर नहीं थी, कि जापानी गोले वहांतक पहुँच उनके
कुल आनन्दमें घोर निरानन्द उपस्थित कर सकते थे । ऐसे ही
समय शुशान पर्वतके जापानी तोपखानेकी एक तोपसे चला
हुआ भीषण आपनल गोला जियावयाङ्ग रेल-स्टेशनपर जा पटा ।

इस एक ही गोलेने बड़ी खलबली डाली । स्टेशन और
उसके गिर्दके मैदानमें भागड़ पड़ गई । माल छोड़, असबाब

छोड़, भोवन छोड़, जलपाग छोड़, इय-मितोका साथ छोड़, जिसे जिधर राह मिली, वहाँ उधर ही भागा। कोई भागते समय चुं हके बल गिर पड़ा, कोई ये शनकी चहारदेवार एक ही छलांगने पार कर गया, कोई अपने सामनेके टेबुलपर गिर उसके साथ साथ धराशायी हुआ,—प्राण बड़े ही प्यारे होते हैं। रूसियोंकी भागड़ देख दुर्बलकोंको सुअवसर मिला। ऐसा ही हुआ करता है। जैसे ही रूसी अपना माल-असबाब छोड़ भागे, वैसे ही कितने ही रूसियों तथा चीनाग्रोंने वहाँ परित्यक्त प्राण-असबाब लूट भागना आरम्भ किया। ये शनकीं एक ओर 'शाम्पेन' मंदिरके आगणित सन्दूक रखे थे; इन सन्दूकोंको रक्षकविहीन पा इनपर किसने ही कब्जाक सिपाही टूट पड़े और इन्हें तोड़ शाम्पेन निकाल पीने लगे। विपदके समय रूसी ही रूसियोंकी लूटने लगे। आरम्भ होमें इतना कुछ हुआ। जापानियोंके पहले गोलेने इतनी करामात दिखाई। सिवा इसके कितने ही आदमियोंके चीपड़े उड़ा दिये; कितने ही आदमियोंको आहत किया।

जापानियोंकी पहली तोपने एक गोला छोड़ा मानो अन्यान्य कुल जापानी तोपखानोंको गोला-वृष्टि आरम्भ करनेकी सूचना दी। शियावयाङ्ग नगरपर—विशेषतः लियावयाङ्गके उस रूसी महल पर विषम गोला-वृष्टि होने लगी। डाकखानेपर, अदालतपर बरूपपर, सौदागरोंकी बड़ी बड़ी कोठियोंपर बजनी आपनल गोले जा जा गिरने और फटने लगे। जिस 'पगोडा गारडन' या मन्दिरोद्यानका हाल हम ऊपर लिख आये हैं, उसमें इस समय मियोंकी खासो भोड़ थी। चलचक्रावका समय था,—रूसी

अप्रसर उस सुनिर्मल जल-विशिष्ट मनोरम पुष्प-फल-समन्वित पादपोंसे परिपूर्ण—वर्षा-ऋतुके घोर कणवर्णीय टण-गुल्म-सता-दिसे परिदृत उद्यानमें बैठ भोजन-पान कर रहे थे । हाथ शीघ्र शीघ्र चल रहे थे ; आहार शीघ्र शीघ्र समाप्त किया जा रहा था ; क्योंकि शुशान पर्वतकी जापानी तोंपोंने घोर गर्जन आरम्भ कर दिया था । ऐसे समय अग्नि-पुञ्जवत् एक आपनल गोला इस उद्यानकी ओर आता दिखाई दिया । देखते देखते गोला आ उद्यानमें गिर फटा ; कितने ही आदमी उड़ गये ; कितने ही आहत हो भूमिपर गिर छूटपटाने लगे । वहाँ भीभागड़ पड़ी । खानसामा भागे, खाना चुननेवाले भागे और खानेवाले भागे । कोई फर्क न रहा;—सब एक साथ गिरते-पड़ते भागे । उद्यानपर भी जापानी गोबे पड़ क्षपनी एक एक चोटसे कितने ही ऊँचे ऊँचे तनावर टूटकोंको भूसात् करने लगे ।

देखते देखते प्रायः समग्र लियावयाङ्ग नगरपर गोला-वृष्टि होने लगी । चौराहोंपर, राहोंपर, गलियोंपर, मकानोंपर, बाजारोंपर, दुकानोंपर,—आपनल गोले आ गिरने और फटने लगे । मकानोंमें आग लगने लगी ; धुंएँके बादल आकाश काला बनाने लगे । नगरके सामने और वाहमें जापानी तोपें लगी थीं ; पश्चाद्भागमें लग नहीं सकती थीं ; अधर चपचाकत शान्ति थी ; इहलिये कितने ही रूखी तथा नगरवासी प्राण-रक्षाके लिये उसी ओर भागे । इधर मैदान खाली हुआ । इधर-तरह मैदान खाली होनेपर जो हाने लगता है, वही होने लगा । किसी मकानसे चिह्नादृष्टी आवाज सुनाई दी ; लोई मनुष्य प्राणरक्षाके लिये उच्चस्वरसे चीत्कार करने लगा ; लोई उसका

खून करने लगा। कोई द्वार तोड़ जैसे ही किसीके मकानमें घुसा, वैसे ही मकानके लोगोंके एक दलने उसके सम्मुखीन ही उसे टुकड़े टुकड़े उड़ा दिया। कहीं दुर्बल लुटेरोंके दल और मकानवालोंके दलके बीच टक्कर हो गई; मारकाट चली थी; ऐसे समय एक गोलेने आ दोनों दलोंको अपनी अपनी ओर भागनेपर बाध्य किया। कहीं किसीने किसीको खिड़कीसे फेंक दिया; कहीं मकानमें बैठे किसीको किसीने गोली मार टखा बना दिया; उसकी लाशका कुछ अंश खिड़कीसे बाहर निकल भूलने लगा। कितने ही रूसियोंने इस लूटपाटका सहाचार या नगरमें छोट लुटेरोंको मारा सही; किन्तु उसका कोई फल नहीं हुआ और असलमें लूटपाट रोकनेके लिये उन्होंने लुटेरोंको मारा भी नहीं था। उनका उद्देश्य सिर्फ यह था, कि हमारे अधिकारको कोई दूसरा हाथ लगाने न पाये।

आज दिनभर यानी १लो सितम्बरको ओजूकी सैन्यने सिर्फ इतना ही किया। युद्धस्थलकी विभीषिका मिटाई और तोपें लगा दीपहरसे सन्ध्यातक रूसी मोरचोंपर, रूसी बसतीपर और किसी कहर लियावयाङ्ग नगरपर गोले बरसाये। सन्ध्या समय ओजू और नोजूकी फौजने अपने अधिष्ठत मोरचोंसे किसी कहर आगे बढ़ युद्धस्थलमें खेट विश्राम किया। लियावयाङ्ग नगर सामने ही था; कहीं कहींसे उसकी ऊंची शहरपनाहकी ईंट तक दिखाई देती थीं; फिर भी, इस दिन ओजूकी सैन्यने नगर-अधिकारका कोई यत्न नहीं किया। कितने ही लोगोंका कहना है, कि कुरोकीकी सैन्य गत कई घण्टोंके भयङ्कर युद्धमें प्रवृत्त रहनेकी वजह थककर चूर हो गई थी; वह आगे बढ़नेमें

व्यसमर्थ थी। फिर कोई कोई मानो पूर्वोक्त कथनका स्मरण करते हुए वह भी कहते हैं, कि लियावयाङ्ग नगर ओजूकी पैरो-ठले था; इच्छा करते ही उसपर वह अधिकार कर सकते थे; किन्तु ओजू या नोजू स्वतन्त्र नहीं थे; जबतक उन्हें प्रधान सेनापति फ्रील्ड मारशल ओयामाकी आज्ञा न मिलती, तबतक वह उसपर कदवा कैसे कर सकते थे? यह श्रेयोक्त बात ही सत्य जान पड़ती है। ओयामा जानते थे, कि लियावयाङ्गमें रूसी फौजे भरी हुई है; इस समय ओजू और नोजूकी सैन्यके आगे बढ़नेसे भयङ्कर युद्ध होगा; किन्तु कुछ ही घण्टे बाद जिस समय कुरोकीकी सैन्य लियावयाङ्गके पश्चाद्भागपर आक्रमण करेगी, उस समय लियावयाङ्गमें भरी रूसी सैन्यका बड़ा भाग कुरोकीका आक्रमण वर्ध करनेमें प्रवृत्त होगा; उस समय ओजू और नोजूकी सैन्य-पंक्ति आगे बढ़ बढ़ी ही आसानीसे लियावयाङ्ग नगरपर अधिकार कर सकेगी। शायद यही सब सोच-समझ शली सितम्बरकी ओयामाने ओजू और नोजूकी सैन्य-पंक्तिकी आगे बढ़नेकी आज्ञा नहीं दी। ओजू और नोजूकी सैन्य पंक्ति लियावयाङ्ग नगरपर सिर्फ गोले बरसा और कुछ आगे बढ़ टहर गई।

अब यह देखिये, कि इस दिन आपानी सैन्य-पंक्तिके दाहने अवस्थित जापान-सेनापति कुरोकीने क्या किया। पहले ही लिख चुके हैं, कि आपकी सैन्यका दाहना दाहू तत्विही नदी पारकर लियावयाङ्गके पीछे पहुँच रुखियोंके एक मात्र समल उस रेलप्रथम अधिकार कर लेना चाहता था। यह दाहना दाहू लियावयाङ्ग नगरकी दगलसे शकूर बाट जब रेल-प्रथकी

और बढ़ने लगा, तब उस ओर उसे एक लम्बी पर्वतमालापर रूसी ही रूसी दिखाई दिये। वह देख करोकीने अपनी सैन्यके मध्य-भागको भी नदीपार पहुँचा दिया और अपनी सैन्यको आज्ञा दी, कि वह रेल-पथके किनारे किनारे दूरतक आगे बढ़े; जिस जगह रूसियोंकी सैन्य-पंक्ति समाप्त हो, उन्ही जगह चक्रर काट रेलपथपर अधिकार करे। इन आज्ञाके अनुसार जापानी सैन्य-पंक्ति क्रम क्रमसे आगे बढ़ने लगी। लियावयाङ्ग नगरके पश्चाद्भागमें वहनी हुई तसिही नदीके उतपार उसे मिकवान-तुन नगर मिला; इसमें रूसी टमाटस भरे थे; मिकवानतुनसे आगे रेलपथके साथ साथ खमदार एक पहाड़ी मिलसिला चला था, जिसपर जगह जगह रूसी बैठे थे। मिकवानतुनसे कोई छेढ़ कोस आगे इसी पहाड़ी मिलसिलेके दामनमें येनताई नामक दूसरा नगर था; इसमें भी रूसियोंका जबरदस्त मोरचा था; इससे भी कोई छेढ़ कोस आगे उसी पहाड़ी मिलसिलेके एक क्षमगमें येनताई नामक एक तेसर नगर था। छोटासा पहाड़ी नगर था; कोयलेकी खानिके लिये अत्यन्त प्रसिद्ध था। रूसके मन्चूरियाके कुल-क्षारखानोंके रज्जिन तथा सुकदन-व्यरधर-वन्दर रेलपथके कुल रज्जिन इसी जगहसे निकले पत्थरके कोयलेसे चलाये जाते थे; उपयोग होनेकी वषह यह नगर रूसियोंमें और भी प्रसिद्ध था। जापानी सैन्यने इस नगरके सामने पहुँच इससे भी जबरदस्त रूसी फौजोंसे सुरक्षित पाया। लियावयाङ्ग अपनी वागलमें छोड़ कोई तीस कोसतक,—उस खानिवाके नगर येनताईतक जापानी फौजे फैल गईं; वहांतक उन्हें रूसी ही रूसी दिखाई दिये। गत रात्रि लियावयाङ्ग रेशनकी चारी

ओरके उस सुविशाल मैदानमें भरी जिन रूसी फौजोंकी उनके प्रधान सेनापति झुरोपाटकिनके झुरोकीकी सैन्यकी गति रोकनेके लिये अपने पञ्चाट्भागकी रेल-पथकी चौर खाना किया था, वह फौजे झुरोकीकी सैन्यसे कई घण्टे पहले पहुँच पूर्वोक्त समूची पर्वतमालापर फौजी बैठी थीं। अनुमान किया जाता है, कि कोई डेढ़ लाख रूसी बिपाही कई फौजोंमें विभक्त हो प्रधानतः खिलवानटुन, हेयानताई और येगताईमें तथा साधारणतः रेल-पथकी बगलकी उस पर्वतमालापर जगह जगह छटे बैठे थे। चोरफिन्तामन झुरोकी अब क्या करे?—इस दुर्गम्य शत्रु-सैन्य-वारिधि पार कैसे उतरे?

लिखने और उसके अधिक पढ़नेमें यदि समय लगे, तो लग सकता है; किन्तु बोरवर झुरोकीकी सैन्य-पंक्तिके प्रसारमें तनिक भी समय नहीं लगा। १ली सितम्बरको प्रातःकाखसे कुछ पहले झुरोकीकी सैन्य रूसी सैन्य-पंक्तिके सुकाविल फल गई। विश्रामज्ञा अवकाश नहीं मिला; झुरोकीने अपने इस सैन्य-पंक्तिको रूसी सैन्य-पंक्तिपर व्याक्रमण करनेकी आज्ञा दी। १ली सितम्बरको सूर्योदयके साथ साथ जापानी तोपें रूसी मोरचोंपर गोले बरसाने लगीं; रूसी तोपें भी जवाब देने लगीं। प्रायः दिनभर गोलन्दाजी हुई। खन्धोपरान्त जापानी तोपखानोंके तुंछ बन्द हो गये और दिनभरकी घकी-मांसी जापानी फौजोंको रूसी मोरचोंपर व्याक्रमण करनेकी आज्ञा दी गई। प्रसन्नचित्त और प्रफुल्लमगसे जापानी फौजोंने यह आज्ञा स्वीकार की और वह दियोत्सुक हो बाड़ पकड़ती हुई रूसी मोरचोंकी चौर बढ़ने लगी। जगह जगह चौर संग्राम उपस्थित हुआ।

लियावयाह नगरके समीपसे कोयलेकी खानि येनताईकी और क्रमसे बढ़िये । इस रातके युद्धमें सिक्वानटुनके रूसी मोरचेको वैसी कोई क्षति नहीं पहुँची ; एकवार घावा मार जापानी फौज सिक्वानटुन नगरके समीप पहुँच गईं सही ; किन्तु रूसी तोपोंकी विषम गोळारिष्टके फलसे लौट जानेके लिये बाध्य हुईं । कितने ही लोग कहते हैं, कि सेनापति दुरोकीने सिक्वानटुनपर अधिकार करनेकी वैसी चेष्टा भी नहीं की ; उन्होंने खयाल किया था,—“यहाँ इतना रक्तपात करनेका प्रयोजन क्या है ? हेयानताई या येनताई स्थानको अधिकारभुक्त करते ही सिक्वानटुनके रूसी मोरचे आप ही आप जापानी सैन्य-पंक्तिके घेरेमें आ जायेंगे ।”

हेयानताईके मोरचेके सामने निःसन्देह चौर युद्ध हुआ । रूसियोंने यहाँ आत्मरक्षाके वड़े ही विकट उपाय अवलम्बन किये थे । अपने मोरचोंके सामने तारके जाल लगवा दिये थे और उन तारके जालोंमें रज्जिनसे चलाये जाते हुए ‘डिनेमो’ द्वारा प्रस्तुत विजलीकी भीषण शक्ति भरी गई थी ; प्राग्गनाश करना उस अद्भुत वैद्युतिक शक्तिका चुटकियोंका खेल था । जापानी सैन्य-पंक्ति जिस समय हेयानताईकी ओर बढ़ी, उस समय रूसियोंने उसे बड़ी बाधा दी ; उसके शिरपर गोलेकी वृष्टि की ; उसकी छातीपर गोलियां बरसाईं,—जापानी सैन्य-पंक्तिकी बढ़ती हुईं दीवारको रोकनेकी छर तरछकी चेष्टाकी गइ ; किन्तु यह वह दीवार थी, जो रुकना जानती नहीं थी । क्रम क्रमसे जापानी सैन्य-पंक्ति रूसी मोरचोंके सामने पहुँची ; उसे धव धावा गोली-गोलोंके उन वैद्युतिक-प्रवाहपूर्ण तारोंके जालसे भी

सामना करना पड़ा। उस अन्वकारमें आगे बढ़ एकाएक तार चर्चकर कितने ही जापान-योद्धा धराशायी हुए। शोर मच गया ; जोग तारकी शक्तिसे सावधान कर दिये गये। भीषण आपनल गोलों और विकट गोलो वृष्टिस्तो लघ्ववत् तुच्छ समझने-वाले,—साक्षात् यमलिङ्करोक्षी भी परवा न करनेवाले जापानी योद्धा घोर सङ्कटमें रहनेपर भी रूखियोंकी वह वैज्ञानिक पक्षघ्न प्रलयङ्करो युक्ति देख यदि हंसै हों, तो हंस सकते हैं। दूसरे ही क्षण उस तारके जालपर शत शत बन्दूकोंके झुन्डे पड़ने लगे ; तार तोड़ दिये गये ; अगल-बागलसे काट दिये गये ; एक क्षणमें यह बाधा मिटी जापानी सैन्य-पंक्ति घपने उसी भीम-वेगसे फिर आगे बढ़ने लगी। सहस्र सहस्र रूसी सिपाही अपने मोरचोंसे निकल जापानी सैन्य-पंक्तिपर टूट पड़े। कुछ कालतक अत्यन्त भीषण युद्ध हुआ। जापानी सिपाही इस युद्धमें फंस उगमत्त हो गये ; वह जिन रूखियोंके गोले गोलीकी मार खा इतनी देरसे उन्हें दूँट रहे थे, उन्हींको समुख समरमें प्रवृत्त देख उनके क्रोध तथा उत्तेजनाकी सीमा नहीं रह्यो। अघोर और विङ्गल हो जापानी सिपाही सङ्गोनें भोंकते, तलवारें चलाते और तपस्से मारते रूसी सिपाहियोंमें घंस पड़े। रूखियोंकी हिम्मत कूट गई ; उनके जमे हुए पैर उखड़ गये। रूखियोंको मार भगा रान कोई दो बजे जापानी सैन्य-पंक्तिने रूसी मोरचों और उमकां बगलदे ह्यानताई नगरपर अधिकार कर लिया। यहां जापानियोंकी पूर्ण जयजयकार हुई।

और आगे बढ़ते,—दोबलेकी खाति येनताईके समीप पहुँचिये। इस दिन यहाँ कोई उल्लेख योग्य युद्ध नहीं हुआ।

युद्धकी तयारियां खूब हुईं। एक ओर जापानी फौजने युद्ध आरम्भ करनेके दाव-घात किये; दूसरी ओर सुल्तान नगरसे युरोपसे नई आई ग्यारह बटाखियन फौज वेनताईमें पहलेसे बैठी रूसी फौजमें मिला दी। रूससे नवागत सेनापति ओरलो-फपर इस सैन्यको परिचालनाका भार रखा गया।

२री अगस्तको दो मारकेले युद्ध हुए। इनमें एक युद्ध उमो हियानताईमें हुआ, जिसपर अगली रातको जापानी सैन्य-पंक्तिने अधिकार किया था। २री अगस्तको प्रायः दिनभर रूसियोंने अपने परित्यक्त और जापानियों द्वारा अधिकृत उस मोरचेपर गोले बरसाये। तीसरेपहर कई भागोंमें विभक्त हो घावा किया। खबर है, कि कितनी ही रूसी फौजे हियानताईके जापानी मोरचोंके समीप पहुंच गईं; किन्तु अन्तमें वहांसे पीछे पलटनेपर बाध्य हुईं। इस भयङ्कर मारकाटका कोई फल नहीं हुआ; रूसी फौजे अपने छोड़े मोरचोंको फिर स्वाधिकारभुक्त कर न सकीं। रूसके संवाददाताने लिखा है,—“हियानताईकी पर्वतमालाके समीप जैसे दृश्य दिखाई दिये, वैसे बहुत थोड़े युद्धोंमें दिखाई देते हैं। कोई एक चौथाई मील पर्वतमालामें यह युद्ध हुआ। यह कहनेसे वास्तुतः न होगी, कि इस भागकी चोटियां, ढालें और पर्वत-मध्यस्थ सङ्कीर्ण पथ मोरचोंसे परिपूर्ण हो शत्रुके हत्ते जैसे जान पड़ते थे। कितने ही मोरचोंके सामने अस्थायी रूसी मोरचे दिखाई देते थे, जिनसे प्रमाणित होता था, कि असुक्त जापानी मोरचेके सामने असुक्त स्थानतक रूसी पहुंच गये थे। जापानी मोरचोंके सामने कोई दो सौ रूसियोंको लागे पड़ी थीं;

अवतक उनकी बन्दूकें उनकी सुट्टियोंमें थीं । सद्यः प्रकट होता था, कि वह हद बिपाही आश्रय पा आगे बढ़े और जापानी गोलियोंकी बाढ़से भुन गये थे । धूलिसे, बाहुरकी धुंएसे, धानके समय बन्दूकों और तोपोंके सुंघसे निकलनेवाली अग्नि-शिखाओंसे और तपते हुए प्रचण्ड मार्तण्डकी तीक्ष्ण रश्मियोंसे रूसियोंकी जो लाशें रखस्यलमें पड़ी थीं, उनके चेहरे और हाथ काले हो गये थे ; सिवा इन लाशोंके रूसियोंको बहुतेरी लाशें पहाड़ोंतले मैदानमें भी पड़ी थीं । शत शत गोले पहाड़ियोंपर बरसे थे, जिनकी चोटसे खितने ही मोरचे और गड्ढे उड़ गये थे । युद्धस्थलमें चलनेसे कदम कदमपर गोलोंके टुकड़े और गोखियां मिलती थीं । कितने ही रूसी हमारे कोई हो या तीन हो रूसी बन्दूकें टूटी-फूटी पड़ी थीं ; मझीनें बग खा गई थीं और गोलो-गोलोंकी चोटसे रूसी बिपाहियोंकी देहसे उड़ी बरदियां या टोपियां रक्त-मांससे घराबोर थीं । मोरचे और मोरचोंके बाहरकी समतल भूमि रक्तसे लिपी हुई थी ।” विश्व-दूत रूटरके संवाहदाताके भेजे इस विवरणको पढ़ थाप ही प्रभावित होता है, कि रूसियोंने हियानताईके मोरचेपर पुनराधिकार करनेकी प्रायपथसे चेष्टा की थी, किन्तु उसका कोई फल नहीं हुआ ; रूसियोंको विषम शक्ति खीटारकर पीछे हटना पड़ा । इस श्रेते खितकरको उष सुदीर्घ युद्धस्थलके मध्य भागमें सिद्धं द्रतना ही हुआ । आशकी लड़ाईका पूरा जोर इस मध्य भागमें नहीं ; कोयलेकी खानि वेनताईके समीप ही प्रकट हुआ था ।

उस समय जापान-सैन्यापति मारतण्ड अयोयामाके युद्ध-लौकिक

येनताई-खानिको इस महायुद्धका द्वार बना दिया था। इसके पतनसे रूसियोंको द्वार थी; इसके अवस्थानसे उनकी जीत। कुरोपाटकिनने इसको रक्षाके कुल सामान किये थे। एक जवरदस्त फौज और कोई एक सौ तोपोंके साथ सेनापति विलडरलिङ्गको यहां बैठा दिया था और उनको जगलमें समूचे एक डिविजन यानी कोई बीस हजार फौज और साठ तोपोंके साथ सेनापति ओरलोफको प्रतिष्ठित किया था। सेनापति ओरलोफके सिपाहो सीधे युरोपसे युद्धस्थलमें पहुंचे थे; ताजादम थे; इससे पहले चलते हुए उस घोर युद्धसे उनसे कोई वास्ता नहीं था। उधर सेनापति कुरोकीका समूचा दाढ़ना बाजू इस मोरचेके सामने रहकर भी रूसियोंके सामने दालमें नमकके बराबर था। स्वयं टाइम्सके संवाददाताने लिखा है,—“खानिके सामने जापान-सेनापतिखी सैन्य बहुत ही कम थी; रूसियोंके तीन सिपाहियोंके सामने एक ही जापानी सिपाही था।” इसका मतलब यह है, कि वहां रूसके यदि कोई साठ हजार सिपाही थे, तो जापानियोंके सिर्फ बीस ही हजार। रूस-सेनापति कुरोपाटकिन इस प्रयोजनीय स्थानकी ओरसे विलकुल निश्चिन्त थे और ओयामा उसपर अधिकार करनेके लिये नितान्त समुत्सुक। स्थलमें युरोपकी सर्वश्रेष्ठ शक्ति रूसके तिगुने सिपाहियोंको एकगुने जापानी सिपाहो जैसे खानथु त कर सकता है? बिना भगवत्कृपा हुए यह असम्भव सम्भव कैसे हो सकता था?

कठिनतापर कठिनता यह थी, कि जापानी सैन्यका वह दाढ़ना भाग एक दिग्में लियावसाङ्ग नगरके पश्चाद्भागसे आगे आने भागें पहले लियावयाङ्ग नगर और इसके बाद सिक्क

वानतुन और हेवानताईक अपनी बगलमें छोड़ता सुदूरके उस
 चेतताई-खानि पहुँच गया था। राहमें उसको तनिक भी
 विश्वास नहीं मिला। चेतताई-खानिमें सेनापति बिलहरलिङ्गको
 एक नौ तोपों और सहस्र सहस्र बन्दूकोंकी अग्नि-वृष्टिने मागा
 इस भागदा खागत करना आरम्भ किया था। हाहने भागको इस
 दिवस अग्नि-वृष्टिमें आगे बढ़ अपने ठहरनेके लिये स्थान चुनना
 पड़ा था। सैन्यका स्थान निर्दिष्ट न होनेकी वजह कमसरियटका
 स्थान भी ठीक ही नहीं सका था। शही अग्रजको जापानी
 सैन्यको नियमित रूपसे भोजन नहीं मिला था। टाइनसके
 संवाददाताने लिखा है,—“गत रातसे जापानी सिपाहियोंने न तो
 भोजन किया था न एक बिन्दु जल पिया था ; जो चावल उनके
 वेगमें पा, इसीको कच्चा चबा अपनी उदर-ज्वाला निवारण कर
 ली थी।” ऐसे सिपाही रूसके खाये-पिये आजारम सिपाहि-
 योंसे कैसे युद्ध कर सकते थे ?

फिर भी, युद्ध करना ही होगा ; चेतताई-खानि लियावयाङ्ग
 युद्धकी कुञ्जी थी ; उसपर अधिकारकर इस युद्धका विजय-द्वार
 उन्मुक्त करना ही होगा। शही जुलाईको प्रातःकाल हीसे
 जापानी सैन्य धीरे धीरे रूसी मोरचोंकी ओर बढ़ने लगी थी और
 रूसी तोपें उसपर लगातार गोला-वृष्टि करने लगी थीं। एक
 ओर कृष्ण-बल कला-कौशल था ; दूसरी ओर स्थिर बुद्धि थी
 और युक्तिपूर्ण नवाविष्कृत-युद्ध-कौशल था। जापानी सिपाही
 क्रम क्रमसे रूसी मोरचोंके समीप होने लगे। अन्त्ये खयं सेना-
 पति झरोकी,—झरोकी ही क्यों ;—उनके साथ साथ शायद मौल्ड
 मारशक ओयामा भी इस जगह मौजूद थे। यहाँके स्थान, नैदान

आदि जूंची जूंची वाससे भरे थे; जापानी जासूस जान
 छयेलीपर रख उस वासकी बीचसे शत्रुके समीप पहुँच उसकी
 गतिविधि देख उसकी खबर अपने अफसरोंको दे रहे थे। जापान-
 सेनापतिकी एकाएक समाचार मिला, कि रूस-सेनापति ओरलोफ़
 कोई बोल हजार ताजादम सिपाही और नाट तोपोंके साथ आगे
 बढ़ जापानो सैन्यके पार्श्वमें पहुँच उसपर आक्रमण करनेकी
 तयारी कर रहे हैं। जापानी सैन्यकी सहारेका प्रयोजन हुआ;
 दिन कोई साढ़े गौ बजे कुरोकीके अधीनस्थ सेनापति मत्सुनाग
 एक जबरदस्त सैन्य ले आगे बढ़ कुरोकीकी सैन्यके दाहने भागसे
 मिल गये। इस सैन्यके आगमनके उपरान्त जासूसों द्वारा समा-
 चार आया, कि सामनेके सुविस्तृत 'कावलियाङ्ग' यानी बाजरेके
 खेतसे सेनापति ओरलोफ़ अपने सिपाहियोंके साथ आगे बढ़ ही
 चाहते हैं। अब क्या किया जाये? थोड़ीसी जापानो फौज
 क्या क्या करे? येगताई-खानिके समीप बैठे रूस-सेनापति विल-
 डरलिङ्गके मोरचोंपर आक्रमण करे या बढ़ते हुए रूस-सेनापति
 ओरलोफ़की राह रोके। दोनों काम करना होगा। जापान-
 सेनापति मत्सुनाग रूस-सेनापति विलडरलिङ्गके नामने छोड़े
 गये और जापान-सेनापति शिनासुरा बढ़ते हुए रूस-सेनापति
 ओरलोफ़के सामने भेजे गये। शिनासुराको और उनके अधी-
 नस्थ सिपाहियोंकी समझा दिया गया,—“तुमलोग युद्ध करने
 नहीं; इस महायुद्धका फैसला करने जाते हो। ओरलोफ़के
 परास्त होते ही विलडरलिङ्ग सहज ही परास्त हो जायेंगे;
 विलडरलिङ्गके परास्त होते ही येगताई-खानिपर जापानियोंका
 अधिकार हो जायेगा। येगताई-खानिपर जापानियोंका अधि-

जार होना और इस महाद्वारमें जापानियों द्वारा विजयश्री
 लाभ करना एक ही बात है। तुम छोड़े हो; औरलोफ़के
 विपाही अधिक हैं; तुम दोनोंमें समानता नहीं; फिर भी,
 तुम्हारा देश, तुम्हारे सम्राट्, तुम्हारे सेनापति—युद्धस्थलमें घोर
 युद्धमें प्रवृत्त तुम्हारे लक्ष्य लक्ष्य भाई तुमसे बड़ी आशा करते हैं;
 वर चाहते हैं, कि तुम छोड़े होकर भी बहुसंख्यक रूमियोंको
 परास्तकर जापान और जापानियोंका सुखोच्चल करो।" अधिक
 उत्साह-प्रदानका प्रयोजन नहीं था; दृढ़प्रतिज्ञ स्वदेशभक्त
 महाशक्तशाही जापानी योद्धाओंके सुख-मण्डल रूमियोंसे भिड़-
 नेकी प्रत्याशासे चमक उठे। शिनामुराकी अधीनस्थ फ़ौजने
 कण्ठसे कण्ठ मिला श्मश्रुति की।

शिनामुरा अपनी सैन्यके साथ ऊँची ऊँची घास तथा
 ज्वारके खेतोंसे भरे मैदानके किनारे पहुँचे। इसी घास और
 ज्वारके खेतोंसे औरलोफ़की सैन्य धीरे धीरे आगे बढ़ रही थी।
 शिनामुराने अपनी सैन्यकी दृष्ट घासमें घुस जागह जागह छिप
 जानेकी आज्ञा दी। यह आज्ञा भी ही,—“हमारी सैन्य एतद
 तुम्हारे बीचमें आ जाये, तब उसपर एकाएक भीमवेगसे आक्रमण
 करना।” जापानी सैन्य ऊँची ऊँची घास और ज्वारके
 खेतोंमें ठेठ शत्रुके चानेही प्रतीक्षा करने लगी।

स्वयं सेनापति! औरलोफ़ और उनके अधीनस्थ सेनापति फो-
 मिन इस सैन्यको परिचालित कर रहे थे। औरलोफ़
 घ, कि जापानियोंको उगकी आगे बढ़नेही खबर न
 घास और ज्वारके छेदोंपरसे एकाएक निकल
 गिर उन्हें ध्वस्त-विध्वस्त कर दालेंगे। वह इस

हो रहे थे, कि एक ओरसे वह अपनी सैन्य द्वा-रा जापानियोंको पददलित करेंगे और दूसरी ओरसे विलडरलिङ्ग अपनी सैन्य द्वा-रा और इसतरह इस मोर्चेमें जापानियोंके पराजित होते ही वह अन्यान्य मोर्चोंमें भी परास्त किये जा सकेंगे,—जापानियोंकी अवतककी विजय विलङ्ग ही अफलोद्य वनाई जा सकेगी । आशा और उत्साहसे परिपूर्ण ओरलोफ अपने ताजादम सिपाहियोंके साथ शीघ्र शीघ्र आगे बढ़ रहे थे । उन्हें समाचार मिला, कि अब घास तथा खेतोंका सिलसिला समाप्त होनेको है ; इससे आगे ही जापान-अधिकृत मैदान है । यह समाचार पा ओरलोफने अपने सिपाहियोंको शीघ्र ही घास और ज्वारसे मैदानमें निकल एकाएक जापानियोंपर आक्रम करनेकी आज्ञा दी । रूसी सिपाही हर्षपूर्वक शीघ्र शीघ्र आगे बढ़े ; ऐसे समय उनके एक पार्श्वसे घासके भीतरसे एकाएक बन्दूककी बाढ़ दगी,—दांय दांय दांय दांय । कितने ही रूसी सिपाही छेर हो गये ; कितने ही गिरकर तड़पने लगे । हाय ! यह क्या हुआ ? यह बाढ़ किसने दगी ? अधिक चिन्ता करनेका अवसर नहीं मिला,—पहली बाढ़ दगनेके बाद ही दाहने, सामने और बायें,—तीनों ओरसे रूसी सिपाहियोंपर गोलियां बरसने लगीं इसीके साथ साथ सहस्र सहस्र जापानियोंके कण्ठसे निकला गुरु-गम्भीर रब्ब-हुद्दार सुनाई दिया । अब रूसियोंकी आखें खुलीं ; उनमें 'जापानी जापानी'का शोर हुआ । उस घासके जङ्गलमें तोपें लगाई जा नहीं सकती थीं ; सिपाहियोंको पंक्ति बांधी जा नहीं सकती थी ; विधिपूर्वक युद्ध किया जा नहीं सकता था ।

गेंदे भरी हुई बन्दूकें थीं मही ; किन्तु वह चलाई

जा नहीं सकतो थीं; एक तो इसलिये कि एक रूसीके सामने दूसरा रूसी था, दूसरे इसलिये, कि बन्दूकों चलाई किसपर जातीं ? घास और वाजरेके खेतमें खेटे गोली बरसाते जापानी सिपाहों दिखाई नहीं देते थे। जिसतरह आगे बढ़ना कठिन था; उसीतरह ठहरना भी कठिन था; प्रति क्षण जापानी गोलियोंसे घग-घित रूसी घराणायो हो रहे थे। पीछे भी घिर जानेको आशङ्कासे चोरलोफने शीघ्र ही रूसी सिपाहियोंको पीछे पलटनेकी आज्ञा दी। रूसी सिपाही यह आज्ञा पा पीछे क्या पलटे; घाससे उलझ उलझकर गिरते; अपने साधियोंको टकैल-धकियाते प्रायः वे भागे। जिस जगह एक सिपाही गिरता था, उस जगह भागनेवाले अन्यान्य सिपाही भी गिरते थे और यह सब उदरसे पहले जापानी सिपाहियोंकी गोलियोंकी चोटसे मारे जाते थे। खेत और घासका जङ्गल रूसियोंको लाशोंसे भर उठा। कहते हैं, कि उस समय जो रूसी बचाव हो घासमें गिरे थे; उनमें बहुतेरे साहाय्य न पानेकी वजह जखमकी वेदना और भूख-प्यासकी यत्नवास तड़प तड़पकर वहाँ मर गये; घाटकी उस विशाल जङ्गलमें जापानी उन्हें दूँट उनको रक्षा कर न सके; घास सूखने या कटनेपर उनका तनपिङ्गुर दिखाई दिया था।

रूसी भागे; रूसियोंके पीछे पीछे जापानी चले। जिस जिस घोरसे रूसी भागे, उस उस घोरसे जापानियोंने उनका पीछा दिया। घासके जङ्गलमें मानो वृषान व्याया; चारद्वे खेतमें मानो मत्त झुञ्जर पड़े। रूसकी पुरानी फौजे, तो जापानियोंसे किसी कदर नामना भी करती थीं; किन्तु युरोपसे

हुई उन नई रूसी फौजोंने कुछ भी सामना न किया। उनके मगमें भय घुस गया था और उस घासके वनमें उन्हें हर तरफ जापानी ही जापानी दिखाई देते थे। इसतरह विषम चतियस्त हो रूसी फौजे घासके वनसे निकल अपने मोरचोंके समीपके मैदानमें निकलीं। रूसी इस जगह पकटकर जमना चाहते थे ; किन्तु घासके वनसे व्याहत यात्रकी तरह टूट जापानी फौजोंने रूसियोंके पैर उखाड़ दिये। जापानी सिपाहियोंकी तलवारों और सड़ीनोंकी चमकसे रूसियोंकी आंखोंको चकापौंध लगने लगी। रूसी मैदानमें बेतहाशा भागने लगे। इस मैदानमें एक पहाड़ीपर ओरलोफके कितने ही मोरचे थे ; जापानी सैन्यके एक टुकड़ेने सिंहनादकर इन मोरचोंपर धावा किया और सामान्य युद्धके उपरान्त इनपर अधिकार कर लिया। रूसी सिपाहो इन मोरचोंके पीछेके मैदानमें भागे। जापानियोंने पीछा किया। कहते हैं, इस जगह कोई तीन कोसतक रूसी नितान्त विजल हो आगे आगे भागते गये और जापानी पीछे पीछे उन्हें मारते गये। इन युद्धको दो या तीन पंक्तिमें लिखने-वाले टाइमसेके रंवाददाताको भी खोकार करना पड़ा है,—“रूसी सैन्यको बड़ी चति हुई और वह कोई छः मीलतक अत्यन्त विशदकलित भावसे भागी।” इस युद्धमें सेनापति ओरलोफ घा-हत हुए ; सेनापति फोमिन व्याहत हो अन्तमें पञ्चत्वको प्राप्त हुए। उधर जापानकी वीरवाहिनोंने रूसियोंको भगा उच्च-स्तरसे धर्मध्वनि की। जापानी सैन्यके योद्धा जिस लामके लिये गये थे, वह पूरा हुआ ; जापानका सुखोज्ज्वल हुआ।

सेनापति ओरलोफकी सैन्यके विध्वस्त होनेसे सेनापति विल-

हरलिङ्ग वही ही सङ्कटमें पड़े । उनपर ही औरसे जापानियोंका प्रबल दबाव पड़ने लगा ; वह अकेले ही गये । उनके पास उस समय एक सौ तोपें थीं ; सहस्र सहस्र सिपाहो थे ; फिर भी, वह अपने सामनेसे जापान-सेनापति मस्यु नाग और अपनी वागनके सेनापति शिनासुराका दबाव बरदाश्त कर नहीं सकती थी । उन्हें विशेष भय इस बातका था, कि लियावयाङ्गसे येनताई-खानितक फैली जिस रूसी सैन्य-पंक्तिमें उनका सैन्य-पंक्ति बायां अंग थी ; उस सैन्य-पंक्तिको भेद औरलोपही भगा वर्धाकी पर्वतमालापर जापानी सैन्य अवस्थान करने लगे थी । यानी विलहरलिङ्ग अपनी सैन्य-पंक्तिसे विच्छिन्न कर दिये गये थे और उन्हें अपने पार्श्वकी सैन्य-पंक्तिसे उतना सहारा पानेकी आशा नहीं थी । अपनी इस दुरवस्थासे अवगत हो और जापानी सैन्यका पूर्ण बल अपनी ओर झुक्ता देख विलहरलिङ्गने अपने प्रधान सेनापति यूरोपाटकिगको स्मरण किया ।

अच्छा ; महामित्राके चलते हुए उस महा-युद्धमें उन समय रूसके यूरोपाटकिग वहां थे ? क्या अवतक वह वही नामसे थे । यानी आ अवतक वह अपने सदर लया-गानके इहानेई मैदानमें खड़ी स्पेशल ट्रेन हीमें थे ? ठीक खबर नहीं ; इतना ही मजूम हुआ है, कि श्लोको नहीं ; शरी खितम्बरकी प्रातःकाल काट बजे सहानोसे तथा एङ्गिनसे जुती वह स्पेशल ट्रेन अपने उन महामहिम यात्रीको ले जिस ओरसे था ; उनी ओर यानी लियावयाङ्गसे निकलनेकी थी । बल खितम्बर वास्तविकी । जाद पड़ना है, कि श्लो खितम्बरके दोपहरकी जिन

समय शुशान पर्वतपर लगी ओजूकी तोपें नियावयाङ्ग न और उसके छे शनपर गोले बरमाने लगी होंगी, उनी समय क्रो-पाटकिनकी से शल ट्रेन छे शनसे छट दूर किसी नुरचिन स्यापने टहरनेपर बाध्य हुई होगी। रात्रिभर वहीं रही होगी; उनमें बैठे क्रोपाटकिन अपनी नियावयाङ्गकी फौजको लड़ानेकी नुय्य-वस्थाये करते रहे होंगे; दूसरे दिन श्री मितनरको प्रापद ओजूकी तोपोंके सुंघ खुलनेसे पहले ही क्रोपाटकिनको ले रवाना हुई होगी। एक और ओजूकीकी तोपोंके गोले ये दूसरी और क्रोकीकी सैन्य द्वारा से शल ट्रेनकी लाइनपर अधि-कार होने वा उसके काटे जाकेका भय था। इस तारीखकी दिन कोई ११ बजे क्रोपाटकिनकी ट्रेन मिवावचिन्तसो ग्रामके समीप खड़ी थी। टाइमूके सवाददाता भी इस ग्रामकी स्थिति जान नहीं सके हैं। कहीं होगा। दिन ग्यारह बजे इसी स्थानोप आपने औरलोफकी सैन्यका समाचार मंगाया था। जिस सैन्यकी आपने समाचार लेनेके लिये भेजा, उस सैन्यने तो खौट कोई समा-चार नहीं दिया; हाँ औरलोफ और या तीन टुकड़े भेजे सवारोंसे तीसरेपहर कोई तीन बजेके उपरान्त क्रोपाटकिनकी और-लोफके पूर्णरूपसे पराजित हो भागने और विलेडरलिङ्गके सङ्घटमें पड़नेका समाचार मिला। यह समाचार पा चिरग्रान्त घोर-गाभीर क्रोपाटकिन घबरा उठे। आपने उसी समय सेनापति याकलवर्गको बहुत बड़ी एक फौजके साथ सेनापति विलेडरलिङ्गके साहाय्यके लिये रवाना किया। सेनापति याकलवर्गने शीघ्र शीघ्र आगे बढ़ युद्धस्थलमें पहुँच देखा, कि उनके और विलेडरलिङ्गके सेनापति शिनामुराकी सैन्य अवस्थान करती है। याकल-

मारकेका युद्ध नहीं हुआ। मारकेका युद्ध न होनेपर भी गोल-
 न्दान्नी मारकेकी हुई,—सरणीय हुई। १ ली अगस्तको प्रातः-
 काल ओजू और नोजूके कुल तोपखाने यथास्थान लग नहीं सके
 थे; इस लिये १ लीका दोपरदरसे सन्ध्यातक लियावयाङ्ग नगर-
 पर ओ गोलन्दाजी हुई, वह वैसी जबरदस्त नहीं हुई। १ ली
 अगस्तको रातको कुल जापानी तोपें लियावयाङ्गपर लगा दी
 गईं; यानी सामने अर्द्धचन्द्राकार पंक्तिमें जापानी तोपखानोंके
 लग जानेसे लियावयाङ्ग नगर अपने सामने और दाहने-बाये
 जापानी तोपखानोंसे घिर गया, सिर्फ उसका पश्चाद्भाग—जिधर
 तल्लिहों नदी थी विरनेसे बाकी रहा। ओजू और नोजूको प्रधान
 सेनापति आयामाने शायद यह कहला भेजा था, कि २ री अग-
 स्तको तुमलोगोंका आक्रमण न हो; इस दिन गोखों द्वारा
 शत्रुको विहित दख दिया जाये; लियावयाङ्गके पीछे पहुँच
 जानेवाले कुरोकोकी विजय होत ही लियावयाङ्गमें बेटे शत्रुकी
 कमर टूट जायेगी; उस समय वह थोड़े ही आघातन मारा
 और भगाथा जा सकेगा। ऐसा ही हुआ। २ री अगस्तको
 दिनभर जापानी तोपखानोंने रूसी मोर्चों और लियावयाङ्ग
 नगरपर सिर्फ गोला-वृष्टि की। इस गोला-वृष्टिके फलसे लियावयाङ्ग
 नगरकी रूसी बसती बिगड़ गई और चीनाव्योंके मइह्लोंका छाया
 हुआ सन्नाटा और भी बढ़ गया। सन्ध्या समय जापानियोंने
 हलकासा नाममात्रके लिये एक घावा भी दिया।

एक ओर यह सब होने लगा, दूसरी ओर नगरके चीना
 अधिवासियोंका सङ्कट और भी बढ़ा; साधारण लोग अपने
 गाशके भयसे स्त्री-पुत्र लिये अपने अपने घरोंमें छिपे बैठे

थे । मकानोंके ऊपरके आकाशसे बज्र जमा शब्द करते गोलों
 आते जाते दिखाई देते थे ; किन्ती किन्ती महङ्गोंसे गोलों द्वारा ल-
 गाई आगकी लालशिखा दिखाई देती थी । जिस मकानपर
 गोला गिरता था, उसके अधिवानी और उसके इर्दगिर्दके और
 कितने ही मकानोंके अधिवासी उच्चस्वरसे आर्त्तनाद कर उठते
 थे । जिस मकानपर गोला पड़ता था, वह मकान टूट जाता था,
 उसके अधिवानी उड़ जाते थे ; स्त्री, पुरुष, मन्तान, मन्वति
 दान-दानियों द्वारा परिपूर्ण घराने पलक भूपकत मट्टानें मिन
 पाते थे । नगरके अधिवासियोंके लिये ऐसे ही ; कितने ही
 सङ्कट थे , किन्तु मानो इतने सङ्कटोंको घेरे न समझ इन सबसे
 अधिक भयङ्कर एक और आया । इसका मतलब यह है, कि
 एकाएक रक्षक भक्षक बन गये ; रूसी, लिथावयाङ्गके
 चीना अधिवासियोंके शत्रु हो गये । एक बहुत बड़ा रूसी फौज
 चीनाओंके महङ्गोंमें घुस गई और चीनाओंको दुकानों तथा
 मकानोंको लूटने और तनिक भी बाधा देनेवाले चीनाओंको मारने
 लगी । एक क्षण पहले जिस मकानमें शान्ति छाई हुई
 थी ; दूसरे ही क्षण उस मकानका द्वार एकाएक बन्दूकोंके
 फुन्दोंसे तोड़ा जाने लगा ; द्वार टूटा ; रूसी मकानमें घुसे ;
 मकानके भीतरसे स्त्री, पुरुष, बालक, बालिका, बृद्ध, युवक सभीके
 करछसे घोर आर्त्तध्वनि उत्थित होने लगी । दूसरे ही क्षण उस
 उत्थित आर्त्तध्वनिसे भी ऊँची बृहत् पुरुषों तथा स्त्रियोंका
 चीत्कार सुनाई देने लगा । पुरुष मांगो मारे जा रहे थे ; क्रम
 क्रमसे उनकी चीत्कारध्वनि क्षीय हो एकाएक बन्द
 स्त्रियोंकी चीत्कारध्वनि लम्बी बन्द हुई लम्बी चल

बालक-बालिकाओंको चोकार-ध्वनि सहन हो ठण्डा हुई। दम-भरमें मकान लुट-पुट और टूट-फूट समझानमें परिस्थित हो गया; यदि कोई स्त्री या बालक या स्त्री-बालक दोनो वच गये, तो वह रीते-द्विचकते रह गये; हंसो इमतरह एक मकानका चक्र-नागरकर दूसरे मकानको ओर बढ़ते थे। इमतरह अन्यान्य

घेड़ोंके साथ लियावयाङ्गके अधिवासियोंको इस एक नये सङ्कटमें भी सामना करना पड़ा था। शरी अगस्तको रात

लियावयाङ्गवासियोंके लिये कैसी विकट हुई होगी ? शरी अगस्तका प्रातःकाल हुआ। ओजू और नोजूको खबर

मिल चुकी थी, कि कल शरी अगस्तको यान-आई और हेयानताईमें रुखी, सेनापति कुयेकीकी सैन्य दारा पूर्णरूपसे पराक्षित हो चुके

थे। वह समझ गये, कि लियावयाङ्गके हंसो कुछ घण्टोंके मिहमान है, आगे बढ़ आक्रमण भी कर न सकेंगे; अपना जगह स्थिर भी रह न सकेंगे। इसीलिये इन दोनो सेना-

पतियोंने इस दिन प्रातःकाल अपना संन्य बढ़ा उसे चतियरुत्तर करके बदल अपने तोपखानों और उनके साथ साथ अपनी फौजोंको हंसो मोरनोंके समीप बढ़ा दिया। टाइमूखके संवाद-

दाताने लिखा है, कि जापानी फौजे आगे बढ़ हंसो मोरनोंके मोरचे की नहीं; लिखे भी थे और इन किलोंमें बेटे

धौलके वाम भागके सामने लियावयाङ्ग नगरको बगलमें हंसियोंके भी जापानी गोलोंसे विषम क्षति सहकर भी अपनी जगह बैठे और जापानी फौजोंको समीप आनेसे रोकते थे।

अपना कितना है। तोपें इन क्षियोंके समीप जगना दें।

इन तीपोंके पर्वत-विहीणकारी गोलोंके नामने वह हामी कितने
दित्तनो देरतक ठहर सकते थे? उनकी दीवारोंको धूलियां
उड़ने लगीं; उनकी खन्दके जंची जंची दीवारोंसे पटने
लगीं। रूमियोंके यह अन्तिम सुदृढ़ मोरचे भी टूट चले।

दोपहरके बादसे लियावयाङ्गके समग्र रूमियोंकी हांखोंतने
वेराध्यका उरावना रूप लड़ा दिखाई देने लगा। रूमि-नापनि-
गण भी निराश हुए; एतने बड़े विप्लव सेनापति रोपा-
टक्ति भी निराश हुए; आपने आज्ञा दी,—“यव
है; लियावयाङ्गसे पलटना चाहिये।” उम्मी समयसे
तय्यारी आरम्भ हुई। लियावयाङ्ग नगरसे पीछे तल्लि-
मिवा रेलके पुलके पार कितने ही अस्थायी पुल बांधे
एक दिन तीसरेपहरसे इन पुलों द्वारा जलमी पार उतरने
फौजे पार उतरने लगीं; रिमाले पार उतरने लगे, जा
योसे भरी गाड़ियां भी पार उतरने लगीं। चारो ओर हद
पड़ गई; चरो ओर शीघ्र शीघ्र नदी पार करनेकी मसलत
दिखाई देने लगी। जो रूमि सिपाही मोरचोंमें थे; वह ठहर-
रहे; वाली सभी लियावयाङ्गसे चले। जगह जगह जूपा
रसद रखी थी; यह कैसे हटाई जाये? समय बहुत ही कम
था; प्रति क्षण आपानियोंका धावा होनेका भय था; इस
असमयमें रूमि फौजे ही लठिनतासे हटाई जा सकती थीं;
सिपाहियोंसे पहले रसद कैसे हटाई जा सकती थी? रूमि
अधरोंने आज्ञा दी, कि रसदको आग लगा दी जाये। रूमि
ही हुआ; पर्वत-प्रमाण रसद अग्नि-संयोगसे धांध धांध चलने
लगी। रूमि अपसह रसद ही को आग लगा मनुष्ट नहीं हु-

झरोपाटकिनके इतने दिनोंके आवागमन रेल-ट्रे घनघी भी आग लगा दो; वह भी जलने लगा। इसतरह रूसी अफसर अपने परित्यक्त नगरको विगाड़ उसे छोड़ चले। उसमें सिर्फ वही रूसी सिपाही छोड़ दिये गये जो मोरचोंमें या उनके मददगार थे। इन लोगोंसे कह दिया गया, कि रूसी सैन्यके } नेतक शत्रुको रोकना; इसके बाद मोरचोंसे निकल गये } भी पुल तोड़ देना या उसे आग लगा देना। यह } सिपाही भी थोड़े नहीं; सहस्र सहस्र थे। •

इसे उबमय कीई सात बने जापानी गोलन्दाजोंको सावधान मिल चुकीजा मिली; जापानी फौजोंको धावेको आज्ञा दी गई। रूसी, सेनानिर्देशमें विगुल बन उठे; छथियार खड़कने लगे। सहस्र नहीं; लक्ष लक्ष जापानी सिपाहियोंने मिश्रित मिश्रित रणरङ्गार किया; इस रणरङ्गारसे जैसा शब्द होना था, वैसा ही हुआ; इससे वन-पर्वत गूँब गये; पत्तोंके प्राणी धर धर काँप गये; मानो अगणित वादलोंने एक साथ मिल गल्लन किया। दोनों लक्षी अर्द्धचन्द्राकार जापानी सैन्य-पंक्ति आगे बढ़ दिग्भरकी गोलन्दाजोंसे जीर्ण-शील रूसी-किलों और मोरचोंमें जा घुसी। महाशुद्ध आरम्भ हुआ। सुख नाचने, रुख उकलने लगे। खोपड़ियां चूर चूर होने लगीं; छातियां विधने लगीं। अच्छे अच्छे रूपशाली बलविशिष्ट सशस्त्र जवान माथीपर, छातीपर, पेटपर जांघमें गोली खा टूटी सताकी तरह नोजोंव निःसन्द ही भूतलपर गिरने दोनों ओरके सिपाहियोंके मंहसे निकलती 'मार मार'की वड़ा ही भयङ्कर रव उत्थित हुआ। जापानी सिपाही

घोड़ों पर चढ़ना ।

मानो विजय-प्राप्तिके लिये उत्सुक हो रहे थे ; अपने
 लक्ष्यवत् तुच्छ समझ विस्मयन करने और खुशियों
 लगे । जापानी सैन्यकी इस विश्वसंहरियो नृत्तिके स
 कवतक ठहर सकते थे ? किसी किसी मोरचेके हठी
 हो भड़क-वकरियोंकी तरह और किसी किसी मोर
 दहुत ही एक एककर पीछे हटने लगे । खुशियोंके
 ही जापानी सैन्य-सागर और भी वेगसे आगे बढ़ा
 खुशी काटे जाने लगे ; उनकी जाशोंके टेर लगने लगे ।
 पीछे ही नगर था । कितनी ही खुशी फौजे' नगरके
 कितनी ही पीछे' नगरकी बालसे पीछे हटने लगीं
 बगलमें—नगरमें—बहुत आरम्भ हुआ । कितने ही
 नगरवासी भागेकोसे भांक रहे थे । युद्ध-हीठाएष
 उनके समीप होता था । अन्तमें उनकी आंखोंके आ
 मोड़पर आकूल खुशी खिपाही पलटते दिखाई दते थे
 दिवाके बाद वारंवार बाढ़ दागते खुशी खिपाही प्रक
 इनसे कुछ ही अन्तरपर खुशियोंपर गोलियोंकी वृषि
 पानी खिपाही प्रकट होते थे । जापानी खिपाही व
 दिव्योंकी पीछे हटाते हुए एक थोरसे दूसरे व
 जाते थे । युद्धमें प्रवृत्त दोनों पक्ष जब उधराहसे
 जाते थे, तब उधरमें एकवार फिर मनाटा हा था
 कभी कभी वहां गिरे खुशी या जापानी आहत वि
 पाहसे मर जाता था । कुछ देर बाद ही वहां का
 दिव्योंका पररा बैठ जाता था ; रखतरए धाम व
खुशी खुशी पीछे हटाती थी और पीछे पीछे